रखनेवाले ही हैं, फिर भी अुनमें बापूजीका सरदारके प्रति वैसा ही प्रेम और वैसी ही चिन्ता हम देख सकते हैं।

* * *

अिन पत्रोंकी विशेषता यह है कि ये अेक अैसे बहादुर योद्धा और वफादार साथीको लिखे गये हैं, जिसकी विवेकशक्ति और व्यवहार-कुशलता पर बापूजीको बड़ा विश्वास था।

सरदार पटेल गांधीजीके साथ गंभीर मंत्रणा कर रहे हैं।
साथमें मणिबहन हैं।

बापूके पत्र – २

सरदार वल्लभभाअीके नाम

[८–७–'२१ से २९–१२–'४७ तक]

संपादिका

मणिबहन पटेल

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद

प्रकाशकका निवेदन

गांधीजीकी अक्षर-देहका अेक बड़ा और महत्त्वपूर्ण भाग अुनके पत्र हैं। ये अुन्होंने कितनी तरहके, कितने वर्गोंके, कितनी वयके देश-देशान्तरके लोगोंको और कितने विषयों पर लिखे हैं, अिसकी गिनती नहीं है। और अिन सबमें अुस महापुरुषके महान और अुदात्त जीवनके कितने अधिक विरल पहलू व्यक्त हुअे छिपे पड़े हैं! गांधीजीके जीवन-चरित्रकी दृष्टिसे भी ये पत्र अेक बड़ा संदर्भ-साहित्य माने जायंगे।

पाठक जानते हैं कि गांधीजीने अपनी प्रकाशित-अप्रकाशित सभी रचनाअें वसीयत करके नवजीवन ट्रस्टको अर्पण कर दी हैं और अुनके सर्वाधिकार अिसे सौंप दिये हैं। अिसलिअे अिस विशाल पत्र-साहित्यको प्रकाशित करनेकी ओर भी ट्रस्टको ध्यान देना है। भाअी श्री प्यारेलालजीको गांधीजीके जीवन-चरित्रका जो काम सौंपा गया है, अुसके लिअे भी यह साहित्य जितना हो सके प्राप्त कर लेना चाहिये।

अिन सब बातोंका विचार करके नवजीवन ट्रस्टने पू० बापूजीके जानेके बाद थोड़े ही समयमें तय किया था कि अुनके जितने भी पत्र मिल सकें, अुन्हें अुचित रूपमें प्रकाशित किया जाय। अुसके अनुसार अेक सार्वजनिक अपील निकालकर पत्रोंकी मांग की गअी थी और गांधीजीके पत्र जिन जिनके पास हों अुन सबको सूचित कर दिया गया था कि अगर वे अपने नाम आये हुअे बापूजीके पत्र हमें सौंपेंगे, तो जरूरी गोपनीयता रखकर अुनकी नकलें कर ली जायंगी और वे चाहेंगे तो पत्र अुन्हें लौटा दिये जायंगे। बापूजीके पत्र किसीके पास होना अेक दुर्लभ स्मृतिचिह्न है। अिन पत्रोंको अपने पास रखनेका अुन्हें हक है।

अिस सूचनाके अनुसार कितने ही भाअी-बहनोंने अपने पत्र नव-जीवनको भेजे हैं। अुनकी नकलें करके जिन जिनके पत्र थे, अुनके पास लौटा दिये गये हैं। और अिन पत्रोंमें से फुटकर बानगीके रूपमें कुछ 'हरिजन' और गुजराती मासिक 'शिक्षण अने साहित्य' में छापे गये हैं। अिसके सिवा, कुछ पत्र अब तक ग्रंथरूपमें भी प्रकाशित किये गये हैं, जैसे श्री मीराबहनके नाम लिखे पत्रोंका संग्रह, आश्रमकी बहनोंके नाम लिखे पत्रोंका संग्रह। साथ ही बहनोंके नाम लिखे पत्रोंके विभाग करके अेक-दो अन्य संग्रहोंका काम भी श्री काकासाहब कालेलकरके हाथमें सौंपा गया है।

अिस पुस्तकमें जो पत्रसमूह प्रगट हो रहा है, वह अपने ढंगका अनोखा है। ये पत्र गांधीजीने सरदार वल्लभभाअी पटेलको लिखे थे। श्री मणिबहन पटेल और श्री नरहरि परीखने मिलकर अिनका संपादन किया है। दोनोंने अपने प्रास्ताविक निवेदनमें अिस बारेमें जो कुछ कहा है, अुसे पाठक देखेंगे ही। अुससे मालूम होगा कि यह पत्रव्यवहार ता० ८–७–'२१ से लगाकर २९–१२–'४७ तक पूरी अेक पीढ़ीके समयका है। और वह भी अैसे दो महान पुरुषोंके बीच हुआ है, जिन्होंने भारतके अितिहासका निर्माण करनेमें बड़ा महत्त्वपूर्ण भाग लिया है।

अिसके सिवा गांधीजी द्वारा श्री मणिबहन तथा श्री डाह्याभाअी पटेलको लिखे हुअे पत्रोंका संग्रह भी है; वह बादमें अलग ग्रंथके रूपमें दिया जायगा।

जैसा 'बापूके पत्र — १ : आश्रमकी बहनोंको' नामक पत्र-ग्रंथके निवेदनमें बताया गया था, पत्र-साहित्यकी अिस मालाको अेक सामान्य गौण शीर्षक 'बापूके पत्र' दिया गया है, और अुसके भागोंके रूपमें अलग-अलग ग्रंथ रहेंगे। तदनुसार 'सरदार वल्लभभाअीके नाम' ग्रंथको 'बापूके पत्र — २' के रूपमें दिया जा रहा है।

अैसा ही अेक और कीमती संग्रह श्री बिड़लाके साथ हुअे गांधीजीके पत्रव्यवहारका है, जिसे प्रकाशित करनेकी अिजाजत नवजीवन ट्रस्टने अुन्हें दी है; अुसका गुजराती अनुवाद ट्रस्ट प्रकाशित करेगा। यह ग्रंथ अभी तैयार हो रहा है। आशा है वह भी यथासंभव शीघ्र ही जनताको मिल जायगा।

यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है, अिस बहाने मैं जनतासे फिर प्रार्थना करनेका अवसर लेता हूं कि जिनके पास बापूके पत्र हों वे हमारे पास भेजनेकी व्यवस्था करें। आशा है यह पुस्तक सबके लिअे बोधप्रद सिद्ध होगी; और जिन-जिनके पास गांधीजीके पत्र होंगे, अुन्हें भेजनेकी प्रेरणा देगी।

यह पुस्तक तैयार करनेमें मदद देनेवाले सभी लोगोंका मैं ट्रस्टकी तरफसे आभार मानता हूं।

२१–५–'५२

पुनश्च : — श्री मणिबहनने अपने वक्तव्यमें 'बापू' और 'बापूजी' अैसे दो शब्दप्रयोग किये हैं। वहां 'बापू' सरदार पटेलके लिअे और 'बापूजी' गांधीजीके लिअे समझना चाहिये।

अिन पत्रोंके बारेमें

३० जनवरी, १९४८ को पू० बापूजी अचानक सबको छोड़कर चले गये। अिस प्रकार देशके अनाथ बन जानेसे मेरी तरह जनताको भी पूज्य बापूजीकी रचनाओंकी भूख रहती ही होगी। मुझे लगा कि जनताकी अिस भूखको तृप्त करनेके नवजीवन द्वारा शुरू किये गये काममें भरसक मदद देना मेरा धर्म है। मुझे विचार आया कि पूज्य बापूके नाम लिखे पू० बापूजीके पत्र जनताके सामने रखे जा सकें, तो अुनसे अुसको बहुत कुछ जानने-सीखनेको मिलेगा; वे मार्गदर्शनका काम करेंगे। भाअी जीवणजी पूज्य बापूको देखने व अुनसे मिलने जब मसूरी-देहरादून आये, तब मैंने अुनसे अिस बारेमें बात की। मेरा यह विचार अुन्हें पसन्द आया।

जबसे मैंने बापूके साथ सतत चौबीसों घंटे रहना शुरू किया, तबसे घर जैसा तो रहा ही नहीं। या तो जेल या सफर या किसीके यहां मेहमान। १९३० से १९४६ तक अिसी तरहका जीवन रहा। अैसी परिस्थिति होने पर भी १९२१ से १९४७ तकके जो पत्र संभालकर रखे जा सके हैं, अुन्हें पाठकोंके सामने रखनेका संकल्प अीश्वरकी कृपासे अिस प्रकार पूरा हो रहा है। अिस संकल्पको मूर्तरूप देनेमें अेक लम्बा अर्सा बीत गया। परन्तु मैं दिल्लीमें फंसी हुअी थी। जिसे मैं अपना कह सकूं, अैसा अेक भी क्षण दिसम्बर १९५० तक मेरे पास नहीं था। वहांसे आनेके बाद भी किसी न किसी कारणसे सवा वर्षका लम्बा समय और निकल गया।

अिन पत्रोंको प्रकाशित कर सकनेका सच्चा श्रेय श्री नरहरिभाअीको है। मैंने तो भरसक जानकारी अिकट्ठी कर देनेकी ही कोशिश की है। अिसमें जो कमी रह गअी हो, वह मेरे अज्ञानके कारण है। मैंने नरहरिभाअीसे अपने नाम अिसे प्रकाशित करनेका बहुत कहा, मगर अुनका आखिर तक यही आग्रह रहा कि यह संग्रह मेरे नामसे प्रकाशित हो और वे अिसमें सहायता करेंगे। अुनकी

तन्दुरुस्ती ठीक न होते हुअे भी अुन्होंने पूज्य पिताजीके जीवन-चरित्रका दूसरा भाग लिखनेके कामसे समय निकालकर घंटों अिस कार्यमें जो सहायता दी और रास्ता बताया, अुसके विना अिसका पूरा होना संभव नहीं था।

भाअी मूलशंकरके अुत्साहपूर्ण सहयोगका भी अिस संकल्पको मूर्तरूप देनेमें बड़ा हाथ है। सुबहसे रात तक अपने रोजमर्राके कामोंके बावजूद किसी भी तरह समय निकालकर अुन्होंने कोअी तीन ही महीनोंमें लगन, भक्ति और सावधानीसे सब पत्रोंकी नकल कर दी। अिसके लिअे मैं यहां अुनका आभार न मानूं, तो कृतघ्नताकी दोषी ठहरूं।

अिस पत्रसंग्रहके प्रकाशनसे पू० बापूजीके वचनोंकी पाठकोंकी भूख थोड़ी-बहुत भी तृप्त हुअी, अिससे अुन्हें अपने जीवनकी कुछ भी गुत्थियां सुलझानेका मार्ग मिला, तो मुझे सन्तोष होगा।

७–५–'५२ **मणिबहन वल्लभभाअी पटेल**

प्रस्तावना

मणिबहनने सरदारके नाम लिखे बापूजीके पत्रोंको सावधानीसे संभालकर और जरूरी टिप्पणियोंके साथ संपादित करके पाठकोंके लिअे अुपलब्ध बनाया, अिसके लिअे हम अुनके ॠणी हैं।

अब तक बापूजीके बहुतसे पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। अुनमें से अिन पत्रोंकी विशेषता यह है कि वे अेक अैसे बहादुर योद्धा और वफादार साथीके नाम लिखे गये हैं, जिसकी विवेकशक्ति और व्यवहार-कुशलता पर बापूजीको बड़ा विश्वास था।

गुजरातीमें पत्र-साहित्य बहुत थोड़ा प्रकाशित हुआ है। पत्रलेखन अेक कला है और बहुत अुपयोगी कला है। गुजरातीमें और भी कअी अच्छे पत्रलेखक होंगे। मेरी जानकारीमें स्व० महादेवभाअीने अिस कलाका सुन्दर विकास किया था। कितने ही मनुष्योंके निजी परिचयमें आनेसे पहले महादेवभाअीने अपने पत्रोंसे अुनके हृदयमें स्थान प्राप्त कर लिया था। श्री काकासाहबके हाथमें भी यह कला है। वे अपना शिक्षणकार्य जैसे प्रत्यक्ष बातचीत द्वारा करते हैं, वैसे ही पत्रों द्वारा भी करते हैं। परंतु पत्रलेखकोंमें बापूजीकी बराबरी करनेवाला शायद ही कोअी मिलेगा। अुन्होंने अपने पत्रों द्वारा कितनों ही को जीवनमें प्रेरणा दी है, कितनों ही की शंकाओंका समाधान किया है, दिलकी गुत्थियां सुलझाअी हैं और कितने ही परेशान और दु:खी लोगोंको आश्वासन दिया है। अुनसे प्रेरणा और मदद चाहनेवालोंकी मंडली अितनी ज्यादा विस्तृत थी कि रोज तीन-चार घंटे और कभी-कभी तो अिससे भी अधिक समय पत्र लिखनेमें लगाने पर भी वे अपना सारा पत्रव्यवहार नहीं निपटा पाते थे। अिसलिअे अुन्हें काफी विवेकसे काम लेना पड़ता था। कुछ पत्र खुद जवाब देनेके लिअे रखकर बाकीके 'अिन्हें यह लिख देना' आदि सूचनाअें देकर मंत्रियोंको सौंप देते थे। ज्यों-ज्यों अुनका पत्रव्यवहार बढ़ता गया, त्यों-त्यों मंत्री लोग बहुतसे पत्रोंके तो अुनके सामने पेश किये बिना ही जवाब दे दिया करते थे। अितने पर भी खुद बापूजीके जवाब देनेके लिअे अितने अधिक पत्र रह जाते थे कि बहुत संक्षिप्त अुत्तर

देने पर ही वे अुन्हें निपटा सकते थे। अपनी बात बहुत संक्षेपमें कह डालनेकी कला बापूजीने खूब साध ली थी। अुनके अत्यंत अर्थपूर्ण पत्र संक्षिप्तताके अुत्तम नमूने हैं।

पत्र-साहित्यका खास लक्षण यह है कि अुसमें अेक व्यक्तिको जो कहना होता है अुसे वह सीधा दूसरे व्यक्तिसे कहता है। दोनों अेक-दूसरेके स्वभाव, विचारों और भावनाओंसे काफी परिचित होते हैं। दोनों अेक-दूसरेके दिलको पहचानते हैं। मनुष्य जब भाषण देता है या लेख लिखता है, तब अुसकी नजरके सामने अेक बड़ा श्रोता-मंडल या पाठक-समुदाय होता है। अिसलिअे अुसका वक्तव्य या लेख सर्व-सामान्य स्वरूपका होता है। पत्रमें यह वस्तु विशेष अेकाग्रता धारण करती है। अुसकी अपील व्यक्तिगत होती है। यही पत्र-साहित्यकी खास विशेषता है।

सरदार पटेल पहले-पहल बापूजीके संपर्कमें आये राजनीतिक कार्यके सिलसिलेमें। गांधीजीके हिन्दुस्तानमें आनेसे पहले प्रार्थना-पत्रोंकी राजनीतिका बोलबाला था। बापूजीने अुसमें सीधी लड़ाअी लड़नेका तत्त्व दाखिल किया। सरदार खास तौर पर अिसीसे बापूजीकी तरफ आकर्षित हुअे। खेड़ा जिलेके सत्याग्रहमें वे बापूजीके विशेष परिचयमें आये। और अुसीमें बापूजीने अुनका तेज परख लिया। देखते-देखते अुन्होंने बापूजीका अितना विश्वास संपादन कर लिया कि राजनीतिक मामलोंमें कोअी भी महत्त्वपूर्ण कदम बापूजी अुनसे सलाह-मशविरा किये बिना नहीं अुठाते थे। और बापूजीकी राजनीति संकुचित या अेकांगी तो थी ही नहीं। सत्य-शोधनकी अुनकी धार्मिक वृत्ति ही अुन्हें राजनीतिमें खींच लाअी थी। अिस कारण गांधीजीकी राजनीति जीवनव्यापी थी। देशकी शिक्षा, आर्थिक अुन्नति, परिवार और समाज-सुधार आदिके बहुतसे प्रश्न अुनकी राजनीतिमें ओतप्रोत हो जाते थे। अिन सबमें सरदार पूरी दिलचस्पी लेते थे। फिर भी अुनकी विशेष रुचि तो राजनीतिक मामलोंमें ही थी। यही अुनका विशेष क्षेत्र था। गांधीजीका सरदारके साथ जो संबंध था, अुसका निरूपण 'महादेवभाअीकी डायरी—भाग १', पृष्ठ ६ के निम्नलिखित संवादसे मिलता है :

" . . . (बापूने) सेम्युअल होरको लिखा हुआ पत्र मुझे (महादेवभाअीको) पढ़नेको दिया। मैंने पढ़ लिया। मुझे पूछा : 'कैसा लगता है ?'

"मैंने कहा : 'मुझे सारी दलील शुद्ध लगती है। दमन-नीतिके बारेमें तो मुझे पहले भी कअी बार यह खयाल हुआ है कि किसी दिन बापूका प्रकोप अैसा रूप धारण करे तो आश्चर्य नहीं। अिसमें वल्लभभाअीको क्या आपत्ति है? अुन्हें तो यह खयाल होगा कि आप अैसा कदम अुठायें, तो कांग्रेसके अध्यक्षकी हैसियतसे वे अिसमें कैसे सम्मति दे सकते हैं?'

"बापूजी कहने लगे : 'नहीं, यह सवाल तो अुनके मनमें नहीं अुठा। सवाल यह है कि साथीके नाते वे सम्मति कैसे दें? परंतु मैंने यह कल्पना नहीं की कि वल्लभभाअीने धार्मिक दृष्टिसे विचार किया है। अुन्होंने तो राजनीतिक दृष्टिसे ही विचार किया और यह ठीक भी है। मेरा और वल्लभ-भाअीका संबंध भी धार्मिक नहीं कहा जा सकता। वल्लभ-भाअीकी कठिनाअी तो यह है कि 'अिसका अनर्थ होगा। वे लोग (सरकार) कहेंगे कि यह गांधी तो अैसा ही आदमी है; पागल हो गया है, अुसे पागलपन करने दो। जनताको भी आघात पहुंचेगा। और अैसे अनशनोंका गलत अनुकरण होनेका डर भी बहुत बड़ा है।' परंतु भले अैसा हो। मैं पागल माना जाअूं और मर जाअूं, तो अिसमें बुरा क्या है? तब तो अगर मुझे बनावटी महात्मापन मिला होगा, तो वह खतम हो जायगा। यह अच्छा ही है। . . ."

* * *

"वल्लभभाअी बोले : 'मेरी तो अब भी ना है। परंतु आपको जैसा ठीक लगे वैसा कीजिये।'"

मैं अिस चर्चामें नहीं पडूंगा कि बापूजीके साथ सरदारका संबंध धार्मिक कहा जा सकता है या नहीं। परंतु अुनका संबंध परिवारके अंतरंग व्यक्ति जैसा तो था ही। यरवडा जेलमें ता० ८-५-'३३ को

बापूजीने आत्मशुद्धि और समाज-शुद्धिके लिअे २१ दिनके अुपवास शुरू किये और अुसी दिन शामको अुन्हें छोड दिया गया। बाहर निकलनेके बाद अुन्होंने जो बयान दिया, अुसमें सरदारके बारेमें प्रगट किये गये अुद्‌गारोंसे अुनके संबंधका हूबहू वर्णन मिलता है :

> "जेलमें सरदार वल्लभभाअीके साथ रहनेका अवसर मिला, यह मेरा बडा सौभाग्य था। अुनकी अद्वितीय शूरवीरता और ज्वलंत देशभक्तिका तो मुझे पता था। परंतु अिन सोलह महीनोंमें अुनके साथ रहनेका जो सौभाग्य मुझे मिला, अुस तरह मैं अुनके साथ कभी नही रहा था। अुन्होंने मुझे जिस तरह प्रेमसे परिप्लावित किया, अुससे मुझे अपनी प्यारी माकी याद आ जाती थी। अुनमें माताके अैसे गुण होंगे, यह तो मैं जानता ही न था। मुझे जरा भी कुछ हो जाता, तो वे बिस्तरसे अुठ जाते थे। मेरी सुविधाकी छोटीसे छोटी चीजके लिअे वे खुद चिन्ता रखते थे। . . ."

अिस प्रेमके कारण ही हम अिन पत्रोंमें देखते हैं कि वे बापूजीके 'भाअीश्री' से 'भाअी' और अन्तमें 'चि०' (चिरंजीव) बन गये थे। यद्यपि अिन पत्रोंमें ज्यादातर पत्र राजनीतिक कामकाजसे संबंध रखनेवाले है, फिर भी अुनमें बापूजीका भी अुनके प्रति अैसा ही प्रेम और अैसी ही चिन्ता हम देख सकते हैं। साथ ही, लगभग तीस वर्षके लम्बे अर्सेके अितने गहरे संबंध और अितनी विविध हलचलोंमें साथी रहने पर भी, बापूजीको सरदारके नाम अपेक्षाकृत थोड़े ही पत्र लिखनेका मौका आया है। यह सच है कि जहां तक संभव होता बापूजीसे पूछे बिना, अुनसे सलाह-मशविरा किये बिना, सरदार शायद ही कोअी काम शुरू करते थे। जब पूछ सकनेकी स्थिति न होती, तब सरदार अिस बातकी बड़ी चिन्ता रखते कि मेरे कामके बारेमें बापूजीका क्या खयाल होगा। मगर अुन्हें पत्र द्वारा सलाह-मशविरा करनेकी आदत नहीं थी। रूबरू मिलकर ही वे जो पूछना होता, बापूजीसे पूछ लेते थे। अनिवार्य होने पर ही वे पत्र द्वारा सलाह लेते थे। साथ ही लंबी चर्चा करनेकी भी अुन्हें आदत नहीं थी। मतलबकी बात वे अिशारेमें समझ लेते थे और तफसील अपने-आप पूरी कर लेते थे।

सरदार बापूजीकी हां-में-हां मिलानेवाले या अुनके अंधे अनुयायी कहलाते थे। अनुयायी वे जरूर थे, मगर किस हद तक 'अंधे' अनुयायी थे, यह अेक प्रश्न है। राजाजीने अेक मौके पर कहा है: "दूसरे लोग बापूजीके 'अंध अनुयायी' होंगे, मगर सरदार तो हरगिज नहीं थे। वे हमेशा बापूजीकी दृष्टिसे देखनेका प्रयत्न जरूर करते थे, परंतु यह बात नहीं थी कि अुनकी अपनी दृष्टि थी ही नहीं। फिर भी बापूजीकी ही नजरसे देखनेके खातिर वे जान-बूझकर अपनी आंखों पर पट्टी बांध लेते थे।" और हमेशा आंखों पर पट्टी ही बांधकर रखते थे, अैसी बात भी नहीं थी। सन् १९४० में कांग्रेसके सामने यह प्रश्न खड़ा हुआ था कि अुस समय हो रहे विश्वयुद्धमें मित्रराज्योंकी मदद की जाय या नहीं। प्रश्न यह था कि कांग्रेसकी सत्य और अहिंसाकी नीति है, अिसलिअे मदद किस तरह दी जाय? कांग्रेस कार्यसमितिके अधिकांश सदस्योंका, जिनमें सरदार भी थे, कहना यह था कि कांग्रेसकी सत्य और अहिंसाकी नीति स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे है। परंतु देश पर बाहरसे हमला हो, तब अिस नीतिसे चिपटे रहनेके लिअे कांग्रेस बंधी हुअी नहीं है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि देश अिसके लिअे तैयार है। और कांग्रेस लोगोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था है, अिसलिअे बाहरी आक्रमणसे लोगोंकी रक्षा करनेमें मदद देनेकी अुसकी जिम्मेदारी है। अैसे अवसर पर वह अपनी अहिंसाकी नीति छोड़ सकती है, और अुसे छोड़ना चाहिये। अिसलिअे सरकार द्वारा कांग्रेसकी कुछ शर्तें स्वीकार करनेकी सूरतमें कांग्रेस युद्ध-प्रयत्नोंमें मित्रराज्योंको मदद देनेके लिअे तैयार हो गअी थी। लेकिन बापूजीके लिअे तो अहिंसा अेक नीति नहीं, बल्कि धर्म था। साथ ही नीतिके रूपमें भी, जब अुसके अधूरे आचरणसे ही देशको अितना लाभ हुआ था, अुसे क्यों छोड़ देना चाहिये? अिसलिअे जब कांग्रेस कार्यसमिति और महासमितिने यह प्रस्ताव पास किया कि हमारी शर्तें मान ली जायं तो युद्धमें मदद की जाय, तब बापूजीने कांग्रेसके सदस्य न होने पर भी अुसे सलाह-मशविरा और नेतृत्व देनेका वे जो काम करते थे अुससे मुक्त होनेकी मांग की। कांग्रेसने दुःख और भारी हृदयके साथ अुसे

मंजूर किया। सरदारके लिअे यह अवसर बड़े धर्मसंकटका था। जो आज तक बापूजीके दाहिने हाथ माने जाते थे, अुनका यह बापूजीसे अलग होनेका अवसर था। अुन्होंने अपनी सारी स्थिति गुजरात प्रान्तीय समितिके सामने ता० १९–७–'४० के अपने भाषणमें स्पष्ट की है :

"बापूजीने यह सवाल रखा कि 'मुझे अपना प्रयोग करनेकी पूरी स्वतंत्रता और गुंजाअिश होनी चाहिये।' हमने कहा कि 'आपकी तरह तेजीसे, अितने वेगसे हम आपके पीछे नहीं चल सकें, तो हमें आप पर भार नहीं बनना चाहिये।'

"आज हमें यह निर्णय करना है कि हमें स्वतंत्रता मिल जाय, पूरी सत्ता मिल जाय, तो क्या हम सेनाके बिना काम चला सकेंगे? अगर हम यह कहें कि हमारे पास हुकूमत आ जायगी तो हम सेनाको बिखेर देंगे, तब तो अंग्रेज कभी हमें सत्ता नहीं देंगे। ज्यादातर मुसलमान अिसके खिलाफ हैं। कांग्रेसके बाहरके मुसलमान तो हिंसा पर ही कायम हैं। अहिंसाको थोड़े समयके लिअे बड़े क्षेत्रमें ले जाना मुलतबी करना पड़े, तो अुसका यह अर्थ नहीं कि स्वराज्यकी लड़ाअीके लिअे कांग्रेसकी अहिंसाकी प्रतिज्ञामें परिवर्तन करना है। परन्तु मैं आपके साथ किसी तरहकी बहस करके आपके विचार नहीं बदलना चाहता और अहिंसामें आपकी श्रद्धाको भी कम नहीं करना चाहता।

"बाहरके लोग अब तक मुझे बापूका अंधा अनुयायी कहते थे। मैं कहता था कि वैसा हो सकूं तो मुझे गर्व होगा, परन्तु देखता हूं कि मैं वैसा नहीं हूं। मैं तो आज भी बापूसे कहता हूं कि आप हमारा नेतृत्व करें, तो हम आपके पीछे-पीछे चलेंगे। परन्तु वे कहते हैं कि आंखें खोलकर अपनी बुद्धिके अनुसार चलो।

"हम भी घरबार बरबाद करके अुनके साथ लगे हैं। अब यहां तक तैरते-तैरते आ गये हैं, तो अब अन्तमें क्यों अलग

हों? मगर यह तो अकल्पित स्थिति आ खड़ी हुअी है। यह असंभव है कि अुसका असर देश पर न पड़े। १०–१२ देश तो अिन दो-तीन सप्ताहमें खतम हो गये।

"कार्यसमितिका प्रस्ताव आठ पंक्तियोंका है। अुसमें न सरकारकी आलोचना है और न लोगोंकी या और किसीकी। अुसमें लच्छेदार भाषा भी नहीं है। अुस प्रस्तावका अर्थ यह है कि हिन्दुस्तान भी स्वतंत्र और अिंग्लैण्ड भी स्वतंत्र, अैसा हो तो हम मदद देंगे।

"अगर आपका यह खयाल हो कि बापूजी जो कहते हैं वही ठीक है, तो वैसा ही प्रस्ताव पास कीजिये और अुस पर अमल कीजिये। बादमें अुन्हें धोखा न दिया जाय। किसीको अिस ढंगसे विचार नहीं करना चाहिये कि अिसमें बापूजीकी वफादारीका सवाल है। आपका यह खयाल हो कि वे जिस प्रकारकी अहिंसाके बारेमें कहते हैं अुसी प्रकारकी अहिंसाका पालन करना है, तो आप वैसा प्रस्ताव पास कीजिये। परन्तु बापूजी हमसे अंधी वफादारी नहीं चाहते। हमारी शक्ति कितनी है, यह हमें अुनसे साफ-साफ कह देना चाहिये। जो चीज कांग्रेसके अन्दर नहीं है, अुसके लिअे 'है' कहनेसे काम नहीं चलेगा। अुससे नुकसान होगा।

"जो कायर है अुसे अहिंसा क्या सिखाअूं? अुसके पास मैं जो हलकी चीज रखता हूं, अुसे वह समझ सकता है। अुसके सामने भारी वस्तु रखूं तो वह घबरा जायगा। अिसलिअे अुसे साधारण आदमीके रास्ते लगा दें तो वह लग सकता है। बादमें आगे बढ़ जायगा।

"अब तक हमने अहिंसाके प्रयोग किये, यह ठीक किया। मगर लोगोंमें जो कायरता है — वे जहां खड़े हैं अुससे आगे नहीं बढ़ सकते — अुसका क्या किया जाय? जहांके तहां खड़े रहनेका यह समय नहीं है। हमारे सामने चुनाव करनेका समय आ गया है।

"आपमें से जो केवल रचनात्मक काममें लगे हुअे हैं और हर हालतमें अहिंसा पर कायम रहना चाहते हैं, अुनके सिर पर हमसे ज्यादा जिम्मेदारी है। आपका यह खयाल हो कि कांग्रेस गलत रास्ते पर जा रही है, तो आपको निःसंकोच अुसका भार अुठा लेना चाहिये। मैं तो जरूर यह भार आपको सौंप दूंगा।"

अब यह देखें कि अिस वस्तुका बापूजीने किस ढंगसे विचार किया था। 'मेरी कोअी नहीं सुनता' शीर्षकसे ता० १४–७–'४० के 'हरिजनबन्धु' में लिखे अपने लेखमें वे कहते हैं:

"भले ही अिस समय सरदार और मैं अलग-अलग मार्गों पर जाते दिखाअी देते हों, परन्तु अिससे हमारे हृदय थोड़े ही अलग हो जाते हैं? मैं अुन्हें अलग होनेसे रोक सकता था। परन्तु अैसा करना मुझे ठीक नहीं लगा। . . . अगर नये मालूम होनेवाले क्षेत्रमें अहिंसाका प्रयोग सफल कर दिखानेकी मुझमें शक्ति होगी, तो मेरी श्रद्धा टिकी रहेगी। जनताके बारेमें मेरी राय सही होगी, तो राजाजी और सरदार पहलेकी तरह ही मेरे पक्षमें हाथ अुठायेंगे।

* * *

"कांग्रेस कार्यसमितिने माना कि भीतरी झगड़ोंमें तो अहिंसासे काम लेना अब भी संभव है, परन्तु बाहरसे चढ़कर आनेवाले शत्रुके विरुद्ध अहिंसासे लड़नेकी शक्ति हिन्दुस्तानमें नहीं है। अिस अविश्वाससे मुझे दुःख होता है। मैं नहीं मानता कि हिन्दुस्तानके करोड़ों निःशस्त्र लोग अिस व्यापक क्षेत्रमें अहिंसाका प्रयोग सफल नहीं कर सकते। जिनके नाम कांग्रेसके रजिस्टरमें हैं, वे सरदार जैसे विचलित श्रद्धावाले सरदारको अपना विश्वास बताकर आश्वासन दे सकते हैं कि अहिंसा ही हिन्दुस्तानके अनुकूल अेकमात्र हथियार है। . . .

"अिसलिअे मैं आशा रखता हूं कि प्रत्येक गुजराती स्त्री-पुरुष अहिंसासे चिपटा रहकर सरदारको विश्वास दिलायेगा कि

वह कभी हिंसक बलका प्रयोग नहीं करेगा। और हिंसक बलका प्रयोग करनेसे जीत होनेकी आशा हो तो भी वह अुसे छोड़ देगा और कभी अहिंसक बलका त्याग नहीं करेगा। हम भूलें करते-करते ही भूलें न करना सीखेंगे। जितनी बार गिरेंगे अुतनी ही बार अुठेंगे।"

'हरिजनबन्धु' के अुसी अंकमें 'दिल्लीका प्रस्ताव' शीर्षक लेखमें बापूजीने कहा :

"पास किया हुआ प्रस्ताव तैयार करनेवाले राजाजी थे। अपनी भूमिकाके सही होनेके बारेमें जितना निःशंक मैं था, अुतने ही निःशंक वे अपनी भूमिकाके सही होनेके बारेमें थे। अुनके आग्रह, साहस और शुद्ध निरभिमानके आगे साथी हार गये और अुनके समर्थनमें शरीक हो गये। अुनकी बड़ीसे बड़ी जीत तो सरदारको अपने पक्षमें कर लेना है। अगर मैं राजाजीको रोकना चाहता, तो वे अपना प्रस्ताव पेश करनेका विचार भी न करते। परंतु मैं अपने लिअे जितनी अुत्कटता और आत्म-विश्वासका दावा करता हूं, अुतनी ही अुत्कटता और आत्म-विश्वास मैं अपने साथियोंके बारेमें भी स्वीकार करता हूं।"

ता० १–८–'४० को सरदारको लिखे अपने पत्रमें वे कहते हैं :

"आप बीमार पड़ते रहते हैं, यह ठीक नहीं। कुछ आराम लीजिये। परेशान क्यों होते हैं? आप जो करते हैं, अुसे मैं ठीक ही मानता हूं; क्योंकि आखिर तो मनुष्य अपनी प्रेरणा या शक्तिके अनुसार ही चल सकता है। भूल होती हो तो वह भी करनेसे ही सुधर सकती है न? . . . मुझे बिलकुल शक नहीं है। राजनीति भी मेरे ही मार्ग पर है। परन्तु यह बात अभी नहीं।"

परन्तु सरकारने कांग्रेसके प्रस्तावका कोअी जवाब नहीं दिया, अिसलिअे युद्धमें मदद देनेका सवाल ही नहीं रहा। कांग्रेस फिर बापूजीके पास गअी और अुनकी सूचनानुसार अुसने व्यक्तिगत सविनय भंगका मार्ग अपनाया।

१९४७ में जब कांग्रेसने देशके बंटवारेकी और पाकिस्तानकी बात मान ली, तब फिर सरदार बापूजीसे अलग दिशामें चले। बापूजीने खुद ही ता० १३–४–'४७ के पत्रमें सरदारको लिखा है, 'मैं यह भी देखता हूं कि हमारे बीच विचार करनेमें भेद होता ही रहता है।' अितने पर भी सरदारको बापूजीका विश्वास अन्त तक प्राप्त होता रहा।

जैसे बापूजी सरदारको चिरंजीव लिखते थे, वैसे ही सरदार भी अुन्हें हमेशा अपना शिरच्छत्र मानते थे। बापूजीके देहान्तके बाद मुझे लिखे पत्रमें सरदार लिखते हैं:

> "हमारे सिरसे छत्र अुठ गया है। अुनकी छायामें हमें आश्रय मिलता था। अब यहां रहना अच्छा नहीं लगता।... हमारे सिर पर बहुत बोझ आ पड़ा है। कैसे अुठा सकेंगे, यह भगवान जाने। अीश्वर करे सो सही।"

बापूजी कभी मौतकी बात करते, तो सरदार विनोदमें कहते: 'स्वराज्य लिये बिना कहां जाना है? और बादमें तो आपको अकेले कौन जाने देगा? मैं भी तो साथ ही हूं न।' सरदार अक्षरशः बापूजीके साथ नहीं जा सके। बापूजीके चले जानेके बाद लगभग तीन वर्ष जिये, परन्तु अुन्हें जीवनमें कोअी रस नहीं रह गया था। देशके सामने बड़े विकट प्रश्न अुपस्थित हैं; जब तक अीश्वर जिलाये, तब तक अुन्हें हल करनेके भरसक सभी प्रयत्न कर लेने हैं — अिसी कर्तव्यबुद्धि अथवा धर्मबुद्धिसे वे जीते थे।

बापूजीके साथ सरदारके सम्बन्धकी यहां टूटी-फूटी कल्पना दी गअी है। अुनके पत्रोंके विषयमें तो खास तौर पर क्या कहूं? यही कामना है कि पाठकोंको अुनसे जीवनप्रद स्फूर्ति और प्रेरणा मिले।

नरहरि परीख

बापूके पत्र — २

सरदार वल्लभभाओीके नाम

[८–७–'२१ से २९–१२–'४७ तक]

१

बम्बअी,
शुक्रवार,
८ जुलाअी, १९२१

भाअीश्री वल्लभभाअी,

मैं सोमवारको सुबह वहां आअूंगा और अुसी दिन वापस जाअूंगा। राजनीतिक मंडलको क्या करना चाहिये, अिस बारेमें भाअी अिन्दुलाल[1] को पत्र लिखा है। अुसे देख लें। मुझे आशा है कि असहयोगका निश्चय किया जायगा। कौंसिलोंका सर्वथा बहिष्कार ही हमारा आसरा है।

भाअी मावलंकर[2] वगैराको खबर दे दें।

मोहनदासके वन्देमातरम्

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल,
बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

२

शुक्रवार[3]

भाअीश्री वल्लभभाअी,

भाअी गिडवानी[4] से खूब बातें हुअीं। वे परेशान हैं। काका[5] और आश्रमवासियोंके खिलाफ कुछ शिकायत है। आप सबको जमा

१. श्री अिन्दुलाल याज्ञिक। गुजरात प्रांतीय समितिकी स्थापनाके समय अुसके मंत्री। बादमें कांग्रेससे अलग हो गये।

२. श्री गणेश वासुदेव मावलंकर। अहमदाबादके सुप्रसिद्ध वकील और गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री, १९२२-२३। १९३७ में कांग्रेस विधान-सभाओंमें गअी तब बम्बअी विधान-सभाके अध्यक्ष, और आजकल भारतीय संसदके अध्यक्ष।

३. यह पत्र १९२१ में लिखा गया मालूम होता है।

४. स्व० श्री असूदमल टेकचंद गिडवानी। गुजरात विद्यापीठके आचार्य, १९२० से १९२३ तक।

५. दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर — आश्रमवासी।

करके निपटारा कर दें। काकाकी तरफसे कैसे परेशानी होगी, यह समझमें नहीं आता। काकाने अिस बार तो कोअी बातचीत नहीं की। सारा असंतोष मिट जाय तो अच्छा।

अनसूयाबहन[1] की ग्राण्टका निपटारा कर डालें। अुनके पास जाअिये और जो रकम चाहिये अुसका चेक दे दीजिये।

विट्ठलभाअी[2] के साथ फिरसे खूब बातें हुअीं, यह मणिबहन[3] या डाह्याभाअी[4] से कहिये। मैं मानता हूं कि विट्ठलभाअी अब चरखेका महत्त्व कुछ अधिक समझते हैं। मुझे यह जरूर लगता है कि अुनका सही क्षेत्र कौंसिल है। वे लोगोंमें पैठकर, अुनमें ओतप्रोत होकर सेवा नहीं कर सकते। अैसा नहीं है कि वे सेवा नहीं करना चाहते। परन्तु अिस चीजको अुन्होंने अपनेमें बढ़ाया नहीं है। कौंसिलमें जाकर काम करनेकी योग्यताको बढ़ाया है। मेरे खयालसे दोनोंके लिअे अलग-अलग गुण चाहिये। बम्बअीमें विट्ठलभाअीकी कोअी निन्दा करता हो, सो तो मैंने देखा ही नहीं।

मोहनदासके वन्देमातरम्

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल,
बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

---

१. अनसूयाबहन साराभाअी। अहमदाबादके मजदूर आन्दोलनकी संस्थापिका और मजदूर-संघकी अध्यक्षा। मजदूर-संघकी तरफसे चलनेवाली पाठशालाओंके लिअे ग्राण्ट देनेकी बात मालूम होती है।

२. स्व० माननीय विट्ठलभाअी पटेल। पूज्य बापूके बड़े भाअी।

३–४. मैं और मेरे भाअी।

३

(ता० ३०–८–'२१)[१]
सिलहट, मंगलवार

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। मैंने आज जो तार[२] दिया है, अुसकी नकल भी भेजता हूं। हममें जोर हो तो मैं तो यही कहूंगा कि वे[३] जब तक अहमदाबादमें रहें तब तक ही हड़ताल रखी जाय और गरीब लोगोंको जो सामान चाहिये, अुसके मिल सकनेका बन्दोबस्त किया जाय। अिसका परिणाम मार्शल लॉ (फौजी कानून) हो सकता है। अुसे हम बरदाश्त करें और मर जायं। परन्तु अैसा लगता है कि अितना तो हमसे नहीं हो सकेगा। अितनी शक्ति हममें नहीं आअी है। अिसलिअे जितना हो सके अुतना हम करें। यह बता दें कि हम अुनके साथका सम्बन्ध किस तरह बन्द कर सकते हैं। म्युनिसिपैलिटी जितना सम्बन्ध तोड़ सके अुतना तोड़े। अुन्हें कोअी सलाम न करे। जो विद्यार्थी सरकारी पाठशालाओंमें पढ़ते हैं, वे भी अुनके पाठशालामें आने पर न अुठें। हममें जोर हो तो अुनके दफ्तर पर पहरा लगाकर लोगोंको जानेसे रोका जा सकता है। अिसके अलावा भी हमारी नापसन्दगी सभ्यतापूर्वक बतानेके बहुतसे रास्ते सूझ जायेंगे। अुन्हें

---

१. जो तारीख (   ) अैसे कोष्ठकमें दी गअी है, वह डाककी मोहरकी तारीख है।

२. अिसके बादका पत्र देखिये।

३. प्रिन्स ऑफ वेल्स। अिस पत्रमें अुनके बहिष्कार-सम्बन्धी सूचनाअें हैं। वे नवम्बर मासमें हिन्दुस्तान देखने आये थे। कांग्रेसने अुनका बहिष्कार करनेका निश्चय किया था। १७ नवम्बरको जब वे बम्बअी बन्दरगाह पर अुतरे, तब बम्बअीमें दंगा-फसाद हुअे थे। अुस सम्बन्धमें गांधीजीने अुपवास किये थे। जिस बड़े शहरमें वे गये, वहीं अुनका सख्त बहिष्कार हुआ था। कुछ शहरोंमें लाठी-प्रहार भी हुआ था।

अपनाकर हमें अपनी स्थिति प्रगट करनी चाहिये। मेरी सलाह है कि अुनके बहिष्कारका सारा कार्यक्रम हम आजसे ही घोषित कर दें और लोगोंको भी शान्ति किन्तु दृढ़तासे काम लेनेकी' तालीम दें। वे प्रिन्स ऑफ वेल्सके नाते अहमदाबादमें रुआब न दिखा सकें, अितना करनेकी हममें ताकत होनी चाहिये।

अिससे ज्यादा यहां बैठा हुआ मैं नहीं कह सकता। अितना जरूर कहूंगा कि बूतेसे बाहर कुछ न करें। यह जरूरी है कि हम पीठ न दिखायें। हमारे बहिष्कारका आग्रह रखनेसे अशांति होनेकी संभावना हो, तो भी मेरी सूचनाओंका अमल मुल्तवी रखें।

आपने स्वागत-समिति[1]का अध्यक्ष-पद स्वीकार किया सो ठीक ही हुआ। जहां सेवाको ही धर्म माना है, वहां अैसी सम्मानकी अुपाधियां भी हमें गिरा नहीं सकतीं।

मोहनदासके वन्देमातरम्

४

सिलहट,
आसाम,
३०–८–'२१

आदरणीय वल्लभभाअीकी सेवामें,

आज आपको अिस प्रकार तार दिया है:

"Event coming, have Gujarat day's hartal, labourers joining after leave. Wednesday, Thursday Chitagong. Saturday Barisal. Sunday and after Calcutta."[2]

कल सबेरे खास ट्रेनमें सिलचरसे यहां पहुंचे। आज शामको ४ बजे यहांसे रवाना होकर चटगांव जायंगे। अिधरके लोग बिलकुल तालीम पाये हुअे नहीं मालूम होते। काम करनेवालोंका भी पूरा

१. अहमदाबादमें होनेवाली कांग्रेसकी।

२. अगर (प्रिन्स ऑफ वेल्स) आयें तो सारे गुजरातमें अेक दिनकी हड़ताल (रखी जाय)। मजदूर छुट्टी लेकर शामिल हों। बुधवार-गुरुवार चटगांव। शनिवार बारीसाल। रविवार और बादके दिन कलकत्ता।

अभाव दिखाओी देता है। अभी हड़तालवाले प्रदेश[1] में सफर करना बाकी है। कलकत्ता कब पहुंचेंगे, यह निश्चित नहीं कहा जा सकता, यद्यपि ४ तारीखकी शामको पहुंचनेकी आशा है।

यहां मारवाड़ी व्यापारियोंके हस्ताक्षर[2] थोड़े-बहुत हुअे जरूर हैं। परन्तु अिनमें से कितनों पर आधार रखा जा सकता है, यह तो आगे चलकर ही पता चलेगा।

अलीभाअियों[3] को पकड़नेकी बातें चल रही हैं, यह तो आपने देखा ही होगा।

विनीत
जमनादास[4]

भाओीश्री वल्लभभाओी पटेल,
बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

५

(५ सितम्बर, १९२१)
मौनवार
१४८, रस्सा रोड,
कलकत्ता

भाओीश्री वल्लभभाओी,

आपका पत्र मिला। मैं दर्शकों[5] के बारेमें 'यंग अिंडिया'[6] में लिखूंगा।

---

१. आसामके चायके बगीचोंमें मजदूरोंकी रोजीकी दरोंमें की गओी कमीके कारण मजदूर चायके बगीचे छोड़कर जाने लगे थे। बगीचोंके गोरे मालिक मजदूरोंको जानेसे रोकते थे। अिस सिलसिलेमें वहां बड़ी गड़बड़ पैदा हुओी थी। अुसी हड़तालका यहां अुल्लेख है।

२. विदेशी कपड़ेके बहिष्कारके लिअे।

३. स्व० मौलाना शौकतअली और स्व० मौलाना मोहम्मदअली।

४. स्व० जमनादास खुशालचन्द गांधी। गांधीजीके भतीजे। दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्समें अुनके साथ थे।

५. अुस साल अहमदाबादमें होनेवाली कांग्रेसके दर्शक। देखिये 'यंग अिंडिया', २२ सितम्बर, १९२१।

६. 'यंग अिंडिया' गांधीजीका अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र।

मेरा जी तो वहां आनेके लिअे तड़प ही रहा है। मगर महांसे छुट्टी नहीं मिल सकती। मद्राससे राजगोपालाचार्य[1]का तार आया है कि अुनका तार मिलनेके बाद ही मैं यहांसे रवाना होअूं। १२ तारीख तक मुझे यहां काम भी है।

बंगालमें स्वदेशीका काम शिथिल हुआ है। चरखे जरूर ठीक चले हैं। मगर सूतका वजन रखने और खादी पर ध्यान देनेका काम कम हुआ है।

अैसा लगता है कि अिस महीनेके लिअे कानून-भंग रुक सके तो अच्छा। दिल्लीकी शर्तके अनुसार भी जितना धरना दिया जा सके अुतना भले दिया जाय। जब हम कानून तोड़ें, तब जान हथेली पर लेकर ही तोड़ें, यह ज्यादा ठीक लगता है। अेक बार हमारी मंडलीके साथ मेरी चर्चा हो जाय, तो मुझे ज्यादा पता चलेगा। फिलहाल स्वदेशी पर — बहिष्कार और खादी-अुत्पत्ति अिन दोनों अंगों पर — खूब ध्यान दिया जाय तो अच्छा।

आपके पत्र परसे मान लेता हूं कि आजकल वहां (विद्यापीठमें) कोअी झगड़ा नहीं चलता।

अपनी तबीयत संभालें। दिसम्बर तक बहुत काम करना है। हिन्दुस्तानका चेहरा तो जरूर बदलेगा। सिंह होगा या सियार, यह तो अीश्वरके हाथ है या हमारे।

वाअिसरॉयके भाषण परसे मेरा मोह तो और भी कम हो गया है। युवराज[2] अगर राजनीतिक कामसे नहीं आ रहे हैं, तो

---

१. चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। तामिलनाड़में गांधीजीके मुख्य साथी। १९३७ में कांग्रेसने प्रांतोंमें मंत्रि-मंडल बनाये, तब मद्रास प्रांतके प्रधान मंत्री। १९४६-४७ की अन्तरिम केन्द्रीय सरकारमें अुद्योग और रसद-मंत्री। १९४७-४८ में पश्चिमी बंगालके गवर्नर। १९४८ में पहले भारतीय गवर्नर जनरल। जुलाअी १९५० से अक्तूबर १९५१ तक केन्द्रीय सरकारके गृहमंत्री। आजकल मद्रास राज्यके मुख्यमंत्री।

२. प्रिन्स ऑफ वेल्स।

किसलिअे आ रहे हैं और किसके खर्चसे? परन्तु अिसका हमें अभी विचार ही नहीं करना है।

मोहनदासके वन्देमातरम्

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल,
बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

६

(१६ सितम्बर, १९२४)
भा० व० ३

भाअीश्री वल्लभभाअी,

मेरा निश्चय तो अिस पत्रके पहुंचनेसे पहले ही आप जान लेंगे। आप सिंह हैं। अिसलिअे घबरायें नहीं। अपना सोचा हुआ सब काम ज्यादा जोरोंसे करते रहिये। किसीको घबराने न दें। मैं अुपवास[1] यहीं पूरे करना चाहता हूं। मुझे डर है कि मणिबहन खूब घबरायेंगी। अुसे समझाअिये। मैं अलग पत्र नहीं लिख रहा हूं।

बापू

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल,
बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

७

२६ सितम्बर, १९२५
शनिवार

भाअी वल्लभभाअी,

२० तारीखको बम्बअी पहुंचूंगा। २१ को आप भी कच्छ आ ही रहे हैं न? अिसलिअे आप तो २० को ही बम्बअी पहुंच जायंगे। मणिबहनके बारेमें देवधर[2]का तार आया है। वह अुसके पास भेजा

---

१. हिन्दू मुस्लिम अेकताके लिअे ता० १७–९–'२४ से ७–१०–'२४ तक दिल्लीमें गांधीजी द्वारा किये गये २१ दिनके अुपवास।

२. भारत-सेवक-समाजवाले श्री देवधर। वे पूनाके सेवासदनकी देखभाल करते थे। गांधीजीने मुझे सेवासदनमें रखनेका अिन्तजाम किया था। तदनुसार मैं वहां १ मास रही थी।

हैं। दिसम्बरमें खुशीसे लेनेको कहते हैं। डाह्याभाअी[1] को मिलमें तो हम न रखें। और बिड़ला[2] के यहां रखनेमें ज्यादातर मिलका ही काम रहनेकी संभावना है। अिस बारेमें अधिक बात मिलेंगे तब करेंगे। जमनालालजी[3] के साथ मैं अिसका विचार कर रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

शेष बातें लिखनेका मुझे समय नहीं मिलेगा।

भाअी वल्लभभाअी पटेल,
बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

८

(२३ जनवरी, १९२७)
रविवार, रेलमें

भाअीश्री वल्लभभाअी,

भाअी अमृतलाल ठक्कर[4] शायद काठियावाड़ राजनीतिक परिषद[5] के अध्यक्ष बननेसे अिनकार करेंगे। राजनीतिके बारेमें कुछ भी कहे बिना राजनीतिक परिषद नाम ही अुन्हें अटपटा लगता है। मेरे खयालसे देशी राज्योंकी परिषदोंमें राजनीतिको अभी कोअी स्थान नहीं है। वहांके लोगोंने मिलकर काम करना सीखा ही नहीं है। अिसलिअे मुझे तो वहांका मध्यबिन्दु चरखा ही लगता है। अगर अमृतलाल

---

१. कांग्रेसने खादीको अपनाया था, अिसलिअे असहयोगी होनेके नाते डाह्याभाअीको कपड़ेकी मिलमें रखना ठीक नहीं लगा।

२. श्री घनश्यामदास बिड़ला। प्रसिद्ध अुद्योगपति। बापूके अेक भक्त। हरिजन-सेवक-संघ स्थापित हुआ, तबसे अुसके अध्यक्ष। अुस समय केन्द्रीय विधान-सभाके सदस्य।

३. स्व० जमनालाल बजाज। मध्यप्रदेशमें गांधीजीके मुख्य साथी, चरखा संघके अध्यक्ष, कांग्रेसके खजांची १९२१-४२।

४. स्व० श्री अमृतलाल वि० ठक्कर (ठक्करबापा)। भारत-सेवक-समाजके सदस्य। हरिजन-सेवक-संघके बरसों तक मंत्री। कस्तूरबा स्मारक-निधिके ट्रस्टी और मंत्री। गांधी स्मारक-निधिके अेक ट्रस्टी।

५. १९२८ में पोरबन्दरमें हुआ चौथा अधिवेशन।

अिनकार करें, तो आप अध्यक्ष बन जायेंगे न? मैंने मान लिया है कि आपके विचार मेरे विचारोंसे मिलते हैं। परन्तु यदि अिस मामलेमें आपके विचार मुझसे भिन्न हों, तो आप जरूर अिनकार कर सकते हैं। कामका बोझ सिर पर आ पड़नेके डरसे अिनकार न करें। अिसे तो हम अुठा लेंगे। जवाबमें मुझे तार दीजिये। यह पत्र आपको गुरुवार मिलेगा। अिसका जवाब आप Jamooee (Bihar) भेजें। वहां हम दिनमें कुछ समय ठहरेंगे। वैसे अुस दिन ३ गांव निपटाने हैं। शुक्रवारके दिन आरा रहेंगे। रविवारको पटना पहुंचेंगे। सोमवारकी रातको पटना छोड़ेंगे और मंगलवारको कलकत्ता होकर गोंदिया जायंगे। बुधवारको गोंदियामें।

मणिलाल[1] कहते थे कि मणिबहनका भीतर ही भीतर विवाह करनेका अिरादा है। मैंने खूब जांच कर ली है। अभी तो यही निश्चय है कि वह विवाह नहीं करेगी। हम अुसे प्रोत्साहन दें। आप अुसकी चिन्ता छोड़ ही दीजिये। अुसकी चिंता मैं कर ही रहा हूं और आगे भी करूंगा। अुसे कराची भेजनेकी तजवीजमें हूं। वहां जानेको वह राजी है। वहांकी आबहवा अुसे अनुकूल आयेगी और वह अच्छा काम कर सकेगी।

और सब बातें तो महादेव[2] या देवदास[3] लिखें तो लिखें। मेरी तबीयत ठीक रहती है।

बापू

श्रीयुत वल्लभभाअी पटेल,
कचरापट्टी[4] के अध्यक्ष महोदय,
खमासा गेट, अहमदाबाद

---

१. स्व० मणिलाल कोठारी। बहुत वर्ष तक गुजरात प्रांतीय समितिके मंत्री थे।

२. स्व० महादेव हरिभाअी देसाअी। बापूजीके मंत्री। १५ अगस्त, १९४२ को आगाखां महलके कारावासमें हृदयकी गति बन्द हो जानेसे अचानक अुनका अवसान हो गया।

३. पूज्य बापूजीके सबसे छोटे पुत्र।

४. यानी म्युनिसिपैलिटी।

९

सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती,
३–६–'२८

भाओीश्री ५ वल्लभभाओी,

अिसके साथ गवर्नर[1]को लिखे जानेवाले जवाबका मसौदा[2] भेज रहा हूं। लड़ाओी ठीक जम रही है। ओीश्वर आपको दीर्घायु करे। मेरी जरूरत पड़े तब लिखिये या तार दीजिये। आपको पकड़ेंगे, अैसी बातें आती ही रहती हैं। पकड़े गये तो कुछ आराम मिल जायगा। और न पकड़े गये तो हार माननेकी तो हमें सौगन्द ही है।

बापू

वल्लभभाओी पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली

१०

सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती,
२४–७–'२८

भाओीश्री वल्लभभाओी,

मेरे खयालसे तो हमें गवर्नरके भाषणका अत्यंत संक्षिप्त अुत्तर देना चाहिये। अुसमें लोगोंको भ्रममें डालनेका भारी प्रयत्न किया गया है। अैसी चीजका लम्बा जवाब देकर हम नुकसान अुठायेंगे, यह समझकर छोटा ही जवाब भेजता हूं। 'यंग अिंडिया' में मैंने कल लेख[3] लिखा। भाषण परसे अुसे सुधारनेकी अिच्छा नहीं हुओी और अधिक लिखनेका विचार भी छोड़ दिया। आप वहां जो कुछ कहें, अुतना ही अभी

---

१. अुस समयके बम्बओीके गवर्नर सर लेस्ली विल्सन।

२. १९२८ के बारडोली सत्याग्रहके समझौतेके सम्बन्धमें जो बातचीत चल रही थी, अुसके सिलसिलेमें।

३. देखिये 'यंग अिंडिया', भाग १०, अंक ३०, ता० २६–७–'२८।

काफी समझ लें। अगले सप्ताह तो फिर है ही। मगर अेक विचार आज मनमें रह रहकर अुठा करता है। ये १४ दिन बड़े नाजुक हैं। अिसलिअे हमारी तरफसे अेक भी शब्द अैसा न निकले, जिससे समझौता होना ही हो तो अुसमें कोअी विघ्न आये। अिसलिअे मैं मानता हूं कि अगर फिलहाल वहां आपको कोअी काम न हो, तो थोड़े दिन यहां आकर रह जाअिये; या आपको ठीक लगे और आप चाहें, तो मैं वहां आकर डेरा डालूं। आपको गिरफ्तार किये बिना तो अब काम चलेगा ही नहीं, अिसलिअे शायद मेरा पहलेसे ही वहां आकर बैठ जाना आवश्यक हो। अिन दोनोंमें से अेक भी कदम अुठाना जरूरी है या नहीं, अिसका निश्चय सब बातोंकी जांच करके आपको ही करना है। अिसमें जिम्मेदार मैं नहीं, आप हैं; क्योंकि वहांकी वस्तुस्थिति मैं नहीं समझ सकता।

बापू

वल्लभभाअी पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली

११

सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती,
३१-७-'२८

भाअीश्री ५ वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिल गया। आज तो मुझे बुलानेके तारकी आशा रखी थी। मैंने अपनी सब तैयारी कर ली थी।

भाअी नरीमान[1] और हरिभाअी[2] यहां आ रहे हैं, अिसलिअे

१. स्व० खुरशेद नरीमान। अुस समय बम्बअी विधान-सभाके सदस्य। वे कअी वर्ष तक बम्बअी प्रांतीय समितिके अध्यक्ष रहे। बम्बअी कारपोरेशनके अध्यक्ष (मेयर) भी रह चुके थे।

२. स्व० दीवान बहादुर हरिलाल देसाअीभाअी देसाअी। अुस समय बम्बअी सरकारकी कार्यकारिणी कौंसिलके सदस्य। अुनके हाथमें स्थानीय स्वराज्यका विभाग था।

अभी ज्यादा नही लिखता। हमारा रास्ता तो सीधा है। पटवारीको नही छोड़ेंगे, जमीन नही छोड़ेंगे। जांच-समितिकी जाच पूरी होनी चाहिये। अुस पर अंकुश रखा जाय, तो वह हमें बरदाश्त नहीं होगा। अगर आपको ठीक लगे तो के[1] और डेविस[2] भले ही रहें। मुझे कब आना चाहिये, अिसके बारेमें तार दें।

मणिबहन मिल गअी। बहुत सूख गअी है[3]। अुसे भेज दिया यह अच्छा किया। अभी तो शहरमें ही रहेगी। पांच तारीखको आनेकी बातें कर रही है।

भाअी नरीमान और हरिभाअी मिल गये हैं। आपको विधान-सभाके सदस्य बीचमें पड़कर सार्वजनिक रूपसे बुलायें, तो अुनके आमंत्रण पर जाना मुझे अिष्ट प्रतीत होता है। शर्तें तो वही हैं, जो हमने बनाअी हैं।

बापू

१२

लंदन,
२६–१०–'३१

भाअी वल्लभभाअी,

पत्र लिखनेका समय ही नहीं रहता। आज भी फेडरल कमेटी[4] में बैठा लिख रहा हूं। आपको नाकका अिलाज करा ही लेना चाहिये।

१–२. दोनों अंग्रेज आअी० सी० अेस० अधिकारी। बारडोली जांच-समितिके सिलसिलेमें नियुक्त किये जानेवाले अधिकारियोंकी हैसियतसे अुनके नाम लिये जा रहे थे। बादमें मि० मेक्सवेल और मि० ब्रूमफील्ड नियुक्त किये गये।

३. बारडोली सत्याग्रहकी लड़ाअीके समय वहांके रानीपरज प्रदेशके गोलण नामक गांवमें मुझे काम करनेके लिअे रखा गया था। वहां मुझे पीलिया हो गया, अिसलिअे वापस बुलाकर अिलाजके लिअे अहमदाबाद भेज दिया गया था।

४. १९३१ की गोलमेज परिषदमें यह विचार हो रहा था कि हिन्दुस्तानका विधान संघीय (फेडरल) ढंगका होना चाहिये। अुसके लिअे नियुक्त कमेटी।

यहां मेरा सब काम परिषद[1] के बाहर ही होता है। मैं मानता हूं कि आज अिसका अुपयोग थोड़ा होगा, परन्तु बादमें खूब होगा। यहांसे कुछ लेकर आनेकी आशा कम ही है। परन्तु नाक कटाकर नहीं आअूंगा। बहुतसे जिम्मेदार आदमियोंसे मिल रहा हूं।

संभव है नवम्बरके मध्यमें परिषदका काम पूरा हो जाय। लगभग सारे यूरोपसे निमंत्रण मिले हैं। अिन देशोंमें जानेकी हार्दिक अिच्छा है। जानेसे लाभ ही होगा। सबसे मिलकर आपके निर्णयोंका तार दें। अगर सफरकी जरूरत समझें, तो मुझे अेक महीना अधिक लगेगा, यह जान लें। अिसलिअे मैं वहां जनवरीमें ही पहुंच सकूंगा। (अितना लिखनेके बाद मैं कुर्सी पर ही अूंघने लगा। आप देख सकते हैं कि कलम नहीं चल रही है।) अगर अितना वक्त दे सकें तो दे दें। वहां तो आपको जो करना हो कीजिये। जवाहरलाल[2] के तारका जवाब तो आपने देख ही लिया होगा। यहां कुछ भी हो, मेरा यह निश्चित मत है कि वहां जब किसी भी प्रश्न पर आपको लड़ लेना जरूरी लगे तब जरूर लड़ लें। वहांके स्थानीय प्रश्नोंके बारेमें अभी यहां कुछ भी हो सकेगा, अैसा मुझे नहीं दीखता। सोचा था कि बंगालके नजरबन्दोंके लिअे कुछ हो सकेगा, मगर मुझे अैसा अवसर ही नहीं मिला। चुनाव[3] के बाद कुछ हो जाय तो कह नहीं सकता।

मैं देख रहा हूं कि गुजरातमें सत्ताधीश अुलटा ही काम कर रहे हैं। अिन सब फैसलोंके खिलाफ जरूर लड़ें। रासके बारेमें जो पत्र आया है, अुसे मैं अुद्धततासे भरा हुआ मानता हूं।[4] अंतमें तो हम अिन सबसे निपट ही लेंगे।

अब तो माना जायगा कि मैंने बहुत लिख डाला।

बापू

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
श्रीराम मेन्शन,
सैंडहर्स्ट रोड, बम्बअी

१. गोलमेज परिषद।
२. पं० जवाहरलाल नेहरू। आजकल भारतके प्रधान मंत्री।
३. ब्रिटिश पार्लियामेंटका चुनाव।
४. जब्त हुअी जमीनें वापस देनेके बारेमें।

१३

(तार)

बारडोली (हिन्दुस्तान)

सरदार वल्लभभाअी,

बंगालके जुल्मों (और) दूसरी बातोंसे मुझे घबराहट होती है। यहां लाचारीका अनुभव कर रहा हूं। फिर भी लगता है कि यहां हाजिर रहना मेरे लिअे आवश्यक है। बादमें यूरोपकी यात्राको भी आवश्यक मानता हूं। अिसलिअे जनवरीके मध्यसे पहले देश पहुंचना संभव नहीं है। सोचकर अपनी राय भेजें।

३१–१०–'३१

बापू

१४

'पर्णकुटी',[१]
पूना,
९–५–'३३

सरदारजी,

रात अच्छी बीती है। यरवडासे यहां हवा और सर्दी बहुत ज्यादा कही जायगी। बिलकुल खुलेमें ही सोया था। काम जरूर बढ़ा है। दो-अेक दिन काम करना पड़ेगा। फिर तो काम न करनेका ही निश्चय है। अभी कोअी खास कमजोरी नहीं लगती।

फिक्र बिलकुल न करें।

आपसे मैंने माताका प्यार अनुभव किया।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी,
यरवडा जेल,
पूना

---

१. गांधीजीने हरिजन आन्दोलनके सिलसिलेमें ८ मअी, १९३३ को आत्मशुद्धिके लिअे २१ दिनके अुपवास शुरू किये थे। अुसी दिन अुन्हें यरवडा जेलसे छोड़ दिया गया। दूसरे दिन अुन्होंने लेडी विट्ठलदास ठाकरसीके बंगलेसे, जिसका नाम 'पर्णकुटी' है, यह पत्र लिखा था। वहां बापूजी २१ दिनके अुपवासके समय और बादमें कुछ समय रहे थे। अिसके बाद भी कअी बार वहां ठहरे थे।

१५

'पर्णकुटी',
पूना,
रविवार[1]
चार बजे मौनमें

भाअी वल्लभभाअी,

आपको पिछला पत्र लिखनेके बाद तुरन्त ही हाथसे पत्र लिखना बन्द करना पड़ा था। मैंने देखा कि मुझमें जरूरी शक्ति नहीं आअी थी। अब शक्ति आ गअी है या नहीं, यह आजमानेको जी कर रहा है। यह आजमाअिश तो आपको पत्र लिखकर ही की जा सकती है न?

डॉक्टरोंकी रिपोर्ट और मुद्दतसे घबराअिये नहीं। 'होअिहि सोअि जो राम रचि राखा'। मैंने माना था कि तीन सप्ताहमें चलने-फिरने लगूंगा। मगर यह खयाल गलत निकला। फिर भी चिन्ताका कोअी कारण ही नहीं। विलंब हो रहा है, अितनी ही बात है। सच पूछें तो चौंसठ वर्षकी अुम्रमें दूसरा हो भी क्या सकता है? यह निश्चित समझिये कि मैं सकुशल हूं। प्रेमलीलाबहन[2]के प्रेम-सागरमें नहा रहा हूं। अुनके घरको मैंने धर्मशाला बना दिया है। देवदास और लक्ष्मीका विवाह[3] अुन्होंने कराया और वह भी कितने प्रेमसे! अीश्वरकी अपार कृपा है। क्या हम अुसके योग्य हैं? वही हमें योग्य बनावे।

आपकी नाकका क्या हुआ?[4]

---

१. यह पत्र जुलाअी १९३३ का लिखा होना चाहिये।

२. लेडी प्रेमलीलाबहन ठाकरसी।

३. बापूजीके सबसे छोटे पुत्र देवदासभाअीका विवाह श्री राजगोपालाचार्यकी लड़की लक्ष्मीबहनके साथ १६–६–'३३ को 'पर्णकुटी' में हुआ था।

४. ४ जनवरी, १९३२ को बापूजी और बापू १८१८ के रेग्युलेशन २७ के अनुसार गिरफ्तार किये गये थे। अुसके अेक दिन पहले ही बापूने नाकमें कोटेरीअेशन (नाकमें बढ़ी हुअी हड्डीको बिजलीसे जला डालनेकी

जोशी[1] से कहिये कि रमा[2] के ऑपरेशनकी बात अभी मैंने लिखकर मुल्तवी करा दी है। डॉ० पटेल[3] ने ही बरसात गिरे और ठंडक हो जाय तब तक ठहरनेको कहा है। वैसे कर डालनेका आग्रह अुन्हींका है और वे हिम्मतके साथ कहते हैं कि अिसमें कोअी खतरा

क्रिया) कराया था। अैसी हालतमें कड़ाकेकी ठंडमें खुली मोटरमें अुन्हें बम्बअीसे पूना ले गये, अिससे अुन्हें जरूर नुकसान हुआ होगा। वे जब तक यरवडा जेलमें रहे, तब तक नाकसे पानी गिरने और नथुने बन्द हो जानेकी तकलीफ बार-बार होती रही। अिस कारण कभी-कभी तो अुन्हें सारी रात बिस्तरमें बैठे रहना पड़ता था। जब डॉक्टरोंके साधारण अिलाजसे कुछ नहीं हुआ, तो बापूने अपने डॉक्टरोंसे जांच करानेकी मांग की। अिस पर सरकारने डॉ० देशमुख और डॉ० जे० अेम० दामाणी द्वारा अुनकी परीक्षा करवाने दी। अुन दोनोंने सलाह दी कि अिनकी नाकमें deflected septum का तुरन्त ऑपरेशन करनेकी जरूरत है। अिस मामलेमें पहले तो सरकारने शंका खड़ी की, पर फिर अैसी अिजाजत दी कि आपको अपने डॉक्टरसे कराना हो तो भी पूनाके सासून अस्पतालमें ही कराना पड़ेगा और अिसकी तमाम जिम्मेदारी आपके सर्जनके सिर होगी। बापूकी नाककी हालत देखते हुअे अुनके डॉक्टरोंकी यह राय थी कि ऑपरेशन दो या तीन बारमें करना पड़ेगा और तीनसे छह सप्ताह तक अुन्हें डॉक्टरोंकी सतत देखरेखमें रहना पड़ेगा। बम्बअीके अितने नामांकित और भारी प्रैक्टिसवाले डॉक्टरोंको अितने अधिक समय तक पूना आकर रहना पड़ेगा और अितने पर भी अुन्हें जैसी चाहिये वैसी सुविधा मिलनेमें शंका ही है, यह सब सोचकर बापूने ऑपरेशन करानेसे अिनकार कर दिया; और यह सोचकर कि सरकारको जब जरूरत महसूस होगी, तब वह खुद ही जो कुछ करना होगा करायेगी, सरकार पर जिम्मेदारी डाल दी। बादमें जेलमें ऑपरेशन नहीं कराया गया।

१–२. साबरमती आश्रमके श्री छगनलाल जोशी। अुनकी पत्नी रमाबहनका ऑपरेशन करानेकी बापू बहुत चिन्ता रखते थे।

३. बम्बअीके प्रसिद्ध डॉक्टर स्व० पी० टी० पटेल।

नहीं, और वह आवश्यक है। छगनलाल चिन्ता न करे। यह बात अेक क्षणके लिअे भी मेरे ध्यानसे बाहर नहीं रही।

अितना लिखा है, परन्तु थकावट नहीं लगती। फिर भी मीठे पेड़की जड़ नहीं अुखाडूंगा और आज अिसके सिवा ओर पत्र नहीं लिखूंगा।

प्रभावती[1] यहां आ गअी है, यह तो आपको लिखा जा चुका होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
यरवदा जेल,
पूना

१६

For Sardar Vallabhbhai by kind favour of Supt.[2]

पूना,
२४–८–'३३

भाअी वल्लभभाअी,

मैं खुद न लिख सकूं अैसी मेरी तबीयत नहीं है। मगर आजके दिन यों ही चला रहा हूं। आपको सब कुछ पढ़नेको मिला होगा, अिसलिअे जानते ही होंगे। यह सब स्वप्नवत्[3] हो गया है। मगर अीश्वर जैसे रखेगा वैसे रहेंगे। हमें तो अेक-अेक कदम अुठा कर

१. प्रभावती बहन; बिहारके सुप्रसिद्ध नेता स्व० बाबू ब्रजकिशोरकी पुत्री और श्री जयप्रकाशनारायणकी पत्नी।

२. पू० बापू नासिक जेलमें थे, अुन दिनों पूज्य बापूजी अुनके नाम लिखे गये २४–८–'३३ से ११–७–'३४ तकके पत्रोंमें अिसी तरह लिखा करते थे।

३. ता० ९-५-'३३ को बापूजीने २१ दिनके अुपवास शुरू किये और अुन्हें छोड़ दिया गया। तब अुन्होंने कांग्रेसके अध्यक्षसे प्रार्थना करके ६ सप्ताह तक सविनय कानून भंगकी लड़ाअी मुल्तवी करा ली थी। बादमें पूनामें राष्ट्रीय कार्यकर्ताओंका अेक अवैध सम्मेलन बुलाकर लड़ाअीको व्यक्तिगत सविनय भंगका रूप देनेका फैसला किया गया।

चलना है। अिसलिअे चिन्ता किस बातकी? वैसे अिस बार यह नहीं लगता कि मार्ग जल्दीसे सूझ जायगा। मै कह सकता हूं कि यरवडा मंदिरमें तो मैं आपकी माला जपता था। अिस वियोगके बारेमें सोचा ही नहीं था। रोज अनेक अवसरो पर हम आपको बहुत याद करते थे। आपके हुक्मोंका अभाव खटकता था।

जब किसान लडाअीके कारण बेघर हो रहे थे, अुस वक्त आश्रमवासी बेरोकटोक आश्रममें रह सकते थे। यह ठीक न लगनेसे बापूजीने आश्रमको तोड़ डालनेका प्रस्ताव आश्रमवासियोंसे पास करा लिया और यह तय किया गया कि जिन आश्रमवासियोंको लड़ाअीमें शामिल होना हो, वे १-८-'३३को पू० बापूजीके साथ पैदल कूच करके रास गांव जायं। ३१-७-'३३ को अहमदाबाद शहरमें पू० बापूजी और महादेवभाअीको अुनके ठहरनेकी जगहसे पकड़ लिया गया और २-८-'३३ को यरवडा जेलमें लाया गया। पहली अगस्तको पू० बापूको यरवडा जेलसे नासिक जेलमें ले जाया गया। यरवडा पहुंचकर बापूजीने बापूको न देखा तो अुन्हें भारी चोट लगी। बापूजी और महादेवभाअीको अेक दिनके लिअे पैरोल पर छोड़कर पैरोलका भंग करनेके लिअे अेक सालकी सजा दी गअी। पहले हरिजन आन्दोलनके सिलसिलेमें यरवडासे 'हरिजन' पत्र चलाने और मुलाकातें करनेकी अुन्हें छूट थी। परन्तु अब वे सजा पाये हुअे कैदी थे, अिसलिअे कअी पाबन्दियां अैसी लगा दी गअीं जिनका पालन करके हरिजन आन्दोलन नहीं चलाया जा सकता था। अिसलिअे १६ अगस्तको बापूजीने काफी सुविधायें न मिलने तकके लिअे अुपवास शुरू कर दिया। २० को अुन्हें सासून अस्पताल ले जाया गया और २३ को वहांसे छोड़ दिया गया। यह पत्र अुसके दूसरे दिन 'पर्णकुटी' से लिखा हुआ है। "यरवडा मंदिरमें तो मैं आपकी माला जपता था", ये शब्द बापूको बापूजीसे अलग कर दिये जानेके संबंधमें है। 'भर्तृहरि नाटक' की अेक लकीर याद करके और बापूको स्मरण करके बापूजी यरवडा जेलमें अकसर बोल अुठते थे: 'अे रे जखम जोगे नहीं मटे.' (जोगी बन जानेसे दिलका घाव नहीं मिटता।)

अच्छीसे अच्छी बोतलें[1] देखकर भेजी थीं। वे सही-सलामत पहुंची होंगी। दूसरा सामान अलग पैक किया था[2]। और कोओी पुस्तकें या चीजें चाहियें तो लिखें। मेरे साथ मथुरादास[3] है। चंद्रशंकर,[4] बा, मीराबहन,[5] नायर[6] रात-दिन साथ रहते हैं। ब्रजकृष्ण[7] सारा दिन यहां बिताते हैं। आज गणेश चतुर्थी है, अिसलिअे आनन्द भी है। काका यहीं हैं। जमनालालका अभी तार आया है कि सेवाके लिअे छोटेलाल[8] को भेजा है। मगर मुझमें तो बड़ी तेजीसे शक्ति आ जायगी। अपने आप बिस्तरमें बैठ जानेमें कठिनाअी नहीं होती। आज काफी फल खाये हैं।

---

१. यरवडा जेलमें पूज्य बापूजी और पूज्य बापू जब साथ थे, अुन दिनों शहद वगैराकी जमा हुअी खाली बोतलोंमें से।

२. पूज्य बापूको यरवडासे नासिक ले गये, तब जेलका तबादला किया जा रहा है यह न कहकर अैसा कहा था कि नाककी चिकित्साके लिअे ले जा रहे हैं। अिसलिअे पूज्य बापूने अपना सारा सामान यरवडा जेलमें ही रहने दिया था। अुसे पूज्य बापूजीने बादमें भेजा।

३. स्व० मथुरादास त्रिकमजी, बापूजीके भानजे (बहनकी लड़कीके लड़के)। परन्तु पारिवारिक संबंधसे साथी कार्यकर्ताका संबंध ज्यादा था। किसी समय बम्बअी कार्पोरेशनके मेयर रह चुके थे।

४. श्री चन्द्रशंकर शुक्ल। काकासाहबसे आकर्षित होकर आश्रममें आये। बादमें विद्यापीठमें भी रहे। यह अच्छे लेखक हैं। १९३३–३४ की हरिजन-यात्रामें बापूजीके साथ थे और अंग्रेजी 'हरिजन' में यात्राकी डायरी लिखते थे। बादमें गुजराती 'हरिजनबंधु' निकाला गया, तब अुसके संपादक हो गये थे।

५. मिस स्लेड। अिनके पिता अिंग्लैंडकी जल-सेनाके बड़े अधिकारी थे। बापूजीकी पुस्तकें पढ़नेसे अुनके प्रति आकर्षित होकर ये हिन्दुस्तानमें आअी और अपने जीवनमें भारी परिवर्तन कर डाला। बापूजीने अुनका नाम मीराबहन रखा।

६. अुस समयका बापूजीका टाअिपिस्ट।

७. दिल्लीके श्री ब्रजकृष्ण चांदीवाला।

८. स्व० छोटेलाल जैन। अेक आश्रमवासी।

हरी भाजीका रस भी पिया है। असलिअे शक्ति काफी है। डॉक्टर गिल्डर[1] और डॉक्टर पटेल[2] शरीरकी परीक्षा कर गये हैं। अुन्हें कोअी दोष नहीं दिखा, अिसलिअे मेरे बारेमें जरा भी चिन्ता न करें। आपकी नाकका क्या हुआ? अुसकी क्या हालत है? जो कुछ लिखा जा सके लिखिये। अभी थोड़े दिन तो पर्णकुटीमें ही हूं, बादमें कुछ दिन बम्बअी रहनेका विचार है। आगेकी राम जाने।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
नासिक

१७

पूनासे बम्बअी जाते हुअे रेलमें
१५-९-'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र रेलमें मिला और यह जवाब अिसी समय रेलमें लिख रहा हूं। बम्बअी जा रहा हूं। बुधवारको अहमदाबाद जाअूंगा। गुरुवारको दो क्रियाअें[3] करनी हैं। यह तो आपने पढ़ा ही होगा। २३ तारीखको वर्धा पहुंचनेकी आशा है। अुसके बादका निश्चय वहां होगा।

मेरे स्वास्थ्यकी बिलकुल चिन्ता न करें। मैं सावधानी रखकर ही चल रहा हूं और चलूंगा। दो पौण्ड दूध, शाक और फल लेता हूं। वजन १०० पौण्ड है। रोज मालिश होती है। डॉ० दिनशा[4] खूब देखरेख रखते हैं, बम्बअी भी आयेंगे। प्रेमलीलाबहनने खूब प्रेम

१. बंबअीके हृदय-रोगके निष्णात डॉक्टर अेम० डी० डी० गिल्डर। १९५२ के आम चुनावोंके पहले बम्बअी सरकारके स्वास्थ्य-मंत्री।

२. स्व० डॉक्टर पी० टी० पटेल।

३. सेठ माणेकलाल जेठाभाअी पुस्तकालयके मकानके शिलान्यासकी क्रिया और सर चिनुभाअी माधवलालकी मूर्तिकी अुद्घाटन-क्रिया।

४. डॉ० दिनशा मेहता। पूनामें अिनका प्राकृतिक चिकित्साका अस्पताल है। पू० बापूजीके यरवडा जेलके अुपवासके दिनोंमें अुन्होंने बापूजीकी खूब सेवा की थी। बादमें अुनका परिचय बढ़ता गया।

बरसाया। पर्णकुटी घर जैसी हो गयी है। आपने शहद जारी रखा है, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। आपके लिअे शहद भेजनेको अुनसे कहूं? वे कल बम्बअी आयेंगी। समय-समय पर वहां जाती हैं। बुआजी[1] सारे समय साथ थीं। ये अेक अजीब मिश्रण हैं। अिनका प्रेम तो है ही। परन्तु दिक्कतें भी पैदा करता है। जवाहरलालका स्वास्थ्य खूब अच्छा है। 'यथा नाम तथा: गुण:' को अभी तक चरितार्थ कर रहे हैं। अब लखनअू जायंगे। पर्णकुटीमें ही ठहरे थे। साथमें अुपाध्याय[2] थे। मंजरअली[3] और प्रोफेसर[4] तो थे ही। प्रोफेसरको बुखार आ गया था। कोअी चिंताकी बात नहीं। अेण्डूज[5] शान्तिके लिअे दो दिन पूना रह गये। देवधरका शरीर बहुत सूख गया है। अुन्हें तबीयतके बारेमें पत्र लिखें। शास्त्री[6] फिर अच्छे होकर पूना आ गये हैं। बहुत करके चन्द्रशंकर मेरे साथ दौरा करेंगे। अुनका शरीर ही अिसमें बाधक है। मथुरादास तो साथ हैं ही। वे वर्धा आयेंगे या

१. श्रीमती सरोजिनी नायडू। प्रख्यात कवि, देशभक्त और सुमधुर वक्ता। कांग्रेसकी अध्यक्षा भी रह चुकी थीं। स्वराज्यमें अुत्तर प्रदेशकी गवर्नर। ता० २–३–'४९ को अुनका देहान्त हुआ।

२. जवाहरलालजीके निजी मंत्री।

३. श्री मंजरअली सोख्ता। युक्त प्रांतके अेक मुसलमान नेता।

४. आचार्य जीवतराम कृपलानी। वे बिहारके मुजफ्फरपुर कालेजमें अध्यापक थे और चंपारनके मामलेमें बापूजी बिहार गये तब कालेज छोड़कर अुनके साथ हो गये थे। गुजरात विद्यापीठके दूसरे आचार्य। बारह वर्ष तक कांग्रेस महासमितिके मंत्री रहे। अुसके बाद अध्यक्ष हुअे। अब कांग्रेस छोड़ दी है।

५. स्व० दीनबन्धु सी० अेफ० अेण्डूज। वे ओसाओी मिशनरी थे। दिल्लीके सेण्ट स्टीवन्स कालेजके प्रोफेसर थे। बापूजी तथा कविवर टागोरसे परिचय होनेके बाद मिशन छोड़ दिया था। हिन्दुस्तानके गरीबोंकी अुन्होंने खूब सेवा की है।

६. अंग्रेजी 'हरिजन' साप्ताहिकका शुरूमें संपादन करनेवाले अेक सज्जन।

नहीं, यह तय नहीं है। बहुत संभव है वहां तक आयेंगे। मीराबहन साथ ही हैं। वे अच्छी रहती हैं। प्रभावती भी अभी तो साथ ही है। महादेवका लम्बा पत्र आया था। अुन्हें ठीक कह सकते हैं। पढ़ते हैं और कातते हैं। पन्नालाल[1] पूना थे। अब बम्बअी जायेंगे। काका भी दो-तीन दिनमें बम्बअी आयेंगे। बा अच्छी हैं। दांत ठीक करा लें। संस्कृतकी पढ़ाअी चल रही है? किसी भी प्रकारकी चिन्ता न करें। मणिको छूटने पर आपसे मिलनेके बाद मैं जहां रहूं वहां मुझसे मिल जानेके लिअे लिखा है। कमला नेहरू[2] को हृदयकी बीमारी रहती है। वे लखनअूमें हैं।

साथ मिले तो क्या और न मिले तो क्या?[3] जिसे भगवानके साथका भान है, अुसे और किसीके साथकी जरूरत ही क्यों हो? परन्तु आपने जो लिखा है वह ठीक ही है। और यही बात मुलाकातोंके बारेमें है।

घनश्यामदास (बिड़ला) और ठक्करबापाके साथ बैठकर हरिजन कार्यके लिअे दौरा करनेका कार्यक्रम तैयार करना है।

आनन्दी[4] अच्छी रहती है। नरहरिके[5] बालक बीमार रहते हैं। अुनकी देखभाल अच्छी होती है। बाबला[6] अपनी मौसीके पास गया है। अुसने रोकर राज लिया। निर्मला[7] अच्छी है। अिसी तरह

---

१. श्री पन्नालाल झवेरी। अेक पुराने आश्रमवासी।

२. पं० जवाहरलालकी पत्नी। २८–२–'३६ को स्विटजरलैण्डके लोसां स्थान पर अुनका देहान्त हुआ।

३. नासिक जेलमें पू० बापूको पहले अकेला रखा था, अिसलिअे साथीके बारेमें सरकारको लिखा था।

४. आश्रमके श्री लक्ष्मीदास आसरकी लड़की।

५. आश्रमके श्री नरहरि परीख।

६. स्व० महादेवभाअीका पुत्र नारायण। बापूजीने १ अगस्त, १९३३ को जब आश्रम तोड़ दिया, तब अिन बच्चोंको अनसूयाबहनके यहां हरिजन छात्रालयमें रखा था।

७. स्व० महादेवभाअीकी बहन।

शारदा[1] भी। आनन्दीके पत्र मिलते रहते हैं। बम्बअीमें मणिभुवन[2] में ठहरूंगा। अहमदाबादमें रणछोड़भाअीके[3] यहां।

जो चाहिये सो मंगवा लें। लिफाफे[4] बनानेका चार्ज महादेवने ले लिया था।

बापूके आशीर्वाद

१८

वर्धा,
२४-९-'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आपका १९ तारीखका पत्र बम्बअीमें मिला और २१ का आज वर्धामें मौन लेनेके बाद।

*　　　　*　　　　*

दांतोंके बारेमें समझा। कुछ समय तो काम चलना चाहिये।

मेरे साथ बा, मीराबहन, चन्द्रशंकर, प्रभुदास,[5] नायर, आनंदी, निर्मला (महादेवकी), शारदा (चिमनलालकी) और प्रभावती हैं। व्रजकिशन भी हैं। ये मंगलवारको अपने घर जायंगे। रास्तेमें राधा[6] और संतोक[7] मिली थीं। राधा अभी तो बहुत अच्छी है। वह आपकी

---

१. आश्रमके श्री चिमनलाल शाहकी पुत्री।

२. स्व० रेवाशंकर जगजीवन झवेरीका मकान। पू० बापूजी अफ्रीकासे हिन्दुस्तान आये, अुस वक्तसे रेवाशंकरभाअी २३-६-'३० को गुजर गये तब तक वे बम्बअीमें वहीं ठहरते थे।

३. अहमदाबादके अेक मिल-मालिक सेठ रणछोड़लाल अमृतलाल शोधन।

४. पू० बापू यरवडा जेलमें पू० बापूजीके साथ थे, तब निकम्मे कागजोंके लिफाफे बनाते थे। बापूजीने अुनकी अिस कलाकी बहुत तारीफ की है। वे नाप लिये बिना अेकसे लिफाफे बना लेते थे।

५. बापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र। दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्ससे बापूजीके साथ थे।

६. बापूजीके भतीजे स्व० मगनलाल गांधीकी पुत्री।

७. स्व० मगनलाल गांधीकी पत्नी।

पड़ोमिन है। अुसे लिखें। लीलावती देवलालीके सेनेटोरियममें है। ..यहां है। जमनालालजीकी जीनमें अुसे लगाया है। ५० रु० वेतन तय किया है। काम अच्छा है। अगर स्थिरचित्त रहेगा, तो आगे बढ़ेगा। जमनालालजीको संतोष देता दीखता है। नीला नागिनी[1] और अमला[2] का काम कठिन है। नागिनी विह्वल है। अमला मूर्ख है। अुसे कुछ भी नहीं आता। दोनों यहां काफी भारस्वरूप लगती हैं। अुनका भार हलका हो, अैसी कोशिश करूंगा। डंकन[3] और मेरी बार[4] का काम अच्छी तरह चल रहा है। मेहनती हैं। प्रामाणिक हैं। नरहरिके बच्चे — वनमाला और मोहन — बीमार होनेके कारण कठलाल गये हैं। मैं अहमदाबादमें अुनसे मिला था। शुक्रवारको जानेवाले थे। अमीना[5] के बच्चे बहुत हिलमिल गये हैं। वे छुट्टीके दिन लाल बंगले[6] में बितायेंगे। सिरियस[7]

---

१. अेक अमरीकी स्त्री। बड़ी चरित्रहीन मालूम हुअी। अिसके बारेमें देखिये 'महादेवभाअीकी डायरी', भाग—३।

२. अेक जर्मन यहूदी महिला—मिस मार्गरेट स्पीगल।

३. डंकन ग्रीनलीस। ऑक्सफर्डके ग्रेजुअेट। १९३३ में हरिजन-कार्यमें लगे हुअे थे।

४. अंग्रेज मिशनरी महिला। वे १९३१ में बापूजीसे अिंग्लैंडमें मिली थीं। १९३२ में हिन्दुस्तान आअीं। कभी-कभी आश्रममें आकर रहती थीं। मध्यप्रदेशमें खेड़ी नामक गांवमें रचनात्मक काम करनेके लिअे बस गअीं। अभी दक्षिण अफ्रीकामें हैं। अुन्होंने अंग्रेजीमें 'बापू' नामक पू० बापूजीके संस्मरणोंकी पुस्तक लिखी है, जो बम्बअीके अिण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाअुसकी तरफसे प्रकाशित हुअी है।

५. बापूजीके दक्षिण अफ्रीकाके साथी और हिन्दुस्तानमें आकर साबरमती आश्रममें रहनेवाले स्व० अिमामसाहब अब्दुल कादिर बावाजीरकी पुत्री।

६. साबरमती आश्रमके पास बापूजीके मित्र रंगूनवाले स्व० डॉ० प्राणजीवनदास मेहताका बनाया हुआ बंगला। अुसका रंग लाल होनेसे आश्रममें वह लाल बंगलेके नामसे मशहूर था।

७. नीला नागिनीका पांच वर्षका पुत्र।

बीमार था। अब अच्छा हो गया है। अस्पतालमें था। रमा जोशीसे मिला। वह अच्छी थी। शरीर तो सुन्दर बन रहा है। हाथ काफी अूंचा अुठा सकती है। जिस दिन बम्बअी छोड़ा, अुसी दिन मणि आअी। अधिक समय मेरे ही पास रही। अेल्विन[1] को देखने गया, वहां भी साथ ले गया था। आपसे मिलकर व दातों और आखोंका अिलाज कराकर अपने पास आनेकी सलाह मैंने दी है। बुआजी अभी बम्बअीमें हैं। मथुरादास भी वहीं हैं। वह काफी थक गये हैं। अुन्होंने जिम्मेदारी अच्छी तरह संभाल ली थी। शास्त्री ('हरिजन') का अच्छा हाल है। चंद्रशंकर मारा गुजराती मसाला मेरे साथ रहकर ही भेजेंगे। पृथुराज[2] को कालीकटमें ही ठहरनेको लिख दिया है। अिन्दु[3] भावनगरमें है। सब ठीक चल रहा है। जयप्रकाश[4] अपने पिताके पास गया होगा। मैं बम्बअीसे चला तब तक वहीं था। मुझसे मिलता था। प्रभावतीसे रोज मिलता था। अपने अूपरका आरोप तो मैं जानता ही हूं। मगर क्या करूं? अब तो कुछ शान्त हुआ है। ... बंगालकी बात ध्यानमें है।[5] देखूंगा। जमनालाल अभी पहाड़ पर नहीं जायंगे। दस दिन हो आये हैं। ललचाअूंगा तो सही। अभी अुनकी तबीयत ठीक रहती है।

आनन्दी वगैरा लड़कियां और कुरैशी[6] के बच्चे अनसूयाबहनके हरिजन छात्रावासमें हैं। मेरे खयालसे हमें यही शोभा देता है। वहां वे बड़े

---

१. फादर अेल्विन। ऑक्सफर्डके ग्रेजुअेट। हमारे देशकी आदिम जातियोंके विषयमें अुन्होंने कअी पुस्तकें लिखी हैं।

२. आश्रमके श्री लक्ष्मीदास आसरके पुत्र।

३. आश्रमका अेक विद्यार्थी।

४. श्री जयप्रकाशनारायण। आजकल समाजवादी नेता।

५. मिदनापुरके अेक क्रांतिकारीने अंग्रेज अफसरकी हत्या कर दी थी। अिसलिअे वहां सरकारकी तरफसे कहर बरसाया गया था। अुसीका यहां अुल्लेख है।

६. श्री गुलाम रसूल कुरैशी। अेक आश्रमवासी। स्व० अिमामसाहबके जमाअी।

मुखी हैं। नारणदास[1] के पुरुषोत्तम[2] ने जीवनलाल[3] के भाअी हरखचन्द[4] की लड़कीसे सगाअी की है। यह रिश्ता अेक ही जातिमें कहलायेगा, अिसलिअे मुझे पसन्द नहीं आया। परन्तु कहा जाता है कि लड़की अच्छी है, अिसलिअे नारणदासने भी स्वीकृति दे दी। जमना[5] राजकोटमें है। कनू[6] भी वहीं है। जमनादासकी पाठशालामें जितना पढ़ा जा सकता है अुतना पढ़ता है। महादेवका बाबू बलसाड़में अपनी मौसीके पास है। दिवालीके बाद आनन्दीके पास आनेको लिखता है। राजेन्द्रबाबू[7] के समाचार हर तीसरे दिन मिलते रहते हैं। अुनका स्वास्थ्य अच्छी तरह सुधर रहा है। लक्ष्मी यहीं है। अुसकी जालंधर जानेकी बात थी। लेकिन ज्यादा सोचकर देवदासने अिसमें परिवर्तन करा दिया है। अभी तय नहीं हुआ कि क्या किया जाय। प्रभुदासका भी अभी ठिकाना नहीं बैठा। अिसीलिअे मेरे साथ आया है।...को साधु हो गये ही समझ लीजिये। अुन्हें असन्तोष ही बना रहता है।

आपका गीताका अध्ययन पूरा हो जाय, तो भी संस्कृतका अध्ययन काफी बढ़ा हुआ माना जायगा।

आश्रमकी गोशाला कांकरियामें है। टाअिटस[8] चला रहे हैं।

---

१. श्री नारणदास खुशालचन्द गांधी। पू० बापूजीके भतीजे। अुस समय आश्रमके व्यवस्थापक।

२. श्री नारणदास गांधीके पुत्र।

३. श्री जीवणलाल मोतीचन्द शाह।

४. सौराष्ट्रके चोरवाड़ अिलाकेके भावनाशील सेवक।

५. श्री नारणदास गांधीकी पत्नी।

६. श्री नारणदास गांधीका पुत्र।

७. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद। बिहारके मुख्य नेता। १९१७ में हुअे चम्पारनके नील सत्याग्रहके वक्तसे बापूजीके साथ हुअे। १९३४, '३९ और '४७ में कांग्रेसके अध्यक्ष। १९४७ में संविधान-सभाके अध्यक्ष। अिस समय भारतके राष्ट्रपति।

८. आश्रमकी गोशालाके अुस समयके व्यवस्थापक।

शंकरलाल[1] की देखरेख है। ठीक चल रही है। जवाहरलालकी कृष्णाकुमारी[2] का विवाह बहुत करके कस्तूरभाओी[3] की बहनके लड़केके साथ, जो अभी-अभी विलायतसे बैरिस्टर होकर आया है, होगा। मैं कस्तूरभाओी तथा अुनकी बहन और लड़केसे मिल चुका हूं। मूल पसन्द अिन दोनोंकी ही है। वे बम्बअीमें रावके यहां दो-तीन बार मिले थे। स्वरूपरानी[4] ने स्वीकार कर लिया है। थोड़े ही समयमें विवाह हो जायगा। अगर विवाह हो गया तो स्वरूपरानी परसे यह बोझ काफी अुतर गया माना जायगा।

मेरा स्वास्थ्य ठीक रहता है। रक्तका दबाव यहां रहता है या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। यहां अैसे डॉक्टर नहीं हैं। जरूरत भी नहीं है। अभी तो आधा सेर दूध लेता हूं। दो बार भाजी लेता हूं। भाजीमें लौकी, तुरअी वगैरा आती हैं। जब यहां आया तब वजन ९९ पौण्ड हो गया था। थोड़े दिन बाद फिर ले देखूंगा। बा अच्छी हैं। मीरा भी। जमनालालजीकी कमला दिनशा मेहताके आरोग्य भवनमें थी। कुछ फायदा हुआ है। मेरे साथ यहां आअी है। कमलनयन[5] भी यहीं है। अभी वकीलकी पाठशाला[6] महामारीके कारण बन्द है। अब यह पाठशाला विलेपारले जायगी।

मेरा कार्यक्रम १५ अक्तूबर तक तो यहीं आराम करनेका है।

आश्रम पर सरकारने कब्जा नहीं किया, अिसलिअे अुसका स्थायी अुपयोग हरिजनवासके तौर पर कर डालनेका अिरादा है। जमनालालको विचार पसन्द आया है। अहमदाबादके मित्रों — रणछोड़भाअी

---

१. शंकरलाल घेलाभाअी बैंकर। पहले होमरूल लीगके मंत्री। बादमें वर्षों तक चरखा संघके मंत्री। अहमदाबाद मजदूर-संघके अेक संस्थापक।

२. जवाहरलालजीकी छोटी बहन।

३. सेठ कस्तूरभाअी लालभाअी। अहमदाबादके अेक मिल-मालिक।

४. पंडित जवाहरलालकी माताजी।

५. स्व० जमनालाल बजाजके पुत्र।

६. अेक पारसी सज्जनकी तरफसे चलनेवाली पाठशाला।

वगैराको भी अच्छा लगा है। अुसमें हरिजन बस्ती, चर्मालय, हरिजन छात्रावास और हरिजन सेवक संघका दफ्तर रखनेका विचार है। वह जमीन और मकान अखिल भारत हरिजन सेवक संघको सौंप देनेका विचार है। अिस बारेमें कुछ कहना हो तो लिखिये। अब तो बहुत हो गया न?

बापूके आशीर्वाद

१९

वर्धा,
३०-९-'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आपका २६ तारीखका पत्र मिल गया।

मणिका पत्र कल आया। अुसकी तिल्ली बढ़ गअी मालूम होती है। अिसलिअे अुसका अिलाज भी करा रही है। अिस कारण यहां पहुंचनेमें कुछ समय लगेगा। आश्रमको हरिजनवासके रूपमें चलानेके लिअे बुधाभाअी,[1] जूठाभाअी[1] और भगवानजी[2] तो हैं ही। तीनों जने प्रामाणिक, मेहनती और कुशल हैं। पहले दोको कुछ देना नहीं पड़ेगा।

* * *

आनंदीकी तबीयत ठीक रहती है। पृथुराज कालीकटमें है। अिन्दुके पत्र भावनगरसे आते हैं। . . .

आप सकुशल होंगे। चंदूभाअी[3] मौज करते होंगे। संभव है लक्ष्मी थोड़े समयमें मद्रास चली जाय।

बापूके आशीर्वाद

---

१. दोनों आश्रमके पड़ोसी। बापूजीने आश्रम तोड़ दिया अुस समय वे मकानों वगैराकी देखभाल करते थे।

२. अेक आश्रमवासी।

३. डॉ० चन्दूलाल देसाअी। वे नासिक जेलमें बापूके साथ थे।

२०

वर्धा,
३–१०–'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला।

*　　　*　　　*

आश्रमके बारेमें आप मेरा पत्र अखबारमें देखेंगे। जरूरत मालूम हुअी तो तोतारामजी[१] को भेजूंगा। परीक्षितलाल[२] भी वहीं रहेंगे। अड़चन नहीं होगी।

मणिको ठीक अिलाज करा कर ही आनेको लिखा है।

. . . का काम तो यों ही चलेगा। कुत्तेकी पूंछको पत्थरसे बांधनेकी बात है। कृष्णा नेहरूके बारेमें तो आपने पढ़ा ही होगा।

अब दूसरे काममें लगना है, अिसलिअे आज अितना ही बस होगा। जमनालालजी पासमें बैठे हैं। वे कहते हैं कि मेरे लिअे चिन्ता न करें। जरूरत मालूम हुअी तो पहाड़ पर चला जाअूंगा। वजन १९० तक तो चला गया है।

बापूके आशीर्वाद

२१

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आपका पत्र आज ही मिला है। मेरा काम बढ़ता जा रहा है, यह तो अखबारोंसे ही देख लेंगे। खूनके दबावमें कमी है। १६०–१०० और वजन बढ़कर १०३ पौंड हो गया है।

राजाजी[३] कोयम्बतूर हैं। ठीक रहते हैं। लक्ष्मी शनिवारको गअी। कृष्णदास[४] छोड़ने गया है। मद्रासका खादी-कार्य भी देखता

१. अेक आश्रमवासी।

२. गुजरात हरिजन सेवक संघके मंत्री।

३. श्री राजगोपालाचार्य।

४. श्री छगनलाल गांधीके दूसरे पुत्र। अखिल भारत चरखा संघके भूतपूर्व मंत्री।

आयेगा। लक्ष्मी कोयम्बतूर हो आयेगी। देवदासके पत्र आते रहते हैं। ठीक हालचाल मालूम होते हैं। पढ़ता है।

कृष्णा (नेहरू) की शादी गुणोत्तम हठीसिंह[1] के साथ २० तारीखको अिलाहाबादमें होगी। मैं वहां नहीं जाअूंगा। मेरी आशा भी नहीं रखते। मैंने आशीर्वादका पत्र भी भेज दिया है। आप भी भेजें।

किशोरलाल[2] २-३ दिनमें आ जायेंगे।

आनन्दीकी सगाअी कर डालनी चाहिये, अैसी जमनालालजीकी राय है। मुझे भी अैसा लगता तो जरूर है। . . . आनन्दी तो कहती है कि अुसे अभी विवाह नहीं करना है। परंतु मैं मानता हूं कि मेरी सलाहसे वह शादी कर लेगी। आपकी राय बताअिये। लक्ष्मीदास[3] से अिस बारेमें मिल सकें, तो मिलकर पूछिये। मैं अुन्हें लिख रहा हूं।

*　　　*　　　*

मणिको मैंने लिखा ही है। कदाचित् मृदु[4] के साथ भी न पहुंचे।

जमनालाल आज निजी कामसे २-३ दिनके लिअे बम्बअी जा रहे हैं।

संभव है मेरी यात्रा ८ नवम्बरको शुरू हो। साथमें ठक्करबापा, चंद्रशंकर, मीरा, नायर और रामनारायण चौधरी[5] के रहनेकी संभावना है। आपको और चन्दूभाअीको

बापूके आशीर्वाद

---

१. सेठ कस्तूरभाअी लालभाअीके भानजे।

२. आश्रमके श्री किशोरलाल मशरूवाला। आजकल 'हरिजन' पत्रोंके संपादक।

३. श्री लक्ष्मीदास आसर। अेक आश्रमवासी। अिस समय गांधी-स्मारक-निधिके मंत्री।

४. श्री मृदुलाबहन साराभाअी।

५. अजमेरके निवासी और हिन्दीके लेखक।

वर्धा,
२१–१०–'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला था। आपकी अिच्छा पर अमल कर रहा हूं। धर्म बाधक नहीं होगा। मैं चाहता हूं कि आप फिक्र छोड़ दें।[१] आपके पास प्रेमलीलाबहनकी दूरबीनसे भी ज्यादा जोरदार दूरबीन होनी चाहिये। अुससे तो राअी पहाड़ जैसा दिखाअी देगा। यूनो[२] ग्रह याद है न?

बुधवारको प्रभुदासकी शादी हो गअी। अुसे मनपसन्द कन्या मिली है और अुसीके पुरुषार्थसे मिली है। लड़की २४ वर्षकी है। बिलकुल सीधी-सादी है। अुत्तरकी होनेके कारण अुसे न बिन्दीकी जरूरत है, न चूड़ियोंकी। शादीके वक्त भी हाथमें चूड़ियां नहीं थीं। अब जानकी बहनने[३] कांचकी चूड़ियां पहना दी हैं। काफी पढ़ी-लिखी है। आर्य-समाजी है।

महादेवका लम्बा पत्र (बेलगांव जेलसे) मेरे नाम आया है। बड़ा काव्य ही रचकर भेज दिया है। साथमें अुसके अुद्धरण आपके लिअे भेजता हूं।

ब्रजकिशन दिल्ली जाकर बीमार हो गये थे। बा तैयारी (जेल जानेकी) कर रही हैं। किशोरलाल और गोमती[४] परसों चले गये। आनंदी, बचु,[५] बबु[६] भी गयीं। किशोरलालभाअी अकोला गये। आनंदी लक्ष्मीदाससे मिलनेके लिअे अुतरनेवाली थी। लक्ष्मीदासका पत्र अभी

---

१. पूज्य बापूने पूज्य बापूजीको आराम लेनेका लिखा था। अुसी बातका जिक्र है।

२. प्लूटो होना चाहिये। यह ग्रह १९३० में खोजा गया था।

३. स्व० जमनालाल बजाजकी पत्नी।

४. श्री किशोरलाल मशरूवालाकी पत्नी।

५. स्व० महादेवभाअीकी बहन निर्मला।

६. आश्रमके श्री चिमनलालकी पुत्री शारदा।

तक नहीं आया। विवाह करें तो भी आश्रमकी सब सुविधाअें तो अुनको होंगी ही।

आपका वजन कितना रहता है? क्या खाते हैं? दूध-दही कितना लेते हैं? कुछ भेजूं? मांगे बिना तो मां भी नहीं परोसती। और वह भी मेरे जैसी मां! फिर पूछना ही क्या? अब सुबहकी प्रार्थनामें जानेका वक्त हो गया। अिसलिअे बस।

बापूके आशीर्वाद

२३

वर्धा,
२७-१०-'३३

भाअीश्री वल्लभभाअी,

मणि, मृदु, मृदुके चाचा और बाबा[1] को आये तीन दिन हो गये। बाबा अिस बार मुझसे हिल गया है। अुसका शरीर भी अच्छा है। मेरे साथ जापानी साधु[2] का ढोल बजाता है। जापानी साधु तो अेक रत्न है। बड़ा शुद्ध, नम्र, हंसमुख और विनयी है। हिन्दी सीख रहा है। चरखा-तकली चलाता है। सब नियमोंका सूक्ष्म रूपसे पालन करता है। दोनों बहनों[3] को मैंने कअी घंटेका समय दिया है। आज सवेरे लगभग दो घंटे दिये हैं। अभी ११॥ बजे दूसरा समय देनेवाला हूं। दोनों घोड़े पर चढ़कर आअी हैं और विमानसे जानेवाली हैं! अिसलिअे आज डाकगाड़ीसे वापस जानेका नोटिस दिया

---

१. श्री डाह्याभाअीका पुत्र।

२. बापूजीके साथ रहनेवाले जापानी साधु। वे अेक ढोल बजाकर 'नम्यो हो रेंगे क्यो' मंत्र बोलते थे। जब जापानके विरुद्ध युद्ध घोषित हुआ और अुन्हें सेवाग्राम आश्रमसे पकड़कर ले गये, तब अुन्होंने बापूजीसे प्रार्थना की थी कि मेरे मंत्रका पाठ जारी रहे तो अच्छा। अिस पर बापूजीने वह मंत्र आश्रमकी प्रार्थनामें शामिल कर दिया।

३. मैं और मृदुलाबहन।

है। मणिके पैरको बिजलीकी जरूरत मालूम होती है। मृदुको कुछ बहनोंकी देखभाल करनी है। दोनोंका मेल बढ़िया बैठा है।

*　　　*　　　*

पट्टाभि[1] मिल गये हैं। मैं तो अुनसे मुश्किलसे १० मिनट मिला हूंगा। वे अचानक आ गये थे। जमनालालजी शायद ही किसीको बहुत समय लेने देते हैं। (अहमदाबादके) मिल-मजदूरोंके प्रतिनिधियोंको भी तीन बारमें कुल मिलाकर १।। घंटा लेने दिया। अुनका पहरा जबरदस्त है।

विट्ठलभाओीके चले जानेका दुःख तो हुआ। वे गये[2] अिसलिअे सांसारिक कष्टोंसे अुन्हें मुक्ति मिल गअी। हम तो सोचते ही थे कि अुनकी मृत्यु विदेशमें होगी। अुनकी सेवा-शुश्रूषा अच्छी ही हुअी दीखती है। मालूम होता है सुभाष[3] ने हद कर दी। हर जगहसे अुनकी अनन्य सेवाकी प्रशंसा आती रहती है। मैंने अुन्हें पत्र लिखा है। आप भी लिखें। मेरा पत्र मृत्युके समाचारसे पहले गया।

स्वामी[4] अभी कुछ समय यहीं रहेंगे। ठक्करबापा नागिनीको ढूंढ़ने वृन्दावन गये हैं। अुनकी दयाका पार नहीं है। अुस स्त्रीका दिमाग फिर गया है। यहां अुसका चाल-चलन जरा भी खराब नहीं रहा। पागल-सी हो गअी थी। अभी भी जंगलोंमें भटकती मालूम होती है। आयेगी तो वापस रख लूंगा। अमला तो आजकल खूब काम करती है। डंकन देहातमें समाधिस्थ है। मेरी बार अभी यहीं है।

---

१. डॉ० पट्टाभि सीतारामैया। आंध्रके अेक मुख्य कांग्रेसी नेता। १९४९ में कांग्रेसके अध्यक्ष बने थे। अुन्होंने दो भागोंमें कांग्रेसका अितिहास लिखा है। आजकल मध्यप्रदेशके राज्यपाल हैं।

२. अुनका देहान्त २२–१०–'३३ को वियेनामें हुआ।

३. स्व० नेताजी सुभाषचन्द्र बोस।

४. स्वामी आनन्द। पू० बापूजीके निकटके साथी। नवजीवनके शुरूके दिनोंमें अुन्होंने अुसमें खूब काम किया था। अुसके विकासमें अुनका बड़ा हाथ रहा है।

बीमार थी, अब अच्छी हो गअी है। विनोबा[1] गांवोंमें खूब हरिजन-सेवा कर रहे हैं।

आनंदीके साथ मणि[2] चली गअी। बाबला[3] भी चला गया है।

देवदासके पत्र आते रहते हैं। डॉ० दत्ता अुससे मिल आये। खुरशेद[4] कुछ बीमार हुअी दीखती है। अुससे मिलनेके लिअे भी डॉ० दत्ताको लिखा है। मेरी यात्राकी चिन्ता न करें। मैं संभलकर रहूंगा। राजाजी चाहते हैं कि मुझे पहले दक्षिणमें यात्रा करनी चाहिये। आनंदी लक्ष्मीदाससे मिल आअी। वह विवाह न करनेके मामलेमें दृढ़ है। चंदूलालको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

२४

वर्धा,
२८–१०–'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आज सुभाषका तार आया है कि विट्ठलभाअीकी लाश ९ तारीखको बम्बअी पहुंचेगी और आपको दाह-क्रिया करनी है। मैंने प्रेसके मारफत जवाब दिया है कि मैं नहीं मानता कि वल्लभभाअी छूटनेकी मांग करेंगे। अिसलिअे यह क्रिया आपके बिना होनी चाहिये। डाह्याभाअीको यह क्रिया करनी चाहिये। आपसे राय लेनेका समय नहीं था और ठीक भी नहीं समझा। कुछ कहना हो तो कहिये। डाह्याभाअीको लिख रहा हूं।

---

१. आचार्य विनोबा भावे। आश्रमवासी। १९४० में हमारे राष्ट्रकी सम्मतिके बिना हिन्दुस्तानको विश्वयुद्धमें शामिल कर देनेके विरुद्ध व्यक्तिगत सविनय कानून-भंग शुरू किया गया, अुस वक्त बापूजीने अिन्हें प्रथम सत्याग्रही चुननेका सम्मान प्रदान किया था।

२. श्री लक्ष्मीदास आसरकी सबसे छोटी लड़की।

३. स्व० महादेवभाअीका पुत्र नारायण।

४. श्री दादाभाअी नौरोजीकी पौत्री।

काकाके अुपवासके बारेमें आपको कल पत्र लिखा था सो मिला होगा। आज तीसरा अुपवास शुरू हुआ है। वजन अभी स्थिर है। लेटे-लेटे काम करते हैं। सकुशल हैं। . . . अभी यही है, परन्तु अुसे रास्ते पर लाना कठिन लगता है।

प्रभुदास और अम्बा[1] का काम ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

२५

वर्धा,
१-११-'३३

भाअी वल्लभभाअी,

अंग्रेजीमें कहावत है कि बड़े लोग अेक ही तरहसे सोचते हैं; और हम तो बड़े ही कहलाते हैं, अिसलिअे विट्ठलभाअीकी क्रियाके बारेमें दोनोंने अेक ही बात सोची।[2] मैंने डाह्याभाअीको लिख दिया

१. श्री प्रभुदास गांधीकी पत्नी।

२.

सें० प्रिजन,
नासिक रोड,
२९-१०-'३३

पूज्य बापू,

आज आपका कलका लिखा पत्र मिला। मेरे नाम बम्बअीसे अेक स्नेहीका पत्र आया था। अुन्होंने लिखा था कि बम्बअीमें बहुत लोग चाहते हैं कि मुझे अग्नि-संस्कारके लिअे बाहर आना चाहिये। अुसका जवाब कल ही दिया है, जो नीचे अुद्धृत करता हूं:

> "मुझे बाहर आनेके बारेमें लिखा, अुसका जवाब अितना ही दे सकता हूं कि अैसी अिच्छा करनेमें विचार-दोष है। मैं जिस स्थितिमें हूं, अुस स्थितिमें बाहर आनेकी मांग करना न मुझे शोभा देगा और न देशको। अैसे अवसरका लाभ अुठाकर सरकार पर मुझे छोड़ने या बाहर लानेके लिअे अनुचित दबाव डालना सत्याग्रहीको हरगिज शोभा नहीं देता। अिसलिअे यह विचार बिलकुल छोड़ दीजिये और जो अैसा कहते हों अुन्हें समझाअिये। मेरे विचार अखबारोंमें नहीं दिये जा

है। आपके विचारोंके रूपमें मैं कुछ भी प्रकाशित करूं, अैसा मैं हूं

सकते, क्योंकि मैं कैदी हूं; और कैदीके नाते मेरी मर्यादाको समझना चाहिये। मुझे कुछ भी प्रकाशित करना हो, तो अुसके लिअे सरकारकी अनुमति चाहिये।"

अिस आशयका अुत्तर कल भेजा था और आज आपका पत्र आया। हम अेकमत हैं, फिर क्या चिन्ता है? लोग तो चाहे जो कहेंगे।

अग्नि-संस्कार करनेके बारेमें डाह्याभाअी या मेरे दूसरे भतीजे, जो बम्बअीमें हैं, विचार करके अुचित होगा सो करेंगे।

सुभाषका तार मेरे पास आया था। अुसमें शव मार्सेल्ससे जहाज पर चढ़ा देनेकी बात ही थी। और कोअी बात नहीं थी। मैंने दुबारा आभार माननेवाला पत्र लिखा है। तार नहीं दिया।

मेरे नाम देश-विदेशसे तार आते रहते हैं। अैसा लगता है कि अुनका जवाब देना ही पड़ेगा। अैसे मामलोंमें मुझे बिलकुल अनुभव नहीं है। यह भी पता नहीं कि किसे दिया जाय और किसे न दिया जाय। मगर जैसा सूझेगा वैसा करूंगा।

काकाकी तबीयत ठीक है, यह जानकर आनंद हुआ। . . . यहीं होगा, यह मुझे पता नहीं था। मैं मिल नहीं सकता, अिसलिअे क्या करूं? वैसे मुझे लगता है कि अुसे समझाया जा सकता है। वह हठ पकड़ ले तो न माने, यह बात जरूर है। परंतु अुसमें शौर्य है, और शूरवीर समझदार हो सकते हैं। कायर और ढीले आदमी समझदार हों तो भी मुझे अुनसे प्रेम नहीं होता, क्योंकि वे मंझधारमें नाव डुबानेवाले होते हैं।

काकाको कितने दिन बाद संभालना पड़ेगा? शरीर अभी ठीक ही हुआ था कि यह आफत आ पड़ी।

. . . का पत्र कल आया था। मैंने अुन्हें और पंड्याजी[1] को हिरण्यगर्भकी मात्रा[2] दी थी। दवाका असर अच्छा हुआ दीखता है।

---

१. स्व० मोहनलाल कामेश्वर पंड्या। खेड़ा जिलेके कार्यकर्ता।
२. अेकदम जेलमें पहुंच जानेकी सूचना।

ही नहीं। आपके नाम आये हुअे तारोंके बारेमें मेजर[1] से कहकर अब मेरे नाम जो पत्र लिखें, अुसमें अेक पंक्ति लिखिये — "जिन लोगोंने हमदर्दीके तार और पत्र भेजे हैं, अुन्हें मेरी तरफसे अखबारों द्वारा धन्यवाद दीजिये।" अगर अिसे वे पास न कर सकें, तो आअी० जी० पी० से पुछवा लें, और आपको अिजाजत मिल जाय तो हम छपवा देंगे। . . .

नरीमान कल यहां आये थे। अुन्होंने काफी समय लिया और मैंने दिया। दारोगा[2] ने देने दिया। परन्तु अिस समय तो कितनी ही कोशिश करें, कुछ हाथ लगनेवाला नहीं है।

आज दीनबन्धु[3] आ रहे हैं। खूब घूमे हैं, अिसलिअे मुझसे काफी समय चाहेंगे और मुझे समय देना ही पड़ेगा।

काकाके अुपवास कल पूरे होंगे। आनंदमें हैं। अुपवास जैसा खास कुछ मालूम नहीं हुआ। काकाके शरीरमें मेरी तरह दाह नहीं है। वे खूब पानी पी सकते हैं। नमक डालें तो भी, सोडा डालें तो भी,

यात्राकी (जेल जानेकी) तैयारी कर रहे हैं। कोअी दस दिन बाद रवाना होनेवाले हैं। मेरे आशीर्वाद मांगे हैं। भेज दिये हैं।

आपका कोअी कार्यक्रम तय हो जाने पर लिख भेजिये।

बंगालमें जाना हो तो कब जाना होगा, यह लिखिये।

मैंने देवधरको पत्र लिखा था। वह मिला या नहीं, अिसका पता ठक्कर द्वारा लगवाअिये।

राजेन्द्रबाबू कैसे अटक गये दीखते हैं?

दोनोंके प्रणाम।

आपके सेवक
वल्लभभाअीके दण्डवत प्रणाम

---

१. अुस समय नासिक जेलके सुपरिन्टेंडेंट।

२. स्व० जमनालालजी। वे पू० बापूजीके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिअे सख्त पहरा देते थे।

३. स्व० सी० अेफ० अेण्ड्रूज़।

ठंडा हो तो भी और गरम हो तो भी। यह शक्ति अीश्वर मुझे दे दे तो भणसाली[1] को भी अिस अुम्रमें हरानेका अुत्साह आ जाय। फिर अुसकी तरह पागलपन आये तो भले ही आ जाय। टाटकी लंगोटी मोटी रस्सीके कंदोरे पर लटकाता है। आटा पानीमें मिलाकर खा लेता है और भ्रमण करता है। कभी-कभी कार्ड लिखकर दर्शन देता है और लिखता है कि सच्चा अनुभव तो अिसी समय प्राप्त हो रहा है।

अुपवासके दिनोंमें थोड़ासा लिखवानेका काम किया है। प्रभुदास अवैतनिक मंत्रीके पद पर विराजमान है और काकाके सामने गीतापाठ वगैरा भी करता है। प्रभुदास अुनका पट्ट शिष्य है, अिसलिअे काकाके लिअे बड़ा अुपयोगी सिद्ध हुआ है। कल किशोरलाल और गोमती भी आये। अुनके आनेका कारण तो मैं हूं।

* * *

काकाने मित्रधर्म और पितृधर्मका यथाशक्ति पालन किया है। . . . अपने अभिमानकी बाढ़में बहा जा रहा है। परन्तु मैं अुसकी आशा छोड़ नहीं बैठा हूं। मैं मानता हूं कि ठोकर खाये बिना अुसे ज्ञान नहीं होगा। आप लिखते हैं सो तो ठीक ही है। कायरकी समझदारी लम्बी मंजिल तय नहीं कर सकती और . . . जैसे अधरमें अुड़नेवाले अुद्धत छोकरे अगर समझदार बन जायं, तो अुनकी समझदारी फांसी लगने तक कायम रहती है। अैसा दिन कहांसे आये? मैं मानता हूं कि काकाका शरीर तुरन्त ठीक हो जायगा। चिन्ता न करें। अुपवासके दिनोंमें मैंने अपने नीम-हकीमी ज्ञानमें जंग नहीं लगने दिया था, अिसलिअे अुसका जो आध्यात्मिक लाभ होना होगा सो तो होगा ही। शारीरिक लाभ भी हुआ ही है। . . . को और

---

१. असहयोग आन्दोलनमें अेम० अे० की पढ़ाअी छोड़कर आश्रममें आये थे। विद्यापीठमें और 'यंग अिंडिया' में कुछ समय काम किया था। बादमें अुन्हें आध्यात्मिक रंग लगा। अुस सिलसिलेमें कोअी तीन बार अुन्होंने लम्बे-लम्बे अुपवास किये। अुन्होंने देह-दमनका मार्ग ग्रहण किया है।

पंडयाको आपने अच्छी मात्रा दी है। परन्तु तेज दवाओंका असर लम्बे समय तक नहीं टिक पाता और अुनकी प्रतिक्रिया अकसर भयानक होती है। यह मैंने आपकी दवाका दोष बतानेके लिअे नहीं लिखा है। अिसका अुपयोग वस्तुस्थिति बतानेके लिअे ही है। महादेवके पत्र आते रहते हैं। वे चारों तरफसे पुस्तकें जमा करते रहते हैं। किसी दिन ये पुस्तकें भी किसी सार्वजनिक पुस्तकालयमें ही जायंगी न? पढ़-पढकर जेलमें अंधे न हो जायं तो बहुत है। मैं हल्की-सी निषेधाज्ञा भेजना चाहता हूं। देवदाससे (जेलमें) डॉ० दत्ता मिल आये। वह समयका अच्छा अुपयोग कर रहा दीखता है। पढ़ता है, सीखता है, खेलता है और कातता है। मेरा कार्यक्रम अभी तो अिस प्रकार है: अिस मास सी० पी० में, बादको दिल्ली, फिर पंजाब, फिर सिन्ध, बादमें राजपूताना, यू० पी० के बाद बंगाल, आसाम वगैरा। अिस कार्यक्रममें कदाचित् थोड़ा फेरबदल हो और मद्रास जल्दी जाना हो जाय तो आश्चर्य नहीं। ८ तारीखको यहांसे प्रस्थान करना है। फिर दो-तीन दिनके लिअे वर्धा तहसीलके दौरेके लिअे आना पड़ेगा। देवधरको आपके पत्रके बारेमें लिखूंगा। राजेन्द्रबाबूको वापस अस्पतालमें ले गये हैं। मेरे खयालसे अब तो अुन्हें वहीं रखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

२६

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आपका पत्र आज मिला। विट्ठलभाअी-श्राद्ध-समितिके बारेमें आपने जहांसे जितना जाना, अुतना वहांसे मैंने भी जाना। मणि क्या आपकी अकेलेकी लड़की है?

. . .का पृथक्करण स्वामीने पढ़ सुनाया। नहीं तो शायद यह साहित्य पढ़े बिना रह जाता। सीधी बात तो यों कहिये न कि आप पास नहीं हैं। यह जितना आपको खटकता है, अुतना ही मुझे भी खटकता है। अिसलिअे मैं अेकलव्यका अनुकरण कर रहा हूं। अुसे द्रोणाचार्यने बाहर खदेड़ दिया, अिसलिअे अुसने अुनकी मूर्ति

सामने रखकर बाणविद्या सीख ली। मुझे धनुर्धारी नहीं बनना है। आपको बाण चढ़ाना नहीं आता। बाणको तोड़कर आपने अुसका हल बना लिया है। मुझे भी हल तो चलाना ही है।

मैं रोज पार्थेश्वर चिन्तामणि बनाता हूं और अुनसे पूछ लेता हूं। अुनसे सही जवाब ही मिलता होगा, यह तो कैसे कहा जा सकता है? परन्तु मैं अिस बातका हमेशा ध्यान रखता हूं कि अमुक परिस्थितिमें आप क्या करना चाहेंगे या करेंगे।

बाकी जानेकी तैयारी हो रही है। चार्ली भाअी[1] ११ तारीखको रवाना हो रहे हैं। यहांसे कल चले गये। वे सब जगह घूमे, सबसे मिले, परन्तु रहे जहांके तहां।

काकाके अुपवासकी बात कहीं भी फैली नहीं जान पड़ती। यहां भी जरा शोर नहीं होने दिया। अुनमें शक्ति अच्छी तरह आ रही है।

प्रभुदास अन्तमें तो अल्मोड़ा जायगा। यात्रामें भी आपके पत्रोंकी जरूरत रहेगी ही। मेरे तो आपको मिलेंगे ही।

जहां बा जायगी, वहीं (जेलमें) काका, स्वामी वगैरा मंडली पहुंचेगी। मोरारजी[2] वगैरा यहीं हैं। सकुशल हैं। जरा भी चिन्ता न करें। आपके अिस बारके × × ×[3]

खुरशेद ठीक होती जा रही है।

आपको व चन्दूलालको

बापूके आशीर्वाद

---

१. स्व० सी० अेफ० अेण्ड्रूज।

२. श्री मोरारजी देसाअी। १९३० में डिप्टी कलेक्टरकी नौकरीसे अिस्तीफा देकर सत्याग्रहकी लड़ाअीमें शरीक हुअे। कअी वर्ष तक गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री रहे। १९५२ के आम चुनावोंके पहले बम्बअी राज्यके गृहमंत्री। आजकल मुख्यमंत्री हैं।

३. जेलमें पत्रके काटे हुअे भागके लिअे तीन चौकड़ियां लगाअी हैं।

नागपुर,
९–११–'३३
प्रातःकालकी प्रार्थनासे पहले

भाओी वल्लभभाओी,

आपका पत्र मिला। यात्रामें न लिखें, यह नहीं चलेगा। मैं भी लिखा करूंगा। विट्ठलभाओीके बारेमें जो कुछ हुआ, वह मेरे ध्यानसे बाहर नहीं है। मुझ पर भी काफी हमले हुअे हैं। लेकिन अुन सब पर मैंने ध्यान ही नहीं दिया। ध्यान देकर भी क्या करें? मैल्को जितना हिलाअिये अुतना ही वह अूपर आयेगा। मैंने तो सुभाषकी सेवाको ही चुनकर निकाल लिया; और सब बातें छोड़ दीं। वैसे विट्ठलभाओीकी अंतिम अिच्छा[1] के बारेमें जो बातें कही जाती हैं, अुनके लिअे तो क्या कहा जाय? अुनके बारेमें जैसे आपको शक है, वैसे ही मुझे भी है।

मेरा काम मंगलवारसे शुरू हुआ। सभी जगह मनुष्योंकी भीड़ अुमड़ पड़ती है। अस्पृश्यताकी बातें कहनेसे कोओी चिढ़ता नहीं जान पड़ता। वर्धाके पास अेक सुन्दर मन्दिर खोला। नागपुरमें अितनी भीड़ जमा हुओी, जितनी कभी नहीं देखी गओी। मेरी आवाजने धोखा नहीं दिया। यह भी नहीं कहा जा सकता कि थकावट मालूम हुओी। १०८ या १०९ पौंड वजन लेकर निकला हूं। चन्दा भी अच्छा हुआ मानता हूं। मध्यप्रदेशका दौरा पूरा करके दिल्ली

१. स्व० विट्ठलभाओीके बारेमें कहा जाता था कि अुन्होंने वसीयत करके अपने पासके अेक लाखसे अधिक रुपये स्व० सुभाषबाबूको विदेशमें प्रचारके लिअे अपनी अिच्छानुसार खर्च करनेको दिये थे। बादमें बम्बओी हाओीकोर्टमें अिसका मामला चला था। अदालतने यह फैसला दिया था कि वसीयत सही हो तो भी कानूनके अनुसार अुसकी सूचनाअें अमलमें नहीं लाओी जा सकतीं और तमाम रुपया अुनके वारिसोंको मिलना चाहिये। पू० बापूने तमाम कुटुम्बियोंको समझाकर यह रुपया देशकार्यके लिअे कांग्रेसको दिलवा दिया था।

जाना है और वहांसे सीधे दक्षिणमें। राजाजी कहते हैं कि दक्षिणमें पहले दौरा करनेकी जरूरत है। सनातनियोंका सारा विरोध वहींसे शुरू होता है। शनिवारको वापस वर्धा जाना है। वर्धा तहसीलका काम पूरा नहीं हुआ है। अिस बीच जवाहरलाल वगैरा मुझसे मिल जायंगे। अन्सारी[1] आ गये हैं। अिसलिअे शायद वे भी आवें। मेरे साथ मीरा, चन्द्रशंकर, नायर, रामनाथ (दिल्लीके सस्ता साहित्य मंडलवाले), ओम[2] और रामेश्वर बिड़ला[3] की पुत्रवधू हैं। ये तो थोड़े ही दिन रहेंगे। ओम बहुत तूफानी हो गअी है। ठक्करबापा तो साथ हैं ही।

बा १३ तारीखको वर्धा छोड़ देगी। १५-१६ के आसपास अहमदाबाद पहुंच जायगी। बाका मन अिस बार खूब डांवाडोल है। वह अस्वस्थ तो है ही। परन्तु (जेलमें) पहुंच जायगी। यही होगा, अितना अुसे विश्वास है।

आप वर्धा ही लिखते रहिये।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

२८

चांदा,
१४-११-'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आपके पत्रके बिना काम नहीं चलेगा। आपने आदत ही अैसी डाल दी है। आज चांदामें हैं। ४ बजे हैं। ६ बजे सावलीके लिअे रवाना होंगे।

विट्ठलभाअीके बारेमें जिस ढंगसे सब कुछ हुआ, वह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं आया। फिर भी लोग जिस तरह भारी संख्यामें अुपस्थित हुअे, अुससे मैंने यहां बैठे-बैठे बहुत शिक्षा ली है। लोग मनुष्यको नहीं पूजते। अुसके बारेमें अुन्होंने जो कल्पना की है और जिस वस्तुको वे चाहते हैं, अुसे अपने ढंगसे और अपनी शर्त पर

---

१. दिल्लीके सुप्रसिद्ध स्व० डॉ० अन्सारी। राष्ट्रीय मुस्लिम नेता। १९२७ में कांग्रेसके अध्यक्ष।

२. स्व० जमनालालजीकी सबसे छोटी पुत्री।

३. श्री घनश्यामदास बिड़लाके बड़े भाअी।

पूजते हैं। मैंने वर्णन नहीं पढ़े और बारीकीसे कुछ जाना भी नहीं। परन्तु सारी चीजका चित्र मेरे सामने खड़ा हो गया है।

नागपुरके विद्यार्थियोंके सम्मेलनमें अंडे फेंके जानेकी बात मैंने 'टाअिम्स' से जानी। मैंने तो हॉलमें कुछ भी नहीं देखा। खलबली मची हो, अैसा भी नहीं देखा। हॉलमें किसीने कुछ देखा हो, यह भी नहीं जानता। अितना होनेकी बात चंद्रशंकरने बताअी। ओम पर अेक अंडा गिरा था। अुसी पर अंडा फेंका गया था या अुनके पास बैठे हुअे भूतपूर्व अध्यक्ष पर या मुझ पर, यह कोअी नहीं जानता। बात यह है कि राअीका पर्वत बना दिया गया है। विद्यार्थियोंके प्रेमका पार नहीं था। अुन्होंने रु० ७०० की तो थैली भेंट की। यही बात यू० पी० के लिअे समझिये।

अन्सारी रविवारको मिले। स्वास्थ्य कुछ ठीक है। विट्ठलभाअीसे मिलनेकी अिच्छा होते हुअे भी न मिल सके। अन्तिम समयमें तो वे बहुत अशान्त हो गये थे। अन्सारीको कोअी खास बात नहीं कहनी थी। यह कहा जा सकता है कि मिलनेके खातिर ही मिलने आये थे। राजघरानेके बीमारोंको देखने गये हैं। अुसी रात चले गये। मेरा तो मौन था। आये तब शुरू नहीं हुआ था। अभी तक सफरमें कोअी दिक्कत नहीं हुअी। अब खाने और मोटरमें बैठनेका समय हो गया, अिसलिअे आज अितना ही। बा और स्वामी कल वर्धासे चल दिये। बा अकोला होकर अहमदाबाद जायगी। राजकोटमें रामी[1] की लड़की बीमार है, अिसलिअे मनु[1] वहां गअी है। आप तो वर्धा ही लिखिये।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

---

१. बापूजीके बड़े लड़के स्व० हरिलालकी पुत्रियां।

२९

रायपुर,
२३-११-'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आपने तो सचमुच ही पत्र लिखना बन्द कर दिया है। जमनालालजीका अिस्तीफा[1] अुनकी शांतिके लिअे भी अनिवार्य था। औरोंके लिअे भी अुचित ही था। अिससे वायुमंडल बहुत साफ हो गया। जमनालालजीके सिरसे बोझ अुतर गया और अुन्हें नया बल मिल गया। अधिक तो नहीं लिखूंगा। परन्तु अिस कदमके ठीक होनेके बारेमें शंका न करें।

आपके स्वास्थ्यमें कुछ गड़बड़ हुअी सुनता हूं। कुछ हो तो बताअिये। वजन बता सकें तो बताअिये। नाककी तकलीफ तो नहीं है न? मुझसे तो छिपानेकी बात हो ही नहीं सकती।

महादेव काफी कष्ट सह रहा है। मुझे पसन्द है। अब गुजराती पत्रोंमें कठिनाअी होती है। अिस बारेमें कर्नल[2] को लिखनेकी सोच रहा हूं। अितना भी करना पसन्द तो नहीं है।

देवदासका पत्र अिन दिनों नहीं आया। खुरशेद ठीक होती जा रही है। अुसने काफी बीमारी भोगी है। डाक जा रही है, अिसलिअे अधिक नहीं लिखा जा सकता।

मेरी गाड़ी ठीक चल रही है। लोगोंकी भीड़ पहले जैसी ही है; शायद अधिक हो। बिलकुल पागल हो जाते हैं।

बापूके आशीर्वाद

---

१. स्वास्थ्यके कारण स्व० जमनालालजीने कांग्रेस कार्य-समितिसे त्यागपत्र दिया था अुसीका अुल्लेख है।

२. बम्बअी प्रान्तकी जेलोंके मुख्य अधिकारी, अिन्स्पेक्टर जनरल ऑफ प्रिजन्स।

३०

अिटारसी,
१–१२–'३३

भाअीश्री वल्लभभाअी,

अिटारसीकी धर्मशालामें सवेरे ३। बजे यह पत्र लिख रहा हूं। मीराबहन मुंह धोने गअी है। फिर प्रार्थना होगी। अुसके बाद तुरन्त करेलीकी रेल पकड़नी है और वहांसे अनन्तपुर जाना है। अनन्त-पुरमें जेठालाल[१] काम करता है। कल हम बैतूल रहे। वहांसे रेलमें अिटारसी आकर और सभा करके धर्मशालामें सोये।

आपका पत्र मिल गया। 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' में जो कुछ चल रहा है, अुससे हम कहां तक निपटेंगे? फिर भी मुझे जो कुछ सूझता है, मैं करता रहता हूं। अभी तो अखबार कम ही पढ़नेको मिलते हैं। मुझे तो अैसा महसूस होता है कि हरिजनोंका काम हरि देखते रहते हैं। जो शक्ति हर जगह लाखों आदमियोंको खींच लाती है, वही शक्ति झूठको भी मिटायेगी। हम गफलतमें न रहें तो बस है।

मैं तो जानता ही हूं कि आपकी आत्मा मेरे चारों ओर घूमती ही रहती है। वह क्या मेरी रक्षा नहीं करती होगी? आपमें मांका प्रेम भरा है, अिसका दर्शन क्या मैंने यरवडामें प्रतिक्षण नहीं किया? यह गुण आपके पत्रोंमें जहां-तहां टपकता रहता है। और यह गुण सर्वव्यापी है, यह भी मैंने देखा है। अिसलिअे आप वहां बैठे हुअे बारीकीसे सबको देखते ही रहते हैं।

मेरी चिन्ता न करें। जो कुछ हो रहा है, अुसकी भी चिन्ता न करें। यह काम भगवानका है। "बिगरी कौन सुधारे नाथ, बिगरी कौन सुधारे।"

अब हम रेलमें हैं। अपनी नाकके लिअे जो कुछ करना जरूरी होगा आप करेंगे ही, अैसा मैं मान लेता हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

१. श्री जेठालाल गोविन्दजी। वे अनन्तपुरमें खादीका काम करते थे।

३१

जबलपुर,
४–१२–'३३

भाओीश्री वल्लभभाओी,

कल रातको जबलपुर पहुंचे। अब ६।। बजे हैं। आपका पत्र कल कटनीमें मिला। अनन्तपुरका काम देख आया। सब काम पक्का है और अिसलिअे धीमा भी है। जेठालाल जबरदस्त कार्यकर्ता है।

गोरधनभाओी[१] मेरे व्यवहारसे बहुत नाखुश हैं। अुन्हें सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न तो कर ही रहा हूं। अुनका विचार विदेशोंमें रुपया खर्च करनेका है। मैंने अैसा करनेसे मना किया है। वसीयत-नामेके बारेमें अभी तक मुझे नहीं पूछा है। पूछेंगे तो आप जो लिख रहे हैं, वह सहज ही याद रखूंगा। सब कुछ अजीब तो लगता ही है। परन्तु जैसा सुनते हैं, वैसा ही हुआ भी हो, तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। जो होगा सामने आ जायगा। आज बड़े लोगों[२]के आनेकी संभावना है। अैसा दीखता है कि कल सब मिलेंगे। हम सबके रहनेका अलग-अलग अिन्तजाम होगा। बुआजी आ रही हैं। शायद अन्सारी भी आयें।

व्रजकृष्ण मृत्युशय्या पर पड़ा है। अुपवासमें अुसने अनन्य भावसे मेरी सेवा की थी, यह तो आप जानते ही हैं। अुसके समाचार मंगाता रहता हूं। सेवा-शुश्रूषा हो रही है। डॉ० अन्सारीका तार आया है कि शायद वह बच जायगा।

---

१. श्री गोरधनभाओी ओीश्वरभाओी पटेल। वे विट्ठलभाओीसे मिलनेको रवाना हुअे थे, परन्तु अुनसे भेंट नहीं हो सकी थी। बादमें विट्ठलभाओीका शव लेकर आये। वे विट्ठलभाओीकी वसीयतके अेक्जीक्यूटर थे।

२. पंडित मालवीयजी, डॉ० बिधानचन्द्र राय और श्री भूलाभाओी देसाओी।

महादेवको साथी मिलनेकी बात तो आप ही से मालूम हुआी[1]। जोशी (छगनलाल) मजेमें है। बाकी खबर यहां आनेके बाद कल ही लगी। अच्छा हुआ।

हरिजनसेवाका काम अच्छी तरह चल रहा है। अभी तक तो सब ठीक ही चल रहा माना जायगा।

आप दोनोंको बापूके आशीर्वाद

३२

जबलपुर,
७-१२-'३३

भाआीश्री वल्लभभाआी,

गोरधनभाआीका अेक ही बड़ा लम्बा पत्र आया था। अुसे मैं क्यों संभालकर रखता? अुसमें मेरे दोपोंका ही दर्शन कराया गया था और विट्ठलभाआीके गुणोंका। अुसका मैंने बहुत प्रेमपूर्ण अुत्तर दिया था। अुसकी पहुंच नहीं आअी। मेरे पास रखे हुअे रुपयों[2] के बारेमें तो मुझे जबानी कहलवाया था। अुसके बारेमें मैंने मथुरादाससे कहा। अुनका अुपयोग विदेशमें हरगिज नहीं हो सकता। आपने देखा होगा कि अब अुन्होंने मुझसे सार्वजनिक अपील की है। जो होगा डंकेकी चोट होगा। मैं अुनसे निपट लेनेकी आशा रखता हूं। आप निश्चिन्त रहें।

बाकी पत्र लिखा करूंगा। अिस बार जाना अुसे कठिन तो लगा ही है। परन्तु अीश्वर लाज रखेगा। ठक्कर बापाने आपका पत्र मुझे दिखाया था। अुनका जरा भी कसूर नहीं। मुझे बचानेके लिअे वे अथक प्रयत्न करते हैं। झगड़ा करनेवालोंको मेरे पास आने

१. बेलगांव जेलमें महादेवभाआीके साथ गिरधारी कृपलानीके रखे जानेकी खबर मैंने बापूको बेलगांव जेलसे नासिक जेलमें लिखी थी और अुन्होंने पूज्य बापूजीको दी थी।

२. स्व० विट्ठलभाआी जब बड़ी विधान-सभामें अध्यक्ष थे, तब अपने वेतनका लगभग आधा भाग हर महीने वे पू० बापूजीके पास अिच्छानुसार खर्च करनेको भेजते थे। अुसी रकमका अुल्लेख है।

ही नहीं देते। बहुत टालते हैं। लेकिन कुछ तो टलता ही नहीं। अनुभवसे सुधार भी होते ही रहते हैं। अिस बारेमें भी चिन्ता न करें। "हरि करे सो होय।"

किशोरलाल बीमार हो गये थे। अब कुछ ठीक हैं। बम्बअीमें हैं। अुन्हें लिखिये।

जीवराज[1] काफी सूख गये हैं। माथेरानके रगबी होटलमें हैं।

मथुरादास मीटिंगमें आया था। अब भी साथ है। दिल्ली तक रहेगा। वह भी काफी दुबला हो गया। अुसकी पीठ दुखती है। बहुत घूम-फिर नहीं सकता। आराम ले तो शक्ति आ जाय। मीटिंगमें बातें करके ही अुठ गये कहा जायगा। मौलाना साहब[2] और डॉक्टर (राय) मुझसे विनय कर रहे थे कि अब मैं आग्रह छोड़ दूं। मैंने धर्मसंकट बताया, तो चुप हो गये। बहुत बारीकीसे बातें हुअीं। अैसा नहीं लगा कि नरीमानको कुछ समझ आअी हो। मैंने कहा अेक लिखे 'विदर अिंडिया', दूसरा लिखे 'विदर कांग्रेस'। तब मैं अगर लिखूं कि 'विदर नरीमान', तो ज्यादती तो नहीं मानी जायगी न? जवाहर तो जवाहर ही हैं। जमनालालजीका लिखना ही क्या? अुन्होंने वजन बढ़ाया है। शरीर ठीक कहा जा सकता है। चिखलदामें काफी लाभ हुआ। परन्तु अुनके कान भी आपकी नाककी तरह कष्ट दिया ही करते हैं। अेक नकटे, दूसरे बहरे! दुखड़ा किसके आगे रोयें? परन्तु अब अिन्जेक्शनसे फायदा हो तो बताअिये। नेती (हठयोगकी नाककी अेक क्रिया) करनेकी सोच रहे हैं, यह मुझे पसन्द है। परन्तु सिखायेगा कौन? मैं अिसका विशारद माना जाअूंगा। क्या मुझे विशारद समझकर नहीं बुलाया जा सकता? नेती अच्छी तरह करना न आये, तो नाकसे थोड़ा खून आने लगता है। पहले सलीका अुपयोग किया जाता है। आप यह हरगिज न करें। बारीक कपड़ा ही काफी

---

१. डॉ० जीवराज मेहता। अुस समय बीजापुर जेलसे छूटकर आये थे। आजकल बम्बअी राज्यके अर्थ-मंत्री हैं।

२. मौलाना अबुलकलाम आजाद। १९३९ से १९४६ तक कांग्रेसके अध्यक्ष। अब भारत सरकारके शिक्षा-मंत्री।

है। धीरे-धीरे करनेसे नुकसान नहीं होता। कृष्णदास,[1] महादेव और देवदासको मैंने ही सिखाओी थी। देवदासको खून आता था। अिसका कारण अलग था। अिसलिअे छोड़ देनी पड़ी थी। जमनालालके साथ जानकीबहन आअी थीं। दोनों रातको चले गये।

महादेवके पास गिरधारी[2] गया, यह तो आपसे ही मालूम हुआ। सुरेन्द्र[3] और दरबारी[4] वर्धामें हैं। अब दोनों ठीक हैं। माधवजी[5] अभी छूटे हैं। मुझसे मिलने आये हैं। आज कराड़ी जायंगे। अुनकी तबीयत ठीक है। चंद्रशंकर अपने कार्यको सुशोभित कर रहे हैं। काका और स्वामी चार-पांच दिनके लिअे माथेरान गये हैं।

मैं १० तारीखको दिल्ली पहुंचूंगा।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

३३

सीतानगर,
२५-१२-'३३

भाअी वल्लभभाअी,

आपने मेरे पत्रकी बाट देखी, मैं आपके पत्रकी देख रहा था। मैं अिस भ्रममें रहा कि मेरे पत्रका जवाब आना बाकी है। अितनी तेजीसे यात्रा हो रही है कि तारीख और वार वगैराका स्मरण ही नहीं रहता। किसे क्या लिखा जाय, यह भी याद नहीं रहता। साठी चल रही है, यह कारण तो हो ही सकता है।

---

१. श्री कृष्णदास। 'Seven Months with Mahatma Gandhi' के लेखक। किसी समय बापूजीके मंत्रि-मंडलमें थे।

२. आचार्य कृपालानीके भतीजे। साबरमती आश्रमके पुराने विद्यार्थी।

३. अेक आश्रमवासी।

४. सूरत जिलेके देहातमें शराबबन्दीका काम करनेवाला अेक पारसी युवक।

५. बापूजीके साथ दांडीकूचमें सम्मिलित हुअे ८० सत्याग्रहियोंमें से अेक।

तीन बजेके बारेमें आपको चन्द्रशंकरने यों ही डरा दिया है। मैं अिस तरह न अुठूं तो घबरा जाअूं। आपको आग्रह तो मुझे जल्दी सुलानेका रखना चाहिये। यह नियम आजकल जरूर टूट गया है। फिर भी सब डॉक्टरोंकी राय है कि शरीर अभी तक तो अच्छा ही रहा है। पत्र भी जितने आप सोचते हैं अुतने नहीं लिखता। जिनके बिना काम न चले अुतने ही लिखता हूं। आप पास बैठे हों तो आप ही कहें कि अितने तो लिख ही डालिये! यह कहा जा सकता है कि आपको छोड़कर भाग आने[1]की शिकायत सही है। अिसका अुपाय भी हो ही जायगा न? मेरे बारेमें बिलकुल चिन्ता छोड़ दीजिये। मैं शरीरकी मर्यादाके बाहर नहीं जाता। आप देखें तो मान लेंगे कि मैं अुसकी अच्छी तरहसे रक्षा कर रहा हूं। या सच पूछा जाय तो यों कहें कि अीश्वर अुसका जतन अच्छी तरह कर रहा है। मगर मैं विरुद्ध हो जाअूं, तो बेचारा अीश्वर क्या करे? मैं अुसमें डूब गया होअूंगा, तभी तो वह मुझे महासंकटोंसे बचाता होगा। मद्रासमें रोज कुचले जानेका डर रहता था, फिर भी बच गया। यह किसी मनुष्यकी कारीगरी नहीं थी। अीश्वरकी अिच्छा ही अैसी थी। पांच घंटेके निश्चयका तो ज्यादातर कागज पर ही पालन होता है।

बाकी हर हफ्ते मेरा पत्र जायगा ही। अभी तक अेक भी हफ्ता खाली नहीं जाने दिया। बाकी रक्षा अीश्वर करेगा। अुसको बचानेवाला और हो भी कौन सकता है? मणिके बारेमें दरअसल कोअी चिन्ता करनेकी बात नहीं है।

कानजीभाअी[2] को तुरन्त तार दिया था। अुनका जवाब तारसे और पत्रसे आ गया था। मैंने खुद जवाब भी भेजा है और लिखा है कि मेरे खातिर अितनी दूर न आयें। परन्तु अुन्हें जरूरी मालूम हो तो जरूर आ जायं। तिथियां भी भेज दी हैं। आपको लिखना भूल गया। अुनका पत्र सुन्दर था।

---

१. पू० बापूको जेलमें छोड़कर चले आये, अिसका अुल्लेख है।

२. श्री कन्हैयालाल देसाअी। अुस समय सूरत जिला कांग्रेस समितिके अध्यक्ष। अब गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस समितिके अध्यक्ष।

राजाजीसे मिलना मुश्किल मानता हूं। हां, चि० लक्ष्मी मद्रासमें मिली थी। अुसे छठा महीना चल रहा है। अिसलिअे चल-फिर नहीं सकती। अुसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। राजाजी अपनी देखरेखमें प्रसूति कराना चाहते हैं। देवदास भी मद्रास पहुंचेगा। लक्ष्मी मजेमें थी। राजाजी ६ फरवरीको छूटेंगे।

. . . की गाड़ी यों ही चल रही है। अुसे अपने आपसे ही संतोष नहीं है। . . . को फिर गर्भ रह गया है। अिसका अुसे दुःख है। अपने आपको वशमें नहीं रख सकता और फिर परेशान होता है। मैंने अच्छी तरह आश्वासन दे दिया है। परन्तु कुल मिलाकर जहां है वहां ठीक ही है।

प्रिंसेस अेरिस्टार्शी[1] के पत्र प्रति सप्ताह बिला नागा आते रहते हैं। रुपये भी भेजती रहती है। अुसकी ममताका पार नहीं है। अब वह त्रिवेदी[2] के मनु[3] की मदद कर रही है। . . . मैंने प्रिन्सेसको लिखा है कि अुसे अपना धर्म समझाये। मणिलाल[4] और सोराबजी[5] लड़ रहे हैं। यह लड़ाअी वहांकी राजनीतिकी है। अिसमें मैं किसीको रास्ता नहीं बता सका। परन्तु मणिलालको लिखा है कि अुसे जो सही लगे,

---

१. पू० बापूजीके लेखोंसे प्रभावित होनेवाली अेक यूरोपियन महिला। जब पू० बापूजी गोलमेज परिषदसे लौटे, तब स्विट्जर्लैण्डमें अुनसे रूबरू मिली थीं। वे पू० बापूजीके साथ पत्रव्यवहार रखती थीं।

२. पूनाके अेग्रीकल्चरल कालेजके स्व० प्रो० जयशंकर पीताम्बर त्रिवेदी। अपने बढ़िया गुणोंसे वे बापूजीके कुटुम्बी बन गये थे। पूनामें अुनके आतिथ्यका स्वाद बहुतसे गुजरातियोंने चखा है।

३. अुनका लड़का। डाक्टरी पढ़नेके लिअे जर्मनी गया था, अुसका अुल्लेख है।

४. बापूजीके दूसरे पुत्र। वे दक्षिण अफ्रीकामें बहुत वर्षोंसे 'अिंडियन ओपीनियन' के सम्पादक हैं।

५. दक्षिण अफ्रीकाके बापूजीके निकटके साथी पारसी रुस्तमजीके पुत्र।

मो करे। विनय न छोड़े। व्यक्तियोंके झगड़ेमें न पड़े। मैं मानता हूं कि यह झगड़ा निपट जायगा।

गोरधनभाअी विट्ठलभाअीके दानके बारेमें लिखते रहते हैं। वह सब पढ़ा नहीं है। मौका देखकर हिसाब दे दूंगा और चुप बैठ जाअूंगा। सुभाषका बड़ा मीठा पत्र आया था। वह अखबारोंमें भेजा था। छपा ही होगा।

यात्रा ठीक चल रही है। कहीं भी क्लेश नहीं। अभी तक दक्षिणमें फसादी लोग देखनेमें नहीं आये। भविष्यको अीश्वर जानता है। लोगोंकी भीड़का पार नहीं। आज सीतानगरमें हैं। परम शांति है। यह देहाती गांव है। आज तो मौन है। कल भी यहीं रहूंगा। दो दिन स्थिरताके न होते, तो यात्रामें टिकना मुश्किल हो जाता।

मद्रासमें कुछ समयके लिअे शास्त्री[1]से मिला था। मित्रताकी ही मुलाकात थी। मुन्शी[2] और लीलावती[3] मद्रासमें मिले थे। मुन्शीका स्वास्थ्य अच्छा मालूम हुआ। भूलाभाअी[4]का तार आया था। अुन्हें पूरी तरह तो आराम नहीं हुआ।

काका और सुरेन्द्र मशरूवाला[5] गुजरातमें हैं।

---

१. स्व० श्रीनिवास शास्त्री। गोखलेजीके बाद भारत सेवक समाजके अध्यक्ष।

२. श्री कन्हैयालाल मुन्शी। बम्बअीके प्रसिद्ध वकील। १९३७ से १९३९ तक बम्बअी प्रान्तके गृहमंत्री। आम चुनावोंके पहले कुछ समयके लिअे केन्द्रीय सरकारके कृषि और अन्न-मंत्री रहे। आजकल अुत्तर प्रदेशके गवर्नर हैं।

३. श्री कन्हैयालाल मुन्शीकी पत्नी। १९५२ के आम चुनावोंके पहले बम्बअी विधान-सभाकी सदस्या।

४. स्व० भूलाभाअी जीवणजी देसाअी। बम्बअीके मशहूर अेडवोकेट। १९३५ से बड़ी विधान-सभामें कांग्रेस दलके नेता। ५ मअी, १९४६ को रातके अेक बजे अुनका देहावसान हुआ।

५. साबरमती सत्याग्रह आश्रमकी पाठशालाके पुराने विद्यार्थी।

किशोरलाल अभी तक अच्छे नहीं हुअे। स्वामी सानोली और बम्बअीके बीचमें हैं। अुनके समाचार तो आपके पास आते ही होंगे।

मेरे साथ किसन है, यह तो आपको लिख चुका हूं न? बहुत अच्छी युवती है। प्रेमा[1] की सहेली, फिर क्या पूछना?

सबको बापूके आशीर्वाद

३४

कुडप्पा (आंध्र),
२–१–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आज अब ३-२० हो गये हैं। दातुन करके आपका स्मरण कर रहा हूं। अिस तरह अुठनेसे ही शांति रहती है। दिनमें तो सोअूंगा ही। आजका दिन भी सफरसे छुट्टीका है। आप चिन्ता बिलकुल न करें। मेरा शरीर अच्छा ही रहता है।

अपना कोअी हाल आप नहीं लिखते, अिसलिअे खयाल होता है कि कहीं कुछ छिपा रहे हैं। अैसा न कीजिये।

बाकी हर सप्ताह पत्र जाता ही है और आगे भी जायगा। अुसकी अिच्छानुसार प्रवचन (गीता पर) भेजता हूं, जैसे यरवडा मंदिरसे भेजा करता था।

महादेव अब अेक ही पत्र लिख सकता है और अेक ही पा सकता है। अेकमें अनेकका समावेश करनेकी कोशिश करता है। जीवणजी[2] के मारफत पत्र प्राप्त करेगा। खासी परीक्षा हो रही है। अिसमें भी अेम० अे० हो जायगा। गीताके अनुवादोंमें डूबा रहता है।

किशोरलालका हाल तो आप जानते ही हैं। वे बुखारको अभी तक छोड़ते ही नहीं। अब अुन्होंने नाथ[3], स्वामी और गोमतीकी कमेटी बना दी है। ये तीनों कहेंगे अुसीके अनुसार चलेंगे।

---

१. श्री प्रेमाबहन कंटक। अेक आश्रमवासी। अब महाराष्ट्रमें कस्तूरबा स्मारक निधिकी अेजेंट।

२. नवजीवन ट्रस्टके व्यवस्थापक-ट्रस्टी।

३. श्री केदारनाथजी। श्री किशोरलाल मशरूवालाके गुरु।

बाका पत्र कल आया। अुसकी नकलें ओमने की हैं। अेक आपको भेजता हूं। ओम बड़ी चंचल लड़की है। अुसमें झट सीख लेनेका अुत्साह है। शुद्ध है, अिसलिअे बढ़ती जा रही है। किसनका शरीर गिर गया है, नहीं तो वह भी खूब काम करनेवाली है। दोनों काफी सीधी-सादी हैं। दोनों खूब घुल-मिल गअी हैं।

कल राधाकान्त मालवीय[1] आये। वे सूखी बर्फमें दूध सुरक्षित रखनेकी योजना लाये हैं और मेरी मदद चाहते हैं। अैसे अुद्योगमें मेरी मदद चाहनेका अर्थ है रेतको बिलोना। विलायत वगैरा जाकर अनुभव ले आये हैं, यह तो आप जानते होंगे।

मलकानी[2] खूब मेहनत कर रहे हैं। ठक्करबापाकी जगह अच्छी तरह संभाल रहे हैं। स्टाफ सारा पूर्ण सन्तोष देनेवाला है। अभी तक तो काम अच्छी तरह चल रहा है।

. . . अपना सच्चा स्वरूप दिखाने लगे हैं। . . . पर काफी काबू पा लिया है। अब बहनोंका हिस्सा नहीं देना चाहते। . . . तीनको दिया हुआ मुख्तारनामा रद्द कराके नया अपने ही नाम करा लिया है। मैंने अुलहना दिया तो अुसका अुड़ता हुआ जवाब दिया। अब मैंने नानालाल[3] को लिखा है। कुछ होता दीखता नहीं है।

आनन्दी, बाबला, बबू, मोहन, वनमाला, बच्चू और अमीनाके बच्चे अच्छी प्रगति कर रहे हैं। रामनारायण पाठक[4] हर सप्ताह तीन घंटे देते हैं। जमनादास (गांधी) दुबला-पतला रहा करता है। परेशान भी जान पड़ता है। संतोककी मांके गुजर जानेकी बात तो आपको लिख

---

१. स्व० पं० मदनमोहन मालवीयजीके पुत्र।

२. गुजरात विद्यापीठके अेक अध्यापक। बादमें अेक प्रमुख हरिजन कार्यकर्ता। अब निर्वासितोंका काम कर रहे हैं।

३. श्री नानालाल कालिदास जसाणी। राजकोटके निवासी। रंगूनके अेक बड़े व्यापारी। पू० बापूजीके मित्र।

४. अुस समय गुजरात विद्यापीठके अध्यापक। प्रसिद्ध गुजराती विद्वान।

चुका हूं न? प्रभुदास अपनी ससुरालके आसपास कहीं खादीके काममें लग जायगा। अल्मोड़ामें रहनेसे खर्च बहुत बढ़ जानेकी संभावना है।

अिस तरह आज कौटुम्बिक बजट याद आया सो बताकर समाप्त करता हूं। मणिको पत्र तो लिखता हूं, परन्तु अुसके हाल महादेव जैसे तो नहीं होंगे? आप जानते हों तो लिखिये।

दोनोंको या सबको

बापूके आशीर्वाद

३५

बंगलोर,
८–१–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

बाका पत्र लिखकर आपका पत्र लिखने बैठा हूं। अब शामके चारसे अूपर हो गये हैं। मौनवार है। आज बंगलोरमें हैं। कल मजदूरोंके वेतन काटनेकी (अहमदाबादकी) मिलोंकी मांगके बारेमें पंचायत है। अुसके लिअे शंकरलाल (बैंकर), गुलजारीलाल[1] वगैरा आ गये हैं। मिल-मालिक कल आयेंगे। पांच घंटे देनेको कहा है। कल रातको मलाबारकी ओर चल देंगे।

कामका बोझ तो लगातार रहता ही है। फिर भी शरीर ठीक रहता है। कल सुब्बाराव[2] शरीरकी जांच कर गये और खुश हुअे। खूनका दबाव १५५-१०० निकला। यह बहुत अच्छा माना जाता है। अभी तक यह खयाल है कि ठक्करबापा १६ तारीखको कालीकटमें मिलेंगे।

यहां (मैसूर) स्टेटके मकानमें हूं। जहां पहले था वहीं।

---

१. गुलजारीलाल नंदा। अहमदाबाद मजदूर-संघके मंत्री। कुछ समय बम्बअी राज्यके श्रम-मंत्री। अभी केन्द्रीय सरकारके राष्ट्रीय योजना तथा कुदरती साधन-सम्पत्ति विभागके मंत्री और राष्ट्रीय योजना-समितिके अुपाध्यक्ष।

२. बंगलोरके अेक प्रसिद्ध डॉक्टर।

लोगोंका अुत्साह अच्छा है। दीवान मिल गये। आपको बहुत याद कर रहे थे। सलाम कहलवाया है। खूब प्रेम दिखाते हैं।

. . . का पत्र आया था। अुसने मोटर बेच डालना चाहा। फिर ठक्करबापाका तार आया कि वह बेच देनेको तैयार है। अिसलिअे मैंने अिजाजत दे दी। मैं कुछ समझा तो नहीं। अैसे मामलोंमें मेरा सारा आधार सिर्फ आप पर रहता है। अिसलिअे मैं तो अकसर अुस अेकलव्यकी तरह करता हूं। अेकलव्य द्रोणाचार्यकी मिट्टीकी मूर्ति बनाकर और मूर्तिसे ज्ञान प्राप्त करके धनुर्विद्यामें अर्जुनके बराबर हो गया। मैं आपकी मानसिक प्रतिमा बना लेता हूं और अुसे पूजता हूं। अिसमें आप मंजूरी देनेको ही कहेंगे, अैसा मानकर मैंने मंजूरीका तार भेज दिया।

कुंवरजी[1] की पत्नीकी मृत्युसे नेपोलियन[2]को काफी चोट पहुंची है। मेरे आश्वासनके पत्रके जवाबमें अुसने जो मीठा पत्र लिखा है, अुस परसे अैसा लगता है। अुसे फिर पत्र लिखा है। . . . असंतुष्ट है, अैसा अुसके पत्रसे दिखाअी देता है। मैंने पूछा है कि क्या दुःख है?

मुन्शी धंधेसे लग गये हैं। जीवराजका तो देखा ही होगा।

डॉ० विधान[3] मृत्युके मुंहमें से लौटे हैं, अैसा कह सकते हैं। अुन्हें तार दिया था। अुसके जवाबमें वे लिखते हैं कि अेक हड्डी टूट गअी है। १५-२० दिन तो लगातार बिस्तर पर रहना पड़ेगा।

मामा[4]का पत्र आया है। अुसमें आपके पत्रका अुल्लेख है। हरिजनोंके बारेमें अलग खाता और अलग चन्दा करनेसे अब काम नहीं

---

१. १९२१ से १९३१ तक बारडोली तहसीलके अेक प्रमुख कार्यकर्ता।

२. श्री कुंवरजीके अेक लड़केका प्यारका नाम।

३. डॉ० विधानचन्द्र राय। कलकत्तेके सुप्रसिद्ध डॉक्टर। बापूजीके अुपवासोंके समय वे अुनकी सेवामें रहते थे। आजकल पश्चिम बंगाल राज्यके मुख्य मंत्री।

४. मामासाहब फड़के। अेक आश्रमवासी। गोधरा हरिजन आश्रमके संचालक।

चलेगा; रुपया भी कोअी नहीं देगा। अिसलिअे नवसारी, गोधरा वगैरा जहां-जहां काम चलता था, अुस सबका बजट पास कराकर अुतनी रकम हरिजन सेवक संघसे लेनेका निश्चय किया है। अुन-अुन संस्थाओंका स्वामित्व नहीं बदलेगा। सिर्फ अुन्हें अुचित सहायता मिलती रहेगी। और वे हरिजन सेवक संघकी देखरेखमें चलेंगी। अुनकी स्वतंत्र हस्ती जैसीकी तैसी कायम रहेगी। मामा अभी तो अिसी काममें स्वेच्छासे लगे रहेंगे। मैं किसीको भी रास्ता बतानेसे अिनकार करता हूं। मेरा मन ही नेतृत्व करनेसे अिनकार करता है। अिस हरिजन संघके बारेमें कुछ पूछना या जानना हो तो मुझे लिखिये। मुझे पता नहीं चलता कि क्या लिखूं। परन्तु आप जरासा अिशारा कर देंगे, तो सारी आवश्यक जानकारी दे दूंगा यानी भेज दूंगा। अैसा डर बिलकुल न रखिये कि मैं खुद जवाब तैयार करने बैठ जाअूंगा। हाथ, दिमाग और समय बचाकर काम कर रहा हूं।

देवदास जल्दी छूट गया है। अुसका तार आया था। मुझसे मिलकर तो जायगा ही। तार अहमदाबादसे था। बहुत करके बासे मिलने जायगा।

मणिलाल-सुशीला[1] के पत्र आते रहते हैं। अुनका काम ठीक चलता है। केशू भी अच्छी तरह जम गया है। . . .

अैसा मान सकते हैं कि किशोरलाल अब ठीक होते जा रहे हैं। ब्रजकृष्ण बच गया। अब थोड़ा चलता-फिरता भी है।

जमनालालको सर्दी वगैरा लग गअी है। शंकरलाल मानते हैं कि अुनका शरीर अच्छा तो हरगिज नहीं कहा जा सकता। वजन २०० पौंडके आसपास ले गये हैं।

ओम और किसन मजेमें हैं। मीराबहनका तो कहना ही क्या?

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

---

१. श्री मणिलाल गांधीकी पत्नी। दक्षिण अफ्रीकासे आनेवाले पत्रोंका अुल्लेख है।

३६

१५–१–'३४

भाओी वल्लभभाओी,

अभी शामके ४ बजे हैं। मौनवार है। कालीकटमें नागजी पुरुषोत्तम[1] के बंगलेमें बैठा हूं। देवदास और लक्ष्मी आज आ गये। कल ठक्करबापा और शंकरलाल आयेंगे। कल दोपहरको अढ़ाओी बजे जामोरिन[2] से मिलूंगा। पांच बजे त्रिचुरके लिओे निकल पड़ूंगा।

लक्ष्मी दिल्ली जाय या मद्रासमें प्रसूति कराओी जाय, यह प्रश्न है। वे दो दिनमें राजाजीसे मिलेंगे। बादमें अंतिम निर्णय करेंगे। देवदासको दिल्ली जानेकी अिजाजत मिल गओी है। फिर भी अनुभव लेनेके लिओे वह छह मास शायद मद्रासमें बितायेगा। दोनों विचार कर रहे हैं। लक्ष्मी देवदासकी गैरमौजूदगीमें प्रसूति नहीं चाहती। राजाजी अपनी अनुपस्थितिमें नहीं चाहते। अिस तरह समस्यामें समस्या पैदा हो गओी है। जीवनकी सफलता तो अैसे छोटे दिखाओी देनेवाले मसले भी सीधे ढंगसे हल करनेमें ही है न?

शंकरलालको मैंने खादीके बारेमें थोड़ी बात कर जानेको खास तौर पर बुलाया है। मैं देखता हूं कि हमारे विभागमें शायद अनावश्यक खर्च होता है। मैंने जो कुछ देखा है, वह अुनके सामने रखना है। अैसा महसूस होता है कि अेक प्रान्तकी खादी दूसरे प्रान्तमें भेजनेका बोझ अब तो बिलकुल छोड़ना चाहिये। अन्तमें मेरा मन अनंतपुरकी पद्धतिकी तरफ झुक रहा है। सावली भी ठीक

---

१. कालीकटके अेक कांग्रेसी।

२. जामोरिन — कोजीकोड (कालीकट) के अेक बड़े जमींदारकी आदरसूचक पदवी। मलयाली शब्द 'सामुदिरि' का अपभ्रंश। दंत-कथा यह है कि नवीं सदीमें मलाबारके राजाने अपनी जमीनका बंटवारा किया, तब अुसने जामोरिनको अितनी जमीन दी जितनीमें वहांके तल्ली मंदिरके मुर्गेकी आवाज सुनाओी देती।

लगती है। कृष्णदास (गांधी) और जाजूजी[1] अुस्ताद हैं और अेक-दूसरेकी खूब पूर्ति करते हैं।

कृष्णदास खूब चमक रहा है। केशू शांत है। . . .

देवदास बासे मिल आया। बा की बहादुरीकी बड़ी तारीफ करता है। बाको सताया तो जा रहा है। अैसा न हो तब तक मजा कैसे आये?

गुरुवायुर हो आया। वहां कुछ भी नहीं है। परन्तु यह कहा जा सकता है कि वर्णाश्रम संघने अुत्तरके पहलवानोंको काले झंडे फहराने और थोड़ी मार खानेको भेज दिया था। दो जनोंने प्लैट-फार्म पर कब्जा कर लिया था। अेक भाअीके पैर पकड़ लिये। अिस पर नौजवानोंने अुन्हें अुतर जानेको कहा। गुत्थमगुत्था हुअी। अिन पहलवानों पर भी कुछ मार पड़ी। हूं सकुशल, मगर स्वभावके अनुसार बरताव कर दिखाया। अिन दोनोंको मैंने अस्पताल भेज दिया और सभा शुरू कर दी। पूरी की। मनुष्योंकी अुपस्थिति होती ही रहती है। अधन्ने और नोट मिलते ही रहते हैं। अन्नपूर्णा जैसी अेक कौमुदी प्रगट हुअी है। अुसने अपने तमाम गहने दे दिये। जिसका *राम रक्षक है, अुसे कौन मार सकता है? अिसलिअे वह रखेगा* वैसा रहूंगा, वह कहेगा वैसा करूंगा, वह नचावेगा वैसा नाचूंगा।

बंगलोरमें हंगरीकी दो महिलायें — मां-बेटी मिलीं। दोनों चित्रकलामें बड़ी कुशल हैं। सादगीसे रहती हैं। अभी तो सर्वस्व हिन्दुस्तानको अर्पण कर दिया है। ये मां-बेटी भजनोंके स्वरमें सहज ही नाचती हैं।

नागिनी अमरीका जायगी, अैसा जान पड़ता है। कदाचित् सिरियस भी जाय। अिसकी फजीहतके बारेमें तो आपको बहुत नहीं लिखा। क्या लिखूं? समय भी तो चाहिये न?

अमलाका काम चल रहा है।

मणिका पत्र साथमें है। पूनियों और पुस्तकोंके बारेमें स्वामीको

---

१. *श्री श्रीकृष्णदास जाजू। श्री शंकरलाल बैंकरके बाद कअी* वर्ष तक अखिल भारत चरखा संघके मंत्री रहे।

लिखा है। पुस्तकें अेक ही आकारकी न हों तो जिल्द बंध सकेगी या नहीं, यह पता नहीं चलता। स्वामी अुस्ताद हैं, अिसलिअे हो सकेगा तो जरूर कर देंगे।

आपके नामका मणिका पत्र डाह्याभाअीने भेजा था।

बेलगांव जाअूंगा तब तो दोनोंसे मिलनेका बन्दोबस्त करूंगा। लेकिन वहां जानेका तय नहीं है।

मणिको लिखिये, बड़ोंकी सेवा अुनके पास रहकर ही नहीं की जाती। जो बुजुर्गोंका काम करता है, वह अुनकी सेवा ही करता है। पास रहनेका लोभ भले ही हो। वह स्वाभाविक भी है। किन्तु सेवा और सान्निध्यका अनिवार्य संबंध नहीं है। वह बेचारी मानती है कि अुपरोक्त पत्र सीधा भेजा गया होगा। लेकिन आपने देखा होगा कि वह साबरमतीमें स्नान[1] करके आया है। अिसलिअे चार-पांच जगह भीग गया है। यह हमें कोअी नया अनुभव नहीं है। येन केन प्रकारेण चित्तको संतुष्ट तो रखना है न?

गोरधनभाअीको आखिर शांत नहीं कर सका। परन्तु अब वे मुझे कुछ लिखते नहीं। मैंने अुनके प्रति भी जो धर्म लगा अुसका पालन किया है। विट्ठलभाअीकी तरफसे आये हुअे रुपयोंका हिसाब मैंने मंगवाया है और पत्रव्यवहार भी मंगवाया है। वह मिल जाय तो अुसे प्रकाशित करनेकी आवश्यकता जरूर मानता हूं।

मुझे लिखे तब भले वर्धा ही पत्र लिखे। परन्तु आपको ही सब कुछ लिखा करे और वह पत्र मुझे मिल जाय, तो भी मुझे पूरा संतोष रहेगा। आप ही अिस बारेमें अुसे रास्ता दिखाअिये। बाकी हाल तो आप लिखेंगे ही। लक्ष्मीका हाल मैं आपको लिख चुका हूं।

---

१. बेलगांव जेलके स्टाफमें कोअी गुजराती न होनेसे बेलगांव जेलसे जाने-आनेवाले गुजराती पत्र जांचके लिअे साबरमती जेलमें भेजे जाते और वहांसे संबंधित मनुष्योंके पास भेजे जाते थे। पू० बापूके नामके पत्रोंकी विधि तो बहुत लम्बी हो जाती थी। साबरमती जेलसे वे आअी० जी० पी० के पास जाते और वहांसे नासिक जेलमें जाते, जहां बापू रखे गये थे।

मृदुलाको और नंदूबहन[1] को पत्र लिख रहा हूं। ब्रजकृष्णको देवदास देख आया। वह अच्छा है। जी गया। आरामकी जरूरत है और वह ले रहा है।

राजाजी ६ फरवरीको अवश्य छूट जायंगे।

किसी भी कारणसे मन विचारमें न रहे, यह सीख लेनेकी जरूरत है। अिसके लिअे या तो गीता कंठस्थ कर ली जाय, संस्कृत सीखी जाय या रामधुन अुलटी-सुलटी रटी जाय।

मुझे तो चिन्ता करनेकी फुरसत ही नहीं मिलती, अिसलिअे चिन्ता न करनेकी सलाह देनेकी जरूरत नहीं रह जाती।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

३७

कन्याकुमारी,
२२-१-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

अिस बार अभी तक आपका पत्र नहीं आया। परन्तु मैं तो रिवाजके अनुसार यह लिख देता हूं। आज हम कन्याकुमारीमें हैं। यहां आबादी तो है नहीं। अिसलिअे परम शांति है। सिर्फ रुपये गिने जा रहे हैं अुसीकी खनखनाहट है। समुद्र सामने है, परन्तु गरजता बिलकुल नहीं।

देवदास और लक्ष्मी अब दिल्ली पहुंच गये होंगे। राजाजीसे मिल लिये। अुसके बाद अुनका पत्र नहीं आया।

डॉ० विधान अब अच्छे हैं। हां, हड्डी अभी बिलकुल अच्छी नहीं हो पाअी है। बिस्तरमें लेटे-लेटे काम कर रहे थे।

बिहारके भूकंपने मोतीहारीका नाश ही कर दिया लगता है। राजेन्द्रबाबू निकलते ही अिसमें जुट गये दीखते हैं। अुनका हृदयद्रावक

---

१. स्व० विजयागौरी कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध स्व० डॉ० कानूगाकी पत्नी। पू० बापूने १९३० में अपना अहमदाबादका मकान अुठा दिया, अुसके बाद जब वे अहमदाबाद आते, तब डॉ० कानूगाके यहीं ठहरते।

तार आया था। मैंने आश्वासनका तार भेजा है। सतीशबाबू[1] वहां पहुंच गये हैं। पन्द्रह हजार मनुष्य घायल हुअे जान पड़ते हैं। बहुतसे मर गये हैं, जिनकी संख्याका पता नहीं चला। अनेक बड़े-बड़े मकान भी रहने लायक नहीं रहे।

म्युरिल लेस्टर[2] फरवरीमें आ रही हैं। बहुत करके मुझसे कुनूरमें मिलेंगी। २९ जनवरीसे ५ फरवरी तक वहां रहूंगा। वे हांगकांगसे आ रही हैं।

पृथुराज थोड़े दिनके लिअे मेरे साथ घूम रहा है। कालीकटसे साथ हुआ है। अब वह बेलाबहन[3]से मिलने जायगा। वैसे अुसका स्वास्थ्य अच्छा हो गया है। चंद्रशंकरको मदद दे रहा है। अुन्हें अधिकसे अधिक मददकी जरूरत है।

त्रावणकोरमें कोअी विरोध देखनेमें नहीं आया। लोगोंकी भीड़ अुतनी ही बड़ी रहती है। (त्रावणकोरके) राजाने खूब अुदासीनता दिखाअी। सी० पी०[4] मिले ही नहीं। देवधर त्रिवेन्द्रममें हैं। कोआपरेटिव सोसायटी सम्बन्धी जांच कर रहे हैं। शरीर दुबला तो जरूर है, परन्तु काम दे रहा है, अिसलिअे अुन्हें सन्तोष है। केलप्पन[5] बहुत करके अेक अीसाअी महिलासे शादी करेगा। अिसलिअे हरिजन सेवक संघके साथ अुसका सम्बन्ध खतम हो जायगा। महिला अच्छी है। अिस सम्बन्धका

---

१. बंगालके खादी प्रतिष्ठानके संचालक। कुशल रसायनशास्त्री।

२. क्वेकर संप्रदायकी शांतिप्रेमी अंग्रेज महिला। अमीर घरानेकी होकर भी विलायतके मजदूरोंकी सेवाके लिअे अुन्होंने मजदूर मुहल्लेमें किंग्सली हॉलकी स्थापना की है। पू० बापूजी गोलमेज परिषदमें गये थे तब वहीं ठहरे थे।

३. श्री लक्ष्मीदास आसरकी पत्नी।

४. सर सी० पी० रामस्वामी। अुस वक्त त्रावणकोर राज्यके दीवान।

५. मलाबारके अेक कार्यकर्ता। गुरुवायुरका मंदिर हरिजनोंके लिअे खुलवानेको अुपवास करनेवाले थे। अिसके लिअे देखिये 'महादेवभाअीकी डायरी', भाग २।

विचार छह वर्ष पुराना लगता है। अिसमें कोअी बुराअी नहीं है। परन्तु अुसके विचारोंका संघके साथ मेल नहीं बैठ सकेगा।

बाका पत्र मिल गया। अुसमें कोअी खास बात तो नहीं है, फिर भी नकल करा सका तो भेज दूंगा। मणिका पत्र भेजा सो तो मिला ही होगा।

बहनें आज सब छूट गअी होंगी। सबको पत्र लिखे हैं। किशोरलाल अभी तक बिस्तरेमें ही हैं। जमनालाल अपना काम जोरोंसे चला रहे हैं। सुरेन्द्रको अभी तो अुसमें लगा दिया है।

जर्मनीका अेक खुरो नामक नवयुवक दक्षिण अफ्रीकासे आया हुआ है। वह आजकल मेरे साथ सफर कर रहा है। वह 'हिन्दू' का सम्वाददाता कहलाता है। अुस बेचारेके १००० रु० लुट गये। ठक्कर-बापा अुस पर मुग्ध हो गये हैं। वह चौकीदार और हम्मालका काम खुशीसे करता है। खूब मजबूत है। थकता ही नहीं। चंचल है और अच्छा पढ़ा-लिखा है। ब्रिटिश प्रजाजन बन गया है।

सिरियसको पुलिस ले गअी है। शायद नागिनी अब रवाना हो गअी होगी।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

३८

कुनूर,
३०–१–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र अिस बार अभी तक नहीं मिला। मिल जायगा। अिस समय कुनूरमें धूपमें बैठकर दो बजे यह लिख रहा हूं। 'हरिजन' के लेख पूरे किये। फिर भोजन किया। तामिलनाडका कार्यक्रम पूरा किया और फिर नींद ली। अब लिखने बैठा हूं।

अभी तो बिहार मेरा काफी समय ले रहा है। बिहारमें कैसा कहर टूटा, यह तो आपने देख लिया। राजेन्द्रबाबूके तार लगभग रोज मिलते हैं। अुनकी अिच्छानुसार काम किये जा रहा हूं। मेरे वहां जानेकी अभी जरूरत नहीं है। आश्रमके जो लोग छूट गये

हैं, अुन्हें बुलाया है। मैंने तार दे दिया है। जितने जा सकेंगे जायंगे। मुझे जवाब नहीं मिला कि कौन कौन जा सकेंगे। हरेक सभामें बिहारकी बात तो कहता ही रहता हूं। कुछ जेवर और नकद पाया भी है। अिस वक्त मदद तो काफी मिलती दीखती है। यह देखना है कि अुसका अुपयोग किस तरह होता है।

अमतुलसलाम[1] यहां आ पहुंची है। वह तो आज ही लौट जानेको तैयार थी। परन्तु अभी मैंने कुन्नूरसे रवाना होनेके दिन तक अुसे रोक लिया है। ६ तारीखको मेरे साथ अुतरेगी और गुजरात जाकर अपने काममें जुट जायगी। गंगाबहन[2] वगैरा आराम ले रही हैं।

बेलगांव अगले महीनेके आखिरमें या मार्चके आरंभमें जाना होगा। बीचमें बिहारका बुलावा आ जाय, तो मुलतवी भी करना पड़े। बेलगांव जाना हुआ ही, तो महादेव और मणिसे मिलनेकी अिजाजत मंगा लूंगा।

कानजीभाअी आजकलमें आने चाहिये। शांतिकुमार[3]ने पेड़ूकी गांठका ऑपरेशन कराया था। अब वह ठीक है। शंकरलाल खादीके बारेमें मिल गये। अब बम्बअीमें अिन्फ्लुअेंजामें पड़े हैं। यहां डॉ० राजन[4] और नागेश्वरराव साथ हैं। नागेश्वररावके बंगलेमें हम ठहरे हैं। किशोरलालने अभी बिस्तर नहीं छोड़ा है। स्वामीको बिहार जानेके लिअे तार दे दिया है।

पृथुराज चंद्रशंकरको मदद दे रहा है। वेलाबहन आनंदी और मणिको लेकर लक्ष्मीदासके पास बड़ोदा गअी हैं। अुन्होंने (जेलमें) २५ पौण्ड वजन खो दिया। बाबला और दुर्गा बलसाड़ गये हैं।

---

१. आश्रमवासी मुसलमान महिला। नोआखालीमें अिन्होंने अच्छा काम किया था। आजकल दिल्लीके आसपास निर्वासितोंमें काम कर रही हैं।

२. श्री गंगाबहन वैद्य। आश्रमवासी। बरसोंसे बोचासण वल्लभ विद्यालयमें काम कर रही हैं।

३. श्री शांतिकुमार नरोत्तम मोरारजी। सिंधिया स्टीम नेविगेशनके अेजेन्ट।

४. मद्रासके प्रसिद्ध डॉक्टर। मद्रास राज्यके अेक मंत्री थे।

अमीना बच्चोंको लेकर प्यारेअली[1] के पास जायगी। मणि परीख[2] बच्चोंको लेकर अभी तो कठलाल गअी हुअी है। बादमें नरहरिसे मिलने जायगी। फिर जो हो जाय सो ठीक। प्रेमा पहुंच गअी है। लीलावती[3] बीमार है। लेकिन हठ करके गअी मालूम होती है।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

३९

कुनूर,
५–२–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

यह पत्र सुबह दातुन करनेके बाद शुरू कर रहा हूं। . . . के पतेके बारेमें आपको लिखा है। ओमकी मार्फत वह आपको मिल गया होगा। कानजीभाअी आनेवाले थे, लेकिन बिहारके कारण रुक गये हैं। परन्तु मिलने आनेकी अुनकी अिच्छा तो है ही। अैसा ही भूलाभाअीका है।

श्री अरविन्द[4]से मिलनेका प्रयत्न करना (वहां रहनेवाले) गुजरातियोंके खातिर आवश्यक था। अुनका अिनकार शिष्टतापूर्ण था। अैसा लिखा है कि किसीसे नहीं मिलते। रिवियर्ड मदर[5] का कोअी

---

१. बम्बअीके अेक गांधीभक्त खोजा व्यापारी।

२. श्री नरहरिभाअीकी पत्नी।

३. श्री लीलावती आसर। आश्रमवासी बहन।

४. श्री अरविन्द घोष। आधुनिक भारतके महान योगी। १८९६ में बड़ोदा कॉलेजमें प्रोफेसर थे। १९०६ में कॉलेज छोड़कर बंग-भंगकी हलचलमें शामिल हुअे। १९०८ में मुजफ्फरपुर बम केसमें पकड़े गये, लेकिन निर्दोष छूटे। अुस समयसे अध्यात्म मार्गकी ओर झुके। १९१० में पांडीचेरी जाकर वहां आश्रमकी स्थापना की। और तबसे दिसम्बर १९५० में अवसान हुआ तब तक पांडीचेरी आश्रममें ही रहे।

५. मैडम पॉल रिशार। वे श्री अरविन्दके साथ साधनामें जुड़ीं तबसे आश्रमकी व्यवस्थाका अुत्तरदायित्व संभाल रही हैं। आश्रममें वे श्री माताजीके नामसे पहचानी जाती हैं। अुनका हिन्दी नाम मीरा है।

जवाब ही नहीं है। अब तो मेरा अुस शहरमें जाना ही बन्द हो गया है। मुझे यह अेक तरहसे अच्छा लगा। फिर भी चन्द्रशंकर और ठक्करबापाको वहां भेजनेका विचार रखता हूं। जितना देखा जा सके देख आयें। 'मदर' को 'मदर' कहनेमें हमारा क्या बिगड़ता है? जिसे जो पदवी मिली हो, अुसे अुसी नामसे बुलानेकी विनय तो गोलमेजमें भी रखी जाती थी। आप शायद कहेंगे कि गोलमेजका अनुकरण करें, तब तो हमारी आफत हो जाय। कहनेका मतलब यह है कि गोलमेजको भी यह विनय रखनी पड़ी थी।

... रावजीभाअीके जानेका कारण आप लिखते हैं वही था। अब तो वहां ... भी पहुंच गया है और हमारा हरिलाल[1] भी हो आया, अैसा रामदास बता रहा है। जिसके कअी लड़के-बच्चे हों, अुसे मां भी तो चाहिये न?

मेरे खयालसे जामोरिनके बारेमें तो मैं लिख चुका हूं। वे अत्यंत सादगीसे रहते हैं। आडंबर नहीं है। महल नामका ही है। साज-सामान कुछ नहीं। बहुत विनयसे पेश आये। अपने लड़केसे भेंट कराअी। नारियलका पानी पिलाया। आते वक्त साथमें फल रखवा दिये। बातें केवल शिष्टाचारकी ही कीं, अिसलिअे बहुत खुश हुअे। वृद्धावस्था है। कहते थे अब बहुत याद नहीं रहता। भले आदमी हैं। मिल आया, यह अच्छा हुआ।

कुनूर बड़ा रमणीय स्थान है। अगर मकान मिल जाय तो खाना-पीना सस्ता है। अिस ॠतुमें ठंड अच्छी पड़ती है। अत्यधिक नहीं। यहांके पहाड़ी लोगोंमें हमारे सेवक अच्छा काम कर रहे हैं। अुनका निमंत्रण था। अिसलिअे मैंने सूचित किया है कि अगर मुझे आठ दिनका आराम दो तो कुनूरमें दो, जिससे पहाड़ी लोगोंमें काम हो और जिन पत्रोंका जवाब नहीं दे पाया हूं, वे निपट जायं। यहां नागेश्वररावके बंगलेमें हूं। मेरा छज्जा मोटर-घरके अूपर है। छोटासा परन्तु बढ़िया कमरा है। मोटर-घर रहने लायक है। कमरा साफ है। यहां आया, यह अच्छा हुआ। रोज पहाड़ी लोग

---

1. स्व० हरिलाल गांधी। गांधीजीके बड़े पुत्र।

आते हैं। अूटीमें, यहां और पास ही कोटगिरिका पहाड़ है। वहां अितनी जबरदस्त सभायें हुअीं, जैसी पहले कभी नहीं हुअी थीं। हरिजनोंके डेपुटेशन मिले। हरिजनोंका ही अेक सुन्दर मठ देखा। पहाड़ी लोग शराब बहुत पीते हैं। सेवक ठीक काम कर रहे हैं। राजाजी कल मिलेंगे।

बिहारको अच्छी सहायता मिल रही है। हर जगहसे लोग रुपये-कपड़े भेजते रहते हैं। आश्रमके पंडितजी,[1] पारनेरकर,[2] रावजीभाअी,[3] बाल[4] वगैरा गये हैं। स्वामी[5] और

---

१. स्व० पंडित नारायण मोरेश्वर खरे। संगीतशास्त्री। आश्रमवासी।

२. अेक आश्रमवासी। अुस समय आश्रममें डेरी चलाते थे।

३. रावजीभाअी नाथाभाअी पटेल। आश्रमवासी। अब खेड़ा जिलेके भलाड़ा गांवमें ग्रामोद्योगका काम करते हैं।

४. काका कालेलकरके छोटे पुत्र।

५. अुस समय पू० बापूने स्वामी आनन्दको बिहार सम्बन्धी अपने विचार बताते हुअे नीचेका पत्र लिखा था:

सेंट्रल जेल,
नासिक रोड,
१–२–'३४

प्रिय स्वामी आनन्द,

तुम्हें तो अेकदम भागना पड़ा। डाह्याभाअी मिलने आये तब पता चला। मुझे तुम्हारा नासिकसे (बिड़ला सेनेटोरियमसे) लिखा हुआ पत्र मिलनेके बाद अेक भी पत्र नहीं मिला। डाह्याभाअी कहते हैं कि तुमने जानेसे पहले लम्बा पत्र लिखा था। मुझे तो वह पत्र मिला ही नहीं। मणिबहनने तुम्हें वे पांच पुस्तकें अिकट्ठी जिल्द बंधवाकर भेजनेको लिखा था। अुनका क्या हुआ, कुछ पता नहीं चला। अब तो तुम्हें पत्र लिखने या पढ़नेकी भी फुरसत नहीं होगी। परन्तु वहांके समाचार जाननेको जी व्याकुल हो रहा है। मुझे दो वर्ष बाद पहले-पहल जेल कड़ी लगी हो तो बिहारका हाल सुनकर; और अुसके बादसे आज तक मैं बेचैन हूं। काम हो रहा है,

भ्रोत्रे[1] भी गये है। मथुरादास जाअूं जाअूं कर रहे हैं। दूसरे लोग तैयार हैं। अुन्हें रोक लिया है। राजेन्द्रबाबू कहेंगे वैसा करेंगे। रुपया जमा हो रहा है, मगर मेरा मन जरा भी नहीं मानता। अिस समय फिर अच्छी तरह हमारा सिक्का जमानेका मौका था। मेरा खयाल है कि हमारा जैसा अुपयोग होना चाहिये वैसा हम न कर सके। मगर क्या करूं? लाचार हो गया हूं। राजेन्द्र-बाबू तो बेचारे किसीको कटुवचन कहनेवाले नहीं हैं। वहांके लोग बड़े भोले और अतिशय नरम हैं। अुनमें कुशलता थोड़ी है। परन्तु बापूने तुम सबको भेजा और जवाहर वहां पहुंच गये, तो सारा मुल्क जल अुठे, अैसा धड़ाका क्यों न किया? सभी बातें छोड़ कर बिहार पर सारी शक्ति लगानी चाहिये थी। केवल बापूको अपने रास्ते जानेकी छुट्टी दे देनी चाहिये थी। और सब कुछ ताकमें रखकर 'अेक ही बात और अेक ही काम' का वातावरण हो जाता तो बहुत कुछ हो सकता था। परन्तु मुझे तो अैसा लग रहा है कि "नाथ बिन बिगरी कौन सुधारे?" क्या करूं मजबूर हो गया हूं। अपने विचार और कामकाज बतानेका अवकाश मिले, तो मुझे लिखते रहना। जाननेकी बड़ी अिच्छा है। सरकारका तंत्र रेंगती हुअी गाड़ीकी तरह चलता है। अभी तक लोग दबे हुअे मुर्दे नहीं निकाल रहे हैं। तुम वहां कहां रहोगे? कौन कौन हो? यह सब और जनताकी तरफसे होनेवाली हलचलका कुछ वर्णन देना। राजेन्द्रबाबूके क्या हालचाल हैं? अुनका स्वास्थ्य कैसा है? प्रोफेसर वहां आ पहुंचे हैं, वे क्या करते हैं? अुनसे कहना कि मुझे अपने कुछ न कुछ समाचार भेजें। हमारे (गुजरातके) बाढ़-संकटके दिन याद आ रहे हैं। परन्तु वह बहुत ही छोटासा खेल था, जब कि यह समुद्रको मथनेकी बात है। बापू ९ तारीखको बेलगांव जायंगे। अुन्होंने महादेव व मणिसे मिलनेकी अिजाजत मांगी है। रावजीभाअी छूटकर वहां आया है। अुसे साथका पत्र दे देना।

वल्लभभाअीके वन्देमातरम्

1. गांधी सेवा संघके मंत्री।

मेरी बात भी अुन्हीं पर छोड़ी है। जब जीमें आये बुला लें! मेरी अपनी अिच्छा कर्णाटक और अुड़ीसाकी यात्रा पूरी करके वहां जानेकी है। अिसका अर्थ यह है कि २० मार्चके आसपास वहां पहुंचूंगा। सभी जगह चंदा कर रहा हूं। अिस बार मेरा सारा परिचय तांबेके पैसे देनेवालोंके साथ हो रहा है। कुछ मध्यमवर्गके भी हैं। ये बेचारे यथाशक्ति देते हैं। मगर गरीब लोगोंकी अुदारताका पार नहीं। रोज पहाड़ी बहनें आकर अुनके पास जो होता है दे जाती हैं। आश्रमका रामचन्द्रन् अभी मेरे साथ है। आप अुसे पहचानते हैं न? विद्वान है। अुत्तम है। जीवराजका स्वास्थ्य काफी गिर गया है। मगर स्वयं वीर पुरुष हैं, अिसलिअे अस्पतालका काम संभाल रखा है। बीचमें माथेरान जाकर आराम ले आते हैं।

पेरिन[1] और जमना बहन[2] का हाल तो सुना ही होगा। प्रेमा और लीलावती (आसर) छूटते ही चली गअीं। लीलावती तो हठीली है। शायद वहीं मरेगी। अमतुलसलाम यहां है। बीमार पड़ी है। अिसकी वफादारी अनोखी है। अमलाको अभी तो हरिजन सेवाके लिअे साबरमती भेजता हूं। देखता हूं वहां क्या करती है।

बीड़ज भी हरिजन सेवक संघको दे दिया है। गोशाला वापस हरिजन आश्रममें ले जानेका विचार है। अिससे हरिजनोंको तालीम मिलेगी और गोशाला अधिक सुरक्षित रहेगी।

बाके पत्रकी नकल साथमें है। अिसमें से मणिको मेरी तरफसे जो लिखा जा सके लिख दें। अुससे और महादेवसे मिलनेकी अिजाजत मंगवाअी है। तार दिया है। जवाब आजकलमें आना चाहिये। वहां ६ मार्चको जाअूंगा। . . . के बारेमें मुझे भी समाचार मिले हैं। मणिसे कहिये कि मृदुलाका लम्बा संदेश है। अुसे दर्द अभी तक सता रहा है। वह रोज अुसे याद करती है। मार्चमें छूट जानेकी आशा रखती है। दूसरी कोअी पुस्तकें चाहिये तो मंगवानेको

---

१. स्व० दादाभाअी नौरोजीकी पौत्री।

२. पेरिनबहनके साथ काम करनेवाली बहन।

लिखती है। दुर्गा, मणि परीख, बेलाबहन वगैराके पत्रोंके जवाब आ गये हैं। थोड़ी थकावट मिटानेके बाद ठिकाने लग जानेकी (जेल जानेकी) आशा रखती हैं।

अब्बाससाहब[1] की ८१ वीं सालगिरह अच्छी तरह मनाअी गअी दीखती है। काकाने अच्छा परिश्रम किया। बूढ़े बहुत खुश हुअे हैं। कल्याणजी[2] अुनकी जीवनरेखा लिख रहे हैं। अुसके सिल-सिलेमें हमारे सब विद्वान अुनके यहां गये और भूले हुअे संस्मरण ताजे कराये।

नेतीका प्रयोग आप कर रहे हैं, यह मुझे बहुत पसन्द आया है। शायद पुराने कपड़ेकी हाथसे बनाअी हुअी बत्ती ज्यादा अुपयोगी हो। अुसमें खराबी चूस लेनेकी शक्ति होती है। वह आपकी फटी पुरानी धोतीमें से बन सकती है। अुसीके साथ प्राणायामकी जरूरत है। नेती और प्राणायाम नाकको साफ रखते ही हैं। आपका कब्ज मिट गया, यह बहुत अच्छा हुआ। खुराकमें जो फेरबदल किया है, वह अवश्य लाभदायक होगा।

केलप्पनने जान-बूझकर अपने सम्बन्धकी बात नहीं छिपाअी। अिसमें अुसे कुछ अयोग्य लगा ही नहीं। अुसे भी सेल्फ रिस्पेक्ट[3] और जातपांत तोड़[4] का स्पर्श तो हुआ ही था। स्त्रीमें कोअी दोष निकालने लायक बात भी नहीं है। केलप्पन दुष्ट नहीं, भोला है और जिद्दी तो है ही। मलाबारका कारोबार राजाजीको सौंपनेकी अिच्छा है। अभी पूरा निश्चय नहीं किया है। कदाचित् रामचन्द्रन्को सौंपा जाय।

बुआजीके लिअे आपने अच्छी युक्ति सोची दीखती है। भले वे जहां हैं वहीं रहें। क्या आप समझते हैं कि बिगाड़नेके लिअे

---

१. स्व० अब्बास तैयबजी। बड़ौदा हाअीकोर्टके जज। असहयोग आन्दोलनके प्रारंभसे राष्ट्रीय कार्यमें पड़ गये थे।

२. श्री कल्याणजी वि० मेहता। अेक कांग्रेसी कार्यकर्ता। आजकल सूरत जिला स्कूल बोर्डके अध्यक्ष।

३. अिस नामकी संस्था।

४. जातपांत-तोड़क मंडल।

कुछ बाकी रहा है? परन्तु अैसी कोअी बात नहीं है। सर चिमनलाल[1] की 'दावत' में बहुत लोग आते नहीं दीखते। अुनका खाना बहुतोंको पसन्द नहीं आता, अिसमें वे बेचारे क्या करें?

बंगाल जानेकी बात अभी अधरमें लटक रही है। अंतमें जो हो जाय सो सही।

म्युरियल (लेस्टर) का मेरे नाम तार आया था। अुसे कोयम्बतूरके पास मिलने आनेके लिअे कहा है। थोड़े दिन साथ सफर करनेका सुझाव दिया है। अमृतलाल सेठ[2] ने मुझे अिन दिनों कोअी पत्र नहीं लिखा। मेरे लिअे भी अल्टीमेटम था। भले ही पृथ्वीके गर्भमें हो वह बाहर निकले। मनुष्यका शरीर भी तो पृथ्वीका टुकड़ा ही है?

आप दोनोंको बापूके आशीर्वाद

पालेने तो अिस बार सभी जगह भारी नुकसान किया है। कहीं पाला तो कहीं बेमौसमकी बरसात। भूकम्पके साथ अिन सब बातोंका सीधा सम्बन्ध मालूम होता है।

४०

पुदुपालयम्,
१३-२-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

यह राजाजीका आश्रम है। मंगलवारकी सुबह है। कोअी ५० आदमी भर गये हैं। परन्तु सबका काम चल जाता है। ऋतु अैसी है कि अड़चन नहीं मालूम होती।

म्युरियल लेस्टर और अुसकी सहेली कोयम्बतूरसे साथ हो गअी हैं। वे कल बंगालके गवर्नरसे मिलने वापस गअीं। अिसमें प्रेरणा मेरी थी। विषय केवल मिदनापुर[3] का था। मैं यह नहीं

---

१. स्व० सर चिमनलाल सेतलवाड। बम्बअीके प्रसिद्ध वकील। नरम दलके नेता। 'दावत' यानी अुनके लेख।

२. किसी समय 'जन्मभूमि' के सम्पादक।

३. मिदनापुरमें अेक क्रांतिकारीने अेक अंग्रेज अफसरकी हत्या की थी, अिसलिअे वहां सरकारकी तरफसे कहर बरसाया गया था। अुसी सिलसिलेमें गवर्नरसे मिलने गअी थीं।

मानता कि अिससे कुछ नतीजा निकलेगा, परन्तु अितना करना हमारा धर्म था। वे बहनें रविवारको लौटेंगी।

अमतुलसलाम रोगशय्या पर है। मेरे सामने ही लेटी है। अुसका हृदय सोना और शरीर पीतल है।

कविवर[1] का आक्रमण तो आपने देखा होगा। अुसका अुत्तर 'हरिजन' के मारफत दे रहा हूं। अुन्होंने बादमें सुधार तो किया ही है। वे जल्दबाजीमें लिख डालते हैं और फिर सुधारते हैं। अैसा होता ही रहता है।

भणसालीने मुंह सिलवा लिया है। पानीमें आटा घोलकर नली द्वारा चूसता है। कहता है अेक दर्जीसे होंठ सिलवा लिये थे। यह भी लिखता है कि बहुत शांत है। लंगोटी या कफनी पहननेका विचार है। काठियावाड़में थानके पास है।

छगनलाल (जोशी) का पत्र आया है। सुन्दर है। अुसने अच्छा अध्ययन कर लिया है। मानसिक स्थिति भी अच्छी है। शरीर ठीक है। दूध वगैरा भी ठीक मिलता रहता है। छूटनेका समय निकट आता जा रहा है।

अमलाको साबरमती जाने दिया है। अभी तो खुश है।

वालजी[2] यहां आये हैं। शरीर ठीक ही है। स्वामीके मित्र हिम्मतलाल खीरा आये हैं। अुनका शरीर अच्छा नहीं हुआ। अिसलिअे अैसा नहीं लगता कि यहां रह सकें। मथुरादास थोड़े दिनके लिअे आया है। कोअी खास बात नहीं है।

राजेन्द्रबाबूकी तरफसे मुझे बुलावा आया है। अिसलिअे कहीं

---

१. विश्वविख्यात कवि रवीन्द्रनाथ टागोर। बंगालमें कलकत्तेके पास स्थित शान्तिनिकेतनके संस्थापक। वे अपनी तमाम रचनायें पहले अपनी मातृभाषा बंगलामें ही लिखते थे। अुनकी 'गीतांजलि' पुस्तक पर अुन्हें नोबल पुरस्कार मिला था। ७ अगस्त, १९४१ को अुनका देहान्त हुआ।

२. श्री वालजी गोविन्दजी देसाअि। अेक आश्रमवासी। 'यंग अिंडिया' के अेक सहायक।

न कहींसे अधूरा काम छोड़कर जाना पड़ेगा। मैंने तार दिया है। अुनके तारकी बाट देख रहा हूं। अैसा बता दिया है कि २४ तारीखसे पहले तो हरगिज रवाना नहीं हो सकता।

बाका पत्र साथमें है।

देवदास दिल्लीमें आनंदमें है। पृथुराजका हाल ठीक है। काम कर रहा है।

लक्ष्मीदास अब पटना चले गये होंगे। औरोंको भेजनेका अभी विचार नहीं है।

अभी ही बालका पत्र मिला। आश्रमकी टोली खूब काममें लग गअी है। पूरा अुपयोग दे रही दीखती है। बाल और रावजीभाअी दोनों स्टोर संभालते हैं। पारनेरकर और सोमण[1] पटनामें हैं। मगनभाअी[2] प्रकाशन-विभागमें हैं।

बाके पत्रकी नकल साथमें है।

आज अितनेसे सन्तोष कीजिये।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

भड़ौंचसे कुसुमका पत्र आया है। वह अपने भाअीके लिअे अफ्रीका हो आअी। अुसके नाम प्यारेलालका लम्बा पत्र आया है। परन्तु हाल सब मेरे ही जाननेका है। अिसमें गीता अित्यादिकी और अुसके अध्ययनकी बातें हैं। जरूरी बात तो भूल ही रहा था। अभी सरकारी जवाब आया है कि मणि और महादेवसे मिलना नहीं हो सकता।

बापू

---

१. श्री रामचन्द्र सोमण। विद्यापीठके शिक्षक। अब नवजीवनमें काम कर रहे हैं।

२. श्री मगनभाअी प्रभुदास देसाअी। अेक आश्रमवासी। अब विद्यापीठके महामात्र और 'हरिजनसेवक' तथा 'हरिजनबंधु'के सह-संपादक।

४१

मद्रास कोदलबाकम,
१९-२-'३४

भाओी वल्लभभाओी,

मौनवार है। शामकी प्रार्थनाकी तैयारी हो रही है। लोगोंकी मंडली घेरकर बैठी है। अुसमें म्युरियल लेस्टर भी है। आज मद्रासके गरीब मुहल्लेमें हैं। गणेशन[1] को अेक नओी जगह मिली है। यहां चर्मालय वगैरा बनेंगे। दवाखाना तो है ही। पंचायती मकान या धर्मशाला जैसा, लेकिन अभी तो खंडहर है। चारों तरफ बरामदा है और बीचमें चौक है। अुसमें दो-चार पेड़ हैं। पानी भी अभी तो दूरसे भरकर लाये हैं।

लेस्टर बंगाल हो आओी। लाट साहबने तीन घंटेका समय दिया। खाना भी खिलाया। बड़ी शिष्टता दिखाओी। अनुचित व्यवहार सहन न करनेका निश्चय प्रगट किया, परन्तु नतीजा कुछ नहीं।

मुझे अब बिहारकी तैयारी करनी है। कर्णाटकको निपटाकर तुरन्त जाना पड़ेगा, अैसा लगता है। जो हो जाय सो सही।

कल ख्रिस्तकुल आश्रममें रहे। वहां हमारे परिचित डॉ० पेटन रहते हैं। अुनके अफसर पशुदासन् हिन्दुस्तानी हैं। भले आदमी हैं। कुमारप्पा[2] के मित्र हैं। जगह बढ़िया है। गिरजाघर बनाया है, जिसमें खूब पैसा खर्च किया है। ओीसाओी सम्प्रदायको भारतीय जामा पहनाया है, यह कहा जाय तो हर्ज नहीं।

दुर्गा और मणि परीख महादेवसे मिल आओीं। मेरे पास अभी तक अुनका पत्र नहीं आया है।

---

१. मद्रासके अेक पुस्तक प्रकाशक।

२. श्री जो० का० कुमारप्पा। ये १९२९ में गांधीजीके साथ हुओे, अुससे पहले बम्बओीमें चार्टर्ड अकाअुण्टेण्ट और ऑडीटरका काम करते थे। अर्थशास्त्रके अच्छे ज्ञाता हैं। ग्रामोद्योग संघकी स्थापनाके समयसे अुसके मंत्री थे। आजकल अध्यक्ष हैं।

नानीबहन झवेरी[1] का अहमदाबादमें रक्तप्रवाहके लिअे ऑपरेशन कराया है। ताराबहन मोदी[1] भी अहमदाबादमें ही है। रोगसे पीड़ित है।

बिहारके बारेमें आपका पत्र मिल गया। आपका लिखना ठीक ही है। मैं जाअूंगा तब प्रयत्न तो जरूर करूंगा। कल कृपालानीके आनेकी संभावना है।

कुसुमका पत्र अुसके भाअीके सम्बन्धमें अिसके साथ है। हृदय-द्रावक है। कुसुम अपनी मर्यादा खूब जानती है। अुसके बाहर वह कभी नहीं जाती। काकाके विषयमें जान लिया होगा। अुनकी मेहनत सफल जरूर हुअी। अब दो वर्षका आराम लेंगे। जवाहरलालके बारेमें भी देखा होगा।

श्रीनिवास शास्त्रीकी पत्नी बीमार हैं। अस्पतालमें हैं। मथुरादासको अुनके पास भेजा था। कल देखना है कि मैं क्या कर सकूंगा। पत्रोंका ढेर पड़ा है। अभी तक 'हरिजन' के लिअे अेक लकीर भी नहीं लिखी। अीश्वर जो करायेगा सो करूंगा।

गुजरातके पालेने मैं सोचता था अुससे कहीं अधिक नुकसान किया दीखता है। परन्तु अिस समय किसानकी सुननेवाला कौन है?

पांडीचेरी हो आया। वहां कोअी न मिला। माताजीका तो जवाब ही नहीं आया। परन्तु गोविन्दभाअी[2] दूसरे मुकाम पर आ गये थे। अुन्होंने सारा अितिहास कहा। आश्रम पर देखरेख रहती है, अिसलिअे मुझे वहां जाने देनेमें भी खतरा माना जाता है। वहां पचास फी सदी गुजराती हैं। गोविन्दभाअी भी आश्रममें थे। वहांका कार्यक्रम यह है: सबेरे पांच बजे अुठते हैं। प्रत्येक साधककी अलग कोठरी होती है। लगभग १५० साधक हैं। देशके सभी स्थानोंसे आते हैं। अुनमें दिलीप[3] और कमलादेवी[4] के पति हिरेन चट्टोपाध्याय भी हैं।

---

१. आश्रमकी बहनें।

२. ये भाअी पहले साबरमती आश्रममें रहे और बादमें श्री अरविन्दके यहां पांडीचेरी चले गये।

३. श्री दिलीपकुमार राय। सुविख्यात मधुर गायक।

४. श्री कमलादेवी चट्टोपाध्याय। अेक प्रमुख समाजवादी।

लगभग चालीस मकान किरायेसे ले रखे हैं। भोजन आश्रमके जैसा है। श्री अरविन्द वर्षमें तीन ही बार बाहर आते हैं। वे और माताजी बिलकुल नहीं सोते। श्री अरविन्द सुबह ३॥ से ४॥ बजे तक आराम कुर्सी पर लेटे जरूर रहते हैं। परन्तु नींद बिलकुल नहीं लेते। साधकोंको रोज अुनके पास डायरी भेजनी पड़ती है। वे प्रश्न पूछ सकते हैं। अुन्हें रोज चार बार श्री अरविन्द और माताजीकी तरफसे खास डाक मिलती है। वे रोज २०० पत्र लिखते हैं। किसीके अुत्तर पड़े नहीं रहते। श्री अरविन्द अगणित भाषायें जानते हैं। साधकोंको अन्तःप्रेरणासे अच्छा करते हैं। हिरेन चट्टोपाध्यायने शराब वगैरा छोड़ दी है। आश्रममें शराब-मांस त्याज्य हैं। यह सब वर्णन गोविन्दभाअीने दिया है। मुझे शरीक होनेको गोविन्दभाअी आमंत्रित करते हैं। अितना तो काफी है न?

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

तुलसी महेर[1] का कार्ड आया है। वह सही-सलामत है। और कोअी हाल नहीं लिखा।

४२

२७-२-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

यह पत्र मंगलवारको दयावती स्टीमरमें लिख रहा हूं। कुन्दापुरसे कारवार जा रहे हैं। चन्द्रशंकर घर गये हैं। वालजी साथ हैं, अिसलिअे अुन्हें भेजनेमें कोअी दिक्कत नहीं थी। मुझे हैदराबादसे ९ तारीखको रवाना होकर ११ तारीखको पटना पहुंचना है। तुरन्त मौन आता है। फिर भी वहां पहुंचना आवश्यक प्रतीत होता है। अिससे पहले जाना कठिन है। कर्णाटकमें सब तैयारी हो चुकी थी और बिहारसे कर्णाटक वापस आना मुश्किल था। अम्बालाल[2] और

---

१. अेक आश्रमवासी। नेपालके निवासी। आश्रमसे नेपाल जाकर वहां रचनात्मक काम कर रहे हैं।

२. सेठ अंबालाल साराभाअी।

मृदुला मिल गये। प्रेमवश मिलने ही आये थे। अंबालाल और सरलादेवी[1] विलायत जा रहे हैं। भारती और सुहृद[2] जब तक वहां हैं, तब तक अुन्हें चैन नहीं पड़ता। अेक तरफ सभी बच्चोंको पूरी स्वतंत्रता और दूसरी ओर बेहद प्रेम। दोनों मुझे अद्‌भुत दम्पती जान पड़े।

प्रोफेसर[3] के आनेकी बात भी मैं लिख चुका हूं। अुन्हें भी कोअी खास बात नहीं कहनी थी।

लेस्टर लंका गअी है। अेगाथा हेरिसन[4] २ मार्चको लंदनसे चलकर यहां आयेगी।

लक्ष्मीदास आठ दिनसे अेण्टेरिक (जहरीले बुखार)से पीड़ित हैं। अुनका तार कल स्वामीकी तरफसे आया। मैंने रोज तार मंगवाया है। पृथुराज मेरे पास ही है। अभी तो अुसने जानेकी मांग नहीं की है। मैंने अुसे छुट्टी दे ही रखी है। वेलाबहन जोरोंसे अुसका अिन्तजार करती होगी। स्वामी कहते हैं कि बीमारकी सेवा-शुश्रूषा अच्छी तरह हो रही है।

बाका पत्र साथमें है और भणसालीका कार्ड आपके लिअे रख छोड़ा है। हाल तो आपको लिख ही चुका हूं।

'टाअिम्स' में आपने मेरे बारेमें देखा होगा। सब जहरसे भरा है। मैंने कोअी मजाक किया हो, तो वह भी मेरा विश्वास माना जाता है! अुस 'सेल्फ रिस्पेक्ट' वालेके साथ विनोद न करूं, तो

---

१. सेठ अंबालाल साराभाअीकी पत्नी। अिस समय कस्तूरबा स्मारक निधिकी गुजरातकी अेजेंट।

२. अिनकी पुत्री और अिनका स्व० पुत्र।

३. आचार्य कृपालानी।

४. क्वेकर संप्रदायकी शांतिप्रेमी अंग्रेज महिला। श्री सी० अेफ० अेण्ड्रूजकी मित्र। १९३१ में पू० बापूजी गोलमेज परिषदमें लंदन गये थे, तब अुनकी सहायकके रूपमें काम करती थीं। तबसे अेक तरफ पू० बापूजी और कांग्रेस और दूसरी तरफ ब्रिटिश अधिकारियों तथा राजनीतिज्ञोंके बीच सम्पर्क जोड़नेका काम करती रहीं।

और क्या करूं? मगर अुसका भी अनर्थ! अैसी बातोंसे कैसे निपटा जाय? यह तो खुली बात हुअी। अंदर-अंदर तो बहुत ही जहर अुंड़ेला जा रहा है। अुसका क्या अुत्तर दिया जाय? सत्यके सामने यह झूठ टिक नहीं सकता, अिसी श्रद्धा पर चल रहा हूं। यह श्रद्धा अभी तक कभी बेकार साबित नहीं हुअी।

छगनलाल (जोशी) ३ तारीखको छूट रहा है। अुसे पत्र लिखा है। प्यारेलाल[1] वर्धामें है। मालूम होता है छगनलालने अध्ययन अच्छा कर लिया है। मराठी पर भी अधिकार कर लिया है। और साहित्य भी काफी पढ़ा दीखता है। अुसकी अिच्छा हो तो बेलगांवमें मिल जानेको लिख दिया है। कानजीभाअी तो आखिर नहीं आये।

ठक्करबापा अिटारसीसे अलग हो जायंगे। अुन्हें अभी तो पटना जानेकी आवश्यकता नहीं है। अभी तक नहीं सूझा है कि प्यारेलाल क्या करे। मूल वस्तु तो है ही। परन्तु यह वातावरण सबको गहरे विचारमें डालनेवाला है।

देवदासका पत्र नहीं आया।

राजाजी आरकोनमसे अलग हो गये। अमतुलसलाम अभी तिरूचेनगोड़में होगी। आरकोनम छोड़नेके बाद कोअी पत्र नहीं आया। आज रातको कारवार पहुंचूंगा। वहां कोअी पत्र मिले तो आश्चर्य नहीं।

जमनालाल पटना जानेवाले थे, परन्तु खांसीके कारण रुक गये।

डाह्याभाअीका पत्र अभी मेरे नाम नहीं आया। मणिको लिखें तो लिखिये कि मेरा प्रयत्न किस तरह विफल हुआ। दो दिन बेलगांव रहने पर भी अुससे या महादेवसे मिलना न हो, यह अुन्हें कितना खटकेगा? मगर किया क्या जाय?

गोशालाको पहले अलग रखा था, लेकिन अब हरिजन आश्रममें मिला देना है। अुसका अलग ट्रस्ट बना देनेका निश्चय किया है।

. . . छूट गये हैं। अुन पर जो जुर्माना था, सो अदा कर दिया है। अैसी अैसी बातें होती हैं। अुनका स्वास्थ्य गिर गया था।

---

१. स्व० महादेवभाअी थे तब तक सहायक मंत्रीके रूपमें बापूजीका काम करते थे। बादमें मुख्य मंत्री।

वीणाबहन[1] अब आपके अस्पताल[2] में नहीं हैं, यह तो आपको मालूम हुआ ही होगा। अब वे बम्बअीमें अलग मकान लेकर रहती है। अपनी लड़कियों पर अधिकार कर लिया है। और अब अुनके पति पर बच्चोंके खर्चके लिअे दावेकी बात चल रही है। संभव है बच्चोंका खर्च तो मिल जायगा।

मंगलोरमें कमलादेवीके लड़केसे और अुसकी मांसे मिला। लड़केने यू० पी० की पोशाक पहन रखी थी। सदाशिवरावकी मां और साससे मिल आया। कमलादेवीकी मां और लड़का मेरे पास आये थे। सदाशिवराव पर मुकदमा चल रहा है। आज आखिरी मियाद थी। कारवारमें पता चलेगा। वक्त मिलेगा तो अिसकी खबर दूंगा।

आप दोनोंको बापूके आशीर्वाद

४३

रोडबेल[3]
८-३-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र अभी तक नहीं आया। यह पत्र प्रार्थनासे पहले शुरू किया है। बेलगांव कल छोड़ा। यह स्थान छोटा-सा गांव है, मगर रेलवे है।

अिस बार पत्र देरीसे लिख रहा हूं, क्योंकि बेलगांवमें डाह्याभाअी, चंदूभाअी, दुर्गा, जीवणजी वगैरा आये थे। डाह्याभाअी मणिसे मिले। दुर्गा, जीवणजी और बाबला महादेवसे। यह कह सकते हैं कि मणि और महादेव सकुशल हैं। महादेव अपने काममें मशगूल है। चंदूभाअीसे सब कुछ सुन लिया है।[4] कानजीभाअी अभी तक नहीं

---

१. मिसेज लाजरस। कुमारप्पाके मारफत बापूजीके परिचयमें आअी थीं।

२. अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीका वाड़ीलाल साराभाअी अस्पताल।

३. बेलगांवसे ९० मील पर है।

४. नासिक जेलमें पू० बापूके पास थे। वहांसे छूटकर पू० बापूजीसे मिलने गये, तब अुन्हें पू० बापूके सब समाचार दिये थे।

आये। अपनी नाककी संभाल रखें। नेती करते रहें। नेती मुलायम कपड़ेकी ही ठीक समझें।

लेस्टर दिल्ली गअी है। हेरिसन १६ तारीखको आ रही है। बाका पत्र साथमें है। बाका भाअी सख्त बीमारीसे गुजरा। लक्ष्मीदास भयमुक्त है। ताराबहन मोदी काफी बीमार है। अुसके गलेमे गाठ होकर फूट गअी है। दांतने भारी दुःख दिया। अभी तक दे रहा है। किशोरलालको अभी तक बुखार आता है।

मैं ११ तारीखको पटना पहुंचूंगा। ठक्करबापा और अुनका लवाजमा दिल्ली जायगा। पटना जाकर अैसा लगा कि हरिजन यात्रा हो सकती है, तो ठक्करबापाको बुला लूंगा।

लीलावती (आसर) काफी बीमार हो गअी है। प्रेमा साथ है, अिसलिअे चिन्ता नहीं है। अमतुलसलाम अभी तक बीमार तो है ही। व्रजकृष्ण ठीक होता जा रहा है। यह तो आप जानते ही होंगे कि अहमदाबादमें बच्चोंका रोग फूट निकला है। आज अितनेसे सन्तोष करें। अब लोगोंसे मिलनेका समय हो गया।

बापूके आशीर्वाद

४४

पटना,
१४–३–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

बेलगांवका पत्र मिल गया होगा। वह ठेठ गुरुवारको डाकमें पड़ा।

यह पत्र बुधवारको सवेरे शुरू कर रहा हूं। अभी चार नहीं बजे। बाका पत्र पूरा किया और अिसे हाथमें लिया है। पटना रविवार रातको पहुंचा। आज ६ बजे मोतीहारीके लिअे चल देना है। कलका दिन साथियोंसे बातें करनेमें बिताया। पैसा अच्छा मिल रहा है। मगर जरूरत भी अैसी ही जान पड़ती है। कौड़ी-कौड़ीका सदुपयोग ही हो, यह सावधानी रखनी होगी। जमनालालजी यहीं हैं। लक्ष्मीदास अब अच्छे होते जा रहे हैं। घरमें चलते-फिरते हैं। राजेन्द्रबाबूका स्वास्थ्य

अब बिलकुल अच्छा कहा जा सकता है। आ पड़नेवाले कामके बोझसे बीमारीको भूल गये हैं। कल पटना शहर हो आया। बहुतसी सरकारी अिमारतें बेकार हो गअी हैं। कहते हैं लगभग डेढ करोड़का नुकसान तो केवल पटनामें हुआ है। ८० मरे और ४०० घायल हुअे। फिर भी दूसरे भागोंके सामने पटनाकी कोअी बिसात ही नही! वाअिसरॉय-फंडकी कमेटी अलग है और राजेन्द्रबाबूकी अलग है। अब देखना है कि क्या हो सकता है।

लेस्टर और अुसकी सहेली कल दिल्लीसे आअी। दोनों मेरे साथ आयेंगी। अुसकी सहेलीको जल्दी विलायत जाना पड़ेगा। लेस्टर अभी ठहरेगी। अुसे सब बातोंका अध्ययन करना है। अगाथा हेरिसन १६ तारीखको आ रही है। वह भी यहां तो आयेगी ही।

ठक्करबापा और अुनका स्टाफ हैदराबादसे अलग हो गया। फिर जब मैं अुड़ीसा वगैराका दौरा लगा सकूंगा, तब वे आयेंगे। मुझे दीखता हे कि लगभग अेक मास तो यहां लगेगा ही। ज्यादाकी जरूरत शायद नही पड़ेगी।

यहां आते हुअे रास्तेमें अिलाहाबाद पड़ा था। अिलाहाबादमे तीन घंटे ठहरना था। अिसलिअे आनंदभवन गया था। स्वरूपरानी (नेहरू) को आश्वासन मिला। अुनके पास काफी देर तक बैठा। कमला (नेहरू) के पास भी बैठा। कमला बीमार है। सास-बहू दोनों रोगशय्या पर पड़ी थीं। कमला डॉ० विधानकी बाट देख रही है।

शास्त्री ('हरिजन' पत्रवाले) के दो सुन्दर बालक थे। दोनोंको अुनके मां-बाप पूजते थे। अुनमें से छोटा बच्चा पांच वर्षका होगा। वह गुजर गया। अब दोनों विलाप कर रहे हैं। दोनों बच्चे बड़े कुशल। तामिल, हिन्दी, बंगाली समझते; नाचते-गाते। मा-बापने अुनको अूंचे प्रकारकी तालीम दी थी।

अब आज ज्यादा नहीं लिखा जाता। आंखें काफी थक गअी हैं। अभी प्रार्थनाका समय हो जायगा। सोया तो जा ही नहीं सकता।

आपका पत्र अिस बार भी नहीं आया। मैं लिखता रहूंगा।

बापूके आशीर्वाद

४५

२१–३–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपके पत्रकी अभी तो आशा कैसे रखूं? आज बुधवारका सवेरा है। ९ बजे हैं। पासमें बिहार कमेटीकी बैठक हो रही है। मुझे किसी भी समय बुला सकते हैं। अभी नहीं लिखूं, तो आज यह पत्र पूरा नहीं होगा। सब कुछ ठीक चल रहा मालूम होता है। प्रस्ताव तो आपने अखबारोंमें देखे ही होंगे। मौलाना, मालवीयजी, डॉ० विधान वगैरा थे। जमनालालजीको तो अिसीमें रोक लिया है। अैसा न करें तो हो सकता है कि मुझीको रह जाना पड़े। मेरी अिच्छा हो सके अुतनी हरिजन-यात्रा कर लेनेकी है। राजाजी बीमार हो गये हैं। दमा है। अप्रैलके आरम्भमें दिल्ली जायंगे। लक्ष्मीको अुनके बिना शांति नहीं मिलती। चरखा संघकी बैठक यहां होनेवाली है, अिसलिअे यहां होकर जायंगे। मैं यहांसे ७ तारीखको रवाना होकर आसाम जाअूंगा। वहां दो हफ्ते लगेंगे। फिर वापस यहीं आअूंगा। थोड़े दिन बिताकर अुत्कल जाअूंगा। अुसके बाद फिर यहीं। बादका अभी तय नहीं है। परन्तु थोड़े-थोड़े दिन सभी प्रान्तोंको दे देनेकी अिच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

४६

मुजफ्फरपुर,
२९–३–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आप नाराज न हों। यह पत्र आपको २॥। बजे सवेरे लिख रहा हूं। अलार्म ३ बजेका लगाया था। लेकिन १२ बजेके पहले ही बज गया और मैं अुठ बैठा। दातुन करके लिखने बैठा और थोड़ा लिखनेके बाद घड़ी पर निगाह पड़ी तो देखा १२ बजे हैं। काम अितना चढ़ गया है कि सोनेकी हिम्मत न हुअी। अिसलिअे सोचा जितना हो सके कर डालूं। 'हरिजन'का काम लगभग पूरा करके अब आपका

पत्र लिख रहा हूं। फिर बाकी लिखूंगा। बाका पत्र अब वादमें भेजूंगा। अुसकी नकल करानी है।

आपने अिस बार बहुत प्रतीक्षा कराअी। अब तो लिखते रहेंगे न? हेरिसन बहुत जबरदस्त स्त्री है। अैसी ही लेस्टर है। हेरिसन अधिक प्रौढ है। अुसकी निर्मलता और नम्रताका पार नहीं। लेस्टर जरा बीमार हो गअी है। अिसलिअे पटनामें है। हेरिसन मेरे साथ है। हम मुजफ्फरपुरमें है। सुबह बेलसंड जायंगे। वहां आश्रमके लोग है। प्यारेलाल मेरे साथ है। थोड़े ही समय रहेगा। देखता हूं। वालजी और हिम्मतलाल लेस्टरकी सेवामें है। कल छपरामें थे। डॉ० महमूद[1] के यहा ठहरे थे। चूर-चूर हुअे मकान तो सभी जगह है। डॉ० महमूद कलेक्टरके साथ मिलकर संकट-निवारणका काफी काम कर रहे हैं। संकट-निवारण विभागके अुच्च अधिकारीसे मैं मिला हूं। आप (गुजरातके बाढ़-संकटमें) जो कर सके थे, वह तो हरगिज नहीं होगा। फिर भी कोशिश जरूर करेंगे। जो कुछ खर्च होगा वह ठीक जगह पर होगा।

जमनालाल अभी यहीं रहेंगे। लक्ष्मीदासके बारेमें कह सकते हैं कि वे अच्छे हो गये। वे भी यहीं खादी-अुत्पादनमें लगेंगे। दूसरोंको भी जमनालाल अुसमें लगा देंगे। भूलाभाअी मुझसे मिल लिये। किसी मुकदमेके लिअे गया गये थे। वहांसे मिलने आये थे। थोड़ी ही बातें हो सकीं।

लगता है कि मणिको (बेलगांव जेलमें) काफी तपाया जा रहा है। अैसा ही सही। अुसकी रक्षा अीश्वर करेगा। बा मअीमें छूटेगी।

गुजरात तो जुलाअीमें जाना होगा। चन्द्रशंकर तीसरी-चौथी तारीखको आयेंगे। मेरी या बाहरकी कोअी चिन्ता न कीजिये। हम अीश्वरको बुद्धिके विनोदके रूपमें नहीं मानते। वह सच्चा है।

---

१. डॉ० सैयद महमूद। बिहारके अेक मुस्लिम नेता। कअी वर्ष तक कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य रहे। १९४६–५१ तक बिहार राज्यके अेक मंत्री। आजकल भारतीय संसदके सदस्य।

वही सच्चा है। अुसका ध्यान धरकर चलते हैं। अिसलिअे अुसकी अिच्छाके अनुसार वह हमें चलाये और हम चलें। अिस तरह आपको भी शामिल कर लूं, तो अिसमें अतिशयोक्ति तो नहीं है न?

कोअी साथी मिला[1]?

अब अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

४७

पटना,
६–४–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

अिस समय सवेरेके २।। बजने जा रहे हैं। राष्ट्रीय सप्ताह शुरू होता है। आजकल अुठनेका यह समय साधारण बन गया है। दिनमें सो लेता हूं। मेरे स्वास्थ्यके बारेमें आपका तार आया था। अुसका जवाब दे दिया था। अन्सारी मिले थे। अुन्होंने मेरी जांच की थी। अुनके कहनेका भाव यह था कि कोअी हरकत नहीं है। आराम लीजिये, यह तो सभी कहते हैं। भरसक लेता हूं अितना आप विश्वास रखें। फिर तो जो भगवान करे सो सही।

अन्सारी, डॉ० विधान और भूलाभाअी आ गये हैं। अुन्हें लिख दिया कि जिनका धारासभाओंमें विश्वास है अुनका वहां जाना धर्म है। वे अपने नामसे जायं, कांग्रेसके नामसे नहीं। मैं मानता हूं कि अिन्हें दबानेमें श्रेय नहीं है। अन्सारी मअी मासमें विलायत जायंगे। अपने स्वास्थ्यके लिअे और नवाब साहबके लिअे। भूलाभाअी सबका काम संभालेंगे।

मैं मानता हूं कि बहुत सोचनेके बाद मैंने जो कदम अुठाया है, वह आपको पसन्द आयेगा। जिसके जीमें आये वह अपनी जिम्मेदारी पर व्यक्तिगत सविनय भंग करे, यह ठीक नहीं लगा।

---

१. डॉ० चन्दूलाल देसाअी सजा पूरी होने पर छूट गये थे। अिसलिअे अुनकी जगह कोअी दूसरा साथी मिला या नहीं यह बापूसे पूछा है।

अिसलिअे साथियोंको सलाह दी है कि वे भी अिसे मुलतवी रखें। अैसा सविनय भंग मुझीको करना है और जब मुझे सूझेगा तब दूसरोंको शामिल होनेका न्यौता दूंगा। मुझसे आकर्षित होकर कोअी जाय तो वह स्वतंत्र भंग नहीं कहा जायगा और अिस तरह हम बड़ोंसे नहीं निपट सकेंगे। अिस बारेमें आप दो-तीन दिनमें बयान देखेंगे। अगर कदम समझमें न आये तो चिन्ता न करें। मुझे शंका नहीं कि अधिक विचार करने पर आपको यह ठीक ही प्रतीत होगा।

विट्ठलभाअीका वसीयतनामा पढ़ गया हूं। अुसमें सब बातें नियमानुसार मालूम होती हैं। मेरा रुख तो यह है कि बोसको मिलने हों अुतने रुपये वह भले ही ले जायं। आपका साथी कौन है? आज यह काफी है।

अधिक लिखनेको स्वामीसे कहता हूं।

बापूके आशीर्वाद

४८

१३–४–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आज अुपवासका दिन[1] है। और हम तेजपुरसे गोहाटी जानेवाले जहाजके डेक पर हैं। अेक किनारे ठक्करबापा, दूसरे किनारे ओम और आसपास हमारी मंडली है। सामने पाखाना है। बहुत गंदगी

१. रौलट कानूनके विरुद्ध सत्याग्रह करनेके लिअे ६ अप्रैलका दिन विरोध-दिनके तौर पर चुना गया था। और अुस दिन २४ घंटेका अुपवास, जुलूस, सभा और प्रार्थनाका कार्यक्रम रखा गया था। अुस दिनसे शुरू होनेवाले सप्ताहमें देशके कअी स्थानोंमें दंगे हुअे। १३ अप्रैलको अमृतसरमें जलियांवाला बागमें सैनिक अफसरोंने अेक शांत सभा पर गोलियां चलाकर सैकड़ों निर्दोष मनुष्योंको कत्ल कर दिया। अिस सप्ताहमें राष्ट्रमें अपूर्व जागृति हुअी। अुसकी यादमें ६ से १३ अप्रैल तक राष्ट्रीय सप्ताह मनानेकी प्रथा शुरू हो गअी। ६ और १३ तारीखको चौबीस घंटेके अुपवास रखे जाते थे, अुसी सिलसिलेमें यह अुपवास है।

नहीं है। यहां तो बरसातका मौसम शुरू हो गया है। परन्तु कल खूब वर्षा थी, अिसलिअे आज अुमस है। अिससे डेकका सफर सह्य है। अिस वक्त सुबहके नौ बजे हैं। १२ के लगभग गोहाटी पहुंचेंगे। वहां मीराबहन आ गअी होगी। वह बीमार हो गअी थी। अिसलिअे अुसे पटनामें रखकर हम आगे बढ़ गये थे। मेरा शरीर अच्छा है। जितना चाहिये अुतना आराम दे ही देता हूं। बूतेसे बाहर नहीं जाता। डॉक्टरोंकी सभी बातें सुनें, तब तो खाटसे अुठना ही न हो।

अहमदाबादमें मजदूर-मालिकोंके बीच जो झगड़ा हो रहा है, अुसमें मुझे मालिकोंका दोष ज्यादा दिखाअी देता है। मालिक खुद ही मंजूर करते हैं। अिस बार कस्तूरभाअी[1] ने जो भाग लिया है, अुसमें अुनकी शोभा नहीं रही। मालिकोंका प्रस्ताव अितना बेहूदा था कि मुझे लगा कि कुछ न कुछ लिखना ही चाहिये। मैंने कस्तूरभाअीको मीठा अुलाहना दिया। अिस प्रस्तावके पीछे धमकीके सिवा कुछ था ही नहीं। परन्तु बारह बरसकी मेहनतसे बनाया हुआ मकान[2] टूट जानेका डर था। मेरे पत्रका असर हुआ। यों कहिये कि मालिकोंमें ही फूट पड़ गअी। अिसलिअे चिमनभाअी[3] और साकरलाल[3] आये। कस्तूरभाअी जिनेवा जानेकी तैयारीमें थे, अिस-लिअे नहीं आये। मैंने सूचित किया कि सबूतके बिना मजदूरोंका वेतन हरगिज नहीं घटाया जा सकता। परन्तु मैंने सुझाया कि अगर वे नफेके साथ वेतनको जोड़ दें और कमसे कम वेतन मुकर्रर करनेको तैयार हो जायं, तो अिससे जो राहत अुन्हें मिल सकती हो वह मैं देनेको तैयार रहूंगा। यह बात तो अुन्हें पसन्द आअी, परन्तु अुन्होंने कहा कि अिस पर अमल करानेमें दूसरे मालिकोंकी तरफसे कठिनाअी होगी। यह तो है ही। अब देखता हूं क्या हो सकता है।

---

१. अहमदाबादके अेक मिल-मालिक।

२. अहमदाबादमें मजदूरों और मालिकोंके बीच पैदा होनेवाले झगड़े पंचायत द्वारा तय करानेकी प्रथा।

३. अहमदाबादके मिल-मालिक।

मेरा निर्णय तो आपने देखा होगा। आपकी राय जाननेकी अुत्सुकता रहती है। मैंने तो मान लिया है कि मेरे दोनों फैसले आप अिशारेमें समझ लेंगे। दोनों ठीक ही हैं, अिस बारेमें मुझे बिलकुल शक नहीं। अब सत्याग्रहको कहीं भी आंच आनेका डर नहीं रहा। और विधान-सभाओंमें जानेवाले पक्षकी निरुद्यमता टल गअी। वह बहुत खटकती थी। भले वे जायं। यदि स्वच्छता रखी जाय, तो वहां भी कुछ न कुछ काम तो होगा ही।

देवदास दिल्लीमें आराम कर रहा है। लक्ष्मीके दिन पूरे हो गये हैं। जब तक राजाजी वहां हैं और लक्ष्मी मुक्त नहीं हो जाती तब तक तो वहीं रहेगा।

बड़े लोग मुझसे फिर अवश्य मिलेंगे। आपको 'हरिजन' नहीं मिलता, यह आश्चर्यकी बात है। जांच कर रहा हूं।

नाकका काम नाजुक तो है ही, परन्तु सुधारना चाहिये। वह कैसे सुधरे, यह तो क्या कहा जा सकता है? अिसका विचार अन्तमें तो आपको ही करना पड़ेगा; क्योंकि मुझे अैसा मालूम हुआ है कि डॉक्टर भी अिसमें लाचार हो जाते हैं। बीमार ही कोअी न कोअी रास्ता ढूंढ़ निकालता है तो काम बन जाता है। मेरा विश्वास है कि प्राणायाम और कुछ आसनोंका असर जरूर होना चाहिये। मैं मानता हूं कि प्राणायाममें बाहरकी हवा दुगुनी या अुससे ज्यादा मात्रामें अुतने ही समयमें ली जानेके कारण अुस भागको जो ऑक्सिजन मिलता है, अुसका असर हुअे बिना रह ही नहीं सकता। प्राणायामकी सारी क्रिया करके आप विचारेंगे, तो आपको भी पता चलेगा कि अुस क्रियाका नाकके साथ निकट सम्बन्ध है। बुरा असर पड़नेकी तो कोअी बात ही नहीं। अिसलिअे जो असर होगा अच्छा ही होगा। प्राणायाम स्वच्छ हवामें ही करना चाहिये। अिसलिअे मैदानमें किया जाय तो अच्छा। आपका सोनेका प्रबन्ध क्या है, यह मैंने कभी नहीं पूछा। परन्तु मैं मान लेता हूं कि आपकी कोठरी खुली ही रहती होगी।

डाह्याभाओीने मणिका पत्र भेजा था। बहादुरीसे भरा होने पर भी दयाजनक अवश्य है। अमीनभाओी[1] से मैं मिला हूं। अुन्हें कितना समय बिताना है?

बापूके आशीर्वाद

४९

जोरहाट, आसाम
१८-४-३४

भाओी वल्लभभाओी,

प्रार्थनाका वक्त होने आया है। जोरहाटमें हैं। पक्षी चहचहा रहे हैं। यहां सवेरा जल्दी होता है। ५ बजे तो अुजेला हो जाता है।

बाके पत्रकी नकल अिसके साथ है।

अब तो सब कुछ आपकी समझमें आ गया होगा। मैं देखता हूं कि मेरे निर्णयका असर अच्छा ही हो रहा है। निर्णय करनेके बाद देखता हूं कि अुसका होना जरूरी ही था। अिसमें न जल्दबाजी हुअी और न देर ही। ठीक समय पर हुआ मानता हूं। परन्तु परिणामके बारेमें क्या सोचें? गीताका अध्ययन करना और परिणामका विचार करना, ये दोनों बातें कैसे हो सकती हैं? परिणाम जो होना हो सो हो। अच्छा दीखनेवाला बुरा हो सकता है और बुरा दीखनेवाला अच्छा हो सकता है। तब कैसे जानें? 'विपदो नैव विपदः' भी रोज गाते हैं।

सब रांचीमें जमा होंगे। वहां जैसा सूझेगा, वैसा रास्ता बताअूंगा। मेरा खयाल है कि धारासभावालोंको पूरी छूट देना हमारा धर्म है। जो लोग मनसे रोज धारासभामें बैठते हैं, वे शरीरसे भी वहां बैठें अिसीमें भलाअी है। तभी अुसके गुण-दोषोंकी जांच हो सकती है। रोज मनसे जलेबी खानेवाला अुसे खाकर देख ले यही अच्छा है न? बहुत करके मथुरादास भी आयेगा। पेरिन वगैरा भी आयेंगी। वहां ४ दिन रहना होगा। आशा है कि राजाजी भी आयेंगे। मालूम होता है राजाजीको सब कुछ बड़ा अच्छा लग रहा है। अिसी तरह

---

१. डॉ० चन्दूभाओीके छूटनेके बाद बापूको दिये गये साथी।

मथुरादासको। राजेन्द्रबाबूका तो शुरूसे ही अैसा है। प्यारेलाल अभी अुनके पास है।

जिनेवासे पीयर सेरेसोल, जो बहुत परोपकारी मनुष्य हैं, आ रहे हैं। यह कहा जा सकता है कि जहां भूकम्प जैसी घटना हो जाय, वहां पहुंचकर मदद देना ही अुनका काम है। खुद कुशल अिन्जीनियर हैं। वह बिहारकी मदद करनेके लिअे २५ तारीखको बम्बअी पहुंचेंगे। मथुरादास अुन्हें लेकर रांची आयेगा या रवाना करेगा। हिगिन बोटम[1] भी आ गये हैं। अुन्होंने भी मदद देनेको कहा है। हेरिसन और लेस्टर पटनामें मिल जायंगी। फिर देखूंगा कि क्या कर आअी हैं। दोनों कलकत्ते गअी थीं। मेहनत करनेवाली तो खूब हैं। निर्मल हैं, बहादुर हैं। परन्तु अुनकी आवाज तूतीकी आवाज है।

बाल (कालेलकर) अभी मेरे साथ है। काका हैदराबाद (सिंध) में (जेलमें) काफी आनन्दमें हैं। खूब किताबें अिकट्ठी कर रहे हैं। महादेव तो अिसमें डूबा हुआ है ही; अब काका डूबेंगे।

ओबेदुल्ला[2]के बारेमें मैंने अदृश्य रूपमें काफी मेहनत की है। मैं मानता हूं कि अुसका फल निकल रहा है। शायद बच जायगा।

अहमदाबादमें बच्चोंका रोग काफी फैल गया है। कोअी कहते हैं अिसका कारण सिनेमा है। हो तो आश्चर्य नहीं। देखनेवाले कहते हैं कि सिनेमाका दबाव मस्तिष्क और आंखों पर बहुत पड़ता है।

चन्द्रशंकर गये तो बीमार हो गये। जल्दबाजी करके लौट आये। फिर बीमार पड़ गये, अिसलिअे चले गये हैं। यह देखा गया कि सफर अुनसे बरदाश्त नहीं हो सकता।

कमला नेहरू और स्वरूपरानी अिलाज कराने कलकत्ता गअी हैं। बंगालकी यात्रा करनेका भी निश्चय हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

---

१. अलाहाबादमें खेती-बाड़ीका आदर्श फार्म चलाते थे।

२. डॉ० खानसाहबके दूसरे पुत्र। अुनके स्वास्थ्यके अनुकूल न पड़नेवाली जगह (मुल्तान जेल) में रखनेके कारण अुन्होंने अुपवास शुरू कर दिये थे। ७८ दिनके अुपवासके बाद सरकारने अुन्हें सियालकोट जेलमें भेजा था।

५०

मुजफ्फरपुर,
२३-४-'३४

भाओी वल्लभभाओी,

आपके दो पत्र मिले। अभी दातुन करके लिखने बैठा हूं। ३-४० हुओे हैं। अिसे तो अुठनेमें सुधार मानेंगे न? मुजफ्फरपुरमें गोखलेपुरीमें हैं। कल रातको १०।। बजे आसामसे आये। गोखलेके नामसे अेक छोटा-सा अुपनगर गोखले संस्थावाले वाजपेयीजीने बसाया है। आज मौन खुलनेके बाद अुसका अुद्घाटन करना है। राजेन्द्रबाबू मुझे कल कटिहारमें मिले थे।

वालजी जरा बीमार हो गये थे, अिसलिअे आकर तुरन्त सो जानेके बजाय डॉक्टरको बुलवाया। अिससे १२ बजे बाद सोना हुआ।

मेरी चिंता न कीजिये। शरीरको खूब संभाल रहा हूं। नींद किसी न किसी तरह पूरी कर लेता हूं।

नारणदास गांधी (जेलमें से) निकलनेके बाद काफी बीमार हो गये हैं। नकसीर खूब छूटती है। मगर अब ठीक हैं। रांचीमें मिलेंगे।

आप परेशान हैं, यह आश्चर्यकी बात है। मैंने तो सबसे कहा था कि आपको यह कदम समझनेमें देर ही नहीं लगेगी। परन्तु आपके पत्र आपका दुःख बता रहे हैं। बाहर रहनेवालोंमें किसीकी आप जैसी हालत हुअी नहीं लगती। जवाहरके बारेमें अैसा जरूर खयाल था, परन्तु अुनके बारेमें यह मान रखा था कि वे थोड़ी ही देरमें समझ लेंगे। मेरा यह खयाल कि जेलमें बैठे हुअे बाहरकी बात नहीं समझ सकते, क्या आपके लिअे भी सही साबित हो रहा है? या मैं ही सही रास्तेसे बिलकुल भटक गया हूं? मुझे अभी तक अैसा कुछ नहीं लगता। किया हुआ निर्णय ठीक है, यह दीयेकी तरह साफ दिखाअी देता है। पूनामें ही मुझे यह बात क्यों न सूझी, यह कहना भी व्यर्थ है। अुस वक्त यह सूझने जैसी बात नहीं थी। वक्त पर ही जो बात सूझती है, वही शोभा देती है। पूनाके समय पूनाकी बात ठीक थी और अिस वक्त यही मुनासिब है। बुआजीके कहनेका

हर्ष या शोक बिलकुल नहीं हो सकता। अगर हमने यह निर्णय न किया होता, तो अपार हानि होती।

मुश्किलें तो जरूर हैं। लेकिन अेक भी मेरी नजरसे बाहर न थी। अुन्हें पार कर लेंगे। अिस कदमसे जनता अूंची अुठी है; वह और अुठेगी। किसानोंको जवाब दिया जा सकता है। देंगे। जवाब नहीं दिया जाता, अगर मैं भी हार गया होता। अिसमें अहंकार हो सकता है, अैसा आपको तो स्वप्नमें भी खयाल नहीं होगा। सब दलीलें कैदीके नाते आपसे नहीं की जा सकतीं, अिसलिअे अितना ही काफी समझता हूं। धीरजका फल मीठा होता है। धीरज रखें। सब अच्छा ही होगा।

स्वराज दलके पुनर्जीवित होनेके बारेमें तो साफ समझमें आने जैसी बात है। अुसके पुनर्जीवित होनेकी अत्यन्त आवश्यकता थी। अैसा लगा कि जो दल कअी ठोकरें खाने पर भी टिका हुआ है, अुसके लिअे कांग्रेसमें स्थान होना ही चाहिये। मैं मानता हूं कि यह बात केवल अिसी वक्तके लिअे नहीं, परन्तु हमेशाके लिअे सही है। अिसमें भी मुश्किलें हैं। स्वार्थ भी है। अनुभवकी कमी भी है। जो कहिये सो है। फिर भी जो है, अुसे मिटाया नहीं जा सकता। अुसमें सुधार हो सकते हैं। अुस पर अंकुश रखा जा सकता है। अिससे अधिक या कम कुछ नहीं हो सकता। यह कहनेमें भी हर्ज नहीं कि मैंने हिम्मत बंधाकर स्वराज दलवालोंको खड़ा किया है। अुनकी अिच्छा थी, परन्तु हिम्मत नहीं हो रही थी। पूनामें मैंने जो सुझाया था, वह अब फलने लगा है। कांग्रेसको धारासभाओंसे सर्वथा अलिप्त रख सके होते तो दूसरी बात थी। परन्तु वह तो जबरदस्ती करने जैसी बात होती। 'सन'[1] के दर्शन आपने ही पहले-पहल कराये। अिसमें तो अैसी ही बातें आयेंगी न? अिनमें थोड़ा बहुत सत्य है जरूर। बेचारी लेस्टर! वह और अेगाथा कल पटनामें मिलेंगी। अुन दोनोंको तो यह निर्णय बहुत ही पसन्द आया। अपनी शक्तिके अनुसार वे खूब मेहनत कर रही हैं। परन्तु आज अुनकी आवाज

---

१. अुन दिनों बम्बअीसे निकलनेवाला अेक अंग्रेजी अखबार।

कौन सुनता है? अितने पर भी वे अितना सब समझ लेती हैं, यही बहुत है। दोनों निर्मल हैं, बहादुर हैं। स्विट्जर्लैण्डसे सेरेसोल आ रहे हैं। वे होशियार अिन्जीनियर हैं। बिहारकी मददके लिअे आ रहे हैं। शान्तिप्रेमी हैं। मैं अुनसे वीलनेवमें मिला था। भले आदमी हैं। अगर अुनका शरीर टिका रहा, तो बहुत कुछ कर सकेंगे। देखें, क्या करते हैं।

फूलचन्द बापूजी[1] के स्वर्गवासका तार मुझे कल ही मिला। अेक भला सेवक चला गया। यह मौत बहुत भारी मानी जायगी। साथकी टिप्पणी नरसिंहभाअी[2] ने लिखी है। आपको पसन्द आयेगी। नरसिंहभाअी लिखते हैं कि वे रातको बिना किसी रोगके महानिद्रामें सो गये। आखिरी दिन तक काममें जुटे रहे। कुछ भी नहीं हुआ था। तब फिर कोअी अुनके पास क्यों रहने लगा? रातको ही घड़ी बन्द हो गअी। चन्द्रशंकर पंड्या[3] तारसे पूछते हैं कि लिखिये क्या किया जाय? अिस वक्त स्मारककी तो बात ही क्या? आपको कुछ सुझाना है?

ठक्करबापा दादा[4] से मिलने गये थे। संकट-निवारणके पैसेके मामलेमें। दादा आनन्दमें हैं। अुनका शरीर खूब अच्छा बन रहा है। अुन्हें खास जल्दी नहीं है। भले ही न हो। यह भी ठीक ही है।

बापूके आशीर्वाद

---

१. स्व० फूलचन्द बापूजी शाह। नड़ियादके निवासी। गुजरातके अेक बहुत पुराने राष्ट्रीय कार्यकर्ता।

२. स्व० नरसिंहभाअी अीश्वरभाअी पटेल। वे अपने सार्वजनिक जीवनके शुरूमें कुछ समयके लिअे बम-आन्दोलनमें शरीक हो गये थे। फिर पूर्व अफ्रीका और शान्तिनिकेतनमें रह आनेके बाद आणंदमें बस गये। गांधीजीकी प्रवृत्तियोंमें भाग लेते और 'पाटीदार' मासिक निकालते थे।

३. अेक गुजराती विद्वान। नड़ियादके निवासी।

४. श्री गणेश वासुदेव मावलंकर।

५१

रांची,
३–५–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपके दो पत्र मिले। मुझसे आपका दु:ख[1] नहीं मिटाया जा सकता। समय ही अुसको मिटा सकेगा। अिस तरह जेलके सुख नहीं भोगे जाते। मुश्किलोंसे भागकर भी क्या करेंगे? कहां जायंगे? दिया हुआ हथियार छीना नहीं गया है। अुसकी अुपयोगिता सिद्ध करनेके लिअे अुसका अुपयोग मुल्तवी कर दिया गया है। यह अनुभवसे ही सिद्ध किया जा सकता है। जो जियेगा सो देखेगा।

चन्दूलाल, कानजीभाअी, छोटूभाअी[2] और रविशंकर[3] आ गये हैं। मृदुला भी है। गोशीबहन[4] और पेरिनबहन भी हैं। परन्तु सारा वर्णन देनेका समय नहीं है। यह तो आपको थोड़ी-बहुत सान्त्वना देनेके लिअे ही है। आपके पास दूसरे पत्र आते ही रहते हैं, अिसलिअे आज थोड़ा लिखूं तो हर्ज नहीं। वेलाबहन वहीं है। कान्ति[5] और नारणदास यहां हैं। नारणदास काफी दुबले हो गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

---

१. सामूहिक और व्यक्तिगत सविनय भंग मुल्तवी करके पूज्य बापूजीने सत्याग्रहको अपने तक ही मर्यादित कर डाला। अिसलिअे वस्तुत: तो लड़ाअी बन्द ही कर दी गअी। पू० बापूको यह पसन्द नहीं आया था, अुसीका दु:ख।

२. स्व० छोटूभाअी पुराणी। गुजरातके बहुत पुराने राष्ट्रीय कार्यकर्ता। गुजरातमें व्यायाम आन्दोलनके मूल प्रवर्तक।

३. श्री रविशंकर व्यास। पू० बापूजीके शब्दोंमें पुराने जोगी। अुन्होंने अपने सार्वजनिक जीवनका आरम्भ खेड़ा जिलेकी पाटण-वाड़िया और बारैया जातियोंके सुधारसे किया। धारालोंके गुरु कहलाते हैं। आजकल तो जहां-जहां संकट आ पड़ा हो, वहीं पहुंचकर पर-दु:ख-भंजक बन जाते हैं। वे बहादुर, निडर और अत्यन्त कसे हुअे सत्याग्रही हैं। सारे गुजरातमें महाराजके नामसे प्रसिद्ध हैं।

४. स्व० दादाभाअी नौरोजीकी पौत्री।

५. साबरमती सत्याग्रह आश्रमका विद्यार्थी।

५२

साखी गोपाल,
१०-५-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आज रातको अेक बजे बिलकुल ताजा अुठ बैठा हूं। अिससे चौंकिये नहीं, नाराज न होअिये और चिन्तामें भी न पड़िये। यह तो अीश्वरकी महिमा है। अेक गांवमें जमीन पर घासके गद्दे पर लेटा हुआ हूं। पासमें मीरा वगैरा सो रही हैं। दूसरे सिरे पर ठक्कर-बापा वगैरा हैं। अिस गांवका नाम चन्दनपुर है। पैदल यात्राका आज तीसरा दिन है। पुरीसे १० मील दूर हैं। शायद ८ हो। कल सवेरे पुरीसे कूच किया। जैसे आपने दांडी-कूचकी रचना की थी, अुसी तरह ठक्करबापाने अिसकी की है।

पुरीमें मैं खूब व्याकुल हुआ। रेल और मोटरसे थक गया। अपना दुःख बापा और दूसरे साथियोंके सामने रखा। सबको मेरी सूचनाकी जरूरत तो महसूस हुअी, मगर चौंक अुठे। बादमें शांत हुअे। पुरीमें ही निश्चय किया और अमल भी वहीं किया। पुरीकी सभामें पैदल गया। सनातनियोंका जोश अुतरा हुआ जान पड़ा और नारे भी कम हो गये। कल सवेरे प्रयाण किया, तब किसीको खबर नहीं पहुंची थी। परन्तु जहां पहला मुकाम हुआ, वहां जैसे दिन चढ़ता गया वैसे लोग बढ़ते गये। शामको चन्दनपुर आते-आते तो रास्ता लोगोंसे खचाखच भर गया और आते ही सभा हुअी। अुसमें मनुष्य अुमड़ पड़े। चारों तरफसे आये थे। हम गांवके किनारे खुलेमें पड़े हैं। मेरे लिअे पर्णकुटी जैसा दिखावा किया गया है, परन्तु वह दिखावा ही है। साथमें तो जो लोग थे वे ही हैं। अुनमें हरखचन्द, जीवराम[1] और पुरबाअी[2] शामिल हो गये हैं।

---

१. स्व० जीवराम कोठारी। कच्छके निवासी। अपनी लगभग १ लाख रुपयेकी संपत्ति पू० बापूजीको देकर अुड़ीसाके कंगालोंकी सेवा करने अुड़ीसामें जा बसे और वहीं अुनका देहान्त हुआ।

२. स्व० जीवराम कोठारीके साथ काम करनेवाली बहन। आजकल अुड़ीसामें काम कर रही हैं।

यहांके नेता तो हैं ही। अुनमें गोपबन्धु चौधरी[1] की पत्नी भी हैं और आश्रममें रही हुअी सोनामणि है। अुड़ीसाकी यात्रा अिस तरह होगी। दूसरे प्रान्तोंमे मैंने प्रार्थना तो अवश्य की है कि मुझे अिस तरह बाकीका सफर पूरा करने दें। और यदि पैदल यात्रा करूं, तब तो अलग-अलग प्रान्तोंमें ले जानेका आग्रह भी लोग छोड़ देंगे। अैसा हुआ तो यह सारी यात्रा यहीं पूरी कर लूंगा। हां, यह जरूर सोचना होगा कि बरसात शुरू हो जाने पर क्या हो सकेगा। परन्तु अुस वक्त अगर पैदल न चला जा सके, तो मुझे अेक जगह बैठ जाना पसन्द होगा। देखूंगा क्या होता है। सब साथी पटनामें मिलेंगे। वहां ज्यादा पता लगेगा। जितना अुन्हें समझा सकूंगा, अुतना करूंगा। मैं मानता हूं कि यह सारा कदम समझनेमें तो आपको कठिनाअी नहीं हुअी होगी। आप जानते हैं कि मेरे किसी भी कदमके लिअे आपका समर्थन मिलता है, तो मुझे अच्छा लगता है। लेकिन मुझे खुश करनेके लिअे समर्थन भेज दें, यह भी अच्छा नहीं लगेगा।

रांचीसे रवाना होते समय मोटरकी भारी दुर्घटना हो गअी, यह तो आपने जान लिया होगा। "जेने राम राखे तेने कुण चाखे?" यह धीरा भगतका पद है। कैसा अनुभव-वचन है!

आतंकवादियोंको कौन समझाये? सरकारको कौन समझाये? देखिये न, दार्जिलिंगमें कैसा पागलपन किया!

साथकी गीता-प्रवेशिका आपको नहीं भेजी?

बापूके आशीर्वाद

५३

चम्पीपुरहाट, (अुत्कल)
२२–५–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र परसों मिला। अिस समय ३ बजे हैं। . . आश्रममें सब सो रहे हैं। कल (सोमवारको) यहां पहुंचे। समाजवादी दलका भला मसानी साथ है। आज वापस बम्बअी जायगा। अेगाथा भी

---

१. अुड़ीसाके प्रमुख कार्यकर्ता।

साथ है। चार-पांच दिनमें जायगी। सेरेसोल आज साथ होंगे। २–४ दिन रहेंगे। म्युरियल भी आयेगी। २ दिन रह जायगी। दूसरे यहांके जो लोग साथ हैं, अुनके नाम नहीं दे रहा हूं। यह यात्रा १२ तारीखको बालासुरमें पूरी होगी। अिसके बाद पैदल चलना छोड़ कर प्रत्येक प्रान्तको थोड़े-थोड़े दिन देना तय किया है। वह अेक स्थान पर बैठकर करना है। १४ तारीखको बम्बअी पहुंचना है। वहांसे १७ को पूना और २६ को अहमदाबाद। वहांसे सिन्ध। वहां ३ दिन रहकर ३ दिन लाहौर और वहांसे यू० पी०। अिसीके साथ अेक प्रति रख रहा हूं। अिसमें फेरबदल होना संभव है। सब प्रान्तोंके आदमियोंको पटनामें अिकट्ठा किया था। अुनका खयाल था कि मुझे अुनके प्रान्तोंमें तो जाना ही चाहिये। अन्तमें यह निर्णय किया कि वहां जाकर थोड़े दिन अेक जगह बैठ जाअूं। ये महीने बरसातके होंगे, अिसलिअे पैदल चलना मुश्किल हो सकता है। पटनाका हाल तो आपने पढ़ लिया। जो हुआ सो ठीक ही हुआ समझिये। लोगोंकी यही अिच्छा थी। केवल मेरे हां कहनेकी प्रतीक्षा की जा रही थी। परन्तु आरम्भ होते ही झगड़े भी शुरू हो गये हैं। अन्सारी और मालवीयजीकी भलमनसाहत और सहनशीलताकी हद नहीं। डॉ० रायके तेज स्वभावका पार नहीं। अब देखें क्या होता है। अिसके साथ सुशीला[1]का शब्दचित्र भेजूंगा। शायद ओम भी लिखेगी। अेगाथासे लिखनेके लिअे कहूंगा।

बा छूट गअी। वह वर्धासे दिल्ली होकर कहीं न कहीं साथ हो जायगी।

बाढ़-संकट-निवारण वगैराका जो रुपया है, अुसमें से ५,००० अिस प्रकारके हरिजन-संकटके लिअे मैंने खर्च करना चाहा। परन्तु मैंने सुना है कि आपकी आज्ञा अुसमें से कुछ भी खर्च न करनेकी है। अिसलिअे अेक हजार ही मिले। दूसरे लेनेसे पहले आपसे ही पूछ लेना ठीक मालूम हुआ। अिस बारेमें जो याद हो या अिच्छा हो सो लिखिये।

सुरेन्द्र[2] वर्धामें अुपवास कर रहा है। केवल स्वास्थ्य सुधारनेके

---

१. श्री सुशीला पअी। आजकल कस्तूरबा स्मारक-निधिकी मंत्री। अुस समय राजकोट वनिता विश्रामकी मुख्य अध्यापिका।

२. अेक आश्रमवासी।

लिअे। जेलके भोजनने बड़े-बड़े महारथियोंके शरीर तोड़ दिये। नारण-दासकी नाकसे खून बहता था। बूढ़े जैसे होकर बाहर आये। स्वामीका फौलाद जैसा शरीर भी टूट गया। सुरेन्द्रका भी अैसा ही हुआ। निरे स्टार्च और तेलसे काम नहीं चला। मैं देखता हूं कि दूध-दहीके बिना काम नहीं चलता। मणिलालकी सुशीलाके लड़का हुआ है। मणिलालने आज तक खबर ही नहीं दी। अिस वंशवृद्धिमें मेरी तो दिलचस्पी ही नहीं रही। अगर कुछ है तो आन्तरिक अुद्वेग। फिर भी यह कहनेसे कि कुदरतको कौन रोक सकता है या यूरोपकी पद्धति (संतति-नियमन की) ग्रहण करके 'चारुलोचने! चलो, आनन्द मनायें और अुसका परिणाम रोकें' की वृत्ति अपनानेसे शुद्ध ज्ञान मिल ही नहीं सकता। जब तक मृत्यु अजित है, तब तक मनुष्य जो कुछ करता है सब बेकार है। अिसीलिअे अीशोपनिषद्का पहला मंत्र लिखा गया। वह ध्यानमें है न? शायद आपको याद होगा कि मैं यह अुपनिषद् वहां रटता और रोज पढ़ता था। न हो और चाहें तो भेज दूंगा। अुसमें कुल अठारह मंत्र हैं। अितनेमें ही सारा ज्ञान भर दिया गया है। अिसमें और गीतामें भेद नहीं है। जो अिसमें बीजरूपमें है, वह गीतामें सुन्दर वृक्षके रूपमें दिया गया है। अब और आगे नहीं बढ़ूंगा।

बापूके आशीर्वाद

५४

बेरीमूल, (अुत्कल)
३०-५-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

अिस बार आपका पत्र अभी तक नहीं मिला, यद्यपि आज बुधवार है।

नया जहाज बनते ही अुसमें दरार पड़ गअी है। चलेगा तो जरूर, मगर दरारवाला जहाज किनारे पहुंच जाय तब है। चौकड़ी[1] फिर बम्बअीमें १५ तारीखको मिलेगी।

---

१. स्व० पंडित मदनमोहन मालवीय, डॉ० अन्सारी, डॉ० विधान-चन्द्र राय और स्व० श्री भूलाभाअी देसाअी।

राजेन्द्रबाबूके बड़े भाअी महेन्द्रबाबू काफी बीमार हैं। शायद ही बचें। वे यदि चल दिये तो राजेन्द्रबाबू पर अेकदम भारी जिम्मेदारी आ पड़ेगी। राजेन्द्रबाबूको लिखिये।

सेरेसोल, अेगाथा और म्युरियल १५ तारीखको रवाना हो रहे हैं। तीनोंने काफी अनुभव ले लिया। सेरेसोल फिर अक्तूबरमें लौट आयेंगे। दूसरे साथियोंको लायेंगे। बिहारका काम ठीक चल रहा है। जमनालालजी काफी देखरेख रखते हैं। वे म्युरियलको लेकर ... के पास गये हैं। अनंतपुर होकर वर्धा जायंगे।

बापाकी जगह अब मलकानी है। देवदास पटनामें था। काफी मोटा हो गया है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे विवाह और दिल्ली अुसके लिअे अनुकूल सिद्ध हुअे हैं। ...

मणि (जेलमें) काफी कड़ी कसौटीमें से गुजर रही दीखती है। काकाकी भी परीक्षा हो रही है। वे बीमार थे। अब कुछ ठीक हैं, अैसा तार आया था।

सुशीला, प्रभावती और ओम पत्र लिख रही हैं, अिसलिअे छुटपुट खबरें तो आपको मिल ही जायंगी। अैसा कह सकते हैं कि यहांकी गर्मी अहमदाबादको भी मात करनेवाली है।

बापूके आशीर्वाद

५५

गरदपुर, (अुत्कल)
७–६–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

अिस बार आपका पत्र अभी तक नहीं आया। मेरे तो नियमानुसार गये ही हैं। यहां वर्षा आरम्भ हो गअी, अिसलिअे सब कुछ बन्द हो गया। अब प्रातःकालीन प्रार्थनाका समय हो रहा है। यह लिख रहा हूं अितनेमें सतीशबाबू अपने दस आदमियोंकी टोलीके साथ भद्रक स्टेशनसे दो मील सामान अुठाकर यहां आ पहुंचे हैं। कीचड़में होकर आनेमें पौने दो घंटे लगे।

प्रार्थना हो चुकी और यह फिरसे लिख रहा हूं।

सतीशबाबू बंगालमें पैदल यात्रा कर रहे है। पैदल यात्राका फल बताना अभी मुश्किल है। मुझे तो पूरा सन्तोष है। और सब फीका लगता है।

हेरिसन बम्बअी गअी है। अुससे फिर बम्बअीमें मिलूंगा। बहुत भली स्त्री है। चौबीसों घण्टे यही विचार करती रहती है। म्युरियल जमनालालजीके साथ काफी घूमी। वह भी बम्बअीमें मिलेगी।

प्रवासक्रम तो आपको भेजा ही है। विश्वास रखिये कि जो हो रहा है सो ठीक ही हो रहा है।

बापूके आशीर्वाद

५६

पर्णकुटी, पूना,
२७–६–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

बहुत कोशिश की, मगर पिछला हफ्ता खाली गया। अिस आशासे कि लिखूंगा ही, लड़कियोंके पत्र भी रोक रखे।

आज भी मुश्किलसे लिख रहा हूं। वक्त हो तो पन्नेके पन्ने भर दूं। अब तो जो दे दूं, अुसीसे सन्तोष कीजिये।

चन्दूभाअीके लिअे जो कुछ हो सकेगा, करता ही रहूंगा। कुछ बाकी नहीं रखूंगा। गुजरातका दौरा करना आवश्यक था, अिसलिअे वहां जा रहा हूं। जाअूं तो हरिजन-चन्दा करना ही पड़ेगा। मैंने जो निर्णय दिया सो तो आपने देखा ही होगा। अभी तो जो हो अुसे देखते ही रहिये। अच्छा-बुरा तो कौन जानता है? हम जो करें सो अच्छा समझकर करें, अितनी ही आशा रखी जा सकती है। मेरा विश्वास है कि सब कुछ अच्छा ही हो रहा है।

सुनता हूं कि आपका स्वास्थ्य आजकल अच्छा नहीं रहता। जो कुछ हो सके कीजिये और स्वास्थ्य सुधारिये। डॉक्टरोंको बुलवाना जरूरी हो तो जरूर बुलवाअिये। मांगे बिना मां भी रोटी नहीं देती। आपसे जो मांगा जा सके मांग लीजिये और नाकको ठीक कर लीजिये।

अिस बार जो प्रस्ताव पास हुआ है, वह शायद आपको तो अच्छा नहीं लगा होगा। मैं मानता हूं कि अुसका फल अच्छा ही आयेगा। बड़े भाअी[1] मिल गये। अब जो हो जाय सो सही। हवामें अितने ज्यादा नये रजकण हैं कि अुनका मुकाबला करनेमें कोअी समर्थ नहीं है। हम अपना भाग पूरा करके सन्तोष मानें। वहां बैठे हुअे बाहरका विचार करना व्यर्थ है, हानिकर है। अिस सूत्र पर पूर्ण विश्वास रखकर निश्चिन्त रहिये।

खुरशेदबहन और दूसरी दोनों यहीं हैं। खुरशेदबहनने (जेलमें) काफी कष्ट सहन किया है। अब तबीयत अच्छी है। अुसे सरहद प्रान्तकी लौ लगी है।

परीक्षित पर मार पड़ी, यह मेरे लिअे अैसी-वैसी बात नहीं है। अिसके खिलाफ आन्दोलन नहींके बराबर है। यह मुझे मारसे भी ज्यादा भयानक प्रतीत होता है।

बा मेरे साथ हो गअी है। ठीक है। सुखी है।

कान्ति[2] देवदासके पास है। पढ़ता है। अुसकी आकांक्षाअें महान है।

वेलाबहन और आनन्दी मेरे साथ हैं। मेरा दल अब बहुत बड़ा हो गया है। सोचूंगा अुसमें क्या कमी की जा सकती है। बाबला जीवणजीके साथ है।

. . . निकम्मा साबित हुआ। अुसने फिर पहले जैसी ही भूल की है। लेकिन भूलका महत्त्व समझा हो, अैसा नहीं जान पड़ता। अब मैंने अुसे राजकोट जानेकी सलाह दी है। नारणदास अब वहीं रहेंगे। वहां जाकर रहे और जो हो सके करे। जमनालालजीका विश्वास खो बैठा है। अैसा नहीं दीखता कि अुसने हिसाब भी ठीक रखा हो।

राधा (गांधी) प्रोफेसर कर्वेकी पाठशालामें भरती हो गअी है। मुझे तो अिसका कुछ पता नहीं था। अुसने अपने-आप ही सब प्रबन्ध कर लिया। कल मिली थी। ज्यादा समय तक तो न मिल सका। यहां भी समय कम मिलता है।

---

१. स्व० भारतभूषण पंडित मदनमोहन मालवीय।

२. बापूजीके बड़े पुत्र स्व० हरिलालका पुत्र।

स्वामी यहीं हैं। राजाजी हैं। जमनालालजी कल ही बम्बअी गये। . . . काफी बीमारी भोगकर आबूसे आये हैं। मेरे साथ व्यवस्था सम्बन्धी बातें करनी है। स्वामीको वापस बिहार जाना ही है।

मीराबहनके बारेमें तो आपने पढ़ा ही होगा। अिससे अधिक कुछ भी नहीं है। अेकाअेक अुसके मनमें आया कि अुसे खुद जाकर कुछ न कुछ करना चाहिये। मैंने हां कहा और वह चली गअी। मेरे नीचे दब गअी थी; अुसका विकास रुक गया था। अब कुछ अपनी मूल स्वतंत्रता प्राप्त कर ले तो अच्छा है। दो-चार महीनेके लिअे ही गअी है। मैक्सवेल[1] से केवल साधारण कैदियोंकी हालतके बारेमें बात करने गअी थी। अपने अनुभव बतानेके लिअे।

अम्बालाल साराभाअीसे मिला था। सरलादेवीको खासा लाभ हुआ है।

आजके लिअे अितना बस। यह सवेरे पर्णकुटीमें लिखा है। अब भांभुरड़ा जाना है।

बापूके आशीर्वाद

५७

भावनगर,
२–७–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपके पत्रोंमें पहले-पहल काटछांट देखी। जिन्हें मिले अुनमें है।

आज तार आया है कि साबरमतीकी बहनें छूट गअी हैं। अिसलिअे मणि छूटनी चाहिये। कुछ भाअी भी वहांसे छूटे हैं। कुछ बाकी भी हैं।

मुझ पर हुअे हमले[2] के बारेमें क्या लिखूं? अैसा किसी न किसी

---

१. बम्बअी सरकारके तत्कालीन गृह-मंत्री।

२. ता० २५–६–'३४ की शामको पूना म्युनिसिपैलिटीकी तरफसे पू० बापूजीको मानपत्र दिया जानेवाला था। म्युनिसिपल हॉलमें पहुंचनेसे पहले हॉलके झरोखेमें से किसीने नीचे रास्ते पर पू० बापूजीकी मोटर आअी मानकर अुस पर बम फेंका। लेकिन पू० बापूजी तो वहां अिस घटनाके दस मिनट बाद आये, अिसलिअे अीश्वरकृपासे अुन्हें कोअी चोट न पहुंची। लेकिन दूसरे कुछ लोग घायल हो गये।

कारण तो होना ही था। ठीक है कि हरिजन-सेवाके कारण ही हुआ। जो चीज किसी अेक कामके लिअे अिस्तेमाल की जा सकती है, वह न सोचे हुअे दूसरे कामके लिअे भी अिस्तेमाल की ही जा सकती है। अीश्वरेच्छाके बिना कहीं कुछ होता है?

यह भावनगरमें लिख रहा हूं। यहांका हाल तो आप जानते ही हैं। काम करनेवाले साथ मिलकर काम नहीं कर सकते, यह बड़ी दिक्कत है। चंदा तो काफी हो जायगा। ३०,००० रुपये।

दुर्गा वगैरा कल मिलने आ रही हैं।

मैं मानता हूं कि किसानोंको कोअी नुकसान नहीं होगा। चिन्ता बिलकुल न करें।

समय बहुत कम मिलता है, अिसलिअे लम्बे पत्र नहीं लिखता। औरोंसे लिखनेको कह रखा है।

अमतुस्सलामके अर्शका ऑपरेशन करानेकी बात लिख चुका हूं न? अब तो वह अस्पतालसे निकल आअी है। मेहरअली[1] अस्पतालमें है। आपकी तबीयत कैसी है?

....बड़ा दुःख भोग रहा है। अुसे दवा वगैराके लिअे खूब रुपया चाहिये! अितनी रकमका दान भी कैसे लिया जाय? निर्दय होकर आज लिख दिया है कि हर महीने सौसे ज्यादा तो हरगिज नहीं लिया जा सकता; फिर भले ही मरे या जिये। केशू अभी राजकोटमें है।

बापूके आशीर्वाद

५८

करांची,
११–७–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आजकल आपको सोचे हुअे दिन पत्र नहीं लिख सकता। यह शुरू किया है ५॥ बजे सबेरेका नाश्ता करके। अितनेमें अेक पारसी महिला अपनी १५ वर्षकी लड़कीको लेकर आ गअी। वह टेनिसमें सारे भारतमें पहले नम्बर आयी है, परन्तु अुसे वैराग्य हो गया है।

---

१. स्व० यूसुफ मेहरअली। बम्बअीके अेक समाजवादी नेता।

अुसका सारा ध्यान धर्ममें है। अिसलिअे आग्रहपूर्वक मिलने आअी। हरिजनोंके लिअे दस रुपये दिये। हस्ताक्षर लेकर गअी है।

मेरे अुपवास[1] की खबर सुनकर आप दु:खी न हों। अैसा करना अनिवार्य हो गया है। लोगोंकी भारी भीड़ जमा हो जाती है। सनातनी दंगे पर अुतारू हैं। लोग अुन्हें सहन नहीं करते। अिसलिअे झगड़ा होता ही है। लोग कहनेसे चेतते ही नहीं। अुपवाससे ही हजारोंको सन्देश पहुंचाया जा सकता है। पहले आते थे अुनसे भी ज्यादा संख्यामें लोग अिकट्ठा होते हैं। अिसलिअे अुनसे निपटना बहुत कठिन हो जाता है। सात दिन आसानीसे निकल जायंगे। चिन्ता बिलकुल न करें। मेरा शरीर अच्छा ही है। बहुतसे बोझोंके बावजूद खूनका दबाव १५० के आसपास रहता है। यह अच्छा ही माना जायगा। वजन १०४ है। बाकीका सफर निर्विघ्न समाप्त हो जाय तो गंगा नहाये। अगस्तका महीना अुपवास और अुपवास-निवारणमें जायगा। बादका भगवान जानें।

आपके स्वास्थ्यके बारेमें पूरी जानकारी चाहिये। डाह्याभाअीको लिख रहा हूं।

मणि[2] के छूटनेकी खबर कल मिली। महादेव[3] और प्यारेलाल लाहोरमें साथ होंगे। साथी बढ़ेंगे। काकासाहब हैदराबादसे साथ हुअे हैं। अिस समय ये तीनों साथ हों, यह ठीक है। नरहरि नहीं आयेंगे। स्थिर होकर बैठ सकूं तो सबसे मिल सकता हूं। अीश्वरको जो करना होगा सो करेगा।

---

१. हरिजन-यात्राके दौरानमें ता० ५–७–'३४ को पू० बापूजी जब अजमेरमें थे, तब वहां अुनके सामने काले झंडे फहरानेवाले सनातनियों और सभाकी व्यवस्था रखनेवाले स्वयंसेवकोंमें मारपीट हो गअी और अुसमें सनातनियों पर मार पड़ी। अुसके प्रायश्चित्त स्वरूप पू० बापूजीने सात दिनके अुपवास करनेका संकल्प किया। हरिजन-यात्रा पूरी करनेके बाद ७ अगस्तको वर्धामें ये अुपवास शुरू किये गये थे।

२–३. दोनों बेलगांव जेलसे ता० ८–७–'३४ को छूटे।

बा की तबीयत अच्छी रहती है। अुसे चाहिये सो खुराक जुटा लेती है। ठक्करबापा भी तो काफी देखभाल रखनेवाले हैं न?

*　　　　*　　　　*

. . . वगैराके साथ खूब बातें कीं। अभी कोअी बात अुनके गले नहीं अुतर सकती। नअी हवामें नशेका कोअी पार नहीं। यह नशा अुतरे तभी ठिकाने आयेंगे। स्वामी वीरमगांवसे अलग हो गये हैं। अब अुपनगरमें रचनात्मक कार्य करनेमें जुटेंगे।

बापूके आशीर्वाद

५९

लाहोर,
१६-७-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका छूटना[1] मेरी कल्पनाके बाहर था। सरकार और हम आपसमें अेक-दूसरेसे सलाह-मशविरा किये बिना जैसा सूझता है वैसा किये जा रहे हैं। यह ठीक है। दोनोंका पता लग जायगा। आप सब कुछ देख लीजिये, फिर काजीकी हैसियतसे आपकी राय मांगूंगा। भले ही साथीके नाते वफादारी लिखा दें, पर 'हांमें हां' मिलानेकी जो आदत पड़ गअी है, वह कोअी दो-चार वर्षकी जेलसे थोड़े ही मिटनेवाली है?

नाकका पूरा अिलाज करानेके बाद ही आयें, यह मुझे पसन्द है। बनारसमें आपकी अुपस्थितिकी जरूरत तो है ही, परन्तु नाक न आने दे तो अुपस्थितिके बिना काम चला लेंगे।

. . . के यहां जाना अनिवार्य था। हमारे कार्यकर्ताओंकी भी यह अिच्छा थी। मेरे जानेसे अुसे कुछ मिल नहीं जायगा। वैसे अजमेरका और दूसरे स्थानोंका वातावरण आजकल गुंडाशाहीसे भरा हुआ है। अिसकी प्रतिध्वनि वहां भी आपके कानोंमें पड़ेगी।

लालनाथ[2] अिन सबमें अच्छा आदमी मालूम हुआ है। वह बहादुर

---

१. ता० १४-७-'३४ को स्वास्थ्यके कारणसे — नाकका रोग बढ़ जानेसे — बापूको नासिक जेलसे छोड़ दिया गया था।

२. हरिजन-यात्रामें पू० बापूजीके खिलाफ जगह-जगह काले झंडे दिखानेवाला अेक सनातनी।

भी है। दिये हुअे वचनोंका अुसने पालन किया है। वैसे मेरी निन्दा तो करता ही है। यह हक तो सभीको है। अुसने यह पहली ही बार मार नहीं खाअी है। अुसके साथियोंने भी मार खाअी है। अुसने कभी पुलिसको शिकायत नहीं की। ये लोग ज्यादातर पुलिसका संरक्षण भी नही चाहते। अपने आदमियों पर वह अच्छा काबू रखता है। हमारे आदमियों पर मैंने कड़ा अंकुश न रखा होता, तो वे बहुत घायल हुअे होते और हमारा काम रुक जाता। आज ही अेक आदमी लिखता है कि लालनाथके विरुद्ध लोगोंको भड़कानेमें अुसका हाथ था। वह प्रायश्चित्त चाहता है। यह आदमी हमारा बढ़िया कार्यकर्ता है। लेखक है, कवि है। अब कहिये क्या अुपवास करके मैंने ठीक नहीं किया? अैसे मामलेमें किससे सलाह-मशविरा करूं? कहा करूं? किसीको सांप काट ले तो जाननेवाला हकीम औरोंसे सलाह लेने बैठे या आये सो दवा शुरू कर दे? साथियोंसे पूछे बिना अैसे कदम अुठानेकी मुझे चटपटी तो नहीं लगी होती। मगर मैं मजबूर हो जाता हूं। निर्णय करनेसे पहले सलाह-मशविरा करनेका घनश्यामदासने तार भेजा था अिसलिअे अुन्हें लिखा। अुन्होंने अन्तिम निर्णय मुझ पर छोड़ा। देवदासने चार अुपवास सुझाये। जयरामदास[1] ने यह कदम जरूरी माना और कहा कि किये ही जायं तो सातसे कम हरगिज नहीं। बापाने विरोध नहीं किया। चंद्रशंकर बेचारे क्या विरोध करते? काकासे विरोध हो ही नहीं सकता था। अैसे अुपवासोंके बिना यह भगीरथ कार्य पूरा नहीं हो सकता। जागृतिका पार नहीं है।

लाहोरमें और अन्यत्र लोगोंकी अैसी भीड़ देखता हूं जैसी पहले कभी नहीं देखी।

---

१. श्री जयरामदास दौलतराम। सिंधके पू० बापूजीके मुख्य साथी। १९३० में कराचीमें पुलिसने अेक सभा पर गोली चलाअी थी, तब अिनके पेटसे अेक गोली आरपार निकल गअी थी। १९३१ से १९३४ तक कांग्रेसके मंत्री। १९४६ में अंतरिम सरकारके समय बिहारके गवर्नर। १९४७ से १९५० तक केन्द्रीय सरकारके खेती और खुराक-विभागके मंत्री। अुसके बादसे आसामके गवर्नर।

अेक बात जरूर गले अुतरती है। रेल और मोटर मुझसे छुड़वा दीजिये, अेक जगह पड़ा रहने दीजिये और पैदल यात्रा करने दीजिये —यदि मैं बाहर होअूं[1] तो। अगस्त तक तो स्वभावतः हूं ही। बादकी राम जाने।

अेण्ड्रूज २५ अगस्तको यहां पहुंचेंगे। स्वामीसे आपको बहुत कुछ मालूम होगा। चंद्रशंकर लिखेंगे।

मैं कलकत्ते जा रहा हूं, केवल घरकी सफाअी करने[2]। परंतु डॉ० विधान रायका पत्र आया है कि मुझे बहुत करके गवर्नरसे मिलना पड़ेगा। यह बात तो थी ही। अेगाथा वगैराने अिसके लिअे बहुत दबाव डाला था। अब बात पक्की हो गअी दीखती है। विषय तो केवल बंगालकी गुंडाशाही है। मिलेंगे तब अधिक। और अब तो महादेव हैं, अिसलिअे आपको अिच्छित वस्तु मिलती ही रहेगी।

मणिकी तबीयत खूब अच्छी हो जानी चाहिये। अिस बार वह (जेलमें) काफी कमजोर हुअी लगती है। अपनेको कृत्रिम रूपसे स्वस्थ दिखानेका प्रयत्न करती है। आज अुसे अलग पत्र नहीं लिख रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
श्रीराम मेंशन,
सेंडहर्स्ट रोड, बम्बअी

६०

वर्धा,
१९-८-'३४

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आपके समाचार पहुंच गये। आपका स्वास्थ्य अच्छा हो जानेके बाद यहां आ जायं तो अच्छा रहे। २५ तारीखको अेण्ड्रूज आयंगे। अैसा लगता है कि तब आप यहां हाजिर रहें तो अच्छा। मुझे जितने

१. अेक साल तक हरिजन-कार्यके सिवा दूसरे काममें न पड़ने और बाहर रहते हुअे भी अपनेको कैदी मानकर सत्याग्रह न करनेका पू० बापूजीका संकल्प १ सितम्बरको पूरा हो रहा था।

२. आपसके झगड़े मिटाने।

आरामकी जरूरत है वह तो यहां मिल ही रहा है। कोअी परेशान नहीं करता। पहरेदार भी जमनालालजीकी आज्ञाओंका अच्छा पालन कर रहे हैं। आपको भी वहांसे यहां ज्यादा शान्ति मिलेगी। परन्तु यह सब तभी जब आपका बुखार बिलकुल मिट जाय[1] और शान्ति हो जाय। आपके आनेसे मणिको तो फायदा होगा ही।

मैं समझता हूं नाकका तो अभी कुछ नहीं हो सकता। अगर वहां रहनेसे यह काम हो सकता हो, तो मैं मानता हूं कि करा लेना चाहिये। अुसका परिणाम तो देख लें। अभी अिसमें खतरा तो कुछ है ही नहीं। कुछ समय पड़े रहनेकी बात है, सो भले ही पड़ा रहना पड़े।

कल जयप्रकाशका लम्बा पत्र आया था। वह दुःखी है। अुसने बहुत पढ़ा है, परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि सब हजम कर लिया है। अनुभव तो बिलकुल नहीं है। परन्तु पढ़ा हुआ औरोंको सुना सकता है, अिसलिअे पढ़े-लिखे लोग चौंधिया जाते हैं; अिससे अुसे अुत्साहका नशा चढ़ता है और वह घर-बार छोड़ता है, शरीरकी परवाह नहीं करता और धांधली मचाता है। वह यहां आनेका लिख रहा है। जो हो जाय सो सही।

कांग्रेससे मेरा निकलना तुरन्त तो होगा नहीं। मगर मैं अपने मनकी व्याकुलता आपको बताता रहता हूं। आप सब जाने नहीं देंगे तब तक कैसे जाअूंगा? परन्तु मुझे तो महसूस होता ही रहता है कि मेरे सामने अिसके सिवा दूसरा कोअी मार्ग नहीं है। मालूम होता है मैं कांग्रेसकी प्रगतिको रोक रहा हूं। साधनसे चिपटे रहना लेकिन अुसमें विश्वास न रखना, विश्वास रखनेवालेका अुस पर अमल न करना —यह स्थिति कितनी दयाजनक, कितनी भयंकर है! अिसमें से कांग्रेसको निकालना क्या आपका धर्म नहीं है? सड़ांध मिटानेका मार्ग सूझे वहां तक तो कोअी हर्ज नहीं। परन्तु निकल जानेके सिवा दूसरा कोअी रास्ता ही न हो तो क्या किया जाय? मेरे निकल जानेसे कांग्रेससे दंभ चला जायगा। सच-झूठ, हिंसा-अहिंसा, खादी, केलिको, जगन्नाथी,

---

१. पू० बापू ७–८–'३४ से अिन्फ्लुअेंजासे पीड़ित थे।

मलमल सब चल सकता है। अगर साधारण कांग्रेसवादीकी यह सच्ची स्थिति हो, तो अुसका अनुसरण करना ही अुसके लिअे ठीक है। परन्तु मेरे निकले बिना यह अनुसरण होगा नहीं। मेरी अिच्छासे ये मर्यादायें नहीं हटाअी जा सकतीं। मैं यह नहीं चाहूंगा। मेरे विरोधके रहते हुअे कांग्रेस ये मर्यादायें हटा दे, तो वह मुझीको निकालनेके बराबर हुआ न? नौबत यहां तक आने देना क्या ठीक होगा? ये सब विचार आपसे, राजाजी वगैरासे कराने हैं। यहां आ सकें तो शान्तिसे चर्चा कर लेंगे।

सितम्बरमें या मुझमें पूरी शक्ति आ जानेके बाद क्या करना है, अिस पर भी हमें सोचना है। यह चर्चा तो करनी ही पड़ेगी। अवसर भी नजदीक आ गया है। जवाहरलालकी आग जितनी तेज है, अुतनी भयानक नहीं है। अुन्हें अपने दिलका गुबार निकालनेका अधिकार था सो निकाल लिया। मैं मानता हूं कि अब वे शान्त हो जायंगे।

गुजरातके दुःखी किसानोंके लिअे करना तो है आपका ही सोचा हुआ, मगर अिस विषयमें मेरे पास कुछ बने-बनाये विचार हैं।

पार्लियामेण्टरी बोर्डका तो आप चाहते थे वही हुआ, यद्यपि मुलतवी रहनेका कारण तो अलग ही था।

अब आजके लिअे बहुत लिखा माना जायगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी,
श्रीराम मैंशन,
सेन्डहर्स्ट रोड, बम्बअी

६१

वर्धा,
२०-८-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपको अेक जवाब देना रह गया। . . . के पत्रका अुत्तर मैं तुरन्त दे सकता हूं, परन्तु . . . वगैराका विचार हमें करना चाहिये। फिर अिस विषयमें मेरे जो विचार हैं, वे क्या पूरे आपके गले

अुतरते हैं? मुझे तो वे ही सही मालूम होते हैं। दोषको छिपाना व्यर्थ है। अिसलिअे . . . वगैरा अगर हमारी तरफसे मौन चाहें, तो रखा जा सकता है, या हम जिसे कांग्रेसकी वर्तमान नीति मानते हैं अुसके अनुसार फरमान जारी करें। या मैं अपनी जिम्मेदारी पर अपनी स्वतंत्र राय जाहिर करूं। . . . को बुलाकर आप कुछ तय कीजिये और मुझे लिखिये। फिर मैं कुछ तैयार करके भेजूंगा। अिस बीच . . . को लिखता हूं कि आपके साथ पत्रव्यवहार कर रहा हूं। बादमें विस्तृत अुत्तर मिलेगा। वह व्यर्थ धांधली मचा रहा है। मेरी राय है कि जल्दी करनेकी कोअी जरूरत नहीं है।

महादेवको प्रयागजी भेजनेकी बात समझ ली। सोच रहा हूं। मेरे पत्रके जवाबकी प्रतीक्षा करूं?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
श्रीराम मेन्शन,
सेन्डहर्स्ट रोड, बम्बअी,

६२

वर्धा,
२१-८-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। वहांकी आवश्यकतायें समझ सकता हूं। तुलना तो आप ही कर सकते हैं। यहां या वहां, दोनों ही जगह हमें अेक ही किस्मका काम करना है। जहां ज्यादा जरूरत हो वहीं बसना है। अिसलिअे जो अुचित जान पड़े वही कीजिये। बम्बअीके कांग्रेस कार्यके बारेमें मेरी राय है कि जिन्होंने अुसे सिर पर लिया है, वे अपने ढंगसे अुसे पूरा करें या अधिकार छोड़ दें। छिपानेसे कब तक काम चलेगा?

कांग्रेसकी शुद्धिका सवाल बड़ा है। अिसकी चर्चा तो जब मिलेंगे तभी अधिक हो सकती है। . . . के बारेमें आप जो लिख रहे हैं वही मैं भी मानता हूं। कांग्रेसको अपनी नीति तय करनी ही पड़ेगी। . . . को बुलाकर बात की जाय, तो निपटारा हो सकता है। . . .

का पत्र आया था। अुसे मैंने लिखा है कि सितम्बरके पहले सप्ताहमें आये और तारीख आपसे मुकर्रर करा ले। अगर आपका आना हो ही न सके, तो मैं अुससे जो सिरपच्ची करनी होगी कर लूंगा। आपको दिखाये बिना कुछ भी लिखकर नहीं दूंगा।

गुजरातके बारेमें आपकी छटपटाहटको पूरी तरह समझता हूं। जैसा ठीक लगे वैसा कीजिये। हमें जो समझना है वह भविष्यको दृष्टिके सामने रखकर समझना है।

अेण्ड्रूज आयें तब जी भरकर बातें कर लीजिये। यहां जो होगा वह लिखना-लिखाना रहूंगा।

महादेव आज प्रयाग जायंगे। शनिवार तक लौट आयेंगे।

बूतेसे बाहर काम करके फिर तबीयत न बिगाड़ें।

बापूके आशीर्वाद

काकाकी बात तो रह ही गयी। काकाने मेरी संमतिसे निर्णय[1] किया। मुझे वह पसन्द आया। अिसकी तहमें अुनका दुःख नहीं, केवल कर्तव्य-परायणता है। आपको लिखनेका तो मैंने ही सुझाया था। आपको अधिकार है या नहीं, यह तो मैंने सोचा भी नहीं। ट्रस्टियोंसे न पूछनेके बारेमें और फिर भी पूछा है अैसा लिखनेके बारेमें काकाको भारी आघात लगा है। यह ठीक ही था।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
श्रीराम मेन्शन,
सेंडहर्स्ट रोड, बम्बअी

६३

वर्धा,
२२–८–'३४

भाअीश्री वल्लभभाअी,

अेक प्रश्न आपको हल करना है। काकाकी अिच्छा दक्षिणमें जाकर काम करनेकी है। अिसके साथ अुनके ट्रस्टीपदसे अिस्तीफा देनेका कोअी संबंध नहीं है। मैं यहां आये हुअे शिक्षकोंसे कह रहा हूं कि अुन्हें देहातमें बसना चाहिये और वहां रहकर रचनात्मक काम

१. सभी ट्रस्टोंसे अिस्तीफा देनेका।

करके जो संगठन हो सके करना चाहिये और जो शिक्षा दी जा सके देनी चाहिये। शिक्षकोंको यह बात पसन्द आओी है, और जो मुक्त हो सकें वे अैसा करनेको तैयार हो गये हैं। अुनमें काका भी आ जाते हैं। विद्यापीठके मकानोंका अुपयोग शहरकी जरूरतके अनुसार हमें करना ही है।

* * *

महादेव कल शामको गये। आज रातको वहां पहुंचेंगे।

अेण्ड्रूज़को लेने मथुरादास तो शनिवार जायंगे ही। और भी जो जा सकें अुन्हें भेज दें। हो सके तो अुन्हें अपने पास ही ठहरायें। और वे चाहें तो अुसी दिन अिधर भेज दें।

यह लिखनेके बाद आपका पत्र मिला।

. . . से मिलना हो गया यह ठीक हुआ। कैदियोंके बारेमें वे और 'क्रॉनिकल', 'फ्री प्रेस' वगैरा शोरगुल जरूर करें। छाछमें मक्खन कैसे जाय? डाह्याभाओी नटराजन[1] से भी आनेको कहें। घनश्यामदासके तारके मुताबिक तो वे यहां आनेके लिअे सोमवारको रवाना हो जायंगे।

मैं मानता हूं कि अेण्ड्रूज़ दो-चार दिन तो रहेंगे ही। कदाचित् तुरन्त शांतिनिकेतन जाना चाहें। आप ही अुनसे निश्चित जान लें।

अब आज अधिक नहीं लिखा जा सकता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
श्रीराम मेन्शन,
सेंडहर्स्ट रोड, बम्बओी

६४

वर्धा,
२३-८-'३४

भाओीश्री ५ वल्लभभाओी,

अिसके साथ व्रजकृष्णका दिल्लीकी फजीहतके संबंधमें पत्र है। अुसे पढ़कर फाड़ डालिये। मैंने साफ लिख दिया है कि पूछें तो भी मैं अिस झगड़ेमें नहीं पड़ूंगा। रोज अैसी ही खबरें आती रहती हैं। सबको

---

१. 'अिंडियन सोशियल रिफॉर्मर' के संपादक।

अपनी-अपनी पड़ी है, देशकी किसीको नहीं पड़ी। अैसी हालतमें कैसे किनारे पहुंचेंगे, यह समझमें नहीं आता।

बंगालसे मेरे पास भी अणे[1] के विरुद्ध तार आये हैं। मैंने साफ लिख दिया है कि अुनकी निष्पक्षताके बारेमें किसीको शंका नहीं करनी चाहिये। अुन पर पूरा भरोसा रखना चाहिये।

मालवीयजीने 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' पर अवार्ड[2] के बारेमें नीति बदलनेका हुक्म जारी किया है। अिसलिअे घनश्यामदासने त्यागपत्र भेज दिया है। त्यागपत्रमें अपना मतभेद प्रगट करनेवाली दलीलें काममें ली हैं। अब देखना है क्या होता है। पता नहीं दोनोंको क्या सूझी है।

राजेन्द्रबाबूके तार परसे अे० पी० को अेक समाचार भिजवाया है, जो आप अखबारोंमें देखेंगे। नकल होगी तो भेज देंगे। अैसी अैसी चीजें आप भी वहांसे निकाला करें तो ठीक रहे। मौलानाने तारसे पूछा है कि यह कांग्रेस नेशनालिस्ट पार्टी[3] क्या है? मैंने अुन्हें तार दिया है कि अिसका अुत्तर तो प्रेसिडेन्टको देना चाहिये। मैं भी कुछ लिखूंगा, मगर आप वल्लभभाअीको तार दीजिये। अब तार आये तो आप देख लें।

राजाजीका आज जो पत्र आया है, वह आपके पढ़ने लायक है। पढ़कर फाड़ डालें। लिखना हो तो लिखें। मद्रास जानेकी शक्ति आ जाय और समय मिले तो हो आअिये। 'स्टेट्समेन' की कतरन मैंने नहीं देखी। हाथ लग गअी तो वह भी भेज दूंगा। वह कुछ भी लिखे। अुससे हम सचको कैसे छिपा सकते हैं? प्रफुल्ल घोष[4] आ गये हैं। वे बंगालकी सड़ांधकी बात सुना रहे हैं, जो बड़ी दुःखद है।

बापूके आशीर्वाद

---

१. श्री माधवराव अणे। १९३३ की लड़ाअीके दिनोंमें कांग्रेसके कामचलाअू अध्यक्ष। अिस समय बिहारके गवर्नर।

२. ब्रिटिश प्रधानमंत्री मेक्डोनल्डका साम्प्रदायिक प्रश्न पर निर्णय।

३. पं० मालवीयजी द्वारा साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें कांग्रेसकी अधिकृत नीतिसे अलग होकर बनाअी हुअी अलग पार्टी।

४. बंगालके अेक प्रमुख कार्यकर्ता।

६५

वर्धा,
२४–८–'३४

भाओीश्री वल्लभभाओी,

काकाने विद्यापीठके संरक्षक (ट्रस्टी) पदका अधिकार छोड़ दिया। अिस सिलसिलेमें हम सबकी यह राय है कि मंडलके अध्यक्ष आप हों। हमने तो आपको बना भी दिया है। विद्यापीठमें मेरा अपना स्थान नियमानुसार कहां था, अिसका मुझे कुछ भी खयाल नहीं था। अिसलिअे पूछने पर मालूम हुआ कि नियमानुसार तो मेरा स्थान कहीं भी नहीं है। परन्तु आध्यात्मिक दृष्टिसे मुझे कुलपति माना गया है। और जब मुझे बीचमें पड़ना हो तब पड़ने देनेका निर्णय सभी अध्यापकोंने सुरक्षित रखा है। परन्तु अिससे कोओी तंत्र थोड़े ही चल सकता है? अिसके बाजाब्ता अध्यक्ष तो आप ही हो सकते हैं। मुझे तो आध्यात्मिक स्थानसे ही संतोष है। अुससे ज्यादा बोझ अुठानेकी न मेरी अिच्छा है, न शक्ति ही।

मेरी सलाहसे आपकी मंजूरीकी शर्त पर दूसरा निर्णय हमने यह किया है कि हरिजन आश्रमकी व्यवस्था नरहरि अपने हाथमें ले लें। और अुन्हें जरूरत मालूम हो तो विद्यापीठके शिक्षकोंको अुनके साथ रख दिया जाय। नरहरिका और विद्यापीठकी तरफसे दूसरे जो शिक्षक वहां रखे जायं अुनका खर्च जब तक विद्यापीठके पास रुपया हो तब तक अुसमें से दिया जाय। मेरी यह राय है कि अिस वक्त हरिजन-सेवक-संघ पर यह बोझ न डालना ही अुचित होगा। क्योंकि अिस संघकी यह नीति रखी गओी है कि सवर्ण हिन्दुओंको अुसमें से कमसे कम पैसा दिया जाय। आदर्श यह है कि अुसकी ९५ फी सदी आय सीधी हरिजनोंकी जेबमें जानी चाहिये। अुस आदर्श तक पहुंचना हो, तो अिस प्रकारका अुदाहरण हमें अपने घरसे ही पेश करना चाहिये। तीसरा निर्णय यह किया है — वह भी आपकी मंजूरीकी शर्त पर — कि दूसरे जो शिक्षक बाकी रह जाते हैं अुन सबको, अगर वे मंजूर करें तो, ग्रामसुधार और ग्रामसेवाके लिअे देहातमें फैल जाना चाहिये। वे

मेरी सुझाअी हुअी योजना अथवा कल्पनाके अनुसार काम करें। यह योजना आपको नरहरि समझायेंगे। अुसकी कोअी बात आपको पसंद न आये तो अुसे निःसंकोच रद्द कर दें। अिस निर्णयके समय काकासाहब, किशोरलालभाअी, मगनभाअी, सोमण और नरहरि मौजूद थे और वे अिससे सहमत हैं। नरहरिके बारेमें ठक्करबापासे भी बात कर चुका हूं। अुनके जैसे ही किसी व्यक्तिके बिना हरिजन आश्रमको चमकाया नहीं जा सकता। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अिस तरह आश्रमको चमकाकर हम हरिजन-प्रश्नको खूब आगे बढ़ा सकेंगे। अैसा होने पर ही आश्रमका दान सुशोभित हुआ माना जायगा। अिसलिअे यद्यपि मैं जानता हूं कि नरहरिसे और कअी सेवायें ली जा सकती हैं, फिर भी अिस समय अुनका अुत्तम अुपयोग यही है और अुन्हें खुद भी अिस काममें दिलचस्पी और पूर्ण आत्मश्रद्धा है। अिसलिअे नरहरिको तो हरिजन आश्रममें होमने ही दीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
श्रीराम मेन्शन,
सेंडहर्स्ट रोड, बम्बअी

६६

वर्धा,
२४-८-'३४

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आपका पत्र और तार मिला। तारका जवाब तारसे नहीं दे रहा हूं, क्योंकि अिसी विषय पर कल लिख चुका हूं। अगर अुस परसे आप कुछ कह न चुके हों तो यों कहिये :

I have read the proceedings of the new party formed by Pandit Malaviyaji and Shri M. S. Aney. I have read telegrams and letters asking me to clarify certain points. In my opinion it is not proper to use the Congress name without the Congress authority. The party may be called the National Party of Congressmen

if its composition is strictly confined to Congressmen. But without the authority of the Congress duly received it cannot with propriety be called the Congress National Party especially when it is formed deliberately to propagate a policy in direct contradiction to that which is the official policy of the Congress. The adoption of the Congress name cannot but confuse the popular mind and I would respectfully urge Panditji to reconsider the position and adopt another name for the Party which he had a perfect right to form for the education of Congressmen and others. The other point I should like to emphasize is that no one but the Congress Parliamentary Board can run elections in the name of the Congress. Lastly in the midst of the unfortunate differences between Pandit Malaviyaji and Sjt. Aney and the Working Committee I hope that all Congressmen will loyally support the policy enunciated in the resolution of the Working Committee re. the Communal Award.

(पंडित मालवीयजी और श्री अणेके बनाये हुअे नये दलकी कार्रवाअी मैंने पढ़ी है। कुछ बातें स्पष्ट करनेकी मांगवाले तार और पत्र भी मैंने पढ़े हैं। मेरी राय यह है कि कांग्रेसकी अनुमतिके बिना कांग्रेसका नाम अिस्तेमाल करना अुचित नहीं है। अगर अिस दलमें केवल कांग्रेसियोंके ही शरीक हो सकनेका कड़ा नियम हो, तो अिसे कांग्रेसियोंका राष्ट्रीय दल जरूर कहा जा सकता है। परन्तु अिसके लिअे कांग्रेसकी बाजाब्ता मंजूरी लिये बिना अिसे कांग्रेस राष्ट्रीय दल कहना अुचित नहीं, खास तौर पर अिसलिअे कि यह दल जान-बूझकर कांग्रेसकी अधिकृत नीतिसे सीधा विरोध रखनेवाली नीतिका प्रचार करनेके लिअे बनाया गया है। अिस दलके साथ कांग्रेसका नाम अिस्तेमाल करनेसे लोगोंके मनमें भ्रम पैदा हुअे बिना नहीं रह सकता। अिसलिअे मैं पंडितजीसे आदरपूर्वक विनती करता हूं कि वे स्थिति पर पुनर्विचार करें और जो दल वे बनाना चाहते हैं अुसका दूसरा नाम रख लें। अिस बातसे मेरा अिनकार नही है कि कांग्रेसियों और दूसरे लोगोंकी

शिक्षाके लिअे दल बनानेका अुन्हें पूरा अधिकार है। अेक दूसरी बात भी मैं आग्रहपूर्वक बताना चाहता हूं कि कांग्रेसके नाम पर चुनावोंका संचालन करनेका काम कांग्रेसके पार्लियामेंटरी बोर्डके सिवा और कोअी नहीं कर सकता। अन्तमें जब अेक तरफ पंडित मालवीयजी और श्री अणे तथा दूसरी ओर कांग्रेसकी कार्यसमितिके बीच मतभेद हैं, तब मैं आशा रखता हूं कि सभी कांग्रेसी साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें कार्यसमितिने अपने प्रस्तावमें जो नीति प्रतिपादित की है अुसका वफादारीके साथ समर्थन करेंगे।)

अिसमें जो फेरबदल करने हों कर लीजिये।

राजेन्द्रबाबूका पत्र विचित्र है। अुसका जवाब तो अेक ही हो सकता है। कांग्रेस पैसे[1] संबंधी जिम्मेदारी हरगिज नहीं ले सकती और खानगी तौर पर अभी हम रुपया जमा कर ही नहीं सकते। वह काम भूलाभाअी वगैराका है। आप अिस बारेमें भूलाभाअीसे बात कीजिये।

अे० आअी० सी० सी० के बारेमें भूलाभाअीको लिखूंगा।

वे वर्किंग कमेटीकी बैठक चाहते हैं, अिसलिअे बैठक भी बुलाना ठीक ही है। बंबअीमें करना हो तो वहां कीजिये और वर्धामें करना हो तो वर्धामें। वे सितम्बरके आरम्भमें चाहते हैं।

राजाजी परसों या रविवारको यहां पहुंचेंगे।

पट्टाभि वगैरा यहीं हैं। . . . वगैरा आये हैं। आज जायेंगे।

काकाके बारेमें समझ गया। जवाहरलाल पकड़े गये। महादेवका तार आया है। महादेव अुनसे मिल सके थे। वे कल आ रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
श्रीराम मेन्शन,
सेंडहर्स्ट रोड, बम्बअी

---

१. कांग्रेसकी तरफसे खड़े किये जानेवाले अुम्मीदवारोंको चुनावका खर्च कांग्रेस द्वारा देनेके बारेमें।

वर्धा,
२५-८-'३४

भाओी वल्लभभाओी,

मेरा कलका पत्र मिल गया होगा। आज मथुराबाबू[1] आपका पत्र लाये। वे आ गये यह ठीक हुआ। मैंने साफ-साफ कहलवा दिया है कि यदि पार्लियामेन्टरी बोर्ड खर्च दे तो ही अिलेक्शन लड़ें, नहीं तो छोड़ दें। आपकी या मेरी तरफसे कोअी आशा न रखें। हां, यदि बिना खर्चके लड़नेकी हिम्मत हो तो जरूर लड़ें। लेकिन यह संभव न हो तो पूरा विचार करके लड़ें। यदि कहीं रुपयेके बिना केवल प्रतिष्ठाके बल पर ही लड़ना संभव हो, तो वह बिहारमें ही हो सकता है। पर अिसमें मेरा दखल नहीं है। यह सारा काम किस तरहसे होता है, अिसकी भी मुझे कल्पना नहीं हो सकती। वैसे बिना खर्च या नाममात्रके खर्च पर यदि कांग्रेसके नामसे लड़ा जा सके, तो अिसके जैसी शोभाकी बात और क्या हो सकती है?

आज ३-४ के बीच भूलाभाअी आ रहे हैं, अैसा तार है। महादेव शामको पहुंचेंगे।

यह तो मैं लिख चुका हूं न कि वर्किंग कमेटीके बारेमें मेरे पास तीन तार आये थे? मैंने तारसे अितना ही जवाब दिया है कि अिस बारेमें आपसे पूछा जाय।

आपसे आया ही न जा सके, तो कोअी बात नहीं। पत्रों द्वारा मिलकर संतोष कर लूंगा। मेरी जानकारीमें जो कुछ नया आयेगा वह बताता रहूंगा।

मीराबहन बहुत काम कर रही मालूम होती है। फल तो शायद अभी कुछ भी न निकले, फिर भी अुसका चक्कर (विलायतका) बेकार नहीं माना जा सकता। आपको अैसे पत्र न मिलते हों, तो महादेवके आने पर भेजनेकी व्यवस्था करूंगा। म्युरियल लॉयड जॉर्ज[2] से

१. स्व० बाबू मथुराप्रसाद। बिहारके अेक कार्यकर्ता और राजेन्द्रबाबूके साथी।

२. १९१४ से १९१८ के महायुद्धके समय अिंग्लैंडके प्रधानमंत्री।

मिली। घंटों तक बातें कीं। अिस प्रकार ये साथी अपनी शक्तिके अनुसार काम करते रहते हैं। मीराबाअी और अेगाथाने थोड़ी ठोकर खाअी है। मीराबाअीकी थोड़ी जल्दबाजी और थोड़ी वहमी प्रकृति अिसका कारण है। यह सब विस्तारपूर्वक महादेव या प्यारेलाल लिखेंगे।

आपमें अभी भी पूरी शक्ति नहीं आअी। भूलाभाअी आ गये हैं। बंबअीमें सभा कर लीजिये। मुझे वहां घसीट लेंगे। अे० आअी० सी० सी० की गाड़ी खींच सकेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

६८

वर्धा,
२६-८-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपके पत्रका जवाब महादेवने दिया होगा। आज राजाजी घोड़े पर सवार होकर आये हैं। अुनके साथ बहुत समय बिताया, अिसलिअे डाक पिछड़ गअी। अणे भी आये और चले गये। अुनके बारेमें तो अितना ही कहा जा सकता है कि वे मालवीयजीका मीठा संदेश लाये थे। बोले कि मुझे कुछ कहना हो तो कहूं। मैंने कहा कि सभ्यताकी रक्षा करनी ही हो, तो हर जगह सलाह-मशविरा करके अुम्मीदवार खड़े कीजिये। केवल लड़नेके खातिर कहीं नहीं। अुन्हें नागपुरकी रेल पकड़नी थी, अिसलिअे वापस आनेका कहकर गये हैं। अिस पार्टीने काम बिगाड़ा ही है। कुछ कर सके, अैसा मुझे दिखाअी नहीं देता।

भूलाभाअी आ गये। मौलानाका मेरे नाम तार आया है। भले ही कमेटी वर्धामें मिले। यहां जगह तो है। होटलके बिना काम चला लेंगे। दो दिनसे ज्यादा तो ठहरेंगे नहीं। अवश्य ही मुझे वर्धा अधिक अनुकूल होगा। राधाकिशन[1] पर जरूर जरा भार

१. स्व० श्री जमनालाल बजाजके भतीजे और वर्धाके अेक मुख्य कार्यकर्ता।

पड़ेगा, मगर अुसने तो सारी तैयारी कर ही रखी है। अभी जमनालालजीने नये मकान बनवाये हैं। अिसलिअे जगह तो जितनी चाहिये अुतनी है। कहते हैं कि सारी व्यवस्था अच्छी है। अिन सबके पीछे जमनालालजीकी आत्मा जो है।

भूलाभाअी आपसे मिलकर सब कुछ तय करायेंगे। अब जैसा अनुकूल हो वैसा कीजिये। यहां करेंगे तब तो मिलेंगे ही।

राजाजीके साथ मेरे (कांग्रेसमें) निकल जानेकी बात कर रहा हूं। अिसीके लिअे वे आये हुअे हैं। हो सके तो मंगलवारको भाग जाना चाहते हैं।

रामदास मंगलवारको खुर्जासे वापस आ रहा है। खुर्जामें हैजा है अिसलिअे। आने पर अधिक पता चलेगा।

आपमें शक्ति आ रही होगी।

जवाहरलालके विषयमें महादेवने आपको सब कुछ लिख दिया है। अिनका जाना कितना अच्छा रहा! अुन्हें बड़ा आश्वासन मिला। बुढ़िया और कमला तो खुश हुअीं ही।

अितना शामकी प्रार्थनाके बाद मौन लेकर घसीट डाला है। बाकी होगा तो कल लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च : २७-८-'३४

प्रात:काल

अेक बात याद आ रही है। म्युनिसिपैलिटीके कामके बारेमें अब मुझे बल्लूभाअी[1] या और किसीको लिखना नहीं होगा। आप ही को लिखा जायगा। विद्यापीठकी पुस्तकें वापस लेनेका तय करें तो भी आश्रमकी तीससे पचास हजारकी होंगी। शायद कम या ज्यादाकी हों। अिनका कभी कोअी अुपयोग नहीं होता। अगर अेक लायब्रेरियन रखें तो शास्त्रीय पद्धतिसे पुस्तक-सूची बने, पढ़नेके लिअे देनेके नियम बनाये जायं और तदनुसार वे पढ़ी जाने लगें। कुछ किया जा सके तो अच्छा।

---

१. स्व० बलवंतराय ठाकुर। अुस समय अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीके अध्यक्ष।

अेण्ड्रूज और जोन्स[1] आ गये हैं। आपका पत्र मिला। कल आपसे भूलाभाओीकी भेंट होनी चाहिये। बैठक खुशीसे वर्धामें रखिये। महादेवसे तो आयें तभी मिलिये। अेण्ड्रूज राजा हैं।

बापू

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बओी

६९

वर्धा,
३–९–'३४

भाओी वल्लभभाओी,

आज तो लिखनेमें मैंने हद कर दी है। कमर और पीठ अब मना कर रही हैं। परन्तु अिस निषेधाज्ञाको तुरन्त नहीं माना जा सकता। नरहरिका पत्र मैं आज ही पढ़ पाया। मेरे खयालसे अुनके साथ थोड़ा अन्याय हुआ है। अिसमें अुन पर नाराज होनेका मैं कोओी कारण नहीं देखता। वे बम्बओीमें अपना मामला आपके सामने पेश नहीं कर सके, अिसलिओे अुन्होंने बहुत नम्रतापूर्वक पत्रमें पेश किया है। अुसमें काकासे रुकनेका आग्रह करनेकी और जिनका अुनके साथ मेल नहीं बैठता अुनसे मेल करा देनेकी आपसे जो आशा रखी गओी है वह अधिक है। परन्तु यह तो आपके सामने प्रार्थनाके रूपमें रखी गयी है। अिससे मालूम होता है कि अुन्हें आपके स्वभावका पूरा ज्ञान नहीं है। आपने मुझे जो पत्र लिखा, अुसे आपका अन्तिम मत समझना चाहिये था। वह मत स्पष्ट और पर्याप्त है। मैंने नरहरिको लिखा है कि काकाको कोओी गुजरातमें रख ले, तो अुन्हें रखनेकी आपकी तरफसे छूट है। आपका आशीर्वाद है। किशोरलाल मुझे कहते थे कि आपने अुन्हें कड़ा पत्र लिखा है। अगर मेरी दलील ठीक मालूम हो, तो नरहरिको अेक मीठा पत्र लिखिये। अुनका पत्र

१. मि० स्टेन्ली जोन्स। हिन्दुस्तानके प्रति सहानुभूति रखनेवाले और बापूजीके सिद्धान्तोंका अच्छा अध्ययन करनेवाले अेक कट्टर अीसाओी अुपदेशक।

आपको दुबारा पढ़नेकी जरूरत महसूस हो अिस खयालसे अुसे वापस भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

७०

वर्धा

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। काकावाला किस्सा दुःखद हो गया है। लेकिन आपको तो अिसे हंसीमें ही अुड़ा देना है। अन्तमें सब शान्त हो जायगा। मेरा अैसा मत है कि अिसकी तहमें कोअी मैल नहीं है। मैं मामलेको शान्त कर रहा हूं और अिसमें सफल होनेकी आशा रखता हूं। अिसके पीछे गलतफहमीके सिवा और कुछ नहीं है। काकाको अिस प्रकार जाने नहीं दूंगा। मावलंकरको मैंने पत्र लिखा है, जिसकी नकल आपको भेजी है।

काकाको यहां आनेके दूसरे दिनसे ही बुखारने धर दबाया है। बुखार चढ़ा सो अुतरा ही नहीं। आज सुबह १०० से अूपर था। १०२ तक जाता है। और कुछ मालूम नहीं पड़ता। सरदी और थोड़ी खांसी है। टाअिफाअिडका डर अवश्य है। काकाको चिट्ठी लिखिये।

जोन्स ठीक हैं, लेकिन अभी बीमार जरूर हैं। अुन्हें भी दो लाअिन लिख दीजिये। डॉ० खानसाहब[१] अुनकी जांच करते हैं।

दोनों भाअी कल अकोला चले गये। अब वहांसे अुन्हें खामगांव घसीट ले गये हैं। अिसलिअे आजके बजाय कल लौटेंगे।

लाला श्यामलाल[२] का पत्र देखनेके लिअे भेजता हूं। दुनीचंद[३] के

---

१. सरहदके गांधी खान अब्दुल गफ्फारखांके बड़े भाअी। सरहद प्रान्तके प्रधानमंत्री थे। दोनों भाअी अभी पाकिस्तानमें जेलमें हैं।

२. पंजाबके अेक नेता।

३. पंजाबके अेक नेता।

बारेमें कुछ जल्दबाजी हुआी जान पड़ती है। अुनका फिर तार आया है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

७१

वर्धा,
२०–९–'३४

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला।

साथमें जवाबका मेरा मसौदा है। अिसमें जो फेरबदल करना हो कर लें।

यह कितना अंधेर है कि दुनीचंदकी फजीहत होने जैसा जवाब बोर्डकी तरफसे मिला! ठीक है कि आप जांच कर रहे हैं।

*　　　　*　　　　*

नरहरि-संबंधी आपके अुद्गार पढ़े। आपका संताप ठीक है। परन्तु अिस सबकी तहमें जान-बूझकर कुछ नहीं हुआ। केवल गलत-फहमी है। वह कुछ समय बाद दूर हो जायगी। क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसीका मन मैला नहीं है। मैंने तो निश्चय किया है कि काका समझ सकें तो यह वैमनस्य मिटानेके खातिर भी अुन्हें अभी गुजरात नहीं छोड़ना चाहिये। गुजरातमें बैठकर भले ही वे सारे हिन्दुस्तानका शिक्षा-विभाग चलावें या कुछ भी करें।

आपके निकलनेकी बात ही नहीं है। और मेरा मत आपके गले अुतरा हो, तो अभी तो विद्यापीठकी व्यवस्था करनेका अर्थ अितना ही है कि जैसा निर्णय हो अुसके अनुसार अलग-अलग आदमियोंको रुपये देते रहें। विद्यापीठ तो जंगम रहेगा। सब अपना नियत काम करते रहेंगे। शिक्षाके बारेमें जो भी निर्णय होंगे, वे काका ही करेंगे अथवा जो शिक्षक-मंडल होगा वह करेगा। मेरी राय यह है कि जो जहां जम जाय, अुसे वहां स्वतंत्र रूपसे अपनी जिम्मेदारी संभालनी है। कोअी अपनी

पसन्दके आदमीसे कुछ प्रश्न पूछना चाहे, तो मित्रभावसे पूछ सकता है। यह मेरी कल्पना है। अिसकी मैंने काका, किशोरलाल और नरहरिके साथ खूब चर्चा की है। आपको यह बात पसन्द आये, तो अिसका अमल अेक पत्र लिखकर कर डालिये, जिससे सब समस्या हल हो जाय। वेतनोंके बारेमें काका और नरहरिने कुछ निर्णय तो किया है। अुसमें मैंने दखल नहीं दिया। मै चाहता हूं कि अिस झगड़ेका बोझ आप अपने दिमाग परसे बिलकुल अुतार डालें।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। राजेन्द्रबाबू २३ तारीखके आसपास आने चाहिये। तब तो आप मौजूद रहेंगे ही न?

बापूके आशीर्वाद

बापूके बयान[1] में अखबारोंमें काफी भूलें रह गअी हैं। अुसे सुधार कर कल भेजूंगा। मेरे खयालसे अेक अेक प्रति अे० आअी० सी० सी० के सदस्योंको भेजी जा सकती है और नाममात्रकी कीमत पर बेची भी जा सकती है।

महादेव

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

७२

वर्धा,
२१–९–'३४

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आप पर जो बोझ हैं, अुनमें अेक और बढ़ा रहा हूं। साथमें यहांके सिविल सर्जनकी सुमित्रा[2] के बारेमें राय है। अिसलिअे अुसे अुसकी नानीके साथ आज ही भेजता हूं। वे मणिभवनमें रहेंगी, परन्तु अुन्हें आपके पास रखना हो तो भले रखिये। सुमित्राको आंखके किसी डॉक्टरको दिखा दें और अिलाज करायें। आंखमें कील है और

---

१. कांग्रेससे अलग हो जानेके बारेमें पू० बापूजीका बयान।

२. रामदास गांधीकी पुत्री।

टेढ़ापन तो है ही। दोनों चीजोंके अिलाजकी जरूरत है। मणि अुसे जिसके यहां ले जानेकी जरूरत हो ले जाय।

मेरे बयान पर काफी आलोचनायें हो रही दीखती हैं। मुझे निकालनेका ही वातावरण पैदा कीजिये। किसीको कातने या खादी पहननेमें दिलचस्पी नहीं होगी। आपने ठीक कहा है।[1]

---

१. बम्बअीमें २०–९–'३४ को पूज्य बापूकी दी हुअी मुलाकातका यहां जिक्र है। अुसमें से नीचेका भाग 'मुंबअी समाचार' में से दिया जाता है :

महात्माजीने कांग्रेससे अलग होनेके संबंधमें जो बयान दिया था, अुसके बारेमें हमारे प्रतिनिधिके बुधवारकी रातको राष्ट्रपति सरदार वल्लभभाअी पटेलसे मुलाकात करने पर अुन्होंने बताया कि मैं यह चाहता हूं कि महात्मा गांधीने कांग्रेसके संविधानमें जो बुनियादी सुधार सुझाये हैं, वे बम्बअीके अधिवेशनमें अुड़ा दिये जायं। क्योंकि मैं अैसा मानता हूं कि राष्ट्रीय कांग्रेस प्रस्ताव पास करे और फिर अुन पर अमल न करे, यह राष्ट्रके लिअे बहुत हानिकारक हो सकता है।

महात्मा गांधी जैसे पुरुषको अैसे कृत्रिम दिखावेमें शामिल नहीं होना चाहिये। गांधीजीके बताये हुअे सब सुधार यदि कार्य करनेके निश्चयके साथ पास हों, तो कांग्रेस स्वतंत्रताके मार्गकी बड़ी मंजिल तय कर लेगी। परन्तु कांग्रेस अैसा निश्चय करेगी, अिसकी कोअी आशा नहीं है। नये ढंगको आजमाना चाहनेवालोंको अपने ढंगसे कार्य करने दिया जाये।

बहुतसे कांग्रेसियोंका वर्तमान कार्यक्रममें विश्वास नहीं रहा। कुछ लोग नया तरीका आजमा देखने और जल्दीके रास्ते जानेके लिअे आतुर हैं। अुन्हें अपना कार्यक्रम तैयार करके अपने ही ढंगसे काम करने देना राष्ट्रके लिअे हितकर साबित होगा।

अुन्हें केवल अनुभवसे ही विश्वास होगा। श्रद्धाके सामने बुद्धि और तर्ककी कीमत कम ही मानी जाती है। जिन्हें श्रद्धा न रह गअी हो, वे कार्यक्रमके लिअे प्रयत्न नहीं कर सकते।

कांग्रेसके तंत्रके भारी बोझसे मुक्त हो जायें, तो महात्माजी अपने कार्यक्रमके लिअे अधिक सरलतासे काम कर सकेंगे; क्योंकि कांग्रेसके

वामनराव[1] को जवाब कल भेज चुका हूं। अणे कल मिल गये। पूरे दो घंटे बैठे। हमारा बयान देखा होगा। नेकीरामका तार है कि मालवीयजी २६ तारीखको आयेंगे। अणेके सामने ही मिला था। मैंने तो कह दिया कि मालवीयजीको आनेका कष्ट न दें। दोनों पक्ष जहां हार जानेकी स्थिति देखें वहांसे हट जायं, अितना समझ लें तो काफी है। चिंतामणि[2] और कुंजरू[3] आयें यह मैं चाहता तो जरूर हूं। दोनों बड़े कामके आदमी हैं। लेकिन यह कैसे किया

तंत्रमें मौलिक परिवर्तन किये बिना अुनका काम सरलतासे चलना सम्भव नहीं है। मुझे विश्वास है कि जिस सभाकी अिच्छा न हो, अुस सभासे अपने सुधार स्वीकार करानेके लिअे दबाव डालनेकी गांधीजीकी जरा भी अिच्छा नहीं है। अनुभवसे वे समझ सके हैं कि बहुतसे लोग प्रस्तावोंके लिअे काम करनेके अिरादेके बिना ही प्रस्तावोंके हकमें राय देते हैं। महात्माजी कांग्रेसके बाहर होंगे, तब कांग्रेस अधिक समर्थ बनेगी और कांग्रेसके लिअे वे अधिक सहायक सिद्ध होंगे। कांग्रेसके भीतर रहनेसे वे बाधक और कांग्रेसके संगठनमें निर्बलता लानेवाले तत्त्व साबित होंगे।

सरदार वल्लभभाअीने यह भी कहा कि जिनका महात्माजीके कार्यक्रममें विश्वास हो, वे कांग्रेसमें भले ही रहें। परन्तु अुसका तंत्र चलानेकी जिम्मेदारी तो जिनका कार्यक्रम स्वीकार किया जाय अुन्हींकी मानी जायगी। और गांधीजीके कार्यक्रममें श्रद्धा रखनेवाले अपना कार्यक्रम-सम्बन्धी काम कांग्रेसके विवादमें पड़े बिना करें। परन्तु कांग्रेसका कार्यक्रम कैसा होगा, यह जाने बिना अभी यह नहीं कहा जा सकता कि अुस कार्यक्रमके लिअे गांधीजीके अनुयायी काम करेंगे या नहीं।

१. अमरावतीके वीर वामनराव जोशी। लोकमान्य तिलक महाराजके अेक प्रमुख साथी।

२. सर सी० वाअी० चिंतामणि। नरम दलके अेक नेता। 'लीडर' पत्रके सम्पादक।

३. पंडित हृदयनाथ कुंजरू। नरम दलके नेता। आजकल भारत सेवक समाजके अध्यक्ष।

जाय, यह नहीं जानता। यू० पी० का हमें क्या पता चले? और तो कहीं भी अुनकी चलती दिखाअी नहीं देती। वे कहते हैं कि बंगालमें अुनके अुम्मीदवार जीतेंगे। फूकन[1] के बारेमें भी आशा रखते है। अुत्कलकी महायात्राकी भी आशा रखते हैं। बहुत करके आसफअली[2] के विरुद्ध किसीको खड़ा नहीं करेंगे। कहते थे कि बंगालमें बड़ी गंदगी है। दिन-दहाड़े धावा करके कांग्रेसके कागजपत्र अुठा ले जायं, यह तो हद हो गअी। फिर भी जिन झूठी रसीदोंके लिअे धावा किया गया, वे तो धावा करनेवालोंके हाथ लगीं ही नहीं। कहते हैं अिस धावेमें कांग्रेसके प्रसिद्ध स्वयंसेवक थे।

काका अभी बिलकुल ज्वरमुक्त नहीं हुअे हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

७३

वर्धा,
४–१०–'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र कल मिला था। अुस परसे किशोरलालको लिखनेके लिअे कह दिया था। कामका बोझ काफी रहता है। जैसे-तैसे निपटानेका प्रयत्न करता हूं। अधूरा तो रोज ही रहता है। कल अणे आ गये। नेकीराम परसोंसे आये हुअे हैं। मैंने तो कह दिया है कि आप और अणे मिलकर अब भी बात कर सकते हैं, और मतभेद हो तो पंच कायम करें। पंचके लिअे बहादुरजी[3] अथवा तेजबहादुर[4] के नाम दिये।

---

१. स्व० फूकन। आसामके अेक नेता।

२. दिल्लीके राष्ट्रीय मुसलमान नेता। कुछ समय अुड़ीसाके गवर्नर रहे। आजकल स्विट्ज़रलैण्डमें भारतके राजदूत हैं।

३. बम्बअीके पारसी वकील।

४. स्व० सर तेजबहादुर सप्रू। प्रसिद्ध वकील और नरम दलके अेक नेता।

अणेको यह पसन्द नहीं आया। अुन्होंने कहा कि जांच न हो जाय, तब तक नाम बदलते रहेंगे। अिसलिअे जो कुछ हो सकता है, वह अुसके बाद ही होगा। अितना आपकी जानकारीके लिअे है।

अेक बात और। अणे कहते थे, "अगर चुनाव नवम्बरमें होता तो कितना अच्छा होता!" मैंने कहा, "वल्लभभाअीने केवल मालवीयजीके खातिर नहीं लम्बाया। आप वल्लभभाअीको तार दें, तो वे शायद मियाद बढ़ा दें।" मैं नहीं जानता कि यह संभव है या नहीं। मैंने तो मालवीयजीके दलको ही नजरमें रखकर लम्बानेसे अिनकार किया है। मालवीयजी खुद मियाद चाहें, तो हमें दूसरी तरह फायदा ही है। लेकिन अिसमें मेरा दखल नही हो सकता।

साथमें डॉ० गोपीचन्द[1] का पत्र भेज रहा हूं। विचारने जैसा है। मैं तो अुन्हें अितना ही लिख रहा हूं कि अुनका पत्र मैंने आपके पास भेजा है। अिस पर गहरा विचार कीजिये।

देवदासका पत्र भी भेजता हूं। अुसे पढ़कर फाड़ दीजिये। देवदास नहीं चाहता कि अुसकी कहीं चर्चा हो।

'फ्री प्रेस' में विद्यापीठके पुस्तकालयके बारेमें क्या छपा है?

मणि सुमित्राके पास जाती होगी। डॉक्टर क्या कहते हैं लिखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

७४

वर्धा,
७-१०-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

महाराज आयेंगे तो मैं सावधान हूं और रहूंगा।

मेरा मुंह बन्द करेंगे तो तकरार होगी ही। .

---

१. डॉ० गोपीचन्द भार्गव। पंजाबके नेता। पूर्वी पंजाबके मुख्यमंत्री थे।

मैं तो आपके लिअे प्रस्ताव तैयार कर रहा हूं। वह १००० वाला मेरा रस-कम निकाले जा रहा है। काटछाट करता ही रहता हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बओी

७५

वर्धा
८-१०-'३४

भाओीश्री ५ वल्लभभाओी,

महादेवके नाम लिखे आपके पत्र पढ़े। आ सकें तो डॉ० अन्सारीके साथ आ जायं।

ओीश्वरशरण[1] के बारेमें बहुतसे तार आये। वे तो मैंने आपके पास नहीं भेजे। परन्तु बाबा राघवदास[2] का भेज रहा हूं।

अिनके विरुद्ध कृष्णकान्त[3] खड़े हुअे हैं। अणेका सुझाव है कि अुन्हें हटाकर वहां (सी० पाओी०) चिन्तामणि जायं और ओीश्वर-शरणको वापस ले लिया जाय तथा भगवानदास[4] का विरोध न हो। मेरे खयालमें यह हो सके तो करने लायक है। ओीश्वरशरण तो चिन्तामणिके लिअे बैठ ही जायंगे। भगवानदासके विरुद्ध लड़ाओी हो तो यह बड़ी जहर फैलानेवाली बात होगी। अिस बारेमें आपको तार दिया है।

दूसरा मामला अभ्यंकर[5] का है। यह तार देनेके बाद बापूजी (अणे) का साथवाला पत्र आया, अतः अिस तारके पीछे रहे विचार देकर आपका वक्त क्यों लूं?

---

१. श्री मुन्शी ओीश्वरशरण। अलाहाबादके अेक वयोवृद्ध हरिजनसेवक।

२. अुत्तरप्रदेशके अेक कार्यकर्ता।

३. प० कृष्णकान्त मालवीय। अुत्तरप्रदेशके नेता।

४. डॉ० भगवानदास। बनारसके विद्वान राष्ट्रीय नेता।

५. नागपुरके नेता।

नरीमान और मथुरादासके बड़े-बड़े तार कांग्रेसको मुलतवी न करनेके बारेमें आये हैं। अिसे मैं बेकार खर्च मानता हूं। मुझे जरा भी आग्रह नहीं है। मैंने तो डाकियेका काम किया है। आप या मैं क्या अैसा कोअी काम करने दे सकते हैं, जिससे कांग्रेस या पार्लियामेण्टरी बोर्डको धक्का पहुंचे? और अैसे कामोंमें यहां बैठे हुअे मुझे कुछ पता भी नहीं चल सकता।

खानबन्धु बंगालमें फंस गये। अब तो अुन्हें १९ तारीखको वहां पहुंचाना मुश्किल हो गया है। क्या किया जाय? मैंने पत्र तो लिखा है।

आप कहीं बीमार न हो जायं! मगर मुझे विलियम प्रिन्स ऑफ ऑरेन्ज[1] याद आता है। अीश्वरको अुससे काम लेना था, अिसलिअे चारों ओर गोलियां बरसती थीं, तो भी अुनके बीच वह सुरक्षित रहा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

७६

वर्धा,
१८-११-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपके तीनों पत्र पढ़कर देखता हूं कि आपके सामने ग्राम-अुद्योग संघका स्वरूप खड़ा नहीं हुआ। अिसका मतलब यह कि जो चीजें गांव पैदा कर सकते हों, वे चीजें गांवोंकी ही लें। अैसा करें तो गांवोंका कर्ज कुछ अंशोंमें चुका सकते हैं। यह अलग सवाल है कि हम अैसा कर सकेंगे या नहीं। हमें अपना धंधा अिस ढंगसे नहीं चलाना है। हम छह या सात जनोंने जिस चीजको शुरू किया, वह व्यापक वस्तु बन गअी है। मैं जो कह रहा हूं वही करना हमारा धर्म हो, तो हम सबको देहाती कागज अिस्तेमाल करना चाहिये। देहाती कलम, देहाती स्याही, देहाती चाकू, देहाती साबुन, देहाती

१. अिंग्लैंडके राजा तीसरे विलियमका पिता।

गुड़-शक्कर, देहाती आटा, देहाती चावल वगैरा तो अुदाहरणस्वरूप हैं। अैसा हो सकता है कि अिनमें से बहुतसी बातें हम न करें। परन्तु यदि अैसा मान लें कि यह हमारा धर्म है, तो करोड़ों रुपये ग्रामवासियोंके घरोंमें जायं और गांवोंका मूल्य बढ़े। तभी हमारे सपनेका ग्राम-स्वराज्य प्राप्त होगा और वही अहिंसक स्वराज्य माना जायगा। अितनेसे सब कुछ समझा जा सकता है।

अिस संघमें चौबीसों घंटे काम करनेवाले पांच-सात आदमी हों, तो ही यह चल सकता है। अिसमें अैसे आदमियोंको खींचनेका प्रयत्न है, जो कांग्रेसी मानस रखते हों, परन्तु कांग्रेसी न कहलाते हों। कांग्रेसी कुछ तो जरूर चाहिये। जयरामदासको अिसी आशासे खींचता हूं कि राजेन्द्रबाबू और आप अुन्हें छोड़ सकेंगे और वे छूट जायंगे। अगर अितना काम न दें, तो वे बेकार हो जायंगे। खानसाहबके साथ भी अैसी ही बातें कर रहा हूं। पता नहीं जालभाअी क्या कहेंगे। वे न आयें तो खुरशेदको बुलानेकी अिच्छा है। अैसे सपने देखता हूं। वे सच्चे हों या न हों। अुनसे अपनी शान्तिका सिंचन करता हूं। अब आपके पास अवकाश हो तो आअिये। नाकका अिलाज पहले करानेकी आवश्यकता है। गुजरातके कार्यकर्ताओंमें से कितनोंको अिस काममें लगाअूं? रावजीभाअीने अर्जी भेजी है। मैंने लिखा है कि वे मुक्त हो जायं तो भी आपकी मंजूरी मिलने पर ही आ सकते हैं। केन्द्रके विषयमें भी सोचना है।

चुनावमें तो कमाल हो गया!

बापूके आशीर्वाद

७७

वर्धा,
२९-११-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

मीराबहन बुधवारको वहां पहुंचेगी। अुसका स्वागत करने[1] के लिअे जो अुचित हो कीजिये। अुसे रवाना तो अुसी दिन कर दीजिये।

---

१. श्री मीराबहन विलायतसे लौट रही थीं, अुसका जिक्र है।

आप आ सकें तो साथ ही आ जाअिये। बोर्ड[1] बनानेमें हमारी समस्या अुलझ गअी है। अध्यक्ष किसे बनाया जाय, यह बड़ा सवाल बन गया है। दफ्तर तो वर्धा ही रखनेकी ओर मेरा मन झुकता है। यह प्रधान कार्यालयकी बात है। वैसे केन्द्र तो बहुतसे चाहिये। अलग-अलग जिलोंके लिअे और अलग-अलग प्रान्तोंके लिअे; कदाचित् अलग-अलग तहसीलोंके लिअे भी। अिसका दारमदार अिस बात पर रहेगा कि काम किस तरह होता है। गुजरातके लिअे यह बात अिस पर निर्भर रहेगी कि आप अिसे कहा तक हजम कर सकते हैं। परंतु यह तो मिलेंगे तब।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बंबअी

७८

वर्धा,
१०-१२-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

साथका पत्र खानसाहबको भेज दें। बाकी महादेव लिखेंगे। राजेन्द्रबाबूका पत्र मिलनेके बाद मेरे पास और कोअी अुपाय नहीं था। दिल्लीसे अभी तक तार नहीं आया है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बंबअी

---

१. अखिल भारत ग्रामोद्योग संघका बोर्ड।

वर्धा,
१२-१२-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। खानसाहबके लिअे नया ही बयान[1] भेजता हूं। मेरे खयालसे यही किया जा सकता है और करना भी चाहिये। अुनको पत्र लिख रहा हूं। अुसे देख लें। अिसलिअे अधिक लिखनेकी जरूरत नही रह जाती। अुसमें जो खेद प्रगट किया गया है, अुसकी मैं तो बड़ी जरूरत मानता हूं। परंतु अिस मामलेमें और सारे बयानके बारेमें अन्तिम निर्णय आपको ही करना है। दूर बैठा हुआ मैं निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकता। मेरा यह भी खयाल है कि वकील किया जाय। वह बयान पढ़कर सुना दे। दोष स्वीकार भी न करे और अुससे अिनकार भी न करे। वकील कम सजाकी मांग भी न करे, परंतु भाषणका विश्लेषण करना हो तो करे, या केवल 'वॉच' करे। साक्षियोंसे जिरह करनेकी तो बात ही नहीं रह जाती। परंतु ये सब तो मेरे विचार समझिये। सब बातोंमें निर्णय आपको ही करना है।

मेरा हाल तो आप देख ही रहे हैं। अेण्ड्रूज आज दिल्ली अिसी कामसे गये हैं। कहते थे, तब तक आगे कुछ न किया जाय। अधिक तो मथुरादास समझायेंगे। राजेन्द्रबाबूके बारेमें अभी तो और कुछ करनेकी बात रह नहीं जाती। घनश्यामदासका तार है कि अुन्हें ३० तारीख तक डॉक्टर नहीं जाने देंगे। अिसलिअे मेरा २० तारीखको दिल्ली पहुंचना जरूरी नहीं। अेण्ड्रूज और कुछ लिखें तो दूसरी बात है। कांग्रेस कार्यसमितिकी बैठक तो अब जनवरीमें ही रखी जा सकती है।

---

१. खानसाहब अब्दुल गफ्फारखांने अिस अरसेमें अेक भाषण दिया था। अुसके कारण अुन पर राजद्रोहका अभियोग लगाया गया था और अुन्हें दो वर्षकी सजा हुआी थी। अुस मुकदमेमें अदालतमें दिया जानेवाला बयान।

बलवंतराय[1] की परिषदमें जाना ठीक समझें तो जाअिये। अिस मामलेमें मुझे कुछ समझ नही पड़ता।

अभ्यंकरको मेरी तरफसे भी कहिये कि भले नंगे हो जायं।

प्यारेलाल पहुंचे होंगे। और मदद चाहिये तो मांग लीजिये। स्वरूपरानी[2] के लिअे प्रभावतीको रवाना किया जा सके तो कीजिये। प्यारेलाल वहां हो आवें।

बापूके आशीर्वाद

८०

वर्धा,
१३-१२-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। मणिलाल (गांधी) तथा . . . का मामला ठीक निपट गया। कर्नाटक खटकता है। परंतु जहां गंगाधरराव[3] जैसे हों वहां क्या कहा जाय? जो हो सके कीजिये।

मैं तो ग्राम-अुद्योग संघमें फंस गया हूं। राजाजी आ पहुंचे हैं। आज जाना चाहते हैं। परसों रातको आये थे। जमनालाल थोड़े दिनमें वहां पहुंचेंगे।

और सब कुछ महादेवसे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बंबअी।

---

१. श्री बलवंतराय मेहता। भावनगरके नेता। सौराष्ट्रमें कुछ समय तक मंत्री थे।

२. स्व० स्वरूपरानी बीमार थीं, अुनकी सेवाके लिअे।

३. श्री गंगाधरराव देशपांडे। कर्नाटकके नेता।

८१

वर्धा,
१७-१२-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। खानसाहबका बयान वकीलोंको क्यों पसंद आने लगा? हमारे वकीलोंको पसंद आया हो तो बहुत समझिये। वैसे हमारे कामके लिअे तो वही ठीक था। सरकारकी समझमें आ सके, अैसा तो आज कहां संभव है?

दीनबन्धु आज आ रहे हैं। अिसलिअे पता चल जायगा कि क्या हुआ।

मेरा अनुमान है कि जमनालालजी यहांसे गुरुवारको रवाना होंगे। वे आयें तब तक तो वहीं ठहरिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

८२

वर्धा,
२२-१२-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

चार्ली भाअीको रोकना मुश्किल है। अैसोंके हाथसे नुकसान हो तो भी हम सहन करें। परंतु मैं जाग्रत हूं। अुनसे साफ कह दिया है। अिस मामलेमें चिन्ता न करें। लोग भी जान गये हैं कि अुनकी आवाजमें कोअी अर्थ नहीं होता।

कृपालानीकी बात अलग है। अुन्होंने राजाराम[1] को निकाल दिया, यह भी ठीक नहीं हुआ। मुझे लगता है कि कृष्णदास[2] अिस कामको नहीं कर सकता। मगर यह किस्सा मैं पूरा नहीं जानता। कृपालानीको

१. कांग्रेस समितिके वैतनिक मंत्री।

२. १९२०-२१ में बापूजीके मंत्रीका काम करते थे। अुन्होंने 'Seven Months with Mahatma Gandhi' पुस्तक लिखी है।

क्यों न लिखें? अुनके बयान तो मैंने नहीं पढ़े। अुनमें कुछ अुलटा-सीधा कह डाला है क्या? अैसा हो तो मैं भी अुन्हें लिखूं। लिखनेसे वे तुरंत सुधार कर लेंगे।

वहांकी सभाको तो आपने खूब काबूमें रखा। आपका भाषण मुझे बहुत पसन्द आया। यह सब जनताको बताना जरूरी ही था।[1]

---

१. खान अब्दुल गफ्फारखांको राजद्रोहके अभियोगमें दी गअी दो वर्षकी सख्त कैदकी सजाके प्रति विरोध प्रगट करनेके लिअे बम्बअी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके आश्रयमें अेक सार्वजनिक सभा चौपाटी पर पू० बापूकी अध्यक्षतामें हुअी थी। अुसमें दिया गया भाषण 'मुंबअी समाचार' से नीचे दिया जाता है:

अध्यक्ष सरदार वल्लभभाअी पटेलने सभाका काम शुरू करते हुअे बताया कि खान अब्दुल गफ्फारखांसे संदेश मांगा गया, तो अुन्होंने कहा कि मैं सिपाही हूं और सन्देश देना मेरा काम नहीं है। परंतु लोगोंसे कहना कि मेरी सजाके विरोधमें न तो सभायें करें और न विरोध प्रगट करें। फिर भी यह सभा की गअी है और मैं अध्यक्ष बन रहा हूं, यह बहुत दु:खका प्रसंग है। परंतु सभा न करनेमें भी कुछ कठिनाअियां जान पड़ीं। हमने अुन्हें आमंत्रित किया, वे आये और थोड़ेसे अीसाअियोंकी अेक सभामें गये। खानसाहब कौन हैं, यह मैं जानता था। और मैं मौजूद होता तो अुन्हें अुस सभामें जाने ही न देता, क्योंकि मैं जानता था कि अुसका अुपयोग क्या है।

मैं जानता हूं कि अिस समय भाषणोंकी वर्षा करनेका प्रसंग नहीं है। बम्बअीका कोअी कार्यकर्ता अुनके साथ नहीं था, अैसी हालतमें अुन्हें ले जाया गया; और अुन्हें विषय भी अैसा दिया गया जिसमें कहना पड़े कि अुन्हें सरहद प्रान्तमें क्यों नहीं जाने दिया जाता। अिसमें वे फंस गये और आज अुन्हें दो वर्षकी सख्त सजा हो गअी। वे कभी घबराते नहीं, परंतु कुल मिलाकर अुनके जानेसे हमें अतिशय हानि हुअी है। अिसलिअे हमारे मनको दु:ख होता है।

दु:ख होनेका दूसरा कारण यह है कि जहां तक हो सके वहां तक कितने ही कड़े और अपमानजनक कानून भी सहन कर लेनेका

रामदास तो अभी खबअी जायगा। २७ या २८ तारीखको स्वामीके साथ रवाना होगा। मणिभवनमें रहेगा।

काग्रेसका अिस समय आदेश होनेके कारण अुसका आदर करना काग्रेसियोंका फर्ज है, यह मानकर कानून भग करके जेलमें जानेका अुनका बिलकुल अिरादा नही था। नही तो वे अपने विरुद्ध लगाअी गअी पाबंदियोंको ही तोडते।

अिस प्रकार जब गिरफ्तारिया हो रही हो, तब हम क्या करें और सरकारकी नीयत क्या है, अैसा कुछ लोग पूछते हैं। अुनसे मैं कहूंगा कि सरकारकी नीयत क्या है, यह जानना हमारे लिअे जरूरी नही है। परंतु सब कार्यकर्ताओंसे, यदि वे मेरी सलाह मानें तो, मैं कहूंगा कि अिस समय हमें संयम रखना चाहिये। भाषण देनेका काम अुन बहुत ही थोडे मनुष्योंके लिअे रहने देना चाहिये, जो यह समझ सकें कि जालमें कहां फंस जायगे।

काग्रेसकी वर्तमान नीतिके अनुसार हमे फसना नही चाहिये। न फंसनेका अर्थ यही है कि हमें खुद ही काग्रेसके आदेशोंका भंग न करना चाहिये; खानसाहबका और मेरा अपना भी आपको यही अेक सन्देश है।

खानसाहबका दूसरा सन्देश लोगोंके लिअे यह है कि अगर आपका अुन पर प्रेम है, तो गांवोंके लोगोंकी सेवा कीजिये। सरकार अपने हाथों ही लोगोंमें राजद्रोह फैलानेके लिअे भरसक जो करे अुतना ही काफी है। किसीको भाषण देनेकी जरूरत ही नही। अखिल भारत ग्राम-अुद्योग सघके संविधानमें गाधीजीने भी अुस सघको राजनीतिक विषयोंसे अलग रखनेकी जरूरत मानी है। तो हमारा फर्ज है कि हम काग्रेसकी नीतिका आदर करें। अुस नीतिका आदर करनेके खातिर खानसाहबने कितने कितने कष्ट अुठाये हैं!

खानसाहबको जब अुनके भाषणकी नकल दिखाअी गअी, तब अुन्होंने स्वीकार किया: अिस नकलमें मुख्यत मैंने जो भाषण दिया वह आ जाता है। और अगर अिस भाषणसे अपराध होता है, अैसा वकील कहें तो मुझे भंग करनेके लिअे खेद प्रगट करना चाहिये — कांग्रेसका आदेश भग करनेके लिअे अफसोस जाहिर करना चाहिये।

मुस्लिम भाअियोंके लिअे खेद कैसा? हम अपने धर्मका पालन करें। सिन्ध और लाहोरकी हत्याओंके बारेमें मैंने मौलाना और डॉ० अन्सारीको लिखा है। दोनोंके जवाब आ गये हैं। लिखते है, कुछ न कुछ करेंगे। सारा काम ही मुश्किल है। दृष्टिकोण अलग-अलग रहे हों, वहां सहन करना ही पडेगा। हम अपने बूतेके मुताबिक कर गुजरें तो पार अुतरे समझे।

मैं यहांसे २८ तारीखको दिल्लीके लिअे रवाना होअूगा। दिल्लीमें अधिकसे अधिक अेक महीना लगेगा। ग्राम-अुद्योग संघकी बैठक ३१ जनवरीको है। आप दिल्ली तो आयेंगे ही। कार्यसमितिकी

परंतु यह अफसोस मैं अिस ढंगसे जाहिर करना चाहता हूं जिससे अुसका यह अर्थ न लगाया जाय कि मैं सजा कम करानेके हेतुसे अफसोस जाहिर कर रहा हूं।

खानसाहबको मजिस्ट्रेटने अपने अधिकारके अनुसार पूरी सजा दी है। अुक्त भाषण करनेमें खानसाहबका हेतु राजद्रोहकी भावना फैलानेका नहीं था, यह बात मजिस्ट्रेटकी समझमें नहीं आअी; और समझा भी कौन सकता था? सजाके संबंधमें या किसी और मामलेमें अिस समय किसीकी किसी भी प्रकारकी आलोचना करना खानसाहब नहीं चाहते। वे तो यह चाहते हैं कि अुनके पीछे बिलकुल भाषण न हों या लोग अिस नियमका पालन करते हुअे बोलें। अगर आप खान-साहबसे प्रेम करते हों, तो आपका यह कर्तव्य है कि आप अुनकी अिच्छाका आदर करें। वे बंगालके गांवोंमें जाकर रहना चाहते थे। मगर वैसा न हो सका यह खुदाकी मरजी ही है, अैसा खुशीके साथ मानकर अीश्वरकी शरणमें सिर झुकानेवाले खानसाहब जैसे महापुरुषके संदेशको आप स्वीकार कीजिये। भाषणोंका शौक कम कीजिये और गांवोंके लोगोंकी सेवा कीजिये।

अिसके बाद अध्यक्ष सरदार वल्लभभाअीने यह पूछा कि किसीको भाषण देनेकी अिच्छा है? जब किसीने अिच्छा प्रगट न की, तो अुन्होंने सभा विसर्जित होनेकी घोषणा की।
('मुंबअी समाचार', १७–१२–'३४)

बैठक १५ जनवरीके आसपास हो तो अच्छा। मैं दिल्लीसे जितना जल्दी रवाना हो जाअूं अुतना अच्छा।

अभ्यंकरका क्या हाल है? आपकी नाकका क्या हुआ?

बापूके आशीर्वाद

८३

वर्धा,
२३-१२-'३४

भाअी वल्लभभाअी,

मिल-मालिकोंके प्रस्ताव देखे होंगे। देखिये कहीं व्यर्थ न लड़ पड़ें। कोअी मालिक सुने तो अपनी आवाज सुनाअिये। मैंने कस्तूरभाअी और चमनभाअीको लिखा है।

जहां दौरा करें वहां ग्राम-अुद्योग संघकी बातें अवश्य कीजिये। अिसके द्वारा बहुत कुछ हो सकता है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बंबअी

८४

वर्धा,
२६-१२-'३४

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिल गया।

गंगाधररावको मैंने पत्र लिखा है। जमनालालने अुनका पत्र मेरे पास भेजा था। मुझे अुनकी बात समझमें नहीं आअी। अिसलिअे मैंने अुन्हें दिल्ली आनेको लिखा है। अिस तरह रुपया कब तक दिया जाय? और किसके आगे हाथ फैलाया जाय?

कराची-लाहोरकी हत्याके बारेमें ब्रेलवी[1] का लेख देखा होगा। देखता हूं अब दिल्लीमें क्या हो सकता है।

अेण्ड्रूज़का पत्र आया है। अुनको तो अच्छा लगा है। आज आने चाहिये। मैं यह नहीं मानता कि अुनके अच्छा लगनेमें कोअी अर्थ है।

---

१. स्व० सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवी। 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के संपादक।

डॉ० खानसाहबके नाम पंजाबका भी हुक्म था। दिल्ली तो अुन्हें जाना ही है। अिसलिअे अुन्होंने पूछा कि रास्तेमें पंजाबकी हद आती है अुसका क्या होगा? अतः अुन्होंने तार दिया कि हुक्ममें स्टेशनोंसे गुजरना आ जाता है या नहीं? जवाब आया है कि पंजाबका हुक्म ही २८ तारीखको रद्द हो जाता है। सरहदका हुक्म तो अपने-आप ही २९ तारीखसे रद्द हो जाता है। अिसलिअे अुसे फिर ताजा न करें तो खानसाहब सरहदमें भी जा सकेंगे। मेहर[1] तो मेरे साथ आ ही रही है। साथ तो मेरा ही है।

ग्राम-अुद्योग संघके सिलसिलेमें वैकुण्ठ मेहता[2] यहां आये हैं। अभी दो दिन ठहरेंगे।

नाककी बात समझा। डॉक्टर ही मना करते हैं, तब फिर क्या कहा जाय?

रचनात्मक कार्यके बारेमें खूब दृढ़ रहिये। लोग आलस्य नहीं छोड़ेंगे और करने योग्य काम नहीं करेंगे, तो न लड़ाअी ही होगी और न स्वराज्य ही मिलेगा। हममें सहयोग तो होना ही चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बंबअी

८५

वर्धा,
३०-१-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपसे कहना भूल गया कि शाह[3] मेरे पास आये थे। अुनकी अिच्छा बोर्डके लिअे काम करनेकी है। परंतु अूपर अूपरसे नहीं;

---

१. खानसाहबकी पुत्री।

२. सहकारी आन्दोलनके अेक प्रमुख पुरस्कर्ता। बंबअी राज्यके अर्थमंत्री थे। अब केन्द्रीय सरकारकी अर्थ-समितिके सदस्य।

३. प्रोफेसर के० टी० शाह। बंबअीके प्रख्यात अर्थशास्त्री।

वे सच्चे दिलसे काम करना चाहते हैं। मेरे खयालसे अुनका अुपयोग करने लायक तो जरूर है। अुन्हें अवैतनिक आर्थिक सलाहकार या परामर्शदाता नहीं बनाया जा सकता? अुन्हें वेतनका लोभ नहीं है।

मैंने आपके साथ सफर करनेकी आशा रखी थी। दिल्लीमें तो कुछ बातें ही न हो सकीं। फिर भी आप वहां रह गये, यह अच्छा ही हुआ। आने पर अेण्ड्रूजका दूसरा पत्र मिला। अुसमें कोअी विशेष बात नहीं है। अुनके हवाअी किले हैं।

कहां तो वहांकी ठंड और कहां (तुलनामें) यहांकी गरमी?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
नअी दिल्ली

८६

वर्धा,
१४-२-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

दायां हाथ थक गया है, अिसलिअे आराम कर रहा हूं। आपका पत्र मिला था। बादमें मुलाकात[1] का वर्णन भी मिला। मिल लिये यह ठीक हुआ। अब पत्रव्यवहार जारी रखें।

नाक कष्ट नहीं देती होगी।

यहां कब आयेंगे? तारीख निश्चित करें।

प्यारेलालसे बातें कर लीजिये।

मैं तो भोजनालय लेकर बैठा हूं। मेरा काम बदल गया है।

---

१. केन्द्रीय सरकारके गृहमंत्री सर हेनरी क्रेग पू० बापूसे मिलना चाहते थे। अिसलिअे श्री घनश्यामदास बिड़लाने अपने यहां पू० बापूको और सर हेनरी क्रेगको चायका आमंत्रण देकर मुलाकात कराअी थी। मुलाकातमें गुजरातकी शिक्षा-संबंधी तथा दूसरी संस्थाओंके अभी तक जब्त रहनेके बारेमें ही बात हुअी थी। मुलाकातके बाद पू० बापूने अुन्हें विस्तृत पत्र लिखा था।

सोचा था अुससे ज्यादा बढ़ गया है। लेकिन अिसकी क्या शिकायत? महादेव कल आयेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बंबअी

८७

वर्धा,
१८-३-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

सलाह देना कठिन है। बल्लूभाअी कुछ बंध गये दीखते हैं। अगर प्रार्थना करायें तो मिठाअी क्यों न दें? क्या मुफ्त सहायता और रुपयेकी सहायताकी अेक ही शर्त होती है? सरकारकी मांगमें कोअी भेद नहीं है।

कुछ भी हो। वल्लूभाअी मित्रोंसे मिलें। सब मजबूत हों तो कहें: सरकार और लोगोंके बीच लड़ाअी बन्द नहीं हुअी है। महोत्सव खानगी व्यक्तिकी जन्मगांठ नहीं, परंतु राजाके राज्यका है। जिस राज्यकी नीतिकी हम निन्दा करते हैं, अुसका अुत्सव मनानेमें भाग लेना दंभकी कीमत चुकाने जैसी बात होगी। हमारी सविनय कानून-भंगकी लड़ाअी स्थगित है, अिसलिअे सरकार आज्ञाअें देकर जो चाहे सो करा सकती है। पर स्वेच्छासे खुश होकर तो बहुत लोग कुछ नहीं करेंगे। सरकार अैसे अुत्सव जबरदस्ती तो शायद ही मनवायेगी। जहां तक संभव हो हमें किसीका जी नहीं दुखाना है, अिसलिअे सरकार विवश न करे। हम धांधली नहीं करेंगे। जिसकी अिच्छा हो वह अुत्सवमें जाय। म्युनिसिपैलिटीको सरकार कुछ न लिखे; म्युनिसिपैलिटी सरकारको कुछ न लिखेगी, और न कोअी प्रस्ताव ही पास करेगी।

अैसे अवसर पर म्युनिसिपैलिटीको कुछ सुविधाअें दी जायं, तो भी मैं मानता हूं कि वह अुत्सवमें भाग नहीं ले सकती। बड़ा प्रश्न तो बल्लूभाअी छेड़ ही नहीं सकते।

यह तो मेरी साधारण राय हुआी। अहमदाबादकी परिस्थितिके अनुसार कुछ और ही व्यवहार आवश्यक हो, तो अुसका मुझे कैसे पता चले?

अब आपको जैसा ठीक लगे वैसा वल्लभभाअीको रास्ता बताअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
बंबअी

८८

वर्धा,
२२-३-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

पहले दिनके मौनका रस चख रहा हूं। राजकुमारी[1] के साथ बोलनेकी छूट रखी है। वह खास तौर पर मिलने आअी है। अिसलिअे अुसका दिल कैसे दुखाअूं? चार दिनसे आअी है, परंतु वास्तवमें बात तो आज ही कर सका हूं।

मेरे खयालसे आप सिर्फ यह बतानेके लिअे कि आपके यहां क्या हो रहा है दिल्ली लिखें तो अच्छा हो।

. . . का प्रकरण दुःखद है। अुन्हें मैं लिख रहा हूं। अुन्हें आपके पास तो हरगिज नहीं बुलवाया जा सकता। मैं जो पत्र लिखूंगा अुसकी नकल आपको भेजूंगा। अुससे पता चल जायगा।

दूसरा आज नहीं लिखूंगा। मुन्शीका पत्र आ गया है। अिसके बारेमें अधिक महादेव लिखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
बड़ोदा

---

१. राजकुमारी अमृतकौर। बापूजीकी अेक अंतरंग शिष्या। अिस समय भारत सरकारकी स्वास्थ्य-मंत्री।

८९

वर्धा,
२६–३–'३५

भाअी वल्लभभाअी,

महादेव सवेरे यवतमालकी अेक संस्था देखने गये हैं। शामको लौट आयेंगे।

आप आसफअली लिखते है, परंतु मनमें शरीफा हामिदअली होंगे।

प्लेगके टीकेके बारेमें लिखा पत्र अिसके साथ है।

मुन्शी लिखते है कि लीलावतीको अभी तो कमीशन भी नहीं मिलता। रु० ५०,००० की खबर अुन्होंने कल ही दी थी।

नरहरिको अब तो साधारण अुपचारोंसे ही अच्छा होना है।

यह देशी[१] कागज मुझे काफी परेशान कर रहा है। आप पढ़ सकें तो काफी है।

मेरे खयालसे आपको रणजित[२] का निमंत्रण स्वीकार कर लेना चाहिये। काम मुश्किल है, लेकिन अैसा लगता है कि स्वीकार करनेसे ठीक हो जायगा।

भोजनके बारेमें मैं काफी गहराअीमें गया हूं। अुसका निचोड़ निकालूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

९०

वर्धा,
३०–३–'३५

भाअी वल्लभभाअी,

मैंने तो किसीसे हां कहा ही नहीं। अखबारमें पढ़ा तब मुझे आश्चर्य हुआ। मेरी अिच्छा अिस समय कहीं भी जानेकी नहीं होती।

---

१. ग्रामोद्योगका बना कागज।

२. स्व० रणजित पंडित। पं० जवाहरलाल नेहरूकी बहन विजयालक्ष्मीके पति। अुत्तरप्रदेशके प्रमुख कार्यकर्ता थे।

मेरा बस चले तो मैं मौन बढ़ा दूं। यह मुझे बहुत अनुकूल आ गया है। जरूरत पड़ने पर सूचनाअें दे देता हूं। परंतु आपके वचनको कौन टाल सकता है? दूसरा कोअी मुझे अिस वक्त बाहर नहीं निकाल सकता था। अगर अब भी मुझे ज्यों त्यों करके अेक वर्ष निकाल लेने दें तो निकाल डालूं। लेकिन अगर मुझे कहीं ले ही जाना हो, तो वह जगह बोरसद ही हो सकती है। जहां अधिकसे अधिक महामारी हो वहां। मंडपमें रहना अच्छा लगेगा। रासकी पैदल यात्रा करेंगे। मुझसे चार काम लीजिये : अस्पृश्यता-निवारण, खादी, ग्रामोद्योग और प्लेग-निवारण। किसानोंके आंसू पोंछना कोअी कार्यक्रम थोड़ा ही माना जा सकता है? मुझे और कहीं न ले जायं। कमसे कम दिन रखकर बिदा कर दें। मअीके मध्यमें कोअी भी तारीख रख लें। अिन्दौरके बाद वापस आनेकी बात तो रहेगी ही।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

९१

वर्धा

भाअी वल्लभभाअी,

मौनमें यह सुख है कि रोजकी डाकका निपटारा रोज हो जाता है। अिसमें कमसे कम तीन घंटे लगते हैं। बाकीका समय चलते हुअे काममें देता हूं।

* * *

अब दिल्ली या बम्बअी पत्र लिखनेकी जरूरत नहीं रहती। भाअीलालको तो खबर दे ही दी होगी।

प्लेग-संबंधी पत्रिका[1] पढ़ ली। सरकार या स्थानीय स्वराज्यवाला वाक्य खटका। क्या वह अिस समय सर्वथा अनुचित नहीं है? अिससे

---

१. बोरसद प्लेग-निवारण कार्य संबंधी पत्रिका।

हमें फायदा तो हरगिज नहीं होगा। यू० पी०[1] का काम नाजुक है। आप निपट लेंगे?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

९२

वर्धा,
२-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

मणिलाल (कोठारी) को मिले हुअे जवाब[2] की नकल भेजिये। अुसकी भाषा परसे दिल्ली लिखनेके पत्रके बारेमें सूझ पड़ेगा।

अैसे जवाब तो अभी कुछ भी नहीं हैं। अिससे भी अधिक अपमान होने ही वाले हैं। अिसीलिअे हमें अलग रहकर जो हो सके सो करते रहना है। मैं अिसीमें हमारी शक्तिका संग्रह मानता हूं। वैसे गुस्सा करना तो आसान ही है।

प्लेग[3] का टीका लगवानेके बारेमें मेरे विचारोंको निकम्मे मानकर चलनेमें शायद सुरक्षितता हो। मैं तो अैसे खतरे अुठाता ही रहा हूं और दूसरोंसे भी अुठवाये हैं। लेकिन अैसे वक्त मैं हमेशा मौके पर

---

१. अुत्तरप्रदेश। अुस समय युक्तप्रान्त कहलाता था।

२. सजा पूरी होने पर अुन्हें सौराष्ट्रमें ले जाकर छोड़ दिया गया था और ब्रिटिश हदमें प्रवेश न करनेकी आज्ञा दी गअी थी। अुसके बारेमें जो पत्र लिखा गया था, अुसका सरकार द्वारा दिया गया जवाब।

३. बोरसदमें चार सालसे प्लेगका जोर था और सरकारी विभाग अच्छी तरह ध्यान नहीं दे रहा था। कांग्रेसके कार्यकर्ता लड़ाअीके कारण जेलमें थे। परंतु १९३५ में प्लेग फिर शुरू हुआ, अुस समय पू० बापूने प्लेग-निवारणका काम बहुत व्यवस्थापूर्वक और सावधानीसे हाथमें लिया। अुसके बाद आज तक बोरसदमें प्लेग नहीं आया। अुस समय तमाम स्वयंसेवकों और तहसीलके लोगोंको प्लेगका टीका लगाया गया था। टीका न लगवानेवालोंमें पू० बापू और मैं ही थीं।

हाजिर रहा हूं। अिस समय दूर बैठा अपने विचार फेंका करूं, तो अुनका अनुकरण खतरनाक हो सकता है। अिसलिअे मेरी तो सलाह है कि डॉ० भास्कर[1] कहें सो किया जाय। मैंने अपने विचार अुनके सामने रख ही दिये हैं। शायद वह पत्र आपने पढ़ा भी हो।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

९३

वर्धा,
४–४–'३५

भाअी वल्लभभाअी,

खूब पकड़े गये[2] मालूम होते हैं। मणिका पत्र आया है। बिना कूटे चावल शायद आपसे न खाये जायं। यहां तो सबको पच जाते हैं। ये किसीको भी चिपकने तो नहीं चाहिये। परंतु प्रयोग आपके लिअे नहीं हो सकते। आप तो शरीरको टिकाये रखें, अितना काफी है। जरूरी भोजन करते रहेंगे तो स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

अेगाथाका पत्र आया है। अुसमें वह राजाजीको विलायत भेजनेके बारेमें लगातार मांग कर रही है। कोअी भी जाय, वह अिस समय वहां कुछ कर नहीं सकता। अैसोंके जानेका अुपयोग शायद भविष्यके लिअे हो सकता है।

अपनी राय बताअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

---

१. डॉ० भास्कर पटेल, जिन्होंने लड़ाअीके दिनोंमें कांग्रेसके कामचलाअू अस्पताल चलाये थे। अुनकी सेवा अिस प्लेग-निवारण कार्यमें बड़ी अुपयोगी सिद्ध हुअी थी। अब बंबअी राज्य विधान-सभाके सदस्य।

२. पू० बापूको बोरसदमें बुखार आने लगा था।

वर्धा,
५-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

बैरी बुखार अब बिलकुल चला गया होगा। अुसे तो अपने पास आप खड़ा ही न रहने दें।

यू० पी०[1] जायं तो अच्छा ही है। आप जो कहेंगे वह किसीको खटकेगा नहीं। "आपके सच्चे नायक जवाहर हैं। हम तो अुनके ट्रस्टी बनकर ही आपके पास खड़े हैं।" यह ताना बनाकर अुसमें जो बाना डालना हो डालिये। मुझे तो यही अच्छा लगता है कि आपको अितने आग्रहसे बुलाया गया है।

*　　　*　　　*

आपकी पत्रिकाअें[2] सब ध्यानसे पढ़ जाता हूं। कलसे अुन्हें संभालकर रखने लगा हूं। मणि रखती ही होगी। अेक सेट भले ही यहां भी रहे। पहले सात अंक भेजनेको मणिसे कह दें।

आपको लकी बेग[3] मिले तो मुझे हिस्सा देंगे न?

राजाजीको पत्र लिखिये। वे अकेले पड़ गये लगते हैं। सतत काम कर रहे हैं। दो बात किसीसे कर सकें, अैसा भी नहीं लगता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

---

१. प्रान्तीय किसान सम्मेलनके अध्यक्ष बनकर।

२. प्लेग-निवारणके सिलसिलेमें लोकशिक्षा देनेके लिअे हर रोज पत्रिकाअें निकाली जाती थीं।

३. अखबारोंमें अेक लॉटरीका विज्ञापन था। अुस पर पू० बापूने विनोद किया था। अुसीके जवाबमें यह है।

१५

वर्धा,
६-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

. . . ने मेरे नाम भी अैसा ही पत्र लिखा था। यों पैसे मांगता ही रहता है। मैंने अिसका कारण पूछा है। आपको न सतानेका लिख रहा हूं। मेरे पास आना हो तो आ जायगा।

चंदूभाअीको ठीक अुत्तर दिया है। संन्यासमें क्या रखा है?

भूलाभाअीके बारेमें पढ़ा। ठीक है। हो सके सो कर डालें।

आज अधिक नहीं लिखूंगा। आज अुपवास[1] का दिन है, यह तो मैं लगभग भूल ही गया था।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

१६

वर्धा,
७-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

मणिलाल कोठारीको मिले हुअे जवाबमें अुद्धतताकी हद हो गअी। वे अपने स्वभावके अनुसार करें, हम अपने स्वभावके अनुसार। जवाबमें हिंसाकी परिसीमा हो गअी मानता हूं। हमारी अहिंसाकी हद कहां है? हिंसाकी हद हो सकती है, अहिंसाकी तो है ही नहीं। अिसीलिअे वह अजेय है। यह सारा पांडित्य आपके सामने क्यों रखूं? परन्तु यह पांडित्य नहीं है। मनमें ये अुद्‌गार आते हैं। मेरे मनमें जो विचार पैदा होते हैं, अुन्हें आपके सामने रख देता हूं। मुझे आपसे अेक भी विचार छिपाकर थोड़े ही रखना है?

---

१. ६ अप्रैल अर्थात् राष्ट्रीय सप्ताहका पहला दिन।

आजके पत्रमें कलकी ही पत्रिकाकी नकल है। नं० १० भूलसे होना चाहिये।

बुखारकी कमजोरी जा रही होगी।

टीकेके बारेमें आपने ठीक कहा है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रिका ठीक है। कल मिली असका नं० ९ था। अपरसे ही पढ़कर लिख दिया था। अब नं० १० पढ़ी तो देखा कि चीज नअी है।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

९७

वर्धा,
८-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

अन्सारी और क्या करें? वे किसीको ना नहीं कह सकते। फिर वह गरीब हो या अमीर। अेक डाकू स्त्री चढ़ आअी थी, असके अंचलमें अुन्होंने अपना बटवा खाली कर दिया था। अिसलिअे अुन्हें मुक्त करनेमें[1] दया ही है।

हम सत्ताके प्रति मौन धारण करके जो हो सके करते रहें; यह तो मुझे पसन्द ही है कि याचना हरगिज न करें।

रासको भले ही वे लूट लें। हम अिंच अिंच (जमीन) वापस लेंगे। मुझे बुलाना तो आपके ही हाथमें है। मेरा जुलूस हरगिज न निकालें। बोरसद ले जाना हो तो ले जाअिये।

आपका स्वास्थ्य फिर न बिगड़े तो अच्छा।

मणि नाकके अुपद्रवकी बात लिखती है, सो क्या बात है?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

---

१. पार्लियामेंटरी बोर्डसे।

९८

वर्धा,
१०–४–'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपकी पत्रिकायें तेज होती जा रही हैं। अंधेरी कोठरी ठीक बनी है। अैसी तो कितनी ही हैं। अिसकी सजा हम भोग रहे हैं। आप कर रहे हैं वही सच्चा काम है।

देवशर्माका पत्र साथमें है। अुनसे जो कुछ मिलनेकी आशा थी सो मिल गया। आपमें शक्ति आ रही होगी।

महुअेका[1] प्रयोग ठीक कर रहे हैं। परिणाम बताअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

९९

अिन्दौर,
२२–४–'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका भाषण[2] पढ़ लिया। यह काम नहीं देगा। अिस समय सरकारकी नीतिकी चर्चा आपने जिस स्वरमें की है, अुस स्वरमें नहीं हो सकती। यह युग सरकारकी नीति या जमींदारोंकी नीतिका निरीक्षण करनेका नहीं, परन्तु आत्म-निरीक्षण करनेका है। अपना घर साफ करने और रखनेका है। अिसलिअे अिस समय हमें क्या करना चाहिये, अिसके सिवा आप मेरे मुंहसे और कुछ सुननेकी कम ही आशा रखें। अिस प्रस्तावनाके बाद मुझे तो यही समझमें आता है कि किसानोंका कर्तव्य बताया जाय और सरकारका नाम तक न लिया जाय। नअी

---

१. सूर्योदयसे पहले महुअेके पेड़के नीचे ताजे गिरे हुअे आठ दस महुअे अुस समय पू० बापू खाया करते थे।

२. २७ अप्रैलको होनेवाले अलाहाबाद प्रान्तीय किसान सम्मेलनके लिअे तैयार किया गया भाषण।

दिल्लीको अिस वक्त भूल जाना ही अुचित है। परन्तु अगर यह बात आपको न सूझे, तो फिर हृदयका स्वामी जो सुझाये वही बोलिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
जबलपुर

१००

वर्धा,
२२-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

सुबह तो आपको अेक पत्र लिखा ही था। अुसके बाद अितना लिखना पड़ा कि अब दायें हाथसे लिखा नहीं जाता।

मुन्शीको (पार्लियामेंटरी) बोर्डके मंत्री बनानेकी आवश्यकता मालूम हो तो देख लीजिये। क्या अंसारीके निकल जानेसे भूलाभाअी अध्यक्ष बनेंगे? राजाजीको किसी भी तरह समझाया जा सके तो समझाअिये। डॉ० बिधान भी निकल गये क्या?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
जबलपुर

१०१

वर्धा,
५-५-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका तार मिला। २५ तारीखको वहां पहुंच जाअूंगा। २३ तारीखको पहुंचूं तो हर्ज तो नहीं है न? २२ तारीखको बम्बअीमें कमला (नेहरू) से मिला, तो २३ तारीखको सवेरे शायद वहां पहुंचूंगा। लिखिये वहां कितने दिन रोकनेका विचार है। कमसे कम दिन रोकें।

राजाजीकी थकावटका पार नहीं है। अिसमें अुनका दोष भी क्या बताया जाय? जिसका मन थक जाय, अुसे क्या जबरन् रखा जा सकता है? आप और राजेन्द्रबाबू वगैरा किसे त्यागपत्र देंगे? जो

हैं वे जब तक काम चले चलायें। किसी दलसे किया जा सके, तो वह खुशीसे कांग्रेस पर कब्जा कर ले[1]।

---

१. यह पैरा पू० बापूके नीचे लिखे पत्रके अुत्तरमें है :

सत्याग्रह छावनी,
बोरसद
२-५-'३५

पूज्य बापू,

आपका पत्र मिला। राजाजीको न रोका जा सके, यह दुःखकी बात है। मेरा मत यह था कि निकलना हो तो सभीको अेक साथ निकल जाना चाहिये। अिस तरह अेकके बाद अेक निकलनेका अनर्थ होता है। और बाकी रहनेवालोंकी शक्ति क्षीण होती जाती है। आपके निकल जानेके बाद हमारी मंडलीमें अेक-दूसरेके साथ खड़े रहकर समूहमें काम करनेकी जरूरत थी। जमनालालजी बीमार हैं। राजाजी भाग जायं तो फिर हमारा दो-तीन जनोंका यह सब घसीटते रहना व्यर्थ है। सोशलिस्टोंने अिनके त्यागपत्रका बड़ा अनर्थ किया। बम्बअीके अखबारोंमें तो अिस बातको भारी भगदड़की शुरुआतके रूपमें चित्रित किया गया। अैसा करनेवाले हमारे ही आदमी हैं। अिसलिअे अिस तरह अेकके बाद अेक त्यागपत्र देकर बाकी लोगों पर असह्य भार डालना मुझे केवल आत्महत्या करने जैसा लगता है। परन्तु राजेन्द्रबाबू तो जैसा कहनेवाला मिल जाय वैसा ही मान लेनेवाले ठहरे, अिसलिअे मैं हार गया। मुझे जबलपुरमें कहते थे कि मेरी बात सही है। वहां आप दोनोंके साथ सहमत हो जाते हैं, तो फिर अब मेरे लिअे कहनेको रह ही क्या जाता है?

भूलाभाअीकी भी मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। राजाजीका अुन्हें सहारा था। अिस प्रकार भगदड़ मचानेसे अस्थिर मनुष्योंके दिमाग फिर जाते हैं। डॉ० चंदूलालने जबलपुरसे आकर बम्बअीमें जो भाषण दिया, वह कार्यसमिति पर गंभीर आरोप लगानेवाला था। वहां अुन्होंने अेक-अेक प्रस्ताव पर समितिके साथ मत दिया था। परन्तु यह सोशलिस्टोंकी अेकता और हमारी छिन्नभिन्नताका खुला परिणाम जान पड़ता है। अिस प्रकार हम हरअेक प्रान्तमें लोकमतको बिगाड़ने

जयप्रकाशने आपको जो पत्र भेजा है, अुसकी नकल मुझे बतानेके लिअे अुसने प्रभावतीको भेजी है। वह किस बारेमें है? आप अैसा क्या बोले हैं?

. . . आठवले[1] यहां आये थे। वे गये। मुझसे भी अुन्होंने वही बात कही, जो आपको लिखी है।

अब तो प्लेगका जोर कम हो गया होगा। आपमें शक्ति आ गअी?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

१०२

वर्धा,
१५–५–'३५

भाअी वल्लभभाअी,

"दिल्लीके कौवे कितने" वाला मजाक मैं ठीक नहीं मानता। अिससे लोगोंको कुछ मिलता नहीं। अभी लड़ाअी तो है नहीं।

अमृतलाल (सेठ) का पत्र मिल गया। मैंने लिखा है कि अपने अखबारमें दुःख प्रगट करें तो अच्छा।

दें, अिसके बनिस्बत तो मैं यही ज्यादा पसन्द करूंगा कि हम सभी निकल जायं।

हमारी राय यह है कि अगर आपको २३ तारीखको बम्बअी जाना हो और २४ को यहां आना अधिक अनुकूल हो, तो अुसीके अनुसार कार्यक्रम रखा जाय। अगर पहले आना अधिक अनुकूल हो, तो तारसे खबर दीजिये। नहीं तो अिसीके अनुसार २४ को सुबह यहां आनेका तय रखिये।

. .

वल्लभभाअीके प्रणाम

महात्मा गांधीजी,
मगनवाड़ी,
वर्धा (सी. पी.)

१. श्री रामचन्द्र आठवले। गुजरात विद्यापीठमें और फिर सेठ लालभाअी दलपतभाअी आर्ट्स कॉलेजमें संस्कृतके अध्यापक।

बाकी आप महादेवके पत्रसे जानेंगे। अिस वक्त तो खूब काममें फंसा हूं। अेण्ड्रूज हैं। सेरेसोल और विलकिन्सन[1] कल आये। और लोग आ रहे हैं। २१ तारीखको मुश्किलसे तैयार हो पाअूंगा। महादेवको साथ लाना असंभव दीखता है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

१०३

वर्धा,
१८-५-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

महादेव आपके पास थे, तब तक मैंने पत्र लिखनेमें ढिलाअी की। फिर अुनके आनेमें मजबूरन् दो दिन लग गये। अिसलिअे यहांके पत्रोंमें गड़बड़ी हो गअी।

मोहनलाल पंड्या[2] के बारेमें आपका लिखना यथार्थ है। पिछले संस्मरण ठीक वैसे ही हैं। परन्तु दुःख माननेसे क्या होता है? साथी आते हैं और जाते हैं। आपको लगता है कि साथी जाते ही हैं, आते नहीं। अैसा हो तो भी क्या? अीश्वर तो नहीं जाता न? वह है तो सब हैं। वह नहीं हो तो और सब किस कामके?— जीवरहित देह? अिसलिअे आपको साथीके वियोगका दुखड़ा नहीं रोना चाहिये। हमसे जो हो जाय सो कर दें।

मैं २१ तारीखसे पहले नहीं छूट सकता। २२ को सुबह बम्बअी

---

१. स्व० मिस अेलन विलकिन्सन। १९३२ में मजदूर-दलकी तरफसे ब्रिटिश पार्लियामेण्टकी सदस्या। यहांके मजदूरोंकी जांच करनेके लिअे अेक प्रतिनिधि-मण्डल आया था, अुसमें वे १९३५ में हिन्दुस्तान आअी थीं।

२. खेड़ा जिलेके अेक बड़े पुराने और होशियार कार्यकर्ता। पू० बापूजीके शब्दोंमें पुराने जोगी। पू० बापूने अुनके अवसानसे होनेवाले दुःखका पू० बापूजीको पत्र लिखा था। अुसीका अुल्लेख है।

पहुंचूंगा। २० तारीखको सोमवार है। २१ को मुझे यहां रहना ही चाहिये। साथमें बहुत करके अकेली बा होगी। मजबूर हो जाने पर ही मीराबहन रहेगी। वह आनेका हठ करेगी तो लाचारीसे ही अुसे लाअूंगा और शायद अेक आदमी दूसरा होगा। मेरे लिअे तो बकरीका दूध, नीमके पत्ते और वहांके फल काफी होंगे। बम्बअीसे कुछ न मंगवाना। यहां भी अैसा ही चल रहा है। नीबूके बजाय मैं अिमलीका रस और हरी भाजीके बजाय नीमके पत्ते पीस कर लेता हूं। आजकल यहींके बगीचेके आम लेता हूं। बम्बअीके तो चखे तक नहीं। वे बम्बअीमें; बोरसदमें हरगिज नहीं।

महादेवको यहां छोड़ना ही पड़ेगा। जरूरत हुअी तो मेरे यहां लौटने पर अुन्हें भेज दूंगा। शेष सब मिलने पर।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
सत्याग्रह छावनी,
बोरसद

१०४

वर्धा,
२०-५-'३५

भाअीश्री वल्लभभाअी,

आपके विचार मुझे छोड़ते ही नहीं। काका अभी यहीं हैं। अुनके हाथमें सब कुछ सौंपकर महादेवके साथ आ रहा हूं। मुझे यह विचार परेशान कर रहा था कि आपको यदि अभी ही काम है, तो बादमें अुन्हें भेजकर क्या करूंगा। अिसलिअे काकासे बात की और अुन्होंने भार अुठाना स्वीकार कर लिया।

और बातें तो जब मिलेंगे तब या ठेठ बोरसदमें करेंगे। बुधवारके दिन तो शायद आपको और मुझे बातें करनेका कोअी वक्त ही न रहने दे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
श्रीराम मेन्शन,
सेंडहर्स्ट रोड, बम्बअी

१०५

वर्धा,
४–६–'३५

भाअी वल्लभभाअी,

मुझे आपको लिखना तो था सूरतमें, परन्तु वहां वक्त कहांसे मिलता? रास्तेमें असंभव था और कल लिख ही न सका। बागसीका सफर कठिन रहा। भुसावलमें मुश्किलसे जगह मिली। रात बैठे बैठे बीती।

अपनी आंतोंका अिलाज तुरन्त कीजिये। अभी तो रोग मामूली ही है। तुरन्त अच्छा हो सकता है। समय न खोअिये।

कानूगा[1] ने आपकी प्रेरणासे आम भेजे हैं। गफ्फारखां[2] को मृदुला भेज रही होगी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
आबू

१०६

वर्धा,
९–६–'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला।

*   *   *

क्वेटा[3] के मामलेमें अब क्या किया जाय? सभीको निकाल रहे हैं, अिसलिअे जानेकी बात ही न रहने दी। जहां घायल या बिना घरबारवाले जा रहे हैं, वहां तो लोग मदद दे रहे हैं। अिससे ज्यादा

---

१. स्व० बलवन्तराय कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध डॉक्टर।

२. खानसाहब अब्दुल गफ्फारखां अुस समय साबरमती जेलमें थे।

३. १९३५ में हुआ क्वेटाका भूकम्प। भूकम्प-पीड़ित लोगोंको मदद देनेके लिअे किसी कांग्रेसवालेको वहां नहीं जाने दिया गया था, अिस कारणसे हिन्दुस्तानमें बड़ा शोरगुल मचा था।

हम क्या करें? जैसा राजेन्द्रबाबूको वैसा ही मुझे भी कल तार मिला है। अब तो हमारे लिअे मौन धारण करनेकी बात ही रह गअी है।

भारत-मंत्रीके कार्यालयमें जो तबदीली हुअी[1], अुसे मैं शुभ चिह्न नहीं मानता। सप्रू साहबका प्रमाणपत्र देखा होगा। किसके आगे दुखड़ा रोयें? अुन्होंने अिस बिल[2]की निन्दा की थी। अब वे ही अिसका स्वागत कर रहे हैं।

राजेन्द्रबाबू १२ तारीखको आ रहे हैं। चार घण्टे ठहरेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
श्रीराम मेन्शन,
सेंडहर्स्ट रोड, बम्बअी

१०७

वर्धा,
१५-६-'३५

भाअीश्री वल्लभभाअी,

भाअी बलवन्तरायके साथकी चर्चामें बात निकलने पर मैंने अुनसे कहा है कि देवचन्दभाअी[3] काठियावाड़ राजनीतिक परिषदकी कार्यसमितिकी बैठक नहीं बुलाते, अिसके पीछे आपका हाथ है; और मैंने भी अिस निर्णयको अुचित माना है। भाअी बलवन्तराय कहते हैं कि पोरबन्दरमें लगाअी गअी मर्यादाका अुल्लंघन कोअी नहीं करना चाहता। मैंने कहा कि अगर अैसा विश्वास आपको दिला सकें, तो शायद आप अपना विरोध वापस ले लेंगे। अिसके सिवा भी आपसे बात कर लेनेकी सलाह मैंने बलवन्तरायको दी है।

---

१. ज़ेटलैंडकी जगह सेम्युअल होरकी भारत-मंत्रीके रूपमें नियुक्ति हुअी अुसीका अुल्लेख है।

२. हिन्दुस्तानके शासन-विधानमें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करनेवाला बिल, जो अिंडिया बिलके नामसे मशहूर था और जिसमें प्रान्तीय स्वराज्य दिया गया था।

३. वढ़वाणके श्री देवचन्द पारेख।

सीकर[1] के मामलेमें ये और दूसरे लोग आये हैं। अिस बारेमें मेरी राय भाअी बलवन्तराय बतायेंगे। जल्दी ही अच्छे हो जाअिये।[2]

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

१०८

वर्धा,
१७–६–'३५

भाअीश्री वल्लभभाअी,

टोटका तो टोटका ही है। लग गया तो तीर, वर्ना तुक्का तो है ही। अब तो सिर्फ रसदार फलों पर कुछ दिन बितायें तो न दवा चाहिये, न दूसरा कुछ। दस्त न आये तो पिचकारी लेनी ही चाहिये। कमोड काममें न लेना तो आपकी ज्यादती ही कही जायगी। अिसमें बीमार और सेवा करनेवाले दोनोंकी सहूलियत है। कमोड तो शुरू कर ही दीजिये।

अेण्ड्रूज कल आ रहे हैं। अेक-दो दिन रहकर जायंगे।

आजकल यहां मनुष्योंकी काफी विविधता है। कुमारप्पाके भाअी भारतन् आये हैं।

वसुमती[3] बोचासण छोड़नेकी तैयारीमें थी। अुससे शिवाभाअी[4]ने ठहर जानेका आग्रह किया है। मैंने लिखा है कि सचमुच ही अुसकी जरूरत हो, तो खुशीसे वह अेक वर्षके लिअे वहां रहे। अिस बारेमें

१. जयपुर राज्यमें स्थित जमनालालजीकी जन्मभूमि। वहां होनेवाले जुल्मोंके विरुद्ध सत्याग्रह करना पड़ा था।

२. प्लेग-निवारण कार्यके सिलसिलेमें बापू बोरसद रहे तब वहीं अंतिम सप्ताहमें पीलिया हो गया था, जो अभी तक नहीं मिटा था।

३. अेक आश्रमवासी बहन।

४. श्री शिवाभाअी गोकुलभाअी पटेल। बोचासण वल्लभ विद्यालयके आचार्य।

आपको कुछ सुझाना हो तो मणिसे कह दें। आपके अक्षरोंकी अभी आशा नहीं रखूंगा। बीमारी झट मिटनी ही चाहिये।

अच्छे होने पर यहां आअिये। राजेन्द्रबाबू तो आयेंगे ही। जमनालाल भी जुलाअीमें पहुंच जायंगे। अुस समय ठंडक भी काफी होगी। अब वैसी सख्त गरमी तो नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

१०९

वर्धा,
२१-६-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

मैंने जरा भी धीरज नहीं छोड़ा। परन्तु वैद्योंकी बात मेरे गले नहीं अुतरती। वे नीमहकीम जैसे होते हैं। अुनकी दवा लग जाय तो तीर। अिसमें फंसकर अच्छे भी कैसे हों? हिन्दुस्तानमें प्रख्यात वैद्य तो गणनाथ सेन हैं। अुनका भी यही हाल समझिये। अिनके पास कुछ दवाअियां होती जरूर हैं, परन्तु अुनका असर खतम होने पर सब शून्यवत् हो जाता है। अिसमें आपको फंसानेमें कंपकंपी छूटती है। मैं देखता हूं कि मालवीयजी और मोतीलालजी भी अन्तमें डॉक्टरोंके घर गये। लेकिन आप अच्छे हो गये हों, तब तो मुझे कुछ कहना ही नहीं है। महादेवको जब मरजी हो बुला लें।...

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

११०

मगनवाड़ी,
वर्धा,
२७-६-'३५

भाओी वल्लभभाओी,

महादेव हों या न हों, असलिओ आप ही को लिखवाया है। मुझे बयान[१] मिल गया और मैंने पढ़ लिया। दूसरी डाकका अिंतजार कर रहा था। वह भी नहीं आओी। वा भी पत्र लेकर नहीं आओी। बादमें तार दिया।

मुझे बयान जरा भी पसन्द नहीं आया। अुसमें हकीकतोंके बजाय केवल दलीलोंका मिश्रण है। पहला पैरेग्राफ ही अटपटा लगा, असलिओ मैंने तार दिया। अभी यानी ४ बजे डाक मिली और यह लिखवा रहा हूं। मैं देख रहा हूं कि हमारी कमेटी बनानेकी बात आपको पसन्द आओी है। असिसे मैं खुश हुआ, क्योंकि मैं मानता हूं कि यह कमेटी हमें बहुत मदद दे सकती है। कारण डॉक्टरोंकी राय तो स्वतंत्र मानी ही जायगी। बात आपके गले अुतर गओी है, असलिओ अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं रह जाती। जो बयान तैयार हो, अुसे मेरे देख लेनेके बाद ही भेजा जाय तो अच्छा।

महादेवके पास सारी तफसीलें आ गओी हों, तो भले ही बयान यहां तैयार करें अथवा अेक दिन और महादेवको रोकनेकी जरूरत मालूम हो तो रोक लीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बओी

---

१. बोरसद प्लेग-निवारण कार्य सम्बन्धी।

१११

मगनवाड़ी,
वर्धा,
३–७–'३५

भाओी वल्लभभाओी,

आपका पत्र मिला। महादेवने आपको व्यर्थ ही घबरा दिया है और खुद भी घबरा रहे हैं। मैंने तो केवल हरिलाल (गांधी) को चेतावनी दी थी कि वह मेरे साथ दांवपेंच न खेले और खेलेगा तो शायद मुझे खो बैठेगा। अुसने दांवपेंच खेला दीखता है, अिसलिअे अपने आप ही चेत गया है। दो दिनसे भाग गया है, अैसा नारणदासका पत्र आया है। अिसलिअे वापस न आया हो तो अुसे भागे हुअे आज पांच दिन हो गये। अुसके भागनेका जरा भी आघात नहीं पहुंच सकता। अिस तरह भागदौड़ तो वह करता ही रहता था। जीवन-परिवर्तनका कुछ आभास हुआ, अिसलिअे मैंने अुसके बारेमें आशा अवश्य बांधी थी। परन्तु ढोंग कब तक चल सकता है? आप बिलकुल निश्चिन्त रहिये। मैं हरगिज जल्दबाजीका कदम नहीं अुठाअूंगा। अब तो अुठानेकी कोअी बात भी नहीं रही। दूसरी तरह स्वास्थ्य अच्छा ही है और काफी सावधानी रखकर चल रहा हूं। अन्तमें तो "हरि करे सो होय"। जब तक अुसे मुझसे सेवाकार्य लेना है, तब तक कोअी हानि नहीं होगी। और जब समय आ जायगा, तब कोअी भी अुपाय काम नहीं देगा। हिन्दुस्तानका तो श्रेय ही है। मुझे कहीं भी निराशाका चिह्न नजर नहीं आता। अीश्वर सब अच्छा ही करेगा।

अच्छे हो जायं तब मुकाम शायद यहीं रखना ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

११२

वर्धा,
२३-७-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

लाहोरमें क्या हो रहा है? कुछ समझ पड़ता है? किसका दोष है? बीमा कंपनियोंकी तो बाढ़ आ गअी है।[1] मुझे तो जरा भी पसन्द नहीं। परन्तु क्या करें? कांग्रेसके नाम पर बट्टा लगे, यह भयानक बात है। परन्तु अिस चीजको देखते रहनेके सिवा और क्या किया जाय?

* * *

. . . स्वच्छ आदमी है। मान-अपमानका तो विचार तक हम अैसे कामोंमें कैसे कर सकते हैं?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

११३

वर्धा,
११-८-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिल गया। सरकारकी अनुमति लेकर शुरूसे आज तकका सारा पत्रव्यवहार छाप दिया जाय। कमेटीकी नियुक्ति करनेवाला पत्र भी छापा जाय। यह सब छापकर हमें तो सबूत देनेमें लग जाना चाहिये। लल्लूभाअी[2] का शरीर काम देने लायक हो गया हो तो अच्छा ही है। वे गहरे जा सकते हैं या नहीं, अिसके बारेमें मुझे पूरी शंका है। कुंजरू आयें तो मुझे अच्छा

---

१. जब १९३२ की लड़ाअी जारी थी, तब देशमें धोखेबाजी करनेवाली बहुतसी फर्जी बीमा कंपनियां बनी थीं। अुनके विरुद्ध गुजरातमें कांग्रेसके कार्यकर्ताओंकी तरफसे आन्दोलन अुठाया गया था।

२. स्व० सर लल्लूभाअी शामलदास। अेक समयके बम्बअीके अर्थमंत्री श्री वैकुंठभाअी मेहताके पिता।

लगेगा। गिल्डर और बहादुरजी हों, तो काफी होगा। तीसरे जरा कमजोर हों तो भी हर्ज नहीं।

बलवन्तरायकी बात समझ गया। हम तो जो अुचित है सो करते रहें। 'सर्वेण्ट' के लेख पर नजर डाली थी। पूरा पढ़नेका समय भी नहीं था। राजेन्द्रबाबू वह लेख ले गये हैं।

. . . का पता मालूम हो सके तो साथका पत्र अुन्हें भेज दीजिये।

महादेवके लिअे तो साथमें सब कुछ भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

विट्ठलभाअीवाले रुपयोंके बारेमें कोअी विचार सूझे हों तो बताअिये।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

११४

वर्धा,
१५-८-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। दूसरा कोअी न कोअी मिल ही जायगा। हमें बहुत जल्दी नहीं है। महादेवकी जब तक जरूरत हो तब तक रख सकते हैं। यहां तो जैसे-तैसे काम चला लेंगे। राजकुमारी और खुरशेद यथाशक्ति सहायता कर रही हैं। अधिकांश अंग्रेजी पत्र राजकुमारी निपटा देती हैं। वे २१ तारीखको यहांसे जायंगी। खुरशेदबहन तो अभी यहां हैं ही।

राजेन्द्रबाबू आज गये। साथमें मथुराबाबू और गोरखबाबू[1] भी थे। खगोलशास्त्री आज शामको अुधर आ रहे हैं।

सातके बजाय चौदह पुड़ियां लेकर भी (पीलियेके रोगसे) सर्वथा मुक्त हो जायं तो अच्छा ही है। जो करना हो अुसे पूरा ही करना ठीक है।

अेण्ड्रूजको दूसरे दर्जेमें भेजा यह ठीक किया। यहां अुन्हें भूखा

---

१. बिहारके अेक कार्यकर्ता।

रखा तभी तो वहां आप खिला सके। अगर यहां खिलाया होता तो आज अुन्होंने खटिया पकड़ ली होती, जैसे अलाहाबादमें पकड़ ली थी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

११५

वर्धा,
१६-८-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। . . . के बारेमें . . . को लिख रहा हूं। अैसी घटनायें मनुष्यको नास्तिक बना देती हैं। अिसका अिलाज तो यही है कि जो जाग्रत हैं, वे अधिक जाग्रत बनें।

जयकर[1] ने अभी पूनामें भाषण दिया था। अुसमें तिलक स्वराज फंडकी कड़ी आलोचना की गअी है। अुसकी रिपोर्ट हरिभाअू[2] ने भेजी है। मैंने जयकरसे पुछवाया है कि क्या यह रिपोर्ट सही है? जवाब आने पर लिखूंगा।

अुरा श्रमजीवीका पत्र और अुसका जवाब साथमें है।

बापूके आशीर्वाद

. . . के नामका पत्र साथमें है। अुनका पता तलाश करके यह अुन्हें भेज दें।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

११६

वर्धा,
१८-८-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

साथमें . . . का पत्र है। अिस बेचारेको तो कमेटीका कोअी पता ही नहीं। आपने कोअी कदम अुठाया क्या?

---

१. श्री मुकुन्दराव जयकर। नरम दलके अेक मुख्य नेता।

२ श्री हरिभाअू फाटक। पूनाके कांग्रेसी कार्यकर्ता।

किशोरलालने कल कहा कि आपको सख्त बवासीर हो गअी है और अब खून भी जाने लगा है। ऑपरेशन कराना पड़ेगा। यह तो शरीरके भीतर अिकट्ठी हुअी गन्दगीका नतीजा है। मुझे पूरी बातें लिखिये। आपकी अिस हालतमें ऑपरेशन भी अच्छा तो नहीं कहा जा सकता। अिसलिअे अुसके बिना काम चल सके तो चला लेना ठीक होगा। गौरीशंकरकी या डॉ० (दिनशा) मेहताकी मदद लें तो ठीक होगा। शायद गौरीशंकर अच्छी मदद कर सकें। कितने ही लोग केवल पेट अच्छा करके ऑपरेशनसे बच जाते हैं। अहमदाबादके नीमहकीमकी गोदमें सिर रखा, तो भले ही अिस प्राकृतिक नीमहकीमकी गोदमें सिर चला जाय। आप बीमार रहें, यह हमें पुसा नहीं सकता। अमृतलाल कैसे हैं?

बापूके आशीर्वाद

साथमें परीक्षितलालका पत्र है। यह आपके पढ़ने लायक है। दोनों मामलों पर।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

११७

वर्धा,
२०-८-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। अच्छी कमेटी[1] बन गअी। काम तुरत निपट जाय, अिसीमें लाभ है।

* * *

मोरारजी और चंदूभाअी यहां २५ तारीखको सवेरे पहुंच रहे हैं।

---

१. प्लेग-निवारण संबंधी कमेटी। पू० बापूने बोरसदमें प्लेग-निवारणके सिलसिलेमें जो काम किया था, अुसके लिअे सरकारकी तरफसे यह आक्षेप किये गये थे कि वह काम अशास्त्रीय पद्धतिका था। अिन आक्षेपोंके अुत्तरमें यह कमेटी बनाअी गअी थी।

आपकी बवासीरका क्या हाल है?

कुमारप्पामें अभी बुखारकी कुछ न कुछ निशानी बाकी है। आज सिविल सर्जनको दिखलानेवाला हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

११८

वर्धा,
२३-८-'३५

भाओी वल्लभभाओी,

शर्तें[१] तो कल ही तैयार कर ली थीं और भाओी वैकुण्ठ साथ ले जा रहे हैं। अुनके साथ बात भी कर ली है।

साथमें 'सांज' की कतरन लौटा रहा हूं। अैसी हलचलें तो अभी और भी चलने ही वाली हैं। कमेटी काम करने लग जाय तो छुटकारा मिले।

कुमारप्पाके हलके ज्वरसे सिविल सर्जन जरा चौंके हैं। वे बम्बअीमें जांच करानेको कहते हैं। वे दो-तीन दिनमें वहां आयेंगे। फिर शिमला भेजनेका विचार कर रहा हूं। राजकुमारीका निमंत्रण है। कुमारप्पाकी जांच डॉ० जीवराजसे करायें। आप वहां हैं अिसलिअे मैं किसी औरको नहीं लिख रहा हूं। मैंने तो अुन्हें आपके पास रहनेको कहा था। परंतु शूरजी[२] यहां हैं, वे अिन्हें घसीट रहे हैं। सहानी (वर्धाके सिविल सर्जन) अुनके गले और फेफड़ोंकी जांच करानेके लिअे कह रहे हैं।

वेलचंद[३] के सोचे हुअे दानके बारेमें आप किसी निर्णय पर पहुंच सके हों तो बताअिये। अुनका नरहरिके नामका पत्र साथमें है। मेरा

---

१. प्लेग-निवारण कमेटी संबंधी।

२. स्व० सेठ शूरजी वल्लभदास। बंबअीके कच्छी व्यापारी।

३. बड़ोदाके स्व० वेलचंद बैंकर। अुन्होंने मोहनलाल पंड्याके स्मारकके लिअे अेक लाख रुपयेका दान देनेकी बात की थी। अुनकी दी हुअी रकम खादीके काममें लगाअी गअी थी।

तो अब भी खयाल है कि अुनके दानसे कुछ कुअें अुनकी अिच्छानुसार बनवाकर बाकी रकम ग्रामोद्धारमें ही खर्च की जाय। गुजरातकी हद बांधनी ही हो तो भले बांधी जाय। फिर भी आप अपने स्वतंत्र विचार बतायें।

विट्ठलभाअीवाले पैसेका भी विचार कर लिया हो तो बताअिये। मोतीलाल[1] के नाम लिखा पत्र अच्छा है।

मोरारजी और चंदूभाअी २५ तारीखको आ रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बंबअी

११९

वर्धा,
२४-८-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

अेण्ड्रूज़ बीमार पड़ गये, अिसलिअे रुक गये हैं। . . .

* * *

जयकरका जो अुत्तर आया, वह साथमें है। अभी तो संभालकर रख लीजिये। मैंने पूछा है किससे बात हुअी थी? प्रबंधमें क्या दोष देखा? जवाब मिलने पर भेजूंगा। अुनकी मरजी हो वैसा करें।

देवदास[2] का तार साथमें है। अुसने काफी तेजीसे काम पूरा कर डाला है। मैंने तार किया है कि पूर्ण आराम ले और अुपवास करे तो कोअी खतरा नहीं है। राजाजी तो जायंगे ही। बा और मनु भी वहां हैं। अन्सारी जैसे डॉक्टर हैं। फिर क्या चाहिये? मैं बिलकुल निश्चिन्त हूं।

कुमारप्पा आज आ रहे हैं। अुनके लिअे जो करना जरूरी

---

१. श्री मोतीलाल सेतलवाड़। बम्बअीके प्रसिद्ध वकील। अिस समय भारत सरकारके अेटर्नी जनरल।

२. श्री देवदास गांधी अुस समय मोतीझिरेमें पड़े हुअे थे, अुसीका जिक्र है।

हो वह कीजिये। कल मैंने लिखा है। डॉक्टरी जांच हो जाने पर वापस भेज दें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बओ

१२०

वर्धा,
२७-८-'३५

भाओी वल्लभभाओी,

बाबा[1] के गलेकी गिल्टियोंका हाल कल मणिके पत्रसे मालूम हुआ। अितनेसे छोकरेको अितनी बड़ी गिल्टियां? अिसका क्या कारण हो सकता है? डॉक्टर कुछ कह सकते हैं?

* * *

दरबार[2] और भास्कर बीमार हैं। अैसी स्थितिमें क्या मार्ग निकाला? क्या महादेवकी जरूरत है?

मोरारजी और चंदूलाल दो-तीन दिन ठहरेंगे। अमेरिकाके स्वामी योगानन्द यहां हैं।

देवदासका पत्र ही आपको भेज रहा हूं। राजाजी आज यहांसे गुजरे। जमनालालका तार आया है। अुससे मालूम होता है कि अभी तो जान खतरेमें नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

मोरारजी अेक-दो दिनमें वहां आयेंगे। अुन्हें रोक लीजिये। देवदासका पत्र रामदासको भेज दें।

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बओी

---

१. श्री डाह्याभाओीका पुत्र।

२. स्व० गोपालदास अम्बाओीदास देसाओी। असहयोग-आन्दोलनके दिनोंमें अुन्होंने ढसा और राओीसांकलीकी जागीरें खोओी थीं, जो पूर्ण स्वराज्य मिलने पर सरकारने अुन्हें लौटा दीं।

१२१

वर्धा,
५-९-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

महादेव कल जवाहरलालसे मिलने प्रयागकी तरफ गये। आज जवाहरलालका तार आया है। अुस परसे मालूम होता है कि महादेव अुनसे मिल नहीं पायेंगे। क्योंकि वे आज शामको चल देंगे।[१]

बम्बअी सरकारका जवाब (प्लेग-निवारण कार्य संबंधी) जितना जहरीला बनाया जा सकता था, अुतना बनाया गया है। अुसका अर्थ स्पष्ट है। जो किया गया होगा, अुसको दबानेका प्रयत्न होगा। मेरे खयालसे अब हमें पत्रव्यवहार प्रकाशित नहीं करना चाहिये। कमेटीकी रिपोर्ट मिल जाय तब अुसके साथ प्रस्तावनाके तौर पर अुसकी अुत्पत्ति बताने जितना प्रकाशित कर दें। अिसमें आपको कोअी दोष दीखता है? कमेटीका काम तुरंत पूरा हो जाय, यह वांछनीय है।

बाबा ठीक हो गया होगा। अभी तो मेरे पास अेक न अेक बैठक होती ही रहती है।

*   *   *

महादेव परसों वापस आयेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

१२२

वर्धा,
९-९-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

साथका पत्र देख लें। मैंने जवाब नहीं दिया। शायद आप अिन्हें पहचान लें। कुछ करने जैसा हो तो कीजिये। आपका बोझ कुछ न कुछ तो हलका हुआ होगा।

---

१. स्विट्जर्लैण्डमें श्रीमती कमला नेहरू बीमार थीं, अुनके पास जानेके लिअे।

सरकारकी तरफसे पूना-करार[1] के आड़े-टेढ़े ढंगसे भंग होनेके समाचार मेरे कानों पर आ रहे हैं। जो हो जाय सो सही।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बओी

१२३

वर्धा,
१३–९–'३५

भाओी वल्लभभाओी,

आपका पत्र[2] मिला। राजाजी मेरे पास बैठे हैं। आपका हुक्म सुना दिया। वे कहते हैं कि अधिकसे अधिक १७ तारीखको तो जाना ही चाहिये। पापा (राजाजीकी लड़की) मद्रास आयेगी और अुसका लड़का, जो बीमार था, अुनकी बाट देख रहा है। वे मानते हैं कि आप

१. गोलमेज परिषद्के समय साम्प्रदायिक समझौता नहीं हो सका था। अिसलिअे ब्रिटिश प्रधानमंत्रीने नये शासन-विधानमें अल्पसंख्यकोंका स्थान निश्चित करनेवाला निर्णय दे दिया था। अुसमें हरिजनोंके लिअे पृथक् निर्वाचनकी पद्धति रख दी थी। अिसके विरुद्ध पू० बापूजीने यरवडा जेलमें अुपवास किये थे। अिसके परिणामस्वरूप हरिजनोंका अलग चुनावका तरीका रद्द कर दिया गया और हरिजन नेताओंके साथ जो समझौता हुआ, वह पूना-पैक्ट या यरवडा-पैक्टके नामसे प्रसिद्ध है।

२. वह पत्र नीचे दिया जाता है :

८९, वार्डन रोड,
बम्बओी,
१२–९–'३५

पूज्य बापू,

अुस सिंदी[1] गांवके लोगोंके पीछे पड़नेमें अेक प्रकारकी सूक्ष्म हिंसा है। वे लोग हमारी सेवाको तकलीफ समझ रहे हैं। अिसमें भले

१. वर्धाके पास अेक छोटा-सा गांव। मीराबहन, महादेवभाओी वगैराने वहां सफाओीका काम शुरू किया था, जो गांववालोंको पसन्द नहीं आता था।

अुनसे कांटोंके ताज[1] की ही बात करना चाहते हैं। अगर यही बात हो तो वह व्यर्थ है। वे कहते हैं अुन्होंने भूलाभाअीको कोअी वचन

ही अुनका अज्ञान हो। लेकिन आप वहां जायेंगे, तो अन्तमें अुन लोगोंको गांव छोड़कर भाग जाना पड़ेगा। मेरे ख्यालसे अुस गांवके लोगों पर अत्याचार हो रहा है। आप वहा जायेंगे तो दुनियामें अुन लोगोंकी चर्चा होगी और वे अधिक परेशान होंगे। बांस वगैरा चोरी चले गये, अिसका अर्थ अितना ही है कि वे चाहते हैं कि भगवान अुन्हें हमसे बचाये, जब कि आप तो अिसका भी अुलटा अर्थ करके अुस गांवमें जानेका विचार कर रहे हैं। हमें अुस गांवको बर्दाश्त हो अुतनी ही सेवा करनी चाहिये। हिन्दुस्तानमें अनेक गांव हैं, जिनमें सब अैसे नहीं हैं। बहुतसे अैसे हैं जो हमारी सेवाका स्वागत करेंगे और अुसका लाभ दूसरे कअी गांवोंको मिलेगा, जब कि अिस गांवके पीछे पड़नेमें अुलटा परिणाम आ रहा है। जरा अुन लोगोंको आराम लेने दीजिये। गांव-वालोंके गले न अुतरे तब तक अुन्हें शान्त रहने देना अच्छा है। बरसात खतम हो जाय तो फिर और अनेक स्थान हैं। हम अपना प्रयोग किसी और गांव पर आजमाकर अुसे आदर्श बनानेका प्रयत्न करें, तो अुसका फल जरूर मिलेगा। परंतु अिसके लिअे हमें अनुकूल क्षेत्र चुनना पड़ेगा। मेरे खयालसे वह वर्धासे — सी० पी० से दूर होगा।

मोसंबीका भाव अेक नहीं होता। अेक रुपयेसे अढ़ाअी रुपये तक होता है। बीमारीके समय आवश्यक मोसम्बीके भावोंमें पड़नेसे क्या लाभ? जितना जरूरी है अुतना काम तो करना ही पड़ेगा। भावकी कंजूसी करनेसे बीमार आदमीको पता लगने पर वह रस शायद अुसे हजम ही न हो।

वह बलसाडवाला तो हरकिशनदास अस्पतालमें है। कुंवरजी अुसे अेक सप्ताह पहले वहां रख आये थे। अुसे वहां सब प्रकारकी अनुकूलता और सुविधा है। किसी तरहकी तकलीफ नहीं। मैं और महादेव देख आये। अखबारमें अिसके बारेमें आलोचना हुअी थी। यह व्यर्थकी धांधली की गअी मालूम होती है। अुस आदमीकी जितनी चिन्ता करनी चाहिये की जा रही है।

---

१. कांग्रेसका अध्यक्ष-पद स्वीकार करनेके बारेमें।

नहीं दिया। वे यह ताज पहननेकी स्थितिमें बिल्कुल नहीं हैं। अुन्हें शारीरिक और मानसिक थकावट बहुत है। अुनकी संमतिसे मैंने जवाहरलालसे पुछवाया है। अितने पर भी आप सोमवार तक आ सकें तो ठीक हो। मंगलवारको अुन्हें जाने ही देना होगा। यहांका जलवायु अभी खराब है।

मीराका हाल ठीक है, मगर दो बजेसे बुखार चढ़ा है। फलोंकी कीमत अिसलिअे जाननी है कि अुसी भावमें यहां मिल जायं, तो यहींसे लेकर काम चला लें।

सिंदीके बारेमें गलतफहमी हो रही है। लोगों पर कुछ भी जबरदस्ती नहीं करनी है। चुपचाप काम ही करना है। अधिक बातें मिलने पर। तुरंत मिलना नहीं हो सका, तो विस्तारपूर्वक लिखूंगा। जल्दबाजी जरा भी नहीं करूंगा।

बलसाड़वाले[1] की बात समझ गया।

कमेटी (प्लेग-निवारण जांच समिति) की रिपोर्टमें जितनी कम दलीलें होंगी अुतनी ही शोभा होगी। विशेषण तो हरगिज न होने चाहिये। महत्त्वकी बातों पर अुसका निर्णय और भविष्यके लिअे सूचना, अुसे बिलकुल निर्दोष पैम्फलेट बना देंगे। अुसे भी बंद करना हो तो भले ही कर दें। यह मेरी राय है।

भाअू जमनालालजीकी चालमें रहता मालूम होता है। अुसे पैसे मिलते रहें तो काफी है।

. . . का किस्सा बड़ा विचित्र है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

कमेटीका काम बहुत धीमा चल रहा है। अिस रविवारको पूरा हो जायगा, अैसी आशा रखता हूं। राजाजीको वहां हफ्तेभर रखिये। मेरा आना हो सका तो तुरंत आ जाअूंगा। अभी तो यह काम पूरा होने तक यहांसे हटा नहीं जा सकता।

वल्लभभाअीके प्रणाम

१. स्व० दौलतराय खंडुभाअी देसाअी।

१२४

वर्धा,
१५-९-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

मणिलाल (कोठारी) का तार मुझे भी परेशान कर रहा था। मैंने तो अन्तमें साथकी नकलके अनुसार पत्र लिखा है। अच्छा किया आपने महादेवको रोक लिया। मेरी गाड़ी तो दिन-दिन अधिक देहाती बनती जा रही है। अुसके मोटे मोटे पहिये और दो-चार अिंच धूलकी थर! जब अुसमें रास्ता तय करना है तब अुतावली कैसी? मगर अब तो आप मंगलवारको यहीं पहुंच जायंगे, अैसी आशा रखता हूं। अुस दिनके लिअे राजाजी यहीं रहेंगे। अुसी दिन शामको अुन्हें मुक्ति दे दीजिये।

सिन्दीके बारेमें आप यों ही घबरा गये हैं। अिस बारेमें आपको पूरा संतोष दूंगा।

. . . का मामला निपट जाय तो अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वाअ़ेन रोड,
बम्बअी

१२५

वर्धा,
३१-१०-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

साथमें परीक्षितलालका पत्र है। मालूम होता है कि अिसे आपने देखा है। मेरी संमतिमें कुछ न कुछ भूल हुअी जान पड़ती है। अुसे सुधारनेसे पहले जरा ज्यादा समझ लेनेकी आवश्यकता देखता हूं। मेरे खयालसे जहां हरिजनों पर मार पड़े वहांसे अुन्हें दूसरा कोअी अिन्साफ न मिले, तो अुन्हें वह गांव छोड़ देना चाहिये और हमें अुन्हें अिसके लिअे प्रोत्साहित करना चाहिये। अिस नीतिको मैं तो बहुत वर्षोंसे अपनाता

और अुस पर अमल करता रहा हूं। व्यक्तियोंके लिअे भी और समूहोंके लिअे भी। सन् १९०६ में अिसका प्रचार शुरू किया, सन् १९०८ में अिन विचारोंको लेखबद्ध किया और आज तक अैसी ही सलाह देता आया हूं। तलाजा और मीरतके पासके गांवोंमें जब हरिजनों पर जुल्म हुअे, तब भी मैंने यही सलाह दी थी। तलाजामें पट्टणीसाहब[1] ने न्याय दिलवाया। मीरतके पासके गांवोंमें लम्बा मुकदमा चला। हरिजन हार गये। वकीलों और दूसरे सलाहकारोंने कमजोरी दिखाअी और बात अधूरी रह गअी। काविठा[2] के बारेमें कोअी खास कारण हरिजनोंके हिजरत न करनेका हो सकता है। परंतु ये हरिजन सबके सब या अुनमें से कुछ काविठाके सवर्ण लोगोंको चेतावनी देकर निकल आयें तो अिसमें बुराअी क्या है? अिस विचारसरणीके बारेमें हमारे बीच मतभेद हो तो मुझे समझायें। काविठामें कोअी खास परिस्थिति हो तो मैं नहीं जानता। आप वहां हो आये हैं, अिसलिअे अिस पर अच्छी रोशनी डाल सकते हैं। हम काविठा प्रकरणको पूरा हुआ न मानें। जैसा गुजरातमें होता है वैसा अन्य प्रान्तोंमें होता देखनेमें नहीं आता। तामिलनाडमें नायरों व हरिजनोंके बीच अवश्य अैसा है। और तो कहीं भी मैंने नहीं सुना। हमें कुछ न कुछ रास्ता निकालना होगा।

वालचंद[3] का आम्बेडकर[4] को लेकर यहां आनेका विचार है।

जनवरीमें मैं वहां आअुं, तब तैयार किये जानेवाले कार्यक्रमके बारेमें आपने पुछवाया है। अुसमें भीलवासकी यात्रा और हरिजनोंके लिअे आम चंदा करनेकी यात्राका समावेश होता है।

---

१. स्व० सर प्रभाशंकर पट्टणी। भावनगरके दीवान।

२. काविठा अहमदाबाद जिलेके धोलका तालुकेका अेक गांव है। वहां गिरासिया जातिकी बड़ी आबादी है। अुन्होंने और दूसरे सवर्ण लोगोंने वहांके हरिजनोंको मारा, अुनका बहिष्कार किया और अुन पर बड़ा जुल्म किया। अिसलिअे यह प्रश्न अुठा कि हरिजन गांव छोड़ दें या नहीं। बादमें अच्छी तरह समझौता हो गया था।

३. सेठ वालचंद हीराचंद। पू० बापूके अेक मित्र।

४. श्री भीमराव आम्बेडकर। प्रसिद्ध हरिजन नेता।

आपका ऑपरेशन कराना अुचित हो, तो तुरंत करा लेना ठीक होगा। डॉक्टर न चाहें तो दूसरी बात है।

देवधर भाजेकरके अस्पतालमें मृत्युशय्या पर पड़े हैं। अुन्हें लिखिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
डॉ० कानूगाके बंगले पर,
अेलिसब्रिज,
अहमदाबाद[1]

१२६

वर्धा,
१४-११-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

अब तो आप गपशप करने लायक हो गये होंगे।[2] आम्बेडकरके नामका आपका पत्र सारा ही पढ़ गया। सचोट है मगर अिस समय अुन पर अिसका कुछ भी असर नहीं हो सकता। मेरी निन्दा किये बिना अुनसे रहा ही नहीं जा सकता। अिसलिअे आपको कैसे छोड़ सकते हैं? लंदनकी तरह यहां भी अुनके पीछे अनेक शक्तियां काम कर रही हैं। दुःख अितना ही है कि अुनकी धमकियोंसे डरकर अिस चीजको बहुत बड़ा स्वरूप दे दिया गया है। अिसकी भी चिन्ता नहीं, परंतु अुसका सदुपयोग होनेके बजाय दुरुपयोग हो रहा है। अस्पृश्यता मिटानेका महाप्रयत्न करनेके बजाय लोग अुनकी खुशामद कर रहे हैं। खैर, हमें अिसी वातावरणमें काम करना है। जहां देखो वहीं भय और दुर्बलताका प्रदर्शन है।

---

१. यह पत्र श्री जीवणजीने अेक आदमीके द्वारा दूसरी डाकके साथ बड़ौदा पहुंचाया। वहांसे पू० बापू आधी रातको फ्रंटियर मेलसे आगरा गये।

२. ९ तारीखको पू० बापूका बवासीरका ऑपरेशन बम्बअीके पोलीक्लिनिकमें किया गया था।

पाटड़ी[1] के मामलेमें आप क्यों कोअी कदम नहीं अुठा सकते? आपके मंत्री आपसे पूछे बिना जहां तहां सभापति बन सकते हैं?

जनवरी मासमें गुजरातके मेरे कार्यक्रमके विषयमें अब तो समझमें आया होगा। जैसे १२ तारीख अहमदाबाद पहुंचनेकी निश्चित हो चुकी है, वैसे २८ तारीख यहां पहुंचनेकी भी निश्चित हो चुकी है। क्योंकि अुसी दिन राधाकृष्ण (बजाज) और अनसूया[2] की यहां शादी है। अिसलिअे कमसे कम अुस वक्त तक मुझे यहां पहुंच ही जाना चाहिये। अिस कारण गुजरातको अधिकसे अधिक १५ दिन मिल सकते हैं। अितनेमें जो हो सकता हो कीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

१२७

वर्धा,
११-१२-'३५

भाअी वल्लभभाअी,

आपको बहुत दिनों बाद आज लिख रहा हूं। शायद डॉक्टरोंकी आज्ञाओंका भंग होता हो।[3] जमनालालजी घबरा गये हैं। आप न

---

१. पाटड़ीमें ८ नवम्बर १९३५ को श्री मोरारजी देसाअीकी अध्यक्षतामें पाटड़ी अिलाकेके १७ गांवोंके लोगोंकी परिषद् ब्रिटिश अिलाकेके अिन गांवोंके फौजदारी-दीवानी अधिकार पाटड़ीके देसाअीको सौंप देनेकी हलचलके विरुद्ध हुअी थी।

२. श्री श्रीकृष्णदास जाजूकी पुत्री।

३. अिसके जवाबमें पू० बापूने महादेवभाअीको अिस प्रकार लिखा था :

८९, वार्डन रोड,
बम्बअी,
१२-१२-'३५

भाअी महादेव,

बापूके हाथका पत्र देखकर आनन्द तो हुआ, परन्तु साथ ही फिक्र भी हुअी। अभी हाथसे लिखने या लिखवानेका भी लोभ अुन्हें

घबरायें। आनेका समय हो जाय तभी आअिये। मैं आनन्दमें हूं। मेरी, आपकी, सबकी डोर 'मीराके बालम' के हाथमें है। वह जैसे खींचेगा वैसे हम खिचेंगे। वह कब किसीकी चलने देता है? प्यारेलाल सकुशल हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

१२८

वर्धा,
४-१-'३६

भाअी वल्लभभाअी,

वहां न आ सकनेका बड़ा दुःख है। परन्तु डॉक्टरोंकी कठिन शर्तें स्वीकार नहीं कर सका। वे मानते हैं वैसी ही खराब तंदुरुस्ती

छोड़ देना चाहिये। लिखना शुरू कर देंगे, तो किसे लिखेंगे और किसे न लिखेंगे? विश्वको कुटुंब बनाकर बैठे है, अिसलिअे काजीको सारे शहरकी फिक्र और महात्माको सारी दुनियाकी फिक्र। वहां अभी सबको भूलकर अेक प्रभुजीको ही भजते रहनेमें सार है।

जीवराज और मैं दोनों शनिवारको चलकर रविवार सुबह पहुंचेंगे। मेरा सेवा-शुश्रूषाका काम अब यहां पूरा हो गया है। अब तो पेटको दुरुस्त करनेके लिअे मुझे स्वयं जो कुछ करना हो करूंगा।

* * *

अितना ही।

वल्लभभाअीके प्रणाम

महादेवभाअी,
वर्धा

हो, तो न जानेमें ही लाभ है। अब तो थोड़े दिनोंमें हरिजन चंदा[1] पूरा करके यहां आिअये। राजेन्द्रबाबूको भी लािअये। शायद अहमदाबादमें ही आप चंदा पूरा कर लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
गुजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद

१२९

सेगांव,
१–५–'३६

भाअी वल्लभभाअी,

महादेव आज रवाना नहीं हो सकेंगे। अेक सबल कारण तो तारमें दे दिया है। दूसरा 'हरिजन' का है। अिसे पूरा कर लें तो आप अुन्हें ज्यादा भी रोक सकते हैं। महादेवको सब कुछ समझा दिया है। अिसलिअे यहां अधिक नहीं लिख रहा हूं।

आप अपनी तन्दुरुस्ती ठीक नहीं कर लेंगे तो झगड़ा होगा।

सचमुच अिस गांव (सेगांव) का जलवायु अच्छा है। रातको अच्छी ठंडक थी। खाने-पीनेकी सुविधाका ध्यान रखा जा रहा है। परन्तु यह तो फुरसतके वक्त। डॉक्टर (आंबेडकर) और वालचंद सेगांवमें मिले थे। फिर आयेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

---

१. पू० बापूजी चंदा करने गुजरातमें आनेवाले थे। परन्तु वे बीमार हो गये अिसलिअे न आ सके। और हरिजन सेवक संघके लिअे चन्दा कर देनेका भार पू० बापू पर डाल दिया। अुसका अेक वर्षका बजट रु० ३०,००० का था। पू० बापूने सिर्फ अहमदाबादसे दो ही दिनमें लगभग रु० ५०,००० अिकट्ठे कर दिये थे।

१३०

सेगाव,
१३–६–'३६

भाअी वल्लभभाअी,

मद्रासमें थोड़ा समय मिला है। अिस बीच मंगलदास[1] को पत्र लिख डाला है। समय होगा तो असकी नकल महादेव अिस पत्रके साथ रख देंगे। सफरमें आपको तकलीफ नहीं हुअी होगी। काम निपटा कर जल्दी आअिये। घूमने जानेका नियम अवश्य रखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

१३१

सेगांव,
२८–७–'३६

भाअी वल्लभभाअी,

आप काफी दुःख सहन कर रहे हैं। अब तो ऑपरेशन (नाकका) करा लिया होगा।

...का ढोंग जबरदस्त कहा जायगा। परन्तु यह गंदगी स्टेट्स पीपलमें ही हो सो बात नहीं। अैसा समझ लीजिये कि यह व्यापक वस्तु है। हमारे समाजमें ... जैसे बहुतसे मौजूद हैं। ... का भंडा फूट गया। अब यह देखना है कि वे क्या करते हैं।

बापूके आशीर्वाद

आप काफी आराम लें, भले ही यहां न आ सकें। मेरी तबीयत अच्छी ही है।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बअी

---

१. श्री मंगलदास पकवासा। बम्बअीके अेक सॉलिसिटर। बम्बअी कौंसिलके अध्यक्ष थे। मध्यप्रदेशके भूतपूर्व गवर्नर।

१३२

सेगांव-वर्धा,
१–८–'३६

भाओी वल्लभभाओी

ऑपरेशन[1] ठीक हो गया। सफल हो जाय तो छूटे।

राजारामका मैंने जो जवाब दिया, अुसकी नकल तो आपको मिल गओी होगी। आपने अगर अभी तक जवाब न दिया हो, तो मेरी सूचना यह है :

'आपके पत्रमें अुत्तर देने जैसी कोओी नओी महत्त्वकी बात नहीं है। अिसलिअे मुझे अपने पहले पत्रमें कुछ भी जोड़ना नहीं है।'

अस्पतालसे जल्दी करके न निकलें। और पूरा आराम लिये बिना काममें न लगें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
८९, वार्डन रोड,
बम्बओी

१३३

सेगांव-वर्धा,
२४–११–'३६

भाओी वल्लभभाओी,

आपकी रायसे यहां तो कोओी सहमत नहीं होता। मुझे जवाहरलालका बयान[2] पसन्द आया है। अिससे कम वे क्या कह सकते थे? अिससे ज्यादाकी अुनसे क्या आशा रखें? अिस बार केबिनेटमें रहनेकी बात तो है ही नहीं। समय आने पर देख लिया जायगा। मैं तो मसौदा भेजना नहीं चाहता था। मगर मथुरादासको अिनकार करनेवाला मैं कौन? आखिर तो भानजा ही ठहरा। अिसलिअे मुझसे बहुतसा काम

---

१. ता० ३०–७–'३६ को पू० बापूकी नाकके सेप्टमका ऑपरेशन पोलीक्लिनिकमें किया गया था।

२. १९३७ की फैजपुर कांग्रेसके अध्यक्ष बननेके बारेमें।

निकलवा ले गया है। यह मसौदा[1] आपको पसन्द न आये तो दूसरा तैयार कर लीजिये और होड़ करना धर्म समझें तो कीजिये। मसौदेमें फेरबदल करना अुचित हो तो जरूर करें। जो कुछ करें विश्वासपूर्वक करें, क्योंकि हमें बहुतसी मुसीबतें पार करनी होंगी।

शरीर अच्छा कर लीजिये।

सरहद[2] से लौटते हुअे वर्धा होकर जाना हो सके तो जाअियेे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१३४

सेगांव,
५–२–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

मेरा दायां हाथ आराम चाहता है। सोमवारके लिअे तो अुसे तैयार[3] रखना ही होगा। अिसलिअे और दिन अुसे आराम देता हूं।

आप शरीर पर खूब अत्याचार कर रहे हैं, परन्तु सरदारसे कोअी कुछ कह या करा सकता है? स्वास्थ्य बिगाड़ लेंगे, तो बहुत सुनना पड़ेगा। यह तो हुअी प्रस्तावना।

चंद्रशंकर महादेवको लिखते हैं कि पोलाक[4] के नाम मेरा पत्र

---

१. पू० बापूका नाम फैजपुर कांग्रेसकी अध्यक्षताके लिअे सुझाया गया था। वह अुन्होंने वापस ले लिया था और कहा था कि पं० जवाहरलालजीको दुबारा अध्यक्ष चुनना ठीक होगा। अिस संबंधमें पू० बापूके बयानका मसौदा।

२. सरहद प्रांतके चुनावके सिलसिलेमें।

३. सोमवारको पू० बापूजीका मौन होता था, अिसलिअे सब कुछ स्वयं ही लिखते थे। सोमवारका बहुतसा समय 'हरिजन' साप्ताहिकों वगैराके लिअे लिखनेमें बिताते थे।

४. हेनरी पोलाक। दक्षिण अफ्रीकामें पू० बापूजीके साथ थे।

आपको अच्छा नहीं लगा। पोलाकको पत्र दिये बिना तो छुटकारा ही नहीं था। जवाब तो देना ही चाहिये। वे पत्र मांगें तो वह भी देना ही पड़े। मुझे पता नहीं था कि वे झट वह पत्र छाप देंगे। परन्तु छापनेसे कोअी नुकसान नहीं हुआ। और मान लीजिये कि हो भी जाय, तो वह क्षणिक ही होगा। क्योंकि जो चीज ठीक है, अुसके प्रकाशित हो जानेसे हानि हो ही नहीं सकती।

चंद्रशंकरके पत्रमें . . . के साथ हुअी बातचीतका हाल भी है। वह तो अैसी थी ही नहीं जो पसन्द आये। परन्तु मैं अिसके लिअे जिम्मेदार नहीं हूं। अुससे मैंने जो कहा अुसका अुलटा ही अुसने किया। मैंने अपनी राय देनेसे बिलकुल अिनकार कर दिया था। आपसे शिकायत करनेको कहा था। यह भी समझाया कि मुझे बीचमें पड़नेका अधिकार नहीं है। अंतमें अेक सिद्धान्तकी बात लिखवाअी। वह अुसने प्रगट कर दी। अुससे हमारा कुछ नहीं बिगड़ता। यों कोअी झूठ छाप दे, तो अुसका क्या करें? रिपोर्ट देखते ही अुसे सख्त अुलहना लिखा, परन्तु वह आदमी बेहया ठहरा। अुसकी पहुंच तक नहीं दी।

आप चाहते हैं कि मैं अिनकार जाहिर करूं? अैसा करनेसे अुसकी शामत आ जायगी। आपको किसीसे कहना हो तो कह सकते हैं कि मैंने बीचमें पड़नेसे अिनकार किया था।

अिधर कब आनेवाले हैं?

कांग्रेस कहां करनी है? तैयारी आजसे ही होनी चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१३५

सेगांव–वर्धा,
४–५–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

आप मुझे कहां ले जा रहे हैं? जहां ले जायंगे वहां आपको बड़ी पार्टी बर्दाश्त करनी पड़ेगी। और मैं किसीको रोक नहीं सकूंगा।

मुझे तो अिसमें हर्ज नहीं, परन्तु जिनके बंगले[1] में जाकर ठहरें, अुनका खयाल तो करना ही होगा। मीराबहनका नोटिस मिल गया है। अिस बार मैं जहां जाअूंगा वहां वह मेरे साथ आयेगी। मुझे खुदको अैसा नहीं लगता कि मेरे लिअे समुद्रकी हवाकी आवश्यकता है। बारडोलीमें मुझे जितने समय रखना अुचित हो अुतने समय अवश्य रखिये। सूरतमें रखना हो तो वहां रखिये। परन्तु बड़ी पार्टी हो जाने पर भी आप हर्ज न मानें, तो यह न समझिये कि मेरी तरफसे कोअी अेतराज है। मुझे अत्यंत संकोच जरूर है। अब तककी सूची यह है:

बा, काना, मीरा, प्यारेलाल, महादेव, राधाकृष्ण, कनु, मनहरलाल, शारदा।

आप आराम ले रहे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
डॉ० कानूगाके बंगले पर,
अेलिसब्रिज,
अहमदाबाद

१३६

सेगांव,
१९-६-'३७

भाअी वल्लभभाअी,

अच्छा हुआ वह कांटा[2] निकल गया। ठीक राजकुमारीके जैसा ही हुआ। डॉक्टरोंकी अक्ल खतम हुअी और कुदरत डॉक्टर बन गअी।

---

१. तीथलमें स्व० भूलाभाअी देसाअीके बंगलेमें रहना था।

२. पू० बापू तीथलमें समुद्र तट पर पू० बापूजीके साथ रोज शामको घूमने जाते थे। अेक दिन घूमते हुअे पू० बापूके पैरके तलुअेमें कांटा घुस जानेसे वे पन्द्रह दिनसे ज्यादा परेशान रहे। अंतमें अुस पर अेण्टीफ्लोजिस्टीन लगाया। और तीथलसे बारडोली गये तब अेक दिन स्नान करके पैरके तलुअेको अेक जगह दोनों हाथोंसे दबाया, तो पाव अिंचका बबूलका कांटा अूपर निकल आया। अुसे पू० बापूजीके पास भेजा था, अुसीके जवाबमें यह लिखा है।

भड़ौंचका किस्सा[1] पढ़ लिया। अैसे असत्य तो चलते ही रहेंगे। दिनकरराय[2] जैसोंके प्रति दूसरा व्यवहार क्या हो सकता है? कार्य-समितिकी बैठक तो अब २६ से २९ तक हो सकती है। अितना समय बहुत है। अिसमें शक नहीं कि जितनी जल्दी हो अुतना अच्छा।

किशोरलाल कभी बीमार कभी अच्छे रहते हैं। अिसलिअे वे मेरे पास नहीं आ सके। मैं जिस दिन आया अुस दिन दो-चार मिनट अुनसे मिला था। सेगांव आनेवाले थे। परन्तु बीमारीके कारण नहीं आ सके।

दूसरी तरह आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
न्यू क्वीन्स रोड, बम्बअी–४

१३७

सेगांव–वर्धा,
२१–६–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र और जवाहरका जवाब पढ़ लिया। मालूम होता है नरीमान[3] अपनी खोदी हुअी खाअीमें पड़ेंगे। देखें अब वे क्या करते हैं। हमें जल्दी करनेकी जरूरत नहीं दीखती। कार्यसमितिके सामने यह बात आयेगी ही। बैठक बहुत देरमें तो होगी, परन्तु अिसका

---

१. भड़ौंचके भंगियोंकी हड़तालके बारेमें।

२. श्री दिनकरराय देसाअी। अुस समय भड़ौंच म्युनिसिपैलिटीके अध्यक्ष थे। अब बम्बअी राज्यके शिक्षा-मंत्री हैं।

३. बम्बअी प्रान्तके कांग्रेस दलने नरीमानको नेता नहीं चुना, अिसके लिअे अुन्होंने पू० बापू पर आक्षेप किये थे और अखबारोंमें अुसका प्रचार होता रहा।

कोअी अुपाय नहीं है। जो हो सो होने दिया जाय। लोदियन[1] का लम्बा पत्र मिला है। अभी पढ़ नहीं सका हूं। अब आप चलने-फिरने लगे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१३८

वर्धा,
११–७–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

नरीमानके मामलेमें आपको चिन्ता करनेकी जरूरत ही नहीं। सब ठीक हो जायगा।

नरीमानका आपको दिया हुआ अुत्तर आने पर अधिक लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१३९

सेगांव–वर्धा,
१४–७–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

अगर आपके मनमें मौलानाके लिअे शंका या भय था, तो आपको अुनके बारेमें तार नहीं देना चाहिये था। मैं मानता हूं कि अैसा करनेसे हम बहुतसी आपत्तियोंसे बच जाते। मैं तो अब भी मानता हूं कि अैसा करनेसे हमें लाभ ही हुआ है। आपको याद होगा कि जवाहरलालको भी अैसी चेतावनी दी ही थी। और नोटिस जारी करनेका बोझ तो मैंने ही जवाहरलाल पर डाला था। मैं जो विचार

१. लॉर्ड लोदियन। अुस समय हिन्दुस्तानके प्रति सहानुभूति रखनेवाले अेक राजनीतिज्ञ।

देता रहता हूं, अुनका असर मन पर न हो तो अमल करना हरगिज अुचित नहीं। नरीमानको पत्र लिखा है। अुसकी नकल साथ है। अब आपको कोअी बयान नहीं निकालना है। मुझे तो आशा है कि यह काम अच्छी तरह निपट जायगा। जिसकी बुनियाद ही न हो, वह कहां तक टिकेगा?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी—४

१४०

सेगांव-वर्धा,
१५—७—'३७

भाअी वल्लभभाअी,

नरीमान सम्बन्धी आपके पत्र पढ़े। मुझे तो कोअी घबराहट नहीं होती। मेरे खयालमें अब आपके लिअे कहनेको कुछ रह ही नहीं जाता। नरीमानको मैंने लिखना शुरू कर दिया है। सार्वजनिक रूपमें कहनेका समय आवेगा तब जरूर कहूंगा। अखबारोंमें आपका कोअी पक्ष नहीं लेता, अिसमें आश्चर्य नहीं। अखबार हैं ही कैसे? अुनके पक्ष लेनेसे हम क्यों खुश हों?

मुन्शी और भूलाभाअीके बारेमें तो आप निपट ही लेंगे। अिसमें मेरा दखल नहीं है। गिल्डर आ जायंगे[1] तो अच्छा ही माना जायगा।

मौलानाको तार देने पर भी जवाब न मिले और अिंतजार करने जितना समय ही न रहे तो दो बातें संभव हैं: अेक तो यह कि जो आदमी ठीक जंचे अुसकी नियुक्ति कर दी जाय या यह स्पष्ट घोषणा कर दी जाय कि मौलाना जिसे नियुक्त[2] कर दें सो सही। मौलानाकी दीर्घसूत्रता तो हम जानते ही हैं।

परन्तु मुस्लिम मंत्रीका मुश्किल है। मेरा विश्वास है कि

१. बम्बअीके मंत्रि-मंडलमें।

२. बम्बअी प्रान्तके मंत्रि-मंडलमें मुस्लिम मंत्रीकी नियुक्तिका मामला था।

सार्वजनिक रूपसे . . . के हाथमें रख देनेसे ही हम बच सकते हैं। जवाहरलालको क्यों न तार कर दें कि मौलानाकी संमति भेजें या खुद दूसरा सुझाव दें।

आप भाअियोंको[1] काफी जल्दी-जल्दी भेजने लगे हैं। वे हमारे लिअे कहीं न कहीं जगह खाली रखेंगे। अल्लामियां हमारा यहांका काम जब पूरा हुआ समझेगा, तब हमें पल भरमें अुठा लेगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१४१

वर्धा,
१७–७–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

आप व्यर्थ दुःखी होते या गुस्सा करते हैं। नरीमान-कांडमें आपका बयान जल्दी ही निकलना चाहिये था। कार्यसमितिके प्रस्तावके अलावा सदस्योंसे और क्या आशा रखी जा सकती है? द्वेषभावसे हमले होते रहें, तो अुसका क्या अुपाय है? नुकसान भी अन्तमें नरीमानके सिवा किसका होगा? हां, यह मानता हूं कि अगर हम गुंडाशाहीके वश हो जायं, तो बहुतोंकी हानि हो सकती है। परन्तु आप या दूसरे कोअी अुसके वश थोड़े ही होनेवाले हैं? साथमें नरीमानके नाम मेरे पत्रकी नकल और सर गोविन्दराव[2] के पत्र भेज रहा हूं।

धीरज और शान्ति न छोड़ें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१. पू० बापूके सबसे बड़े भाअी सोमाभाअीके देहान्तका जिक्र है।

२. स्व० सर गोविन्दराव मडगांवकर। बम्बअी हाअीकोर्टके निवृत्त जज।

१४२

सेगांव,
१९–७–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

यह रु० ५०० के वेतन[1] की बात बड़ी विचार करने लायक है। मैं तो रु० ५०० और मकान किराया तथा दीवान और मंत्रीमें कोअी फर्क नहीं मानता। मगर आपके विचार अलग हों तो बताअिये।

नरीमानसे मैं निपट रहा हूं, यह आप देख रहे होंगे। अब आप तो सब कुछ मुझपर ही छोड़ दीजिये। मैं जल्दी-जल्दी सार्वजनिक वक्तव्य नहीं निकालूंगा। आप अशान्त न हों।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाअी,

यह पत्र बापू जहां हों वहां तुरन्त पहुंचा देना।

महादेव

१४३

सेगांव-वर्धा,
२२–७–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

ठक्करबापाके पंच फैसलेमें से कोअी शब्द रह गये दीखते हैं। आपने फैसला पढ़ लिया? अगर रह गये शब्द अर्थको न बदल देते हों, तो अैसा लगता है कि बापाके फैसलेके अनुसार म्युनिसिपैलिटी १८५ आदमियोंको रखनेके लिअे बंधी हुअी है। फिर भी दिनकररायके पत्रकी बाट देख रहा हूं। वे भले ही वकीलसे जो अर्थ निकलता हो, वह कराकर भेजें। मेरे लिअे अुदारता दिखानेकी बात नहीं है। परन्तु यदि १८५ वाला अर्थ निकलता हो, तब तो और हो ही क्या सकता है? मैं चाहता हूं कि समय मिल जाय तो आप वह फैसला पढ़ लें। साथमें नकल भेजता हूं। मैं जल्दी भी नहीं करूंगा। देर भी न होनी चाहिये।

क्या नरीमान-कांड शान्त हो गया?

बापूके आशीर्वाद

---

१. प्रान्तके मंत्रियोंका वेतन।

फैसलेके ६ठे और १०वें पन्ने पर मैंने लकीर लगाअी है। अुतना ही पढ़ लें तो काफी होगा। यह सोचिये : म्युनिसिपैलिटीको रु० १६० वेतन अधिक देना[1] पड़ेगा। परन्तु यदि २५ आदमी घटा दिये जायं, तो २५ × ११ = २७५ − १६० = ११५ रुपये हर माह साफ बचा सकती है। यह अर्थ बापाके फैसलेका हो सकता है? अगर बापाने कहीं भी संख्या न बांधी हो, तो यही परिणाम आता है न?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१४४

सेगांव-वर्धा,
२४–७–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

नरीमानके बारेमें मुझे जो सूझता है करता रहता हूं। अब आप तो अिस बातको भूल ही जाअिये। चाहे जैसे हमले हों। हम कहां प्रतिष्ठाके भूखे हैं? लड़के-लड़कियोंको तो कहीं जमाना है नहीं। "कोअी निन्दो, कोअी वन्दो, कोअी कैसो कहो ने।"

. . . अैसे काम लेनेके हमारे ढंगमें भेद है। मेरे कहनेका अर्थ अिसके सिवा और कुछ नहीं है। यह कौन कह सकता है कि कौनसा ढंग बेहतर है? यह तुलना तो परिणामसे भी नहीं की जा सकती। मेरे ढंगसे कोअी परिणाम न निकले या अुलटा दिखाअी देनेवाला निकले, तो भी मैं अुसका त्याग नहीं करूंगा। अुसी तरह आप अपने ढंगको न

---

१. भड़ौंच म्युनिसिपैलिटीके भंगियोंने हड़ताल कर दी थी। अुसमें ठक्करबापाको पंच बनाया गया था।

छोड़ें। यह तो हृदयकी बात ठहरी। जिसे जो जंचे वही वह करेगा न? मेरे पत्रोंसे वह सुधर जायगा, अैसी आशा मैं नहीं रखता।

बापूके आशीर्वाद

मेरी तबीयत अच्छी ही है। थोड़ा आराम चाहिये सो लेता हूं।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१४५

सेगांव,
३०–७–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

यह आपको बताना था पर रह गया। अिसका अुत्तर आप ही दें तो अच्छा। या अुन्हें बुला लें। आपका काम पूरा हो जाय तो बादमें यह पत्र अपनी टिप्पणीके साथ राजाजीको भेज दें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१४६

सेगांव,
१–८–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

आपको तार तो कल ही किया जा सकता है न? हो सकेगा तो महादेव करेंगे। मेरा बयान झटपट तो नहीं निकल सकता। अुसके समय पर ही निकलेगा। मेरा कलका पत्र देख लें। सारा पत्रव्यवहार प्रकाशित किया जाय या नहीं, अिसका निर्णय नहीं हो

सकता। अिजाजतका सवाल नहीं, सवाल यह है कि हमारे दृष्टिकोणको यह शोभा देगा या नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
डॉ० कानूगाके बंगले पर,
अेलिसब्रिज, अहमदाबाद

१४७

सेगांव–वर्धा,
१०–८–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

यह पत्र 'सियासत' वाले सैयदसाहब आपको देंगे। अिनके पास डॉक्टर सत्यपाल[1] की चार चिट्ठियां थीं। अुनमें से अेक आपके लिअे है। मैंने अुनसे कह दिया कि मुझसे तो कुछ हो नहीं सकेगा। आप सरदारके पास जािअये। वे आपकी बात ध्यानसे सुनेंगे। और अुनको बात जंच गअी तो वे शायद मदद भी दिला सकें। सब कुछ सुनकर अुचित हो सो करें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१४८

सेगांव–वर्धा,
२२–८–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

मेरे नाम जयंती[2] का पत्र आया है। वह साथ भेज रहा हूं। मैंने अुसे लिखा है कि मुझे लिखनेके बजाय सीधे आपको लिखना अधिक अच्छा होगा। साथके पत्रका अुत्तर आप ही लिखें तो ठीक।

१. पंजाबके अेक नेता।

२. स्व० जयंती पारेख। आश्रमके अेक विद्यार्थी। बादमें साम्य-वादी दलमें शरीक हो गये।

नरीमानकी तरफसे पत्र आ रहे हैं। अुनकी नकलें आपको नहीं भेजता। जिनकी नकल भेजना अुचित होगा अुनकी तो भेजूंगा ही।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें चिन्ता न करें। मैं आराम ले रहा हूं। और अब मै अुसमें वृद्धि कर दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पूना

१४९

सेगांव,
२६-९-'३७

भाअी वल्लभभाअी,

आपके पत्र तो पढ़ता ही रहता हूं। पांच दिनकी यात्रामें आप टिके रहे, यही मुझे आश्चर्य लगता है। दो व्यक्ति अेकसे काम करनेवाले अिकट्ठे हो जायं, तब तो दोनोंकी ही शामत समझिये[1]! कभी-कभी कमजोर और बलवानका साथ निभ सकता है। बलवान मनुष्य भी थोड़ीसी दया तो कमजोर पर करता ही है। अिसलिअे दोनोंका कुछ साथ हो सकता है। लेकिन आप लोग तो सेरके सिर पर सवा सेर जैसे अिकट्ठे हो गये। अिसलिअे आपकी यात्रा देखने लायक तो जरूर रही होगी। ठीक है। कमला-स्मारकका कर्ज तो अदा कर दिया। फिर क्या हर्ज? रकम भी अच्छी — समयानुसार — अिकट्ठी हो गअी, यह कह सकते हैं। मिल-मालिकों (अहमदाबादके) ने काफी दिया होगा?

काठियावाड़ परिषदकी बात समझा।

नरीमान-कांडको भूल जाअिये। आपकी चिन्ता मुझे सौंप दी गअी है। मैंने बहादुरजीको सौंप दी है। वह तो जबरदस्त काम करनेवाला आदमी दीखता है। अेक अेक कागज रोज नियमित समय निकालकर पढ़ता है और नोट करता है। यह सब पढ़नेमें ही दो सप्ताह लगेंगे। अुसके पास मुकदमोंका ढेर होता है। अुसमें से समय

---

१. पं० जवाहरलाल नेहरू अुस समय गुजरातके दौरे पर आये थे। अुन्हें गुजरातमें कमला नेहरू स्मारकके सिलसिलेमें अेकत्रित चंदा दिया गया था। अुस समयका कार्यक्रम खूब भरापूरा था। अुसीका जिक्र है।

निकालकर वह अिसे भी अेक मुकदमा समझकर पढ़ता है। अिसलिअे समयका हिसाब न लगाकर जो होना हो सो होने दीजिये। अख-बारोंके हमले बिलकुल न पढ़िये।

अिसके साथ अेक पत्र है, जिसे पढ़कर लौटा दीजिये। अैसा कोअी भाषण आपने दिया था?[१]

---

१. अुस पत्रमें अैसी शिकायत की गअी थी कि पू० बापूने यह कहा है कि बम्बअीके लोगोंको गटरका पानी पिलाया जाता है। पू० बापूने तो अिस विषयमें कहा था कि बम्बअीके लोग अखबारोंमें आनेवाली परस्पर-विरोधी बातें सच मान लेते हैं। यह भाषण अुन्होंने मांडवीमें १८ व्यापारिक संस्थाओंकी तरफसे कांग्रेसी मंत्रि-मंडलके सम्मानमें हुअे समारोहमें दिया था। अिस भाषणका प्रस्तुत भाग 'जयभारत' से नीचे दिया जाता है:

"गुजरातमें कांग्रेसकी स्वागत-समितिकी बैठक हुअी। हम किसान जमा हुअे और हमने स्वागताध्यक्षकी नियुक्ति की। कुछ बहनोंको अुपाध्यक्ष बनाया गया, अिससे भी कुछ लोग चौंके और अुन्हें हिटलरशाही दिखाअी दी। मगर हमारे यहां झगड़ा नहीं है। हम अलग ही ढंगसे काम करते हैं। अखबार कुछ भी क्यों न छापें, वे गुजरातको नहीं हिला सकेंगे। यह मेरा घमंड नहीं है और न मेरी कुशलता है। मैं तो अेक सिपाही हूं। मेरे साथी भी मुझे अपना अेक साथी मानते हैं। परन्तु अिसका कारण यह है कि गुजरातमें अेक तपस्वी पैदा हो गया है। २० वर्षसे वह सत्य और अहिंसाका पानी पिला रहा है, न कि आपके यहांकी तरह गटरका पानी। यह अुस सन्तका ही प्रभाव है।

"गुजरातमें जैसी व्यवस्था है वैसी सारे प्रान्तमें हो, तो मैं कहता हूं कि अिस विधानके टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दूं। परन्तु यह केवल बातें करनेसे नहीं होता। यह बड़ा कठिन काम है। गुजरातका कार्य व्यवस्थित है। जमीन, जागीर, पढ़ाअी सब छोड़कर अनेकोंने अपना जीवन देशके लिअे समर्पित कर दिया है। अिसलिअे अगर व्यापारी यही समझते हों कि अखबारोंमें जो कुछ आता है वह वेदवाक्य है, तो अखबार निकालनेवाले मनुष्योंके पीछे कितना त्याग, संयम, सेवा और विवेक है, यह हमें समझ लेना चाहिये।"

कांग्रेसमें खर्च बहुत होगा, यह मेरी दृष्टिसे तो हमारा दिवाला ही जाहिर करेगा। हमारे पास खूब रुपया है, असमें मैं हमारा नाश देखता हूं। हमारी शोभा किरायेकी शोभा होगी। वह स्वयं-सेवकोंके पसीनेका प्रदर्शन नहीं होगा। असमें आप अपनी आलोचना न समझें। यह हमारा भविष्य है। हमारी परिस्थितिका करुणाजनक चित्र है। पांच-सात दिन पहले रामदास[1] को तो ये विचार सुझानेवाला परन्तु दूसरी तरह लिखा गया पत्र भेजा ही है। कुछ भी हो, अस पत्रसे यह अर्थ न निकालें कि "वहांका काम बिगड़ता हो तो बिगड़े।" यथामति, यथाशक्ति काम करते रहिये। पत्र आपको ही लिखवाने बैठा हूं, असलिअे अितना लिखवा देता हूं।

महादेवको धुलिया भेजा है।...

आपके पत्रका आरम्भ दरबार-कांडके सम्बन्धमें किया है। परन्तु अूपर जो कुछ लिखा है, वह तो प्रस्तावना ही हुअी। कांग्रेसका नगर न बनवाकर गांव बनवाअिये। असलिअे अुसमें देहाती कला भले ही पूरी जाय। परन्तु कलाके लिअे जरूरत बुद्धि और हृदयकी है, रुपयेकी कदापि नहीं। असलिअे सजावटमें तो किसीको अेक पैसा भी खर्च न करने दें। मेरे खयालसे मिठाअीकी दुकानोंमें और चायघरोंमें गायका ही दूध और घी अिस्तेमाल किया जा सकता है। अर्थात् अिन लोगोंको माल हमसे खरीदना चाहिये अथवा खरीदी हमारी देखरेखमें होनी चाहिये। और हम देखरेख वगैराका खर्च अुठा सकें, असके लिअे रुपया लेकर परवाने देने चाहिये। वैसे मैं मानता हूं कि हमें मिठाअी और चायवालोंके लिअे सब सुविधाअें कर देनी चाहिये। अुन्हें हमारे नियमके अनुसार चलना होगा।

अब दरबारके बारेमें। दरबारका गांव दरबारके खातिर नहीं, परन्तु हमारी प्रतिष्ठाके खातिर वापस लेना होगा। दरबार तो ढसाकी

१. श्री रामदास गुलाटी। अपनी सिविल अिंजीनियरकी नौकरी छोड़कर बापूजीके साथ सेवाग्राममें रहने लगे थे। फैजपुर, हरिपुरा, त्रिपुरी वगैरा कांग्रेसके अधिवेशनोंके समय अुन्होंने अिंजीनियरके रूपमें सेवा की थी। अिस समय वल्लभ विद्यानगरके बिड़ला विश्वकर्मा विद्यालयमें आचार्य हैं।

राजधानी खोकर खेड़ाकी राजधानी ले बैठे हैं। ढसाके दरबारको कोओी नहीं जानता था। खेड़ाके दरबारको सब पहचानते हैं। अिसलिअे रावजीभाअी[1] के पत्रका मुझ पर कोअी असर नहीं होता। अुससे तो मनमें रोप पैदा होता है। परन्तु बुढ़ापेमें रोप नहीं किया जा सकता और वे ठहरे दूर अिसलिअे रोपको शान्त कर देता हूं। ढसाकी चिन्ता अुनसे हमें अधिक होनी चाहिये और है। अुनकी चिन्ता दरबारकी मित्रताके कारण है। हमें तो दरबार मित्र न होते और अेक राष्ट्रीय सेवक ही होते, तो भी अुनकी चिन्ता करनी पड़ती। और न करते तो कांग्रेसमें हमारी दो कौड़ीकी भी कीमत न रहती। परन्तु यह सब तो आत्म-श्लाघा जैसा हुआ। रावजीभाअी जो समाचार दे रहे हैं, अुस परसे यह कहा जा सकता है कि हम अभीसे काम शुरू कर दें। मैंने तो यह सोचा था कि नया मंत्रि-मंडल जरा दम ले ले तब शुरू करें। अब मेरे खयालसे गुजरात प्रान्तीय समितिके अध्यक्षके नाते आप या अुसके मंत्री प्रधान मंत्रिको लिखें कि कांग्रेसकी प्रतिष्ठाके खातिर दरबारका मामला हाथमें लें और गवर्नरसे सिफारिश करायें कि दरबारको अुनका ढसा वापस मिले। मैं मानता हूं कि मांगनेसे ही मिल जायगा। मुझे अिसमें दखल नहीं देना पड़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली

१५०

सेगांव–वर्धा,
९–१०–'३७

भाअी वल्लभभाअी,

आपका निम्बकर[2] को दिया हुआ जवाब अभी पढ़ा। मुझे बिलकुल पसन्द नहीं आया। अिसमें बहुत असहिष्णुता पायी जाती है।

---

१. श्री रावजीभाअी मणिभाअी पटेल। दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहमें पू० बापूजीके साथ थे। आजकल गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री हैं।

२. साम्यवादी कार्यकर्ता।

निम्वकरके बारेमें आपने जो लिखा है, अुसे सावित करना मैं मुश्किल समझता हूं। यह सब लिखनेकी जरूरत भी क्या थी? 'क्रॉनिकल' पर किया हुआ हमला तो बिलकुल शोभा नहीं देता। 'ऑब्वियस रीजन्स' वे हैं जिन्हें सब जानते हों। मुझे तो यह भी पता नहीं कि 'क्रॉनिकल' आपका विरोध ही विरोध करता है। और करता हो तो भी असा कारण क्या होगा, जिसे सब जान सकते हैं? यह कहना प्रस्तुत कहां था? मुझे तो डर है कि आपने जान-बूझकर विरोध मोल ले लिया है।

वैकुण्ठ (मेहता) के बारेमें मुन्शी आपसे कहेंगे। अिन्हें मोरारजी मोरेटोरियम[1] और कोऑपरेटिवके कामसे तीन महीनेकी मुक्ति दें और कमेटीका काम अिससे आगे न जानेवाला हो तो वैकुण्ठको खुशीसे ले लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

---

१. मोरेटोरियमका अर्थ है क़र्ज वसूलीकी अेक खास वक्त तक की जानेवाली कानूनी मनाही। सन् १९३७ में चीजोंके भावोंमें खूब मंदी आ गअी थी। अनाज वगैरा खेतीकी पैदावारके भाव अितने गिर गये थे कि किसान बड़ी कठिनाअीमें आ गये थे। कर्जकी रकममें कोअी फेरबदल न होने पर भी भावोंकी मंदीके कारण कर्जका भार बढ़ गया था। अैसी स्थितिमें किसानोंको राहत पहुंचानेके लिअे क्या किया जाय, अिस बारेमें जांच करके अपनी सिफारिशें पेश करनेके लिअे बम्बअी सरकारने, कांग्रेसी मंत्रि-मंडल बन जानेके बाद, अेक अवैध समिति मुकर्रर की थी। अुसमें श्री वैकुण्ठभाअी भी थे। अिस कमेटीकी सिफारिशों परसे किसानों पर जारी किये गये अदालतके हुक्मनामेकी तामील अेक खास वक्त तक मुल्तवी रखनेका प्रस्ताव किया गया था। लेन-देनका नियंत्रण करनेवाला कानून और कर्जदार किसानको राहत दिलानेवाला कानून बादमें बनाया गया था।

सेगांव–वर्धा,[1]

भाअी वल्लभभाअी,

अभी तो नहीं दीखता कि जिन्ना (कायदे आजम) से मिलना होगा। जवाहरलाल यह नहीं चाहते।

अैसा जान पड़ता है कि मुझे कलकत्ते जाना पड़ेगा। जवाहरलालका विशेष आग्रह है। बंगालकी तरफसे भी है। सुभाष भी लिख रहे हैं। और मैं जाअूं तो नजरबन्दोंसे भी मिला जा सकता है। अिसलिअे वहां जाते हुअे रास्तेमें नहीं तो वहां पहुंचने पर तो हम मिलेंगे ही न?

नरीमान-कांडमें अब आप खुद ही बहादुरजीको यह लिखें तो ठीक हो कि जल्दी निपटारा हो जाना अच्छा है।

जो तूफानी आंधी चल रही है अुस पर यदि काबू नहीं पा लिया गया, तो मेरी समझमें तो बाजी हाथसे गअी ही समझिये। यह काबू रखनेके लिअे हमसे जो भी बन पड़े हम कर गुजरें। न मानें तो हमें हट ही जाना है। आजकी रचनामें थोड़ासा काबू थोड़ीसी जगहों पर हो, यह हमारे लिअे व्यर्थ है। सारे तंत्र पर नियंत्रण हो तो ही काम आगे बढ़ेगा। अुसे कायम रखनेके लिअे हमसे जितना होगा हम करेंगे।

सदानंद[2] के बारेमें आपको लिखना ही रह गया। वह आया था। अुसे तो फिरसे अखबार निकालना था और न्यूज अेजेन्सी जमानी थी। मैंने अिसमें जरा भी प्रोत्साहन देनेसे अिनकार कर दिया। अिस मिथ्या प्रवृत्तिमें फिर न पड़नेको समझाया। यह बता दिया कि वह पड़े या न पड़े, मुझे तो भूल ही जाय। मुझे भूल जाना तो अुसने स्वीकार कर लिया। पर अुसे किसी भी तरहका पश्चात्ताप होता नजर नहीं आता। मेरी दृष्टि तो यह है कि बम्बअीमें नये अंग्रेजी अखबारोंकी झंझटमें फंसना अुचित नहीं।

---

१. यह पत्र अक्तूबरके पहले पखवाड़ेमें लिखा हुआ है।

२. 'फ्री प्रेस' वाले।

निम्बकरको जवाब जरूर देना चाहिये। मैंने तो अितना ही कहा कि अखबारोंकी खबर परसे मैं कुछ नहीं कर सकता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी–४

१५२

सेगांव,
१–११–'३७

(पुर्जा)

मैं तो अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सभी हट जायं[१] तो अच्छा है। अगर सब न भी हटें तो भी आपको हट जाना चाहिये। जमनालाल तो हटेंगे ही। फिर रहा कौन? दिवाला ही निकला समझिये। भूलाभाअी भी हटेंगे। परंतु आप हट जायं तो हर्ज नहीं। मौलानाका साथ मिलना ही चाहिये, अैसा मुझे नहीं लगता। अगर आप न हटे तो अन्तमें मजबूरन् हटनेकी नौबत आयेगी। मैंने देख लिया है कि सुभाषका कोअी ठिकाना नहीं। फिर भी अुनके सिवा और कोअी अध्यक्ष[२] नहीं बन सकता। मैंने रातको खूब विचार किया, अिस समय भी किया। दूसरे जो जीमें आये करें। मेरा विश्वास है कि आपको तो हट ही जाना चाहिये। प्रान्त अपना फर्ज न समझें तो कुछ होगा नहीं और सारी बाजी हाथसे चली जायगी।

नरीमानका मामला फिरसे ताजा तो करूंगा, परंतु संभव है वह कुछ भी न करना चाहे। तो भी दूसरे सदस्य क्या कहते हैं? देव[३] और पटवर्धन[४] क्या सोचते हैं? भूलाभाअी क्या कहते हैं? वह अकेला ही कहे अिससे क्या? आधार तो पक्का है।

१. कांग्रेसके अध्यक्ष पं० जवाहरलाल नेहरूके साथ मतभेद होनेसे कांग्रेसकी कार्यसमितिमें से।

२. आगामी हरिपुरा कांग्रेसका।

३. श्री शंकरराव देव। अुस समय कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य।

४. श्री अच्युत पटवर्धन। अुस समय समाजवादी नेता और कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य।

मैसूरका प्रकरण और बढ़ता जानेवाला मतभेद। कमेटीमें अैसे तीव्र मतभेदोंके कारण हरगिज नहीं रहा जा सकता, यह स्पष्ट करना चाहिये। पूरा विचार आप खुद ही अकेले बैठकर कर लीजिये। अिसमें किसीकी समझदारी काम नहीं आ सकती। मैं तो रहनेमें अकल्याण ही देखता हूं। गुजरातको संभाला जा सके तो ठीक है। वह भी जाय तो भले चला जाय। प्रवाहमें बह जानेमें नाश है।

मैंने तो सुझाव दिया है कि आप सबको त्यागपत्र दे देना चाहिये। आज सब अिकट्ठे होकर विचार कर लीजिये। आजका काम हरगिज ठीक नहीं माना जा सकता। और भी जो कुछ हुआ सब अनुचित है। वे खुशीसे अपनी केबिनेट बनायें। वे विरोधमें अिस्तीफा दें तो ठीक न होगा। यह भी अुनके सामने स्पष्ट कर देना चाहिये। राजेन्द्रबाबू आज यहां आ रहे हैं। यह सब सुनकर मुझे लगता है कि आप सबको त्यागपत्र दे देना चाहिये। मेरे पास तो समय नहीं है, शक्ति नहीं है, मुश्किलसे टिका हुआ हूं। आपको ही आज रातमें बात कर लेनी चाहिये।

१५२

विट्ठलनगर, हरिपुरा,
२०-२-'३८

भाअी वल्लभभाअी,

देवदासने आपके आजके भाषणकी शिकायत की। फिर जयप्रकाश आया। अुसने भी बड़े दुःखसे बात की। मेरे खयालसे आपका भाषण बहुत गरम था। समाजवादियोंको यों नहीं जीता जा सकता। यदि आपको अपनी भूल जान पड़े, तो सुभाषकी विशेष अनुमति लेकर मंच पर जाकर अुनके आंसू पोंछ देना और अुन्हें हंसाना। जैसेके साथ तैसे हमसे हरगिज नहीं हुआ जा सकता। बलवानका भूषण क्षमा है। अुसकी जबानमें तलवार हरगिज नहीं हो सकती। मुझे बात करनी थी, परंतु समय ही न रहा।

बापूके आशीर्वाद[1]

---

१. यह हरिपुरामें ही लिखकर पू० बापूको भेजा। हरिपुरा कांग्रेसके भाषणके बारेमें है।

१५४

सेगांव,
१८–४–'३८

भाअी वल्लभभाअी,

कल प्यारेलालने तो आपको लिखा ही है। आप आ जायं तो कुछ बातें कर लें। नहीं आया जाय तो कोअी हर्ज नहीं। गुजरातकी जमीनोंके बारेमें बात हुअी है। नागपुरके विषयमें अब अधिक करना असंभव मानता हूं। नियमानुसार जो होता हो वह होने दीजिये। सारी नीति विचार करने योग्य है। मुझे वहां २८ तारीखको तो आना ही है जिन्नाभाअी[१] से मिलने। अुसी दिन लौटनेका अिरादा है। आप जालभाअी[२] को देखने गये थे? अुन्हें पत्र लिखते हैं?

मैं चाहता हूं कि मुझे समुद्र-किनारे न ले जायं। ६–७ मअीको तो वर्धामें आपकी कमेटीकी बैठक है। सचमुच मेरी तबीयत अच्छी रहती है। महादेव २०–२१ तारीखको लौटने चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

१५५

सेगांव–वर्धा,
२३–४–'३८

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिल गया। महादेव आज शामको पहुंचने चाहिये। मैं २८ तारीखको प्रातःकाल वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। अुसी दिन गवर्नरसे भी आसानीसे मिलना हो सकता है। अुनसे ९ या ९॥ बजे मिलनेको तैयार हूं।

---

१. कायदे आजम जिन्ना।

२. स्व० दादाभाअी नौरोजीके पौत्र।

बड़े लाटके साथ अुड़ीसा, खेड़ाकी जमीन और कैदियों वगैराकी काफी बातें हुअी हैं। अुड़ीसा[1] का मामला विचारणीय है।

गुजरातमें थोड़ा समय तो कभी भी बिताया जा सकता है। शायद मअीमें सरहद जाना पड़ेगा। आज खानसाहबको तार दिया है। महादेवके आने पर और पता लगेगा।

मेरा स्वास्थ्य अभी तो अच्छा काम दे रहा है।

बापूके आशीर्वाद

जिन्नाके बारेमें मेरा बयान देख लें। न मिलूं तो अुसका अुलटा अर्थ हुअे बिना नहीं रहेगा।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअसके सामने,
बम्बअी – ४

१५६

सेगांव–वर्धा,
१८–७–'३८

भाअी वल्लभभाअी,

शरीफ[2] मेरे साथ कल अेक डेढ़ घंटे बैठे थे। अिस अर्सेमें अुन्होंने आपके साथ हुआ पत्रव्यवहार दिखलाया। अुनका सवाल यह था कि आपने सर मन्मथ[3] को अिनके विषयमें कुछ लिखा था, अुसका

---

१. अुड़ीसामें नौकरी कर रहे कमिश्नरको कामचलाअू गवर्नर बनानेकी बात चल रही थी।

२. मध्यप्रदेश (अुस समय मध्यप्रान्त) के कांग्रेसी मंत्रि-मंडलके मुस्लिम मंत्री। हरिजन लड़की पर बलात्कार करनेके बारेमें अेक मुसलमानको सजा हुअी थी। अिन्होंने मंत्रीकी हैसियतसे गवर्नरसे सिफारिश करके अुसे मियादसे पहले छुड़वा दिया था। अिस कारण कांग्रेस कार्यसमितिने अुनसे मंत्रीपदसे अिस्तीफा दिलवाया।

३. सर मन्मथनाथ मुकर्जीको अुपरोक्त मामलेमें कांग्रेस कार्य-समितिके निर्णय पर फैसला देनेके लिअे पू० बापूजीके सुझावसे पंच बनाया गया था। अुन्होंने शरीफके विरुद्ध फैसला दिया था।

जवाब नहीं है। मैंने तो कह दिया कि, "सरदार सर मन्मथको कभी नहीं लिख सकते।" फिर भी मैंने आपसे पुछवाकर तय करनेको कहा है। अब मुझे बताअिये।

जिन्नाभाओी (कायदे आजम जिन्ना) को देनेका अुत्तर तैयार कर रखा है। आयें तब देख लीजिये।

बाकी तो महादेव लिखते ही रहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बओी – ४

१५७

सेगांव–वर्धा,
१९–७–'३८

भाओी वल्लभभाओी,

ये दोनों भाओी कोओीलन बैंक[1] के हैं। आपको अपनी कथा सुनाना चाहते हैं। सलाह भी चाहते हैं। थोड़ासा समय दीजिये। करुण कथा है।

सर पुरुषोत्तमदास[2] से भी मिलना चाहते हैं। अुनके नाम चिट्ठी दी है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बओी – ४

---

१. त्रावणकोरका अेक बड़ा बैंक। अुसमें हुओी गड़बड़के बारेमें।

२. बम्बओीके सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास।

१५८

सेगांव-वर्धा,
१२-८-'३८

भाओी वल्लभभाओी,

अे० आओी० सी० सी० की बैठक बम्बओीमें करनी हो तो जरूर कीजिये। दिल्लीमें ठीक नहीं रहेगा। मेरी अुपस्थितिकी आवश्यकता हो तो बम्बओी बुलाअिये। सबसे अच्छा तो वर्धा ही है। आपका भी अैसा ही विचार हो, तो जमनालालजीको तारसे पूछ लीजिये। सुविधाकी दृष्टिसे बम्बओी ही ठीक होगा। मेरी सुविधा देखनेकी कोओी जरूरत नहीं। अे० आओी० सी० सी० बुलवानेका नोटिस जल्दी निकल जाय तो ठीक हो। जैसा आपको ठीक लगे वैसा कीजिये। अधिक विचार करता हूं तो मन बम्बओीकी ओर ही झुकता है। अलाहाबादका विचार करने लायक हो सकता है। वहां कभी अिकट्ठे ही नहीं होते। परन्तु यह सिर्फ आपके विचारके लिअे ही है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाउसके सामने,
बम्बओी – ४

१५९

सेगांव-वर्धा,
१५-८-'३८

भाओी वल्लभभाओी,

राजकोट गये यह तो अच्छा हुआ। आपके भाग्यमें यश[1] है, तब तक अैसा ही होगा। चूडगर[2]की दिशाभूल है। वे जो चाहें करें। अगर राज्योंके लोगोंमें दम होगा, वे आकाशमें नहीं अुड़ेंगे

---

१. ता० ५-८-'३८ को पू० बापू काठियावाड़ राजनीतिक परिषदके लिअे राजकोट गये थे। दीवानका मिलनेके लिये पत्र आया था, अिसलिअे पू० बापू और दरबार साहब अुनसे मिलने गये थे।

२. सौराष्ट्रके अेक प्रसिद्ध बैरिस्टर।

और बाहरकी आशा रखे बिना शांतिसे लड़ेंगे तो अवश्य जीतेंगे। और अगर कांग्रेस नीतिका मार्ग नहीं छोड़ेगी, तो रियासतोंमें भी कांग्रेसका जोर बढ़ेगा।

आप तो बीमार पड़ने ही वाले थे।[1] आप दूसरोंके सरदार हैं, लेकिन अपने तो दास ही मालूम होते हैं। सच्चे सरदार तो वे होते हैं, जो खुद अपने पर सरदारी भोगें। आप समय पर काबू रखें और सब बातोंके नियम बना लें तो बहुत जियेंगे। कठौती कूंडे पर हंसती है, यों समझकर यह बात अुड़ा न दें। महादेव अपने कियेका फल भोग रहे हैं।[2]

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

१६०

सेगांव–वर्धा,
४–९–'३८

भाअी वल्लभभाअी,

दवाओंके बल पर कहां तक टिकेंगे? कौनसा राज्य लेना है? धीरे चलिये। हो सके अुतना काम कीजिये। शरीरको संभालिये, नहीं तो हिंसाके दोषी माने जायंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

---

१. राजकोटसे लौटने पर पू० बापूको बुखार आ गया था।

२. महादेवभाअी भी ज्यादा काम करके बीमार हो गये थे, अुसका जिक्र है।

१६१

पेशावर,
१३–१०–'३८

भाअी वल्लभभाअी,

मैं आनन्द कर रहा हूं। अितना आराम तो आप भी न दे सके। आबहवा अुत्तम है। फल खूब मिलते हैं। खानसाहब अभी तो मेरी रक्षाके लिअे ही जी रहे हैं।

महादेव बिलकुल सकुशल हैं। वे शिमला गये हैं। यह अच्छा ही हुआ। परन्तु आप अुन्हें ललचा सकते हैं।

. . . जिन्नाके साथ चर्चाकी संभावना तो अब हमेशाके लिअे खतम हो गअी। अुनका पत्र भी अैसा ही है। अब तो हमें स्वतंत्र रूपसे जो कुछ कहना है वह कहकर शांत हो जायं। मैंने जो वक्तव्य तैयार किया है, अुस पर विचार कर लीजिये। और मुझे लिखना अुचित हो सो लिखिये। अैसा वक्तव्य हमें तुरन्त प्रकाशित करना चाहिये।

कोल्टमेन[१] की राय बढ़िया है। अब यही ठीक प्रतीत होता है कि अेक्जीक्यूटर समन जारी करके फैसला कर दे, यद्यपि मैं यह राय भी सुभाषको भेज तो रहा ही हूं।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

सी० पी०[२] का काम बड़ा टेढ़ा है। अकेले रामचन्द्रन्[३] से कुछ नहीं हो सकता। वे लोग मजबूत हैं। आपको वहां जानें दें तो जाअिये और मामला निपटा आअिये। अिसमें सी० पी० अपनी

---

१. बम्बअीके अंग्रेज बैरिस्टर। स्व० विट्ठलभाअीकी वसीयतके बारेमें।

२. सर सी० पी० रामस्वामी। अुस समय त्रावणकोरमें राज्य और जन-कांग्रेसमें लड़ाअी चल रही थी।

३. त्रावणकोरके अुस समयके कार्यकर्ता।

अिज्जत बिलकुल खो देंगे। मेरे पास बहुतसे पत्र आते रहते हैं। दूसरा तो प्यारेलाल लिखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

१६२

कोहाट,
२१–१०–'३८

भाअी वल्लभभाअी,

आपके तारका अुत्तर दिया है। आप त्रावणकोर खानगी व्यक्तिकी हैसियतसे जायंगे, तब भी जीत कर आयंगे। कैदियोंसे जेलमें मिलिये। झूठ खूब चल रहा है। मेरे नाम कांग्रेस[1] की तरफसे आये हुअे तारोंके ढेर रखे हैं। अुनमें कांग्रेसकी ओरसे हिंसाका साफ अिनकार किया गया है। दूसरे तार अैसे हैं जिनमें कहा गया है कि निश्चित हिंसा की गअी है। अिसका पता तो कोअी वहां जाय तभी चले। मैंने जो नीति ग्रहण की है, वह तो आप जानते ही हैं। सी० पी० के विरुद्ध अिलजाम या तो वापस ले लिये जायं या अुन्हींको मुख्य वस्तु बनाया जाय। अुन्हींको मुख्य वस्तु बनाया जाय, तो अुसके लिअे सत्याग्रह नहीं हो सकता। अिसमें अिन लोगोंको चुनाव कर लेना होगा। सी० पी० बाहरके जजको लाकर मुकदमा चलायें, तो अिन लोगोंको चुनौती स्वीकार कर लेनी चाहिये। परन्तु अैसा न करें तो लड़ाअी लंगड़ी हो जायगी। आपने मेरी अंतिम सलाह देखी होगी। किसी भी कारणसे अगर हिंसा हो रही हो, तो कोअी भी सुलह-समझौता किये बिना सविनय-भंग मुलतवी कर दिया जाय। जेलोंमें पड़े हुअे भले ही जेलोंमें रहें। कानून-भंगके सिवा और सब कुछ जारी रहे। परन्तु आप जाकर जो ठीक मालूम हो वह कीजिये। पहले तो रामचन्द्रन्से और बादमें कैदियोंसे मिलें।

---

१. त्रावणकोर राज्य कांग्रेस। वह अखिल भारत कांग्रेससे सम्बद्ध नहीं थी।

साथमें कानपुरके बालकृष्ण[1] का तार देख लें। मैंने तारसे अुत्तर दे दिया है। अिस मामलेमें मैं कुछ नहीं जानता। पार्लियमेण्टरी बोर्डने तो मंत्रीकी सलाहसे दखल देना स्वीकार किया होगा। अैसा न हो तो भी प्रान्तीय समिति जो कुछ करना चाहे कर सकती है। मैं मान लेता हूं कि यह सब आपके ध्यानसे बाहर नहीं होगा।

स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेरी तबीयत ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

आप गांधी-सेवा-संघसे त्यागपत्र क्यों देते हैं? जमनालालजीकी स्थिति अिस समय बीमारके जैसी है। वे अिस्तीफा देंगे, फिर भी काम तो करेंगे ही न? आपके त्यागपत्र देनेसे कुछ सुधार नहीं होगा।

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

१६३

सेगांव–वर्धा,
१९–११–'३८

भाअी वल्लभभाअी,

भाअी अनंतराय और नानाभाअीके साथ बातें करके अन्तमें मैंने मसौदा तैयार किया है। अिसे आप देख लें।[2] यह ठीक मालूम हो तो अिसके अनुसार ठाकुरसाहब चलें और सत्याग्रह खतम हो जाय। कमेटीके आदमियोंके नाम भाअी अनंतरायके साथ बैठकर तय कर

१. कानपुरके श्री बालकृष्ण शर्मा। आजकल संसदके सदस्य।

२. ता० २६–१२–'३८ को पू० बापू और राजकोटके ठाकुर-साहबके बीच जो अंतिम समझौता हुआ, वह अिस मसौदेके आधार पर ही हुआ था। अिस आखिरी समझौतेकी नकल नीचे दी जाती है:

(१) पिछले कुछ महीनोंमें हमारी प्रजामें जो सार्वजनिक भावना जाग्रत हुअी है और अपने माने हुअे दुःखोंके अिलाजके लिअे अुसने जो खेदजनक कष्ट सहन किये हैं, अुन्हें देखनेके बाद और कौंसिल

लीजिये। अुसमें प्रजाके प्रतिनिधियोंका बहुमत होना चाहिये। अितना हो जाय तो मेरे खयालसे संतोष रखना चाहिये। अिसमें जिम्मेदार हुकूमतका नाम नहीं है, परन्तु यह तो मेरे मसौदेमें स्पष्ट रूपसे आ ही जाता है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

तथा श्री वल्लभभाअी पटेलके साथ सारी परिस्थितिकी चर्चा करनेके बाद हमें यह विश्वास हो गया है कि हालकी लड़ाअी और कष्ट-सहनका तत्काल अंत हो जाना चाहिये।

(२) हमने दस सज्जनोंकी अेक समिति बनानेका निर्णय किया है। ये सज्जन हमारे राज्यके प्रजाजन होंगे। अिनमें से तीन राज्यके अफसर होंगे और दूसरे सात प्रजाजनोंके नाम बादमें घोषित किये जायंगे।

(३) यह समिति जनवरी १९३९ के अंत तक अुचित जांचके बाद हमारे सामने रिपोर्ट पेश करके अिस ढंगसे हमारी प्रजाको अत्यधिक विशाल सत्ता दिला सकनेवाले सुधारोंकी योजना पेश करेगी, जिससे सार्वभौम सत्ताके प्रति हमारे कर्तव्यों और राजकर्ताकी हैसियतसे हमारे विशेष अधिकारोंमें कोअी अड़चन न आये।

(४) हमारा निजी खर्च नरेन्द्र-मण्डलकी कौंसिल द्वारा की गअी सिफारिशके अनुसार रहेगा।

(५) हम अपनी प्रजाको यह भी विश्वास दिलाना चाहते हैं कि अुपरोक्त समितिकी तरफसे जिस योजनाके लिअे सिफारिश की जायगी, अुसे ध्यानमें रखकर अुस पर पूरी तरह अमल करनेका हमारा अिरादा है।

(६) फिरसे शांति और सद्भावना स्थापित करनेकी आवश्यक पूर्व-भूमिकाके रूपमें सविनय कानून-भंगके सिलसिलेमें सजा पाये हुअे

सेगांव,
२८-११-'३८

भाअी वल्लभभाअी,

साथमें भावनगरका पत्र है। मैंने अुन्हें तार दे दिया है कि और जत्थे भेजनेसे पहले पत्रकी प्रतीक्षा करें। विद्यार्थी अिस तरह भाग लें, यह मुझे तो बिलकुल अनुचित प्रतीत होता है।

और राजकोटसे बाहरके लोग अलग-अलग जगहोंसे जत्थे भेजें, यह भी ठीक नहीं। यह हमारी नीतिके बिलकुल विरुद्ध है। अिन जत्थोंको स्वराज्य नहीं चाहिये, मिलेगा भी नहीं। अिनके आनेसे द्वेष बढ़ेगा और राजकोटकी कमजोरी होगी तो छिप जायगी। मगर कमजोरी छिपाकर हम क्या करेंगे? राजकोटकी प्रजामें जितना जौहर होगा अुतना ही चमकेगा। हम अुसका तेज बढ़ायें। मगर वह तो अंदरकी प्रगतिसे बढ़ेगा। सोच लीजिये। यह बात ठीक समझें तो बाहरके जत्थे बन्द कर दें और विद्यार्थियों आदि सभीको रोक दें। और तो बहुत लिखा जा सकता है, परन्तु वक्त कहां है? खैर, कोअी हर्ज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

सब कैदियोंको तुरन्त छोड़ देनेकी, तमाम जुर्माने लौटा देनेकी और दमनकी समस्त कार्रवाअियोंको वापस लेनेकी हम घोषणा करते हैं।

(हस्ताक्षर) धर्मेन्द्रसिंह
ता० २६-१२-'३८

नोट : दूसरे पैराग्राफमें लिखे हुअे 'प्रजाजन' की व्याख्या ब्रिटिश अिलाकेमें हिन्दुस्तानी प्रजाजनोंकी व्याख्या जैसी ही रहेगी।

१६५

सेगांव–वर्धा[1]

भाअी वल्लभभाअी,

सारे कागजात पढ़ लिये। भयंकर बात है। ठाकुरसाहब दृढ़ रहें तो अभी सब कुछ निपट जाय। पर अुनके दृढ़ रहनेके विपयमें मुझे शक है। कागजोंसे जो कुछ पता चलता है, अुसका अुपयोग कहां तक किया जा सकता है? आपको न्यौता मिले तो जरूर जायं। मेरा खयाल है कि आप जायं तो आपको रेसिडेण्टसे भी मिलना चाहिये और साफ बात कर लेनी चाहिये। राजाका निमंत्रण बिलकुल खानगी नही रखा जा सकता। अिसलिअे अगर अितनी हिम्मत राजाकी न हो, तो राजकोट जानेमें शायद कोअी लाभ नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

१६६

सेगांव–वर्धा,
२१–१२–'३८

भाअी वल्लभभाअी,

मौलाना तो बिलकुल अिनकार कर रहे हैं।[2] अैसी स्थितिमें अुन्हे ज्यादा दबाना ठीक नहीं लगता। मेरे खयालसे पट्टाभिका ही विचार करना ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

---

१. यह पत्र दिसम्बर १९३८ में लिखा हुआ है।
२. कांग्रेसके अध्यक्ष बननेके बारेमें।

१६७

सेगांव–वर्धा,
३१–१२–'३८

भाओी वल्लभभाओी,

शंभुशंकर[1] को तो आप जानते ही हैं। वे पालीतानामें स्वराज्य लेनेकी आशा रखते हैं। दरबारको पत्र तो लिखा ही है। शंभुशंकर काफी स्वतंत्र स्वभावके हैं। अुन्हें अुम्मीद तो यह है कि केवल अीश्वरके भरोसे रहकर वे अपनी मुराद हासिल कर लेंगे। परन्तु बुजुर्गोंके आशीर्वादकी आशा तो रखते ही हैं। मैंने कह दिया है कि अैसी श्रद्धासे लड़ें, और लड़ सकें तो आशीर्वाद तो हैं ही। जो सत्य और अहिंसाके पुजारी हैं, आशीर्वाद तो अुनकी जेबमें रहते हैं। परन्तु अुन्हें अितनेसे थोड़े सन्तोष हो सकता है? आपके आशीर्वाद तो अुन्हें जरूर चाहिये। अुनकी बात सुनकर आशीर्वाद दीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

१६८

(राजकोट सत्याग्रहके समयका पुर्जा)

वल्लभभाओीसे कहा जाय कि कमसे कम शब्दोंसे काम चलायें। जहां तक हो सके तटस्थ भाषण दें। सत्याग्रहीके रूपमें यात्रा न करना[2] तो पसन्द किया ही जाय। दरबारको और ट्रस्टको पंच द्वारा फैसला करनेकी सलाह दें। लोगोंको प्रतिज्ञा-पालनके बारेमें समझायें।

---

१. पालीतानाके राष्ट्रीय कार्यकर्ता।

२. जेलमें जाना धर्म न हो तो लोगोंकी आलोचनाकी परवाह किये बिना जेलमें न जायें।

१६९

बारडोली,
११-१-'३९

मेरी हमेशा यह खास राय रही है (और अिस समय अुसका मुझ पर प्रभुत्व है) कि प्रत्येक प्रान्तमें अेक-दो प्रसिद्ध नेताओंको छोड़कर दूसरे कार्यकर्ताओंको मौन धारण कर लेना चाहिये। और यदि यह असंभव हो जाय, तो अुन्हें पहलेसे सोचे हुअे, संक्षिप्त और सादे लिखे हुअे भाषण सभाओंमें पढ़ देने चाहिये। सबको याद रखना चाहिये कि अब लोगोंके हाथोंमें बढ़ती हुअी सत्ता आती जा रही है। अैसी स्थितिमें लोकनायकोंके मुंहसे अेक भी शब्द बिना विचारे हरगिज न निकलना चाहिये।

(हस्ताक्षर) मो० क० गांधी

१७०

सेगांव-वर्धा,
७-२-'३९

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिल गया। लीमड़ी-काण्ड भयानक है।[१] परन्तु हमारे लिअे आश्चर्यकारक नहीं है। अैसा और अिससे भी खराब हाल होगा। अिसीसे प्रजाकी परीक्षा होगी। हमारा मार्ग सीधा है। अिस पर कुछ लिखनेका सोच रहा हूं। अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करते हुअे सब कुछ करता हूं। अिसलिअे सब चीजोंको अिच्छापूर्वक नहीं निपटा सकता। सुभाषबाबू जो कर रहे हैं, वह मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। हम अच्छे बचे। राजेन्द्रबाबूका पत्र देख लें।

जब भी मिलना हो मैं तैयार हूं।

मणिका पत्र आया है सो साथमें है।

---

१. लीमड़ीमें प्रजामण्डलके कार्यकर्ताओं पर भारी अत्याचार करके प्रजाके आन्दोलनको दबा देनेके लिअे हो रहे जुल्मका अुल्लेख है।

दोनों लड़कियों[1] के विवाह करके अभी लिखने बैठा हूं। सादगीका कोअी पार न था। किसीको नहीं बुलाया गया। गांवके हरिजन वगैरा थे। बहुत अच्छा लगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी -- ४

१७१

सेगांव--वर्धा,
११-२-'३९

भाअी वल्लभभाअी,

आपकी तरफसे भेजे हुअे कागजात मिल गये।

मणिको बासे अलग रखनेकी बात पर विश्वास नहीं होता।[2]

२२ तारीखको कांग्रेस कार्यसमितिकी बैठक यहां हो तो बारडोलीका क्या होगा? जमनालाल लिखते हैं कि २२ तारीखको बैठक यहां है। आप अभी यहीं रहें तो कैसा हो?

बापूके आशीर्वाद

साथका पत्र पहुंचा दें।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी -- ४

---

१. सेवाग्राम आश्रमनिवासी श्री चिमनलाल शाहकी लड़की चि० शारदाका विवाह श्री गोरधनदास चोखावालाके साथ और बारडोली तहसीलकी अेक कन्या चि० विजयाका विवाह श्री मनुभाअी पंचोलीके साथ हुआ था।

२. राजकोट सत्याग्रहके समय पू० बाकी तबीयत अच्छी नहीं थी। हम दोनोंको साथ पकड़कर दूरके गांवमें हिरासतमें रखा था। वहांसे मुझे अलग करके जेलमें ले जाया गया था।

१७२

सेगांव–वर्धा,
१२–२–'३९

भाओी वल्लभभाओी,

चूडगर मेरे लिओे लेख लिखनेवाले थे अुसका क्या हुआ? वह मुझे जल्दी चाहिये। वाअिसरॉयका लम्बा पत्र आया है। अुसका जो जवाब दिया है अुसकी नकल भेजूंगा।

साथके नोटीफिकेशनवाला प्रिसेस प्रोटेक्शन अेक्ट भेज दें।

मणिको क्यों ले गये और वापस बाके पास क्यों लाये, कुछ समझमें नहीं आता। डॉक्टर कौन? नर्स कौन?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बओी – ४

१७३

सेगांव–वर्धा,
१३–२–'३९

भाओी वल्लभभाओी,

आपके पत्र मिल गये। गरासिये[1] अपनी मानी हुओी गुजारेकी जमीन-जागीर झट छोड़ दें अैसे कहां है? हम चुपचाप सहन कर लेंगे, तो सब ठीक हो जायगा।

बाका मामला जल्दी निपट गया। मणि जबरदस्त है। कब

१. 'गरासिया' गुजराती शब्द है, जिसका अर्थ होता है राजवंशके भाओी-बन्द, जिन्हें राजाकी तरफसे गुजारेके लिओे जमीन या जागीर दी जाती है।

क्या करना असकी कला अुसने हस्तगत कर ली है।[1] अपना नाम अुज्ज्वल कर रही है।

बापूके आशीर्वाद

[1]सरदार वल्लभभाअी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी – ४

१७४

वर्धा,
२२–९–'३९

भाअी वल्लभभाअी,

राजकोटका तार देख लें। जाने दीजिये। मेरे खयालसे आपको यहां रहना चाहिये, जिससे आपका बोझ हलका हो और रोज मिल कर विचार कर सकें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
बिड़ला हाअुस,
५, अल्बुकर्क रोड,
नअी दिल्ली

१७५

नागपुर,
२४–९–'३९

भाअी वल्लभभाअी,

लीलावती (मुन्शी) या हंसाबहन[2] से अभी राजकोट[3] जानेके लिअे न कहें। मैंने पेरीनबहनको लिखा तो है कि वे जायं। मुझे लगा

१. पू० बाको अकेली रखकर मुझे अुनसे अलग कर दिया, तब मैंने अुपवास किया और जब वापस अुनके पास ले गये तभी भोजन किया।

२. श्री हंसाबहन मेहता। १९३७–३९ के मंत्रि-मंडलके समय बम्बअी शिक्षा-विभागकी पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी थीं। बादमें भारतीय संसदकी सदस्या और आजकल बड़ोदा विश्वविद्यालयकी वाअिस-चान्सलर हैं।

३. चरखा द्वादशी पर राजकोट राष्ट्रीय शालामें जाना था।

कि अुन्हें लिखना चाहिये। वाड़ियाका अिनकार नहीं आया। पेरीनको लिखा है कि वाड़ियाका अिनकार आने पर वह चली जाय तो ठीक हो। अुसका जवाब आने पर लिखूंगा। तार शिमले मंगाया है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
बिड़ला हाअुस,
५, अल्बुकर्क रोड,
नअी दिल्ली

१७६

सेगांव–वर्धा,
१४–१०–'३९

भाअी वल्लभभाअी,

यह पत्र पढ़कर और अिसके बारेमें जांच करके लिखनेवालेको जवाब दे दीजिये। मैंने अुन्हें संक्षिप्त अुत्तर दिया है कि मंत्रीको लिखें। परन्तु अितना काफी नहीं। हमें अिन मामलोंकी बारीकीसे जांच-पड़ताल करनी चाहिये।

कल किशोरलाल कहते थे कि आपने कहा: "बापूने हमें जवाहरलालको सौंप दिया है', अब वे जो कहेंगे सो हमें करना होगा।" अिसे मैं मजाक ही समझूं न? मैंने आपको किसीके सुपुर्द

१. अिसके जवाबमें बापूने महादेवभाअीके पत्रमें यों लिखा था:

"बापूका पत्र मिल गया। किशोरलालभाअीने मेरे बारेमें बापूको जो कल्पना दी है, अुसमें अर्धसत्य चित्र दिया गया दीखता है। जो स्थिति बापूकी है वह हमारी नहीं है। अिसी तरह जवाहरके साथ भी हम पूरी तरह सहमत नहीं हैं। दिल बापूकी ओर है, परन्तु अुस मार्गमें सामने मोटी दीवार दिखाअी देती है। अिसलिअे रास्ता नहीं सूझता। बापूकी वफादारी conviction का सवाल है। और अपनी स्थिति तो मैंने तुम्हें बता ही दी है। अगर कार्यसमितिका वक्तव्य निकलनेसे पहले बापूने अपने आजके विचार बता दिये होते, तो दूसरी ही स्थिति होती। अब तो हम अुस वक्तव्यसे हट नहीं सकते। आगे अीश्वर जो मार्ग सुझा दे सो सही।"

नहीं किया। कल और परसों यहां रहनेवालोंके साथ खूब चर्चा हुआी। आप सब अपनी स्वतंत्रता काममें न लें और अुसकी जिम्मेदारी मुझ पर डालें तो काम नहीं चलेगा।

राजेन्द्रबाबू कल गये?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाआी पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बआी–४

१७७

सेगांव–वर्धा,
३१–१०–'३९

भाआी वल्लभभाआी,

अिस तरह क्या बीमार पड़ते रहते हैं? आपको स्वास्थ्यकी रक्षा करनी ही चाहिये। दिल्ली तार दें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाआी पटेल,
११, चौपाटी सी फेस,
बम्बआी

१७८

सेवाग्राम–वर्धा,
आजादी दिवस

भाआी वल्लभभाआी,

यह कैसे कहते हैं कि मेरे साथ बात तक नहीं हो सकती? सही बात यह है कि आपको मेरे साथ बात करनी ही नहीं होती। यह आपकी शुरूकी आदत है।

आप अभी दिल्ली न आयें यही अच्छा है। पांच तारीखको पहुंचना है। अगर बातमें कोआी दम हुआ, तो आपको तार दूंगा। तब तो सभीको बुलाअूंगा। यह मेरी राय है। परन्तु आपको आनेका खास कारण दिखाआी दे तो अवश्य आअिये। न आयें तो भी आनेकी तैयारी रखिये।

वजुभाओी[1] के बारेमें नारणदास (गांधी) को लिख रहा हूं। जमनादास (गांधी) को लिखा था। अनका अत्तर नहीं आया।

वीरावाला[2] चले गये। अब देखना है कि कौन आता है। मैसूरका बिल्कुल अजीब हाल हो रहा है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१७९

दिल्ली जाते हुअे
३-२-'४०

भाओी वल्लभभाओी,

ये आंकड़े पढ़ लिये। अिनमें दो बातें पाता हूं। तीस अुम्मीद-वारोंको पृथ्वीसिंह[3] नहीं ढूंढेंगे। आप सबको या अकेले आपको अुनका चुनाव करके भेजना है। फी आदमी बीसका खर्च बताया है। अुसमें से मुजरा कुछ भी नहीं मिलेगा? अैसा हो तो प्रति व्यक्ति बीस नहीं, परन्तु ९१५ ÷ ३० = ३०½ हुअे। सोचना है कि यह ठीक है या नहीं। स्वावलम्बी भोजनालयोंमें क्या खर्च आता होगा? परन्तु मुख्य वस्तु खर्च नहीं, अुम्मीदवारोंका चुनाव है। अुनके कहे अनुसार चुन देने हैं। मेरे कहनेका यह अर्थ न करें कि पृथ्वीसिंहका पथप्रदर्शन न किया जाय। जहां आपको रास्ता बताने लायक लगे वहां जरूर

---

१. श्री वजुभाओी शुक्ल।

२. राजकोटके दीवानके देहान्तका अुल्लेख है।

३. सरदार पृथ्वीसिंह। वे हिंसावादी थे। सरकार अुन्हें पकड़ना चाहती थी, अिसलिअे बहुत वर्ष तक छिपे रहे। पू० बापूजीसे मिलकर अुन्होंने कहा कि मेरे विचार बदल गये हैं। तब बापूजीने अुन्हें प्रगट हो जानेकी सलाह दी। प्रगट होते ही सरकारने अुन्हें पकड़ लिया। पू० बापूजीने प्रयत्न करके अुन्हें छुड़वाया। तब अुन्होंने व्यायामका काम शुरू करनेकी योजना बनाओी। अुसके संबंधमें खुलनेवाले वर्गका यह बजट है। अब वे साम्यवादी दलमें मिल गये हैं।

बताअिये। देखरेख तो आपको ही करनी होगी। दिल्ली[1] के बारेमें प्रार्थना कीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली

१८०

सेवाग्राम–वर्धा,
७–५–'४०

भाअी वल्लभभाअी,

यह पत्र लिखनेवालेने जो लिखा है अुसके बारेमें[2] आप ज्यादा समझते हैं। अिसलिअे आपके पास भेजा है। आपने दिल्लीके मेरे पराक्रम[3] तो देखे। अब विलायत तार जा रहे हैं। यहांसे १५

---

१. लड़ाअी शुरू हो जानेके बाद पू० बापूजीको वाअिसरॉयने मिलने बुलाया था। अुन्होंने अहिंसाकी मर्यादामें रहकर जो मदद दी जा सके वह देनेका वाअिसरॉयको कह दिया था। परन्तु कांग्रेस कार्यसमितिने कहा कि सरकारको अपने युद्ध-अुद्देश्य स्पष्ट करने चाहियें, तभी कांग्रेस मदद देनेका विचार कर सकती है। अिस पर बात टूट गअी।

२. अहमदाबादमें हुअी किरायेदार-परिषदके मंत्रीकी ओरसे आया हुआ पत्र।

३. फ्रांसके पतनके बाद बापूजीकी वाअिसरॉयसे हुअी मुलाकात। वाअिसरॉयने अपनी कौंसिलको विस्तृत करने और अैसे ही छोटे-छोटे सुधार करनेकी बातें कांग्रेसका सहयोग लेनेके लिअे कही थीं। पू० बापूजी यह कह आये थे कि कांग्रेसको पूर्ण स्वातंत्र्यसे कम किसी चीजसे संतोष नहीं होगा और कांग्रेस अहिंसाकी मर्यादामें रहकर जितनी नैतिक मदद दे सकती है अुतनी देगी। वाअिसरॉय अिससे खुश होनेवाले नहीं थे।

तारीखकी रातको निकलकर शान्तिनिकेतन जाअूंगा। फिर वहांसे १९ तारीखको कलकत्ता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१८१

सेवाग्राम–वर्धा,
१३–५–'४०

भाओी वल्लभभाओी,

आपको मैंने अिस बारेमें लिखा तो है। मैंने अुन्हें भी लिखा है। अिसमें नानाभाओी हैं, यह मालूम है न? अभी तो २००० रुपये भेजने पड़ेंगे। निपट लेंगे। मैं विस्तारसे लिख रहा हूं। आप भी लिखें।

चन्द्रशंकरका पत्र मैंने अभी पढ़ा नहीं। कुछ हो सकेगा तो करूंगा। राजकोटमें क्या हुआ?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१८२

सेवाग्राम–वर्धा,
३०–५–'४०

भाओी वल्लभभाओी,

मुझे पता नहीं। सुरेश[1] की मुलाकातके बारेमें महादेवने लिखा है या नहीं? सुरेश खुद अिस ओर अधिक झुके हैं। अुनकी अिच्छा सुभाषको खींचनेकी है, परन्तु वे सफल नहीं हो सकते। मैंने कहा है कि वे जब चाहें मिलने आ सकते हैं। मेरी स्थिति वे जानते हैं। अुनके प्रकाशित हुअे विचार स्पष्ट कह रहे हैं कि वे नहीं आ

१. श्री सुरेश बेनर्जी। बंगालके अेक कार्यकर्ता।

सकते। वे मानते हैं कि अुनके विचार बदले हैं। पर अिस बातमें कोअी सार नहीं दिखाअी देता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१८३

सेवाग्राम–वर्धा,
१–८–'४०

भाअी वल्लभभाअी,

साथका पत्र नड़ियादका है। कुछ करने-सोचनेकी बात हो तो देख लें।

आप बीमार पड़ते रहते हैं, यह ठीक नहीं। कुछ आराम लीजिये। परेशान क्यों होते हैं? आप जो करते हैं अुसे मैं ठीक ही मानता हूं,[1]

---

१. पिछले विश्वयुद्धमें फ्रांसका पतन हुआ, तब कांग्रेसके सामने बड़ा सवाल आ गया था। स्वराज्य लेनेके लिअे अहिंसाकी नीति पर ही डटे रहनेको सब कांग्रेसी नेता तैयार थे। परन्तु अिस लड़ाअीके संयोगोंमें दुश्मनोंके हमलेसे देशकी रक्षा करनेका प्रश्न आ जाय, देशमें अराजकता फैल जाय और अुससे जनताकी हिफाजत करनेका सवाल पैदा हो जाय, तब कांग्रेसको यह जिम्मेदारी लेनी ही चाहिये। लेकिन अहिंसाके साधनसे चिपटे रहकर वह यह जिम्मेदारी नहीं अुठा सकती, अैसा कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्योंको महसूस होने लगा था। दूसरी तरफ पू० बापूजी दृढ़तासे अहिंसा पर ही डटे रहना चाहते थे। अिसलिअे यह सोचकर कि पू० बापूजीके अूंचे आदर्श पर डटे रहनेकी हममें शक्ति नहीं है, अुन्होंने बापूजीको कांग्रेसकी नैतिक जिम्मेदारीसे मुक्त कर दिया और देशको अपनी रक्षाके लिअे हिंसाका प्रयोग करना पड़े तो अुसके लिअे अुसे तैयार करना अुचित समझा। यह प्रस्ताव राजाजीने कांग्रेस कार्यसमितिके सामने पेश किया था, जो बहुमतसे पास हो गया। पू० बापू भी राजाजीके मतके

क्योंकि आखिर तो मनुष्य अपनी प्रेरणा अथवा शक्तिके अनुसार ही चल सकता है। भूल होती हो तो वह भी करनेसे ही सुधर सकती है न? राजाजीके साथ बातें कर रहा हूं — अुन्हें पटरीसे अुतारनेकी नहीं, परन्तु अिस विषयमें कि अब क्या करना चाहिये। पटरीसे अुतारनेका प्रयत्न अभी नहीं करना है। वह तो अनुभवसे होगा। मुझे बिलकुल शक नहीं है। राजनीति भी मेरे मार्ग पर ही है। परन्तु यह बात अभी नहीं। जब आना हो, आ जाअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१८४

सेवाग्राम,
२२–९–'४०

भाअी वल्लभभाअी,

अब तो आप यहां आने ही क्यों लगे? मैंने कल आपके आनेका अिन्तजार किया था। अब बुधवारको यहांसे चलूंगा।

किरानेके व्यापारी ७१ गायोंका दान[1] करेंगे। शामलदासने संदेश

थे। परन्तु बापूजीसे अलग होना पड़ा, अिससे अुनको भारी परेशानी और दुःख रहता ही था। अुसीका अिस पत्रमें अुल्लेख है। बापू तो पू० बापूजीका अनुसरण करनेको पूरी तरह तैयार थे, परन्तु बापूजी अुन्हें आग्रहपूर्वक कहते थे कि यों आंखें बन्द करके मेरा अनुसरण करनेसे मेरे प्रति वफादार रहे नहीं माने जाओगे। अिससे न आपको लाभ होगा, न आप देशका कोअी लाभ करेंगे। मेरी बात आपकी बुद्धि मानती हो, तो ही आप मेरा अनुसरण करें; नहीं तो आपका धर्म है कि आप राजाजीके प्रस्तावमें पूरी तरह शरीक हो जायं।

१. पू० बापूजीकी ७१ वीं जयंतीके निमित्त।

मांगा है, अिसलिअे भेज दिया है।[1] अिसमें कही बात दानियोंको समझाअिये। दानके साथ कोअी शर्त रखें तो स्वीकार न कीजिये। अुसका अुपयोग गोरक्षाके काममें ही जहां करना होगा करूंगा। अितनी बात है कि गायें लेना अुचित है। परन्तु यह विचारनेकी मुझे छूट होनी चाहिये कि गायें कहां दी जायं।

आशा है आप सर्वथा ज्वर-मुक्त होंगे। और भी सब अच्छे हो गये होंगे। मैं जानता हूं कि राधाकी आप अच्छी तरह देखभाल करेंगे। अुसके रोगकी बात सुनकर मगनलालकी तस्वीर मेरे सामने खड़ी हो गअी है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. वह सन्देश नीचे दिया जाता है:

सेवाग्राम,
वर्धा होकर

जिस सभाके अध्यक्ष सरदार हों, अुसे क्या संदेश भेजा जाय? फिर भी मांग हुअी है अिसलिअे भेज रहा हूं। मैं अमनेको अुत्तम गोसेवक मानता हूं। अिसलिअे अुनके दानका अच्छा ही अुपयोग होगा। परन्तु अुन्हें जानना चाहिये कि वे स्वयं गोमाताका दूध न पीते हों और गोमाताके दूधका ही घी न खाते हों, तो दानमें मिली हुअी ७१ मातायें किसे दूध पिलायेंगी?

मो० क० गांधी

१८५

(पुर्जा)

सेवाग्राम–वर्धा,
१९४०[1]

राजकुमारी[2] को रखना है, अिसका अर्थ यह है कि सब (जेलमें) जायं। मैं भी चला जाअूं तो वह बाहर रहकर छोटे-छोटे काम संभालती रहे। अितना करनेकी शक्ति अुसमें है। यहां पड़ी रहेगी। अगर सरकार ही गोलियां चलावे तो वह सामने खड़ी होकर मरेगी। मेरा विश्वास है कि अुसमें अितनी हिम्मत है। न भी हो तो कुछ बिगड़ेगा नहीं।

१८६

(पुर्जा)

वल्लभभाअीसे कहना कि मैं सरकारके प्रति दिन-ब-दिन सख्त होता जा रहा हूं। अभी तो जिनके लिअे सोचा है वे जायं। मुझे नहीं पकड़ा तो सभीको और जितनोंको चाहेंगे अुतनोंको भेज दूंगा। मुझे पकड़ लेंगे तो सब कुछ अीश्वरके हाथ है।[1]

---

१. १९४० के नवम्बर मासके दूसरे पखवाड़ेमें लिखा हुआ है।

२. व्यक्तिगत सविनय कानून भंग शुरू करनेका जो निर्णय किया अुसके सिलसिलेमें है। अुसमें राजकुमारी अमृतकुंवरको सत्याग्रह क्यों न करने दिया जाय, अिस बारेमें बापूजी द्वारा मौनमें लिखी गअी सूचनायें।

३. नवम्बर १९४० के दूसरे पखवाड़ेमें लिखा गया है।

१८७

सेवाग्राम–वर्धा,
१३–११–'४०

भाअी वल्लभभाअी,

आपका कार्ड[1] मिला। आपका महादेवके नामका पत्र भी मिला। महादेवसे आपने जान तो लिया ही होगा। वह सबसे मिल रहे हैं।

---

१. वह पत्र नीचे दिया जाता है:

अहमदाबाद,
१०–११–'४०

पू० बापूजी,

आज सुबह बम्बअीसे यहां आया। यहां चार-पांच दिनका काम है। अुसे पूरा करनेके बाद १५ तारीखको गणेश-पूजन[2] करके ५ तारीखको यात्रा शुरू करनेका अिरादा है। कल सबसे मिलनेके बाद अिसमें कोअी फेरबदल करनेकी जरूरत पड़ेगी, तो अेकाध दिनका फेरबदल कर लूंगा। वैसे यह दिन निश्चित रखना है। महादेव दिल्लीमे लौटें अुसी दिन यहां आ जायं तो अच्छा। यहांके बारेमें कुछ विचार करना है, अुसमें भी अुनसे मदद मिलेगी।

अिस प्रलयकालमें अुपवासकी जल्दी न करके अिस चीजको सच्चे रूपमें समझनेके लिअे संसारको अनुकूल समय मिलना चाहिये। आज दुनियामें लोग विकराल पशुओंका रूप धारण किये बैठे हैं। अैसे समय बड़े धीरज और खामोशीकी जरूरत है।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

पू० महात्मा गांधीजी,
सेवाग्राम, वर्धा

---

२. १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रहके समय तय हुआ था कि जिला मजिस्ट्रेटको सविनय-भंग करनेकी तारीखकी सूचना पहलेसे देनी चाहिये। अुसीके अनुसार दी जानेवाली सूचना।

अुसी समय सब जेलमें जाना शुरू कर दें, यह ठीक नहीं लगता। महादेव वहां आ जायं, अुसके बाद कीजिये। मेरी भी जरूरत जान पड़े तो आप आ जाअिये, वर्ना महादेवको तो भेज ही दूंगा। वहां सीधे आ जायं तो वे मेरा अन्तिम निर्णय नहीं ला सकेंगे। अिसलिअे तारीख कुछ बदलनी पड़े तो बदल लें। बरारमें भी अच्छी तैयारी हो रही है। बम्बअीके पाटील[1] का पत्र आया है। अुसका जवाब अुन्हें भेज रहा हूं। मैं समझता हूं आप अुसे देख ही लेंगे।

महादेव शुक्रवारकी रातको पहुंचेंगे। मंगलदास (पकवासा) और दादा (मावलंकर) गवर्नरको लिखें[2], यही ठीक लगता है। अुनको त्यागपत्र देनेकी जरूरत तो नहीं है, परन्तु अुनका पत्र थोड़ी दलीलके साथ जाय तो अच्छा रहे। मैं देख रहा हूं कि आप मुझसे मसौदेकी आशा रखते हैं। आज नहीं भेजूंगा; दूसरे काम हैं। महादेवके साथ भेजूं तो चलेगा न? हो सका तो आज ही भेज दूंगा। वर्गके (यह तय हुआ था कि अमुक लोग जायं और अमुक क्रममें जायं) बाहरवाले जा तो सकते ही हैं। मेरा विचार अुनको आप सबके जानेके बाद भेजनेका है। परन्तु वहांके हालातको देखते हुअे आप अुन्हें भेजनेकी जरूरत समझें तो भेज दें। नरहरिको अभी अिसमें न घसीटनेका मेरा आग्रह है। अुनके न जानेसे कोअी नाराज हो, तो यह दुःखकी बात होगी।

रफी[3] ने मेरा सिर्फ आध घंटा लिया। मेरे विचार ही मालूम

---

१. श्री सदोबा पाटील। बम्बअी प्रान्तीय कांग्रेस समितिके अध्यक्ष। तीन वर्ष बम्बअी कारपोरेशनके मेयर रहे। आजकल संसदके सदस्य हैं।

२. ये दोनों क्रमशः बम्बअी कौंसिलके और असेंबलीके अध्यक्ष थे। मंत्रियोंने त्यागपत्र दे दिये थे, परन्तु अिनके लिअे तय किया था कि त्यागपत्र न दें। फिर भी अिन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रहमें तो भाग लेना ही था। कानून तोड़नेसे पहले अिन्हें गवर्नरको पत्र लिखना था।

३. श्री रफी अहमद किदवाअी। अुस समय अुत्तर प्रदेशके अेक मंत्री। आजकल केन्द्रीय सरकारके अन्न-मंत्री।

किये। जवाहरलालने सबसे कह दिया है कि मैं जैसा कहूं, वैसा चुपचाप करते रहें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
डॉ० कानूगाका बंगला,
अेलिसब्रिज, अहमदाबाद

१८८

सेवाग्राम,
९-३-'४१

भाओी वल्लभभाओी,

मैं जानबूझ कर ही आपको नहीं लिखता। महादेव दिल्लीमें हैं। अिसलिअे डाह्याभाओीके अक्षर देखकर लिखनेका मन हो गया है। सब ठीक चल रहा है। अच्छे लोगोंमें कुछ बुरे[१] भी आ ही जाते हैं। पर अिस बार बहुत ही कम हैं। लम्बा तो चलेगा, परन्तु अिसीमें हमारा हित है। हारनेकी कोओी बात नहीं है। वहां सब ज्ञान और श्रद्धा-पूर्वक कातते होंगे। मेरा विश्वास तो अपने स्वभावके अनुसार चरखेमें बढ़ता ही जा रहा है। भारतानंद[२] की छोटी-छोटी खोजें सब कुछ बड़ा सस्ता कर डालती हैं। मेरा स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहता है।

सबको
बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
यरवडा सेंट्रल प्रिज़न,[३]
पूना

---

१. व्यक्तिगत सविनय-भंगमें सत्याग्रहियोंको चुन-चुनकर भेजा जाता था। फिर भी कुछ अवांछनीय लोग आ गये थे। अुन्हींका अुल्लेख है।

२. मॉरिस फ्रीडमैन। पोलैण्डके निवासी। मैसूर राज्यमें अिंजीनियर थे। नौकरी छोड़कर पू० बापूजीके पास सेवाग्राममें सस्ता चरखा बनानेके प्रयोग करते थे। धनुष तकलीके नामसे जो चरखा मशहूर है, वह अिन्हींका आविष्कार है।

३. पू० बापू १७-११-'४० को व्यक्तिगत सविनय-भंगकी लड़ाओीमें पकड़े गये थे और १९-८-'४१ को बीमारीके कारण छोड़ दिये गये थे।

१८९

सेवाग्राम–वर्धा,
७–५–'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपका अुत्तर मिला था। मणिबहनके नाम पत्र लिख रहा हूं। अिसलिअे आपको भी लिख रहा हूं। मेरी गाड़ी चल रही है। स्वास्थ्य अुत्तम रहता है। गरमीमें कोअी नुकसान होता नजर नहीं आता। ठंडा कपड़ा सिरकी रक्षा करता है।

मेरा मन अब कहीं न कहीं सफर करनेकी तरफ झुका है। जहां भगवान ले जायंगे वहां जाअूंगा। नजरमें तो अहमदाबाद, बम्बअी और बिहार हैं। देखता हूं। हमें सुलहका रास्ता ढूंढ़ना चाहिये। अथवा कांग्रेस अुसे ढूंढ़नेमें स्वाहा हो जाय। मेरे सामने तो यही मार्ग हो सकता है न? परन्तु वह अीश्वर बताये तब मिले। अिस प्रकार न मुझे घबराहट है, और न कोअी चिन्ता। देखता रहता हूं और कर्तव्यपरायण रहनेकी कोशिश करता हूं।

मेरे लिखनेका कोअी अर्थ न निकालें। जितना मुझे सूझा अुतना सब लिख डाला है।

सबको
बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
यरवडा सेंट्रल प्रिज़न,
पूना

१९०

सेवाग्राम,
३१–५–'४१

भाअी वल्लभभाअी,

मणिबहन कल आअी। दुबली खूब हो गअी है। अैसी हालतमें मैं तो अुसे तुरन्त वापस भेज देता, परन्तु मैं मानता हूं कि

अहमदाबादमें वह बहुत काम[1] कर सकेगी। अिसलिअे वहां जानेको कहा है। दो-तीन दिन बम्बअीमें रह लेगी।

मणि कहती है कि स्त्री-विभागमें पाखानोंकी असह्य अड़चन है। अिसके लिअे आपको वहां लड़ना चाहिये। अिसमें खर्चकी बात कम दीखती है। केवल लापरवाही या आलस्य ही जान पड़ता है। मेरे खयालसे आप विवेकपूर्वक बीचमें पड़कर सुधार करा सकेंगे। मणि कहती है कि हंसाबहनने जो लिखा[2] है वह तो कम है।

दंगोंसे आपको जरा भी चिन्ता न होनी चाहिये। जो होना है सो होगा। मैं तो मानता हूं कि लड़ाअी ही शुरू हो गअी है। यह देखना है कि वह हम सबको कहां तक ले जाती है। अिसमें किसीका सोचा हुआ कुछ चलनेवाला नहीं है। मैं तो बिलकुल निश्चिन्त बैठा हूं। शक्तिके अनुसार रास्ता बता रहा हूं। जरूरत हुअी तो अहमदाबाद या बम्बअी या अन्यत्र भी जाअूंगा।

जय तो सत्य और अहिंसाकी ही है। सत्य और अहिंसा हममें हैं या नहीं, अिसका पता चल जायगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
यरवडा सेंट्रल प्रिज़न,
पूना

१९१

सेवाग्राम,
१४-८-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र कल मिला। पढ़कर दुःख हुआ। आपका स्वास्थ्य कमजोर हो जानेकी बात तो महादेवने लिखी ही थी। परन्तु आपका पत्र अुससे भी ज्यादा बिगाड़ होनेकी सूचना दे रहा है। और अैसा

---

१. अुस समय अहमदाबादमें हिन्दू-मुसलमानोंके दंगे बन्द हो चुके थे, परन्तु लोगोंमें भयका वातावरण था।

२. यरवडा जेलमें स्त्री-विभागकी गंदगी वगैराके विषयमें।

ही हो, तो डॉ० गिल्डरका वहां होना किस कामका? अगर वे आपको न सुधार सकें तो अुन्हें मौकूफी मिलेगी।

स्वयं मुझे तो फलोंके रस पर रहना पसन्द है। आंतोंमें कुछ होगा तो सफाओी हो जायगी। अंगूरका, मोसंबीका, अनारका, अनन्नासका जितना रस पिया जा सके, अुतना पीनेसे लाभ होना ही चाहिये। काफी रस पिया जाय — कहिये साठ औंस; — तो कमजोरी आनेका कोअी कारण न रहे। अिसीके साथ रातको पेड़ पर मिट्टीकी पट्टी बांधें तो मैं मानता हूं कि अवश्य फायदा होगा। बीमारीके कारण आपको छुट्टी मिलनेकी नौबत हरगिज न आनी चाहिये। मुझे बराबर समाचार भेजते रहिये। कुछ नहीं तो कार्ड द्वारा ही।

गुजरातके सेवकोंकी अच्छी तरह परीक्षा हो रही है। वे काम ठीक कर रहे जान पड़ते हैं। महादेवको भी अच्छा अनुभव मिल रहा है।[1] मुझे खास हर्ज नहीं होता। किशोरलालभाअी यहीं रहते हैं। अुनकी मदद तो मिलती ही रहती है। साधारण तौर पर अुनकी तबीयत ठीक कही जा सकती है।

बामें काफी शक्ति आ गअी है। लगभग पौन मील चल लेती है। काम तो दिन भर करती ही है। काफी खा लेती है। बिलकुल चिन्ताकी बात नहीं।

जमनालालजी भी अच्छे हैं। शिमलाकी हवा खा रहे हैं। शक्ति आती जा रही है। राजकुमारीके कैदी हैं। वह जो खिलाती है सो खाते हैं। रोज आठ मील घूमते हैं। शतरंज वगैरा खेलते हैं और मौज करते हैं। अुन्हें जरूरी वातावरण मिल गया है।

जानकीबहन और मदालसा[2] मेरे साथ हैं और मेरे ही साथ खाती हैं। जानकीबहन तो चार-पांच मील तेजीसे दौड़ सकती हैं। मदालसाको सातवां महीना है। मुंहमें छाले वगैरा हो गये थे, जो अब मिट गये हैं। अिस बार प्रसूति निर्विघ्न होनेकी संभावना है।

---

१. गुजरात बाढ़-संकटके कामके लिअे चन्दा करनेका।

२. जमनालालजीकी पुत्री।

गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ टागोर) के चले जानेसे मुझ पर दीनबन्धु[1] कोष जल्दी जमा करनेकी जिम्मेदारी आ गअी है। अीश्वर करे सो सही।

अभी कुसुम (देसाअी) यहीं है। थोड़ी-थोड़ी मदद देती है। कदाचित् महीना-बीस दिन रहेगी। संभव है अधिक भी रहे। जितना चाहे रहे। आपके सब साथियोंको और आपको

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१९२

सेवाग्राम,
२१-८-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

मुझे तो डर था ही कि आप छूटेंगे। वे भी क्या करें? अब तो बिलकुल अच्छे होकर ही काममें लगें। काम तो बहुत है। ऑपरेशन हुअे बिना मुझे चैन नहीं पड़ेगा। समाचार बराबर भिजवाते रहिये। मेरा पत्र क्या वे लोग आपको सचमुच देते थे?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१९३

सेवाग्राम,
३१-८-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। अभी मैं आपके पत्रोंकी आशा नहीं रखता। विनयपूर्वक डॉक्टरोंके पंजेसे छूट सकें और यहां आ सकें, तो मुझे अच्छा लगेगा। मैं मानता हूं कि आपकी आंतोंको मिट्टी वगैराके अुपचार और भोजनके परिवर्तनोंसे अच्छा किया जा सकता है।

---

१. अेण्ड्रूज स्मारक कोष।

आयुर्वेद पर मेरा बहुत विश्वास नहीं जमता। वैद्य पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं करते। अुनकी कुछ दवाअियां असर करती हैं, परन्तु मैंने यह अनुभव नहीं किया कि वे यह जानते हों कि दवाअियां कैसे काम करती हैं। ये तो मेरे तर्क हैं। आपको जिससे सन्तोष हो वही कीजिये। मैंने सिर्फ अपना विचार बताया है। किसी भी तरह अच्छे अवश्य हो जाना चाहिये। मैं आपको अेक घंटा पाखानेमें तो हरगिज नहीं बैठने दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१९४

सेवाग्राम,
१४-९-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। सूबेदार[1] को अुत्तर भेज दिया है। अुसकी नकल भेज रहा हूं। मानता हूं कि वे समझ जायंगे। हमें तो सभी किस्म और शक्तिके आदमियोंसे मिल सके अुतना काम लेना है।

अिस समय आप चिन्ता न करें। तबीयत बिलकुल सुधरनी ही चाहिये। होमियोपैथीसे आप अच्छे हो जायंगे, तो मेरा अुस पर कुछ विश्वास जमेगा। मुझे अुस पर कभी विश्वास हुआ ही नहीं। अेक मामला अुसके जानकारको सौंपा, परन्तु कुछ भी परिणाम न निकला। तारा[2] को सौंपा था। पर यह तो यों ही लिख दिया है। मैं चाहता हूं कि आपको होमियोपैथीसे लाभ हो। अुसकी तारीफ तो बहुत सुनी है। दास[3] अुसमें विश्वास रखते थे, मोतीलालजी और गुरुदेव भी। हमारे लक्ष्मीदास भी तो अुसी पर भरोसा करते हैं।

---

१. श्री मनु सूबेदार। बम्बअीके प्रसिद्ध अर्थशास्त्री।

२. श्री ताराबहन मशरूवाला। किशोरलालभाअीकी भतीजी। मध्यप्रदेशमें कस्तूरबा स्मारक निधिकी अेजेन्ट।

३. स्व० देशबन्धु दास।

परन्तु अन्तमें सब अेलोपैथीके द्वार पर आ खड़े होते हैं। यह सब मैंने व्यर्थ लिख दिया है, परन्तु जाने देता हूं। हमें तो कामसे मतलब है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

[१४–९–'४१ के पत्रके साथवाला पत्र]

सेवाग्राम,
१४–९–'४१

भाअी सूबेदार,

आपका पत्र मिला। मेरे खयालसे आप फिर फंस गये हैं। कायदे आजमने अेक भी बात निश्चयपूर्वक नहीं कही। अुन्हें दो राष्ट्रोंकी बात सिद्ध करनी है और देशका बंटवारा कराना है। जैसे कोअी दो भाअियोंको अलग करना चाहे तो अुसकी बात नहीं सुनी जाती, वैसी ही यह है।

कांग्रेस पर लगाये गये अिल्जाम झूठे साबित हो गये हैं। परन्तु न हुअे हों तो पंचके सामने रखे जा सकते हैं।

सरकार और कांग्रेसके बीच रहकर जहांसे ज्यादा मिल जाय, वहांसे ज्यादा लेकर आगे बढ़नेकी नीति जब तक वे बरतेंगे, तब तक समझौता असंभव समझना चाहिये। अिस नीतिसे पेट भर ही नहीं सकता।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि सिन्ध, ढाका और अहमदाबादके दंगे केवल कांग्रेसको दबानेके लिअे थे। फिर भी मैं अुन्हें छोड़नेको तैयार हूं। यानी जितनी झगड़ेकी बातें हैं, वे सब पंचके सामने रख दी जायं। मेरा खयाल है कि अिसके बिना कुछ नहीं हो सकता।

यह भी याद रखिये कि सारे प्रश्नोंका अंतिम निपटारा लोग अपने आप कर लेंगे और हम सब बीचमें लटकते ही रह जायंगे। अिसलिअे मेरी तो यह सलाह है कि आप अिस बातसे अपना हाथ खींच लीजिये या कुछ मौलिक सिद्धान्तोंको लेकर बात कीजिये। अेक

पर भी डटे रहें तो काफी है। जब तक वे आपसमें ही समझौतेका निश्चय न करें, तब तक कोअी बात नहीं हो सकती।

बापूके आशीर्वाद

१९५

सेवाग्राम,
१८–९–'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। अब तो होमियोपैथीका पूरा अिलाज कर लेना ही ठीक है। थोड़ा समय लगे तो लगे। लाभ अवश्य हो रहा है, यह दीखने तक धीरज रखना ही चाहिये।

. . . से मिले यह ठीक हुआ। अुनका कुछ ठिकाना नहीं दीखता। वालजीका कुछ पता नहीं चलता। बहुत भरमा गये हैं। मैं मानता हूं कि वे भी ठिकाने आ ही जायंगे।

लीलावती[1] का मामला समझा। आप अुसे हाथमें ले लें तो मैं क्यों चिन्ता करूं? अुसकी चिन्तामें आपको मैं डालना नहीं चाहता था। वह मेहनती और चंचल है। पास हो जाय तो अच्छा। कुछ थक गअी है।

भानुमती[2] ठीक होगी। लड़की[3] क्या चली ही जायगी?

अब भूलाभाअी मुक्त हुअे? वे बहुत दुर्बल हो गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. आश्रमकी बहन लीलावती आसर। अुसकी पढ़ाअीका अिंतजाम बापूको सौंपा था।

२. डाह्याभाअीकी पत्नी।

३. डाह्याभाअीकी पुत्री। वह बीमार थी।

१९६

सेवाग्राम,
१९-९-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

खानबहादुर[1] (अलाबख्श) के साथ जी भरकर बातें की हैं। अब वे कराची जा रहे हैं। वहांसे मौलानाके पास जायंगे। मेरा तो दृढ़ मत है कि कांग्रेसको असेम्बलीसे निकल जाना चाहिये। खान-बहादुरको भी, यदि वे कांग्रेसके हों तो, अैसा ही करना चाहिये। सिन्धमें कांग्रेस लड़ाअीमें मदद दे और दूसरी जगह न दे, अिसका अर्थ बहुत बुरा होगा — हो रहा है। अिस स्थितिको बनाये रखनेसे न तो देशका कोअी लाभ है, और न सिन्ध, हिन्दू या मुसलमानका। गलत कदमसे किसे लाभ हो सकता है? लड़ाअी न हो, तो भी मेरा मत तो यही है कि कांग्रेस सिन्धकी असेम्बलीसे बाहर निकल जाये। परन्तु यह बात अिस समय गौण है। आप चाहेंगे तो अिस बातकी अधिक चर्चा कर लेंगे। अभी तो मैंने अपना मानस आपको बता दिया है, ताकि आप खानबहादुरको अच्छी तरह समझ सकें। खानबहादुर कहते हैं कि मेरी बात अुनके गले अुतर गअी है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१९७

सेवाग्राम,
२२-९-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपकी गाड़ी अभी पटरी पर लगी नहीं दीखती। मैं चाहता हूं कि पन्द्रह दिनमें निश्चयपूर्वक न कहा जा सके तो यहां आ जाअिये। अगर आने-जाने लायक स्थिति हो गअी हो तो थोड़े दिन रह जायं,

---

१. अुस समय सिन्धके प्रधान मंत्री। कांग्रेसके प्रति सहानुभूति रखते थे। अिसलिअे विरोधियोंने अुनकी हत्या कर डाली थी।

यह भी ठीक होगा। आपको जो पसन्द हो वही कीजिये। राजेन्द्रबाबू दिन प्रतिदिन अच्छे होते जा रहे हैं। अब रोज आते हैं।

महादेवका पत्र साथमें है। वहांसे जहां भेजना हो वहीं भेज दें।

प्रेमा कंटक आपसे मिली होगी। अुसका काम नियमपूर्वक चल रहा है।

अलाबख्शका क्या हुआ? मुझे तो विश्वास है कि कांग्रेसको हाथ खींच लेना चाहिये। राजेन्द्रबाबूको अिसमें कुछ शक है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
वम्बअी

१९८

सेवाग्राम,
२५-९-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

नानीबहन झवेरी चली गअी। यह समझमें आने जैसी बात नहीं है। परन्तु यह अीश्वरीय कार्य है, जिसे हम समझ नहीं सकते।

अलाबख्शकी बात समझा। मैंने तो कह ही दिया है कि मौलानाका कहना अवश्य मान्य रखना है। परन्तु साथ-साथ यह भी कह दिया है कि वे खुद छोड़नेका औचित्य समझ गये हों, तो वही बात मौलानाको समझाकर अपना पद छोड़ दें और कांग्रेसके साथ वनवास भोगें। अिसमें तो वचनभंगका या दूसरा कोअी दोष नहीं होता। परन्तु अिसे जाने दीजिये। आयेंगे तब गुण-दोष पर थोड़ी चर्चा कर लेंगे। सिन्धके विषयमें मेरी राय नअी नहीं है। परन्तु वही दृढ़ बनी है और सब प्रान्तोंको लागू होती है। मुझे कोअी जल्दी नहीं है। हममें से बहुतेरे यह समझें, तो ही अुस पर अमल किया जा सकता है। बहुतोंमें मौलाना भी आ जाते हैं।

आपके स्वास्थ्यके लिअे होमियोपैथी जितना मर्यादित समय मांगे, अुतना भले ही अुसे दीजिये। हजीराके पानीकी ख्याति तो सुनी है। देवलालीका मुझे पता नहीं। हजीरा आपको सध जाय, अिसकी

संभावना तो हैं। वैसे प्राकृतिक चिकित्सा तो है ही। परन्तु पहले हम थोडे मिल अवश्य लें।

अुस वेबी (डाह्याभाअीकी) का मामला तो लम्बाता ही जा रहा है। मणिबहनके पत्रसे मालूम होता है कि शायद बच भी जाय।

राजेन्द्रबाबू ठीक हैं। जमनालालजीके लिअे यह तो नहीं कहा जा सकता कि वे बिलकुल चंगे हो गये।

भूलाभाअी अच्छे हो जायं तो ठीक।

मणिको अलग पत्र नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

मैं देख रहा हूं कि दीनबन्धु स्मारकके लिअे मुझे प्रवास करना पड़ेगा। अक्तूबरके मध्यमें शुरू करनेकी अिच्छा है।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१९९

सेवाग्राम,
२६-९-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। मैंने कल जो लिखा अुस परसे मेरा विचार तो आपने जान लिया। आप मानते हैं अुतनी गरमी यहां नहीं है। रात तो सुन्दर होती ही है। बंगलेमें मच्छर जरूर हैं। अगर सेवाग्राममें रहें और आकाशके नीचे सोयें, तो मच्छर तंग नहीं करेंगे। और सब सुविधा तो है ही। अिसलिअे दो-तीन दिन यहां बितायें तो अच्छा। देवलालीकी बात मुझे जंच नहीं रही है। हजीरा तो प्रसिद्ध है ही।

सत्यमूर्ति[1] लिखते हैं कि असेम्बलीमें जानेकी अनुमति मिलनी चाहिये। मुझे तो यह पसन्द नहीं है। आपकी राय बताअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. स्व० सत्यमूर्ति। बड़ी धारासभाके सदस्य थे।

२००

सेवाग्राम,
२–१०–'४१

भाअी वल्लभभाअी,

अब तो आप आनेकी तैयारीमें होंगे। मथुरादास बहुत बीमार हो गये हैं। किसीको अुनके पास भेज दें तो अच्छा हो। मैंने राधाको तो लिखा है। जमनालालजीको भेजनेका विचार कर रहा हूं। आपका ठीक चल रहा होगा।

गोसेवा-संघ नया स्थापित किया है। जमनालालजीके लिअे यह नअी साधना है।

बापूके आशीर्वाद

जमनालालजी कल रवाना होंगे। वहां होकर मथुरादासके पास जायंगे।

आपका पत्र मिला। महादेवको दूसरे दर्जेका ही सफर कराना पड़ेगा। अेण्डूज़ (स्मारक) का काम कैसे चलता है?

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२०१

सेवाग्राम,
४–१०–'४१

भाअी वल्लभभाअी,

अब तो जल्दी ही मिलेंगे। फिर भी अेक बात लिखता हूं। मणिबहन लिखती है कि . . . मजदूरोंके विरुद्ध मालिकोंकी तरफसे (अेक मुकदमेमें) खड़े होंगे। यह न मानने जैसी बात है। फिर भी मणि अैसी भूल कैसे कर सकती है? अिसलिअे पहले तो मैंने . . . को लिखनेका सोचा। फिर सोचा कि आपके वहां मौजूद रहते हुअे मेरे लिखनेकी क्या जरूरत? आप ही अिसका निपटारा कर सकते हैं। मणिकी बात ठीक हो तो . . . को बुलाकर आप कहिये। वे खड़े हों तो मजदूरोंकी तरफसे हों। मालिकोंकी तरफसे खड़े हो ही नहीं सकते। दूसरी बात यह भी है कि मेरी समझके अनुसार . . .

वकालतके धंधेमें नहीं पड़ेंगे। अुन्होंने तो देशसेवाका व्रत लिया है। कोअी खास मुकदमा आ जाय तो ले भी लें। परन्तु यदि दूसरे वकीलोंकी तरह प्रैक्टिस शुरू कर दें तब तो बड़े निन्द्य बन जायंगे। मेरी समझ साफ है कि वे प्रैक्टिसमें हरगिज नहीं पड़ेंगे। नैतिक स्पष्टताके खातिर कांग्रेससे निकले हैं। अिसके सिवा तो कांग्रेसके ही हैं। कल्पना यह है कि अुसमें से निकलकर मेरी तरह ज्यादा कांग्रेसी बन गये हैं। मुझे वे सरल प्रतीत हुअे हैं, हृदयकी बात समझनेवाले हैं, त्यागशक्तिवाले हैं, भूल सुधारनेवाले हैं। आप पर भी अैसा ही असर पड़ा हो, तो आप अुन्हें बुलाकर स्पष्टीकरण कर लें। हमारा बर्ताव अुनके प्रति यह समझकर हो कि वे कांग्रेसी हैं।

अेक बात और। आप जानते हैं कि मौलाना चाहते हैं कि . . . धारासभासे हट जायं। मैंने जरूरी नहीं समझा। राजेन्द्रबाबूने नहीं समझा, प्रोफेसरने नहीं समझा, और मैं समझता हूं कि आपने भी नहीं समझा। यह ठीक है? अिसमें सुधार करनेकी जरूरत है?

बापूके आशीर्वाद

मदालसाके लड़का होनेका पता चला? वह सकुशल है।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२०२

सेवाग्राम,
५-१०-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपके दोनों पत्र मिले। भले ही नासिक रह आअिये। मुझे तो यह चाहिये कि आप अच्छे हो जायं। अेक तन्दुरुस्ती हजार नियामत। मथुरादास बच जायं तो बड़ा अच्छा हो। मदालसा और बच्चा आनन्दमें हैं। मैं तो देखने नहीं गया। मेरा कलका पत्र मिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२०३

सेवाग्राम,
८-१०-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र समझा। . . . से तो मिलनेकी जरूरत है ही। मैं अुनके पीछे अवश्य पड़ूंगा। भूलाभाअीके मामलेमें आपको जरा भी फंसाना नहीं चाहता। अुनके बारेमें जो होगा वह करूंगा।

राजाजी[1] अभी नहीं आ सकते। अुनके भाअीके दो जवान, खूब पढ़े-लिखे लड़के अभी-अभी मर गये। अुनके यहां और भी दो तीन आदमियोंने बिस्तर पकड़ लिया है। अिसलिअे पहले तो वे बंगलोर जायंगे। वहां कुछ दिन रह आयेंगे। आपको भी अुन्होंने समाचार तो जरूर दिया होगा। मैं भी चाहता हूं कि आपको यहां दो बार न आना पड़े। अिसलिअे भले ही राजाजी वगैरा आयें तब आअिये। सत्यमूर्ति तो १० तारीखको आ ही रहे हैं। कमलादेवी (चट्टोपाध्याय) कल आयेंगी। प्रकाशम्[2] जरूर आयेंगे। आसफअली जवाहरलाल और मौलानासे मिलकर आयेंगे। अिसलिअे मेला तो अच्छा हो जायगा। सबसे निपट लूंगा।

आपका धर्म तो स्वस्थ हो जाना है।

आश्रम पर लोगोंने धावा बोल दिया है। लोगोंकी मांग आती ही रहती है। मैं अधिकतर सबको अिनकार करता हूं। जगह भी कहां है? मकान बनते ही रहते हैं। फिर भी भरा हुआ रहता है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
बिड़ला हाअुस,
नासिक रोड, नासिक

---

१. व्यक्तिगत सत्याग्रहमें पकड़े जाकर राजाजी ता० ६-१०-'४१ को जेलसे छूटे थे।

२. श्री टी० प्रकाशम्। आंध्रके नेता। अुस समय मद्रास राज्यके अेक मंत्री।

२०४

सेवाग्राम,
१०-१०-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

यह पत्र पढ़िये और रास्ता बताअिये।

सत्यमूर्ति आज आये हैं। कल अपना मामला सुनायेंगे।

आपका हाल ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

बियाणी[1] आ गये हैं। अमरावतीमें कहर[2] टूट पड़ा।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
बिड़ला हाअुस,
नासिक रोड, नासिक

२०५

सेवाग्राम,
१३-१०-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

*　　　*　　　*

धीरुभाअी[3] की बात समझ गया। आप अिससे बिलकुल अलग रहिये। होना कुछ नहीं है। मेरा जो भी अधिकार है, अुसका आधार ही दूसरा है। तब क्या हो?

सत्यमूर्ति आपसे मिले? कहा तो था। वे स्पष्ट हैं। मिल जाय तो आज पद ले लें। मगर कांग्रेसके विरुद्ध कुछ न करेंगे। कांग्रेसके सिवा अुनकी कोअी गति नहीं।

---

१. श्री ब्रजलाल बियाणी। विदर्भके अेक नेता। अभी मध्य-प्रदेशमें अर्थ-मंत्री।

२. अमरावतीमें हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ था।

३. स्व० धीरुभाअी देसाअी। स्व० भूलाभाअी देसाअीके पुत्र। स्विट्ज़र्लैण्डमें हमारे राजदूत थे।

फरीद अन्सारी[1] कल आये। वे अपनी बहनसे मिलने आज हैदराबाद जायंगे और लौटकर यहां आयेंगे। आज तो सोमवार है न?

आपका स्वास्थ्य कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
बिड़ला हाअुस,
नासिक रोड, नासिक

२०६

[पत्र हाथों हाथ पहुंचाया दीखता है। डाककी मुहर या टिकट नहीं है।]

आश्रम,
शनिवार

भाअी वल्लभभाअी,

सुना है आज आपका जन्मदिवस है। अिसलिअे सेवाके वर्षोंमें से अेक वर्ष तो गया। अैसे अनेक वर्ष जायं, अैसी कामना करना यह कहनेके बराबर है कि आप दीर्घायु हों। देखना, हमें स्वराज्य लेकर ही जाना है।

बापू

२०७

सेवाग्राम,
५-१२-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र और रिपोर्ट (डाक्टरकी) मिली। अिससे पहले महादेवके दो पत्र मिले। मेरे पहुंचने तक कोअी फेरबदल न किया जाय। डॉ० गिल्डरके साथ बात करूंगा। मैं अपना विश्वास नहीं छोड़ सकता। जो भोजन लिया जा रहा है, वह पर्याप्त है और अुससे लाभ होना ही चाहिये। फिर भी डॉक्टरोंकी जांचका तो हमें आदर करना ही है। आराम लेनेमें कोअी कमी न आने दीजिये। घूमना दोनों वक्त होना चाहिये। डॉक्टरकी अिस सिफारिशका आदर कीजिये कि जहां तक हो

१. दिल्लीके अेक समाजवादी।

सके चलते या लेटे रहें, बैठें कम। पट्टा तो आप यहीसे लगाने लगे थे। परन्तु पॉवेलके पट्टेमें विशेषता हो तो भले ही वह ले लिया जाय।

मैं कैदियोंकी झंझटमें फस गया हूं। मेरा बयान[1] देखा होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली

---

१. सत्याग्रही कैदी छूटे तब गांधीजीने निम्नलिखित वक्तव्य निकाला था:

अिस घटनासे पहले जैसे मैंने कहा था वैसे ही घटनाके बाद भी कहता हूं कि जहां तक मेरा संबंध है, अिस घटनासे मेरे हृदयमें अेक भी जवाब देनेवाला या अिसकी कद्र करनेवाला स्वर नहीं अुठता।

मैं विद्यार्थी था तभीसे अंग्रेजोंका मित्र रहा हूं और आज भी यह दावा करता हूं। परन्तु ब्रिटिश सत्ताधारी हिन्दुस्तानको अेक गुलामकी तरह पकड़े हुअे हैं। मेरी मित्रता अिस बातको न समझने जितना अंधा मुझे नहीं बना सकती। हिन्दुस्तानको जो भी आजादी मिली हुअी है, वह अेक गुलामकी आजादी है। वह समान दर्जा रखनेवालेकी, दूसरे शब्दोंमें पूर्ण स्वातंत्र्य भोगनेवालेकी आजादी नहीं है।

मि० अेमरीके शब्द पीड़ा पहुंचानेवाले जख्मोंको आराम देनेवाले नहीं हैं। वे तो अिन पर नमक छिड़क रहे हैं। यह बात ध्यानमें रखकर मुझे कैदियोंकी मुक्तिका विचार करना है।

हिन्दुस्तानके तमाम जिम्मेदार दलोंको युद्ध-प्रयत्नोंमें मदद देनेका निर्णय करना ही चाहिये — अिस बारेमें यदि सरकार दृढ़ हो, तो अुसका तर्कसे फलित परिणाम यह निकलता है कि अुसे सत्याग्रही कैदियोंको अभी जेलमें ही रखना चाहिये। क्योंकि वे विरोधी स्वर निकालते हैं। परन्तु कैदियोंको छोड़नेका अर्थ मैं तो अितना ही करता हूं कि सरकार आशा रखती होगी कि खुद मोल लिये हुअे अेकान्तमें कैदियोंने अपने विचार बदले होंगे। मैं आशा रखता हूं कि सरकारका यह भ्रम थोड़े समयमें मिट जायगा।

२०८

सेवाग्राम,
५-१२-'४१

आदरणीय वल्लभभाओ,

मौलानाका टेलीफोन अभी आया है। कलकत्तेसे ११ बजे वहां पहुंचे। तबीयत ठीक थी, परन्तु सायेटिका (जंघा-स्नायुशूल) रोग है। दो-तीन दिनमें रवाना होना चाहते हैं। जवाहरलालजीसे बातें करेंगे।

सविनय कानूनभंग खूब सावधानीसे विचार किये बिना शुरू नहीं किया गया था। अुसमें द्वेषकी भावना तो हरगिज नहीं थी। ब्रिटिश जनता और दुनियाको कांग्रेस यह बता देना चाहती है कि अेक विशाल लोक-समुदाय, कांग्रेस जिसकी प्रतिनिधि है, युद्धमें भाग लेनेके बिलकुल विरुद्ध है। अुसका कारण यह नहीं कि ये लोग चाहते हैं कि ब्रिटिश सरकारकी हार हो या नाजी अथवा फासिस्ट सेनाओंकी जीत हो। ये लोग तो देखते हैं कि अिस युद्धमें विजेता या पराजित कोओ भी पक्ष खूनखराबी करनेके अपराधसे मुक्त नहीं रहेगा। अिस युद्धसे हिन्दुस्तानकी मुक्ति तो बेशक नहीं ही होगी। कांग्रेसका यह दावा सच्चा साबित करनेके लिअे सविनय कानूनभंग शुरू किया गया है। और मैं आशा रखता हूं कि वह जारी रखा जायगा। कांग्रेस हिन्दुस्तानके करोड़ों मूक जनोंका प्रतिनिधित्व करनेका दावा करती है। और अिस दिशामें अुसके प्रयत्न जारी हैं। हिन्दुस्तानकी मुक्तिके लिअे अुसने पिछले बीस वर्षसे अखंड रूपमें अहिंसाको अपनी नीतिके तौर पर अपनाया है। यद्यपि सविनय कानूनभंग अुस नीतिका अेक प्रतीक है, फिर भी अुसे थोड़े समयके लिअे भी रोकना अैन वक्त पर अपनी नीतिसे अिनकार करनेके बराबर होगा।

सरकारका दावा यह है कि कांग्रेसके विरोधी प्रयत्नोंके बावजूद अुसे देशसे जितने चाहिये अुतने आदमी और रुपये मिल जाते हैं। अिस ढंगसे कांग्रेसके विरोधका मूल्यांकन किया जाय, तो वह केवल नैतिक प्रयत्न और नैतिक प्रदर्शनके बराबर ही है। स्वयं मुझे तो अितनेसे पूरा संतोष है। कारण मुझे यकीन है कि समय आने पर अिस नैतिक प्रदर्शनमें से अैसा आन्दोलन जाग अुठेगा, जिसके परिणाम-

पूछा है कि अब कार्यसमितिकी बैठक की जाय या नहीं और की जाय तो कहां।

(२) बारडोलीके कार्यक्रममें परिवर्तन हो तो वर्धामें बैठक रखना चाहते हैं।

पू० बापूजी टेलीफोन करा रहे हैं कि बैठक तो करनी ही है और जल्दीसे जल्दी करनी है, परन्तु बारडोलीके कार्यक्रममें फेरबदल नहीं चाहते। आपके स्वास्थ्यके खयालसे और दूसरी सुविधाओंकी दृष्टिसे भी बारडोली अधिक अनुकूल पड़ेगा।

अैसा कहेंगे तो जरूर, मगर फिर भी मौलानाका वर्धाका ही आग्रह रहा तो बापू लिखाते हैं कि मैं मजबूर हो जाअूंगा।

शायद आपको भी अुनका फोन मिले।

किशोरलालके प्रणाम

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली

स्वरूप हिन्दुस्तान स्वतंत्रता प्राप्त कर लेगा। अुसमें अिस या अुस दलका वर्चस्व नहीं होगा।

कांग्रेसकी लड़ाअीमें हिन्दुस्तानका प्रत्येक वर्ग आ जाता है। अब यह धारणा रखी जाती है कि कांग्रेसके अध्यक्ष बाहर आयेंगे। अिसलिअे कांग्रेसकी कार्यसमिति अथवा महासमितिकी बैठक बुलाअी जाय या नहीं और बुलाअी जाय तो कब बुलाअी जाय, यह विचारनेका काम अुनका है। ये दो संस्थाअें कांग्रेसकी भावी नीति तय करेंगी। मैं तो सविनय कानूनभंगकी लड़ाअी जारी रखनेवाला केवल अेक नम्र सेवक था।

परन्तु नजरबन्दों और दूसरे कैदियोंके बारेमें मुझे दो शब्द कहना चाहिये। यह बड़ी अजीब बात लगती है कि जिन्होंने खुद जेलका स्वागत किया था अुन्हें छोड़ दिया गया। परन्तु जिन्हें व्यक्तिगत स्वतंत्रताकी अपेक्षा अपने देशकी स्वतंत्रताको अधिक कीमती माननेके अपराधमें मुकदमा चलाये बिना नजरबन्द या कैदीके तौर पर रखा गया है अुन्हें नहीं छोड़ा गया है। अिसमें कहीं न कहीं कोअी बड़ी भूल अवश्य हुअी है। अिसलिअे भारत सरकारके फैसलेसे मुझे जरा भी खुशी नहीं हो सकती।

२०९

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
४–१–'४२

भाअी वल्लभभाअी

मीटिंग[1] के बिना चल सकता है, लेकिन कटिस्नानके बिना तो चल ही नहीं सकता। अिसलिअे यह स्नान तो अभी ही लेना चाहिये।

बापू

२१०

सेवाग्राम,
७–२–'४२

भाअी वल्लभभाअी,

आपको लिखनेका सोच ही रहा था कि आज आपका पत्र आ टपका। किसी भी तरह कच्चा शाक जुटा लें तो अच्छा। अिसके प्रयोगसे मुझे तो बहुत लाभ हुआ है। अिसलिअे घनश्यामदासको वही देकर चार औंस मक्खन पर रखा है। अिससे अुनके अुत्साह और तेजमें वृद्धि हुअी है। अिसलिअे आप अिसे न छोड़ें। शाकके पत्ते नमकके पानीमें भिगोकर रखनेसे ताजे जैसे रहेंगे। ये चार-पांच भी लिये जायं तो काफी हैं। परन्तु प्याज, गाजर, नोलकोल (अेक शाक) और मूली तो दो-चार दिनकी भी ली जा सकती है। सब मिलाकर दो औंससे ज्यादा न लें। और सब तो ठीक ही है।

पृथ्वीसिंहको लिख रहा हूं।

. . . को भले ही यहां भेज दीजिये। यहां अधिक पुष्ट करके जाने दूंगा। फिर भले ही आपकी मददका लाभ लें। आदमी अच्छा है। अभी जरा नादान है। यहां होशियार बन जायगा। फिर जरूरत हो तो बुलवा लीजिये।

---

१. प्रान्तीय समितिकी कार्यकारिणीकी।

यह निश्चय कर लीजिये कि आपकी आंखोंकी समस्या केवल भोजनके अुचित चुनावसे ही हल होगी। पाखाना जाते समय जरा भी जोर न लगाना चाहिये।

महादेवको वहां बुलानेका आग्रह समझता हूं। परन्तु 'हरिजन' का काम अुनसे वहा बैठकर ठीक तरह नही हो सकता। जो लिखते हैं, अुसे मुझे दिखानेका और मेरा लिखा देखनेका लोभ अुन्हें रहता ही है। अैसा करनेसे कितनी ही बार थोड़े किन्तु आवश्यक परिवर्तन करने पड़ते हैं। मैंने नरहरिको वहां आ जानेके लिअे कहा है।

घनश्यामदास अुसी कोठरीमें रहते हैं, जिसमें आप रहते थे। वे वर्धामें रहें तो मैं अुपचार नहीं कर सकता। मुझे पूरी बात समझमें आ ही नहीं सकती।

बाकी तबीयत ठीक नहीं है। हजीराका काम पूरा करके आपको यहां आ जाना है। काम हो तो ही यहासे बाहर जायं। गुजरातमें कताअी सम्बन्धी मेरी सूचना पढ़ी होगी। अुसका पूरा अमल कराअिये। चरखा-संघके लिअे रुपया अिकट्ठा कीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा,
सूरत होकर

२११

सेवाग्राम,
२३–२–'४२

भाअी वल्लभभाअी,

महादेव खूब कमजोर हो गये हैं। कल साल दिनके लिअे घनश्यामदासके साथ नासिकके लिअे रवाना हुअे, परन्तु स्टेशन पहुंचने पर चक्कर आने लगे। अिसलिअे अुन्होंने न जानेका शुभ निश्चय किया और सिविल सर्जनके पास गये। वहां थोड़ा अुपचार कराकर घर आये। अभी तो ठीक हैं। खूनका दबाव बिलकुल घट गया है। परन्तु मरते-मरते ही बचे। यह बताता है कि अुन्हें अच्छी तरह

आराम लेनेकी जरूरत है। चिन्ता न करें। जो हाल नरहरि[1] का हुआ था वैसा ही अिनका है। ठीक तो हो ही जायंगे।

आपके क्या हाल हैं?

बापूके आशीर्वाद

पृथ्वीसिंह् आपके पास आयें तो अुन्हें समय दीजिये।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा,
सूरत होकर

२१२

सेवाग्राम,
२५–२–'४२

भाअी वल्लभभाअी,

महादेवके नामके पत्रका अुत्तर मुझे देना होगा। अुन्हें अब कोअी डर नहीं। परन्तु काम तो बिलकुल बन्द है और आगे भी कुछ समय तक रहेगा।

चांगकाअी शेक[2] के बारेमें 'हरिजन' में पढ़ेंगे ही। खाली आये, खाली गये। दिल्लगी की और कराअी। परन्तु मैं यह नहीं कहूंगा कि मैंने अुनसे कुछ सीखा। अुन्हें तो सीखना ही क्या था? अुनका अेक ही कहना था: कुछ भी हो, अंग्रेजोंकी मदद कीजिये; औरोंसे वे अच्छे हैं, और अब तो और भी अच्छे हो जायेंगे।

यहां मित्रोंका सम्मेलन[3] था। आप आ पाते तो अच्छा ही होता। सब प्रेमसे मिले। जमनालालजीके कामोंके बारेमें खूब चर्चा

---

१. खूनके अधिक दबाव (हाअी ब्लडप्रेशर)के कारण।

२. अुस समय चीनी प्रजातंत्रके अध्यक्ष। पिछले विश्वयुद्धमें चीन मित्र राष्ट्रोंके साथ था। वे पू० बापूजीसे मिलने सेवाग्राम आनेवाले थे। परन्तु वाअिसरॉयको यह ठीक न लगा। अिसलिअे अुनकी मुलाकात कलकत्तेके बिड़ला पार्कमें कराअी गअी।

३. जमनालालजी गुजर गये, तब अुनकी प्रवृत्तियोंका भार अलग-अलग व्यक्तियोंमें बांट देनेके लिअे अुनके मित्रों और प्रशंसकोंकी वर्धामें बैठक की गअी थी। अुसीका अुल्लेख है।

हुअी। कामकी कुछ रूपरेखा तैयार की गअी। घनश्यामदासने खूब भाग लिया। जानकीबहन अध्यक्षा (गोसेवा-संघकी) बनीं।

आपके भोजनमें रोटी तो मैं अपनी देखरेखमें देना चाहूंगा। पपीता लीजिये, खजूर बढ़ाअिये। केलोंके बारेमें डर है। परन्तु खूब पके हुअे अच्छी तरह मसलकर ले देखिये। केलोरीज[1] बढ़ानेमें तो कोअी हर्ज नहीं हो सकता। अितनेसे सन्तोष होगा?

अिन्दुलाल[2] का पत्र जरा भी अच्छा नहीं लगता। क्या अुन्हें अैसा नहीं लिखा जा सकता?—"आप अितने अस्थिर रहे हैं कि यह नहीं कहा जा सकता कि आप पर कब विश्वास रखा जाय। अिसलिअे यही अच्छा है कि आप कांग्रेससे या मुझसे अलग ही काम करें। अगर आपका काम कांग्रेसका पोषक होगा, तो संघर्ष हो ही नहीं सकता। स्पष्ट लिखनेके लिअे आपको दुःख न होना चाहिये।"

राजाजी कल गये, राजेन्द्रबाबू आज। कलकत्तेमें मौलानासे मिलकर पटना जायंगे। हिन्दुस्तानी संघकी बातें कीं। आप अुर्दू सीख लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा,
सूरत होकर

२१३

सेवाग्राम,
१-३-'४२

भाअी वल्लभभाअी,

आपका भोजन-सम्बन्धी पत्र मेरे हाथमें आते ही जवाब दे दिया। केलोरी गुड़, ग्लुकोस, मुनक्का और खजूरसे पूरी की जाय। आसानीसे पूरी हो जायगी।

महादेवके लिअे बिलकुल चिन्ता न कीजिये। आराम ले रहे हैं—लेना जरूरी है। अच्छी तरह खा सकते हैं। बा भी ठीक है।

---

१. भोजनकी अलग-अलग चीजोंमें शरीरकी गरमी कायम रखनेकी जो शक्ति होती है अुसका माप।

२. श्री अिन्दुलाल याज्ञिक।

मगनलाल[1] और अुसका कुटुम्ब आज आ गया है। चंद्रसिंह[2] गढ़वालीकी पत्नी भी आ गअी है। अिस तरह फिर अच्छा जमघट हो गया है। यह समझ लें कि आप आयेंगे तब जगह हो ही जायगी। बाथ भी है। कार्यसमितिकी बैठक यहां होगी?

डाह्याभाअीकी लड़की कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा,
सूरत होकर

२१४

सेवाग्राम,
७–३–'४२

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। अगर गरमीमें सेवाग्राम रहनेकी हिम्मत नहीं होती हो, तो जहां आप रहेंगे वहीं आनेकी कोशिश करूंगा। मेरा विश्वास है कि आपकी तन्दुरुस्ती सोलहों आने ठीक हो सकती है। अिस बीच कहीं भी दौरा कीजिये, मगर आराम, स्नान और भोजनके समयका पालन कीजिये। वाअिसरॉय अिन सब बातोंका पालन करते हैं, तो हम क्यों न करें?

मौलानाका पत्र है कि वे आजकलमें रवाना होकर यहां आयेंगे। बुआ (श्रीमती नायडू) कल जानकीबहनसे मिलने आ रही हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
विट्ठल कन्या विद्यालय,
नड़ियाद

---

१. रंगूनवाले स्व० डॉ० प्राणजीवनदास मेहताके पुत्र।

२. १९३० में अेक सैनिक दलने खुदाअी खिदमतगारों पर गोली चलानेसे अिनकार कर दिया था। अिस पर अुस दलके नेता लोगोंको लम्बी सजाअें हुअी थीं। वैसी सजा भुगत कर आनेवाले अेक भाअी।

२१५

सेवाग्राम,
२२–३–'४२

भाओी वल्लभभाओी,

साथका पत्र आपकी जानकारीके लिअे है। मैंने अिसका अुत्तर ही नहीं दिया।

आपने दांत ठीक करा लिये होंगे। योगी (आसन सिखानेवाले) के बारेमें भी जाननेको अुत्सुक हूं।

आचार्य[1] का स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो रहा है। आज घूमने भी निकले थे। पेट सुधर रहा है।

हवामें गरमी बढ़ रही है।

महादेव और वनुको ठीक हो ही जाना चाहिये। नये समाचार तो आप ही बतायें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बओी

२१६

सेवाग्राम,
१३–४–'४२

भाओी वल्लभभाओी,

आपका पत्र बहुत दिनों बाद मिला। मैं महादेवके नाम पत्र लिखता व लिखाता रहा। परन्तु आप तो राजधानीमें ही चिपक गये। बहुत अच्छा। कमाल किया।

आंतें अभी ठिकाने नहीं आ रही हैं, अिसमें आश्चर्य नहीं। अुन्हें लम्बे आरामकी बड़ी जरूरत है।

---

१. आचार्य नरेन्द्रदेव। किसी समय काशी विद्यापीठके आचार्य। अुस समय कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य। अेक समाजवादी नेता। अिस समय काशी विश्वविद्यालयके अुपकुलपति।

जवाहरलालने तो अब अहिंसाको तिलांजलि दे दी दीखती है। आप अपना काम करते रहिये। लोगोंको संभाला जा सके तो संभालिये।

आजका अुनका भाषण[1] भयंकर लगता है। अुन्हें लिखनेका सोच रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

चि० मणि,

तुम्हारी चिट्ठी भी मिली। वनुसे कहना कि अुसका पत्र मिल गया।

२१७

सेवाग्राम,
१४–४–'४२

भाअी वल्लभभाअी,

आपका फिर कोअी पत्र नहीं। प्रोफेसरने सारी रामायण सुनाअी। आपका स्वास्थ्य जाने लायक न हो तो अलाहाबाद न जाअिये।[2] परन्तु आपको अपने विचार बता देने चाहिये। मेरे खयालसे कांग्रेस हिंसाकी नीति अख्तियार कर ले, तो आपको निकल जाना चाहिये। यह समय अैसा नहीं कि कोअी अपने विचार दबाकर बैठा रहे। बहुतसी बातोंमें काम अुलटा हो रहा है। अिसे देखते रहना ठीक नहीं मालूम होता। फिर भले ही लोग निन्दा करें या प्रशंसा करें।

मैं चाहता हूं कि 'हरिजन' में मैं जो लिख रहा हूं, अुसे आप ध्यानसे पढ़ें।

---

१. अिस भाषणमें अुन्होंने भूमि अुजाड़ने (Scorched earth) की बात कही थी।

२. कार्यसमितिके लिअे।

अुड़ीसामें अेक तरफ साम्यवादी छापामार लड़ाअीकी तैयारी कर रहे हैं और दूसरी तरफ अग्रगामी दल (फारवर्ड ब्लाक) वाले जापानको मदद देनेकी तैयारी कर रहे दीखते हैं। दोनों अफवाहें हैं। कोअी निश्चित बात नहीं है। परन्तु दोनों चीजें संभव हैं। अुड़ीसा पर हमला होनेकी बहुत संभावना मालूम होती है। सरकारने काफी सेना अिकट्ठी कर दी है।

आपकी तबीयत कैसी है? वे साधु क्या कहते हैं? वनु कैसी है? अुसे कोअी फायदा होता नहीं दिखाअी देता।

बापूके आशीर्वाद

पाटील[1] को अुद्योग संघमें रखनेकी बात चल रही है। अुन्हें वेतन देना पड़ेगा? क्या देना पड़ेगा? अुन्हें महाराष्ट्रकी जिम्मेदारी संभालनी है।

बापू

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२१८

सेवाग्राम,
२२-४-'४२

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। मौलानाके तारसे मालूम होता है कि आपको जाना ही पड़ेगा। यद्यपि अैसा करना ठीक नहीं मालूम होता। आप मजबूतीसे काम लीजिये। अगर अहिंसक असहयोगका स्पष्ट प्रस्ताव स्वीकार न हो, तो आपका धर्म कांग्रेससे निकल जानेका ही है। भूमि अुजाड़नेकी नीतिका और बाहरी सेनाअें लानेका भी कड़ा विरोध होना ही चाहिये। मुझे बुलानेका आग्रह हो रहा है, परन्तु मैंने तो अिनकार ही लिखा है। मैंने अिसी अरसेमें यहां

१. श्री अेल० अेम० पाटील। बम्बअी राज्यके जकात, आबकारी और पुनर्रचना विभागके मंत्री थे।

तीन-चार बैठकें रखी हैं। मुख्य बैठक तो पहलेसे ही तय कर ल
गअी थी। अुसे बदला नहीं जा सकता।

आप प्रयागसे लौटते समय यहां होकर जाअिये। भले अेक-द
दिनके लिअे ही आअिये। प्रयागसे तो यहां सौ गुना अच्छा मौस
है। राजेन्द्रबाबूको और देवको भी साथ लेते आअिये।

पाटीलके बारेमें आपसे पूछा था, लेकिन आपने कुछ लिखा नहीं

बापूके आशीर्वा

२११

सेवाग्राम
२३–५–'४

भाअी वल्लभभाअी,

पृथ्वीसिंहकी मुझ परसे श्रद्धा अुठ गअी, अिसलिअे मेरा सम्बन्ध
तो समाप्त हुआ। गोपालराव[1] अुसमें से हट जायंगे। मैं मानता ह
कि अब नाथजी या किशोरलालका संघके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं
रहेगा। पृथ्वीसिंहका क्या होगा, यह तो बादमें पता चलेगा।

वहांके समाचार लिखिये। थोड़े समयमें कुछ न कुछ तो होन
ही चाहिये।

पृथ्वीसिंहको मैंने सूचित कर दिया है कि श्रद्धाकी बात अुन्होंक
प्रकाशित करनी होगी। वे कुछ नहीं करेंगे तो अन्तमें मुझे ही
कुछ न कुछ कहना पड़ेगा। हमारे आदमियोंसे आप सम्बन्ध टूटनेकी
बात कर सकते हैं।

लीमड़ी[2] के बारेमें अभी तो चुप्पी ही साधूं न?

बापूके आशीर्वा

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. श्री गोपालराव कुलकर्णी। अुस समय पृथ्वीसिंहके वर्ग
शिक्षक थे।

२. काठियावाड़का अेक छोटा देशी राज्य। राज्यके जुल्मसे
प्रजाका कुछ भाग राज्यसे हिजरत कर गया था। बादमें अहमदाबा
और बम्बअीके व्यापारियोंने वहांकी रूअीका बहिष्कार किया था

२२०

सेवाग्राम-वर्धा
२७–५–'४२

भाअी वल्लभभाअी,

जवाहरलालसे दिन भर बातें हुअीं — मीठी थीं। अेक-दूसरेको हमने काफी समझा। सिन्धका मामला चौअियराम[1] आप पर डाल रहे हैं। आपको दृढ़ बनना चाहिये। अगर मेरी रायसे सहमत हों तो आपको पत्र लिखना चाहिये। जवाहरलालसे पूछा। वे तो कहते हैं कि कांग्रेसी सदस्योंको हट जाना चाहिये और अलावख्शको भी। अैसी बात है। परन्तु स्वयं आपका ही विचार दूसरा हो तो मुझे कुछ नहीं कहना है।

बापूके आशीर्वाद

आश्चर्य है कि आपकी तबीयतमें फर्क नहीं पड़ रहा है। सरदी मिटनी ही चाहिये। नाकसे सोडा और नमक लेकर क्या नाक साफ कर रहे हैं? आराम न हो तो यहां आकर रहना चाहिये।

बापू

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली

२२१

सेवाग्राम-वर्धा,
३–६–'४२

भाअी वल्लभभाअी,

ढेबरभाअी[2] से जी भरकर बातें की हैं। मेरा खयाल है कि लीमड़ी राज्यने समझौता किया ही नहीं था। भगवानदास[3] ने जरूर अैसा समझ

१. डॉ० चौअिथराम गिडवानी। सिन्ध प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अुस समयके अध्यक्ष।

२. श्री अुछरंगराय ढेबर। सौराष्ट्रके अेक पुराने नेता। अिस समय सौराष्ट्रके मुख्य मंत्री।

३. लीमड़ीकी लड़ाअीमें शरीक होनेवाले अेक व्यापारी।

लिया था। हिजरती अन्दर[1] गये तो देखा कि समझौतेकी अेक भी निशानी नहीं है। अिसलिअे आपके वक्तव्यमें अितना सुधार होना चाहिये।

परन्तु आपका वक्तव्य प्रकाशित होनेसे पहले कुछ करना बाकी मालूम होता है। फतेहसिंहजी[2] की अिच्छा आपसे मिलनेकी है, अैसा ढेबरभाअी समझे हैं। अैसा हो और वे समझौता चाहते हों, तो आपको मिलनेकी तैयारी बतानी चाहिये। अिस अवसरके निकल जाने पर आपके वक्तव्यका विचार करना पड़ेगा।

अभी जो स्थिति है वह तो ठीक ही है।

हिजरती बाहर हैं। जो गिरे सो गिरे। रूअीका बहिष्कार जारी है। जारी रहना चाहिये। अिसलिअे तुरन्त आपके वक्तव्यकी आवश्यकता नहीं जान पड़ती। आप मानते हों कि मुझे वक्तव्य देना चाहिये तो तार दीजिये। मैं दे दूंगा। अगले हफ्तेके 'हरिजन' के लिअे समय बचेगा।

अपनी तन्दुरुस्तीके बारेमें अेक बातका तो जरूर अच्छी तरह ध्यान रखें। कमोड पर कमसे कम देर बैठें और जरा भी जोर न लगायें। अिसे अचूक नियम समझिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२२२

सेवाग्राम-वर्धा,
सी० पी०
१०–६–'४२

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। ढेबरभाअीसे जी भरकर बातें हुअीं।

मेरे खयालसे अिन बातोंमें कोअी दम नहीं है। आपसे कांग्रेस-जनकी हैसियतसे नहीं, प्रजामंडलकी तरफसे नहीं, बल्कि अेक पुराने

१. लीमड़ीके भीतर।

२. रीजन्सी कौंसिलके सदस्य, लीमड़ी दरबारके कुंवर।

मित्रके नाते मिलें, अिसमें कोअी सार नहीं; अैसे नहीं मिला जा सकता।[१]

आप कोअी वक्तव्य न दें। समझौता हुआ था या नहीं, अिसमें हम न पड़ें। जो अपने पैरों पर खड़े रह सकें वे रहें और लड़ते रहें। राजा लोग आपसमें व्यापार करना चाहें तो करें। परन्तु बहिष्कार-समिति कायम रहे और बहिष्कार चलाती रहे। अेक आदमी भी टेक कायम रखे, तो वह लड़ाअीका प्रतिनिधि माना जायगा। कहा जायगा कि लड़ाअी चल रही है। अुसका बाजार भाव भले ही धेलेके बराबर भी न माना जाय।

मौलाना साहबसे मिलने (वर्धा शहर) जा रहा हूं। वे कमजोर जरूर हो गये हैं।

आप अच्छे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२२३

सेवाग्राम-वर्धा,
सी० पी०
१४-६-'४२

भाअी वल्लभभाअी,

खूब बातें हुअीं। अिसका हाल तो महादेव लिखेंगे।

जोधपुर[२] किसीको जाना चाहिये। श्रीप्रकाश[३] जायेंगे तो तैयार

---

१. लीमड़ीकी लड़ाअीके बारेमें लीमड़ी दरबारसे मिलनेके सम्बन्धमें।

२. जोधपुर राज्यमें प्रजा पर जुल्म हुआ था।

३. अुत्तर प्रदेशके अेक नेता। पाकिस्तानमें भारतके राजदूत १९४७-४९। बादमें आसामके गवर्नर फरवरी १९४९ से मअी १९५०। अुसके बाद केन्द्रीय सरकारके व्यापार-विभागके मंत्री १९५०-५१। अब मद्रासके गवर्नर।

करूंगा। वे न जायं और मुन्शीका स्वास्थ्य अच्छा हो तो वे जायं। जवाहरलालसे सलाह-मशविरा कीजिये।

यह पत्र लिखनेका हेतु तो दूसरा ही है। गुजरातमें डकैतियां बढ़ती जा रही हैं। हमें अुनका मुकाबला करनेका अुपाय अवश्य ढूंढ़ना चाहिये। मुझे परवाह नहीं अगर लोग लाठीके बल पर भी अिसके लिअे तैयार हों। परन्तु तैयार अवश्य होने चाहिये। सोचिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२२४

पंचगनी,
१५-६-'४५

(पुर्जा)

आपके भोजनके विषयमें मैंने विचार कर लिया है। मेरी राय है कि जिस खुराकमें रेशे वगैरा रहते हों वह न खाअी जाय। अिसलिअे शाकोंमें लौकी जैसे पदार्थ, जिनमें शेष भाग थोड़ा ही रहता है, लिये जायं। मुख्य भोजन दूध, ग्लुकोस, शहद और पच सके तो मक्खन रहे। मेरे खयालसे बीजोंवाले साग भी त्याज्य हैं, जैसे बैंगन और टमाटर। अिनमें बीज होते हैं। बाजरेकी जो औस्ट (खमीर) मुझे कोयम्बतूरसे भेजी गअी है, वह शायद अच्छी रहेगी। मतलब यह हुआ कि जिस खुराकका बोझ आंतों पर न पड़े, वह लेनी चाहिये। और हर बार कम। भले ही चार बार ली जाय। कटिस्नान ठंडा और गरम लेना चाहिये, सारे टबमें सोनेसे लाभ होनेकी संभावना है। अिसका अर्थ यह हरगिज नहीं कि डॉक्टर न देखें, सूचनाअें न दें। वे भोजनका अध्ययन नहीं करते।[1]

---

१. पू० बापू ता० १५-६-'४५ को यरवडा जेलसे सुबह छूटे और मोटरमें साढ़े ग्यारह बजेके लगभग पू० बापूजीके पास पंचगनी पहुंचे। अुस समय पू० बापूजीका मौन था। अिसलिअे यह पुर्जा लिखा था।

२२५

सेवाग्राम,
२२–७–'४५

भाअी वल्लभभाअी,

चि० सुशीला (नय्यर) आज रवाना हो रही है। ऑपरेशन जरूरी हो तो करा लीजिये। दो-तीन महीने जांच करके देखना हो तो मैं चाहूंगा कि आप दिनशाके यहां रहें। वहां जाना हो तो मैं साथ आनेके लिअे तैयार रहूंगा। और कुछ लिखना हो तो लिखें या लिखावें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२२६

सेवाग्राम,
२५–७–'४५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। अगर अभी अिलाज ही कराना हो तो मेरी जोरदार सिफारिश है कि पूनामें दिनशाके यहां जायें और वहां अिलाज करायें। मैं वहां आनेको तैयार हो जाअूंगा, अिसलिअे मेरी नीमहकीमी भी चलेगी। जो हालत है अुससे ज्यादा तो हरगिज नहीं बिगड़ेगी और दिनशाके हाथको यश भी मिल सकता है।

पारडीवाला[1] से बात हुअी है। मैं पत्र लिखूंगा।[2] आज ही। यह

---

१. बम्बअीके अेक पारसी अेडवोकेट।

२. दिल्लीके किलेमें सेनाके १५००० आदमी पड़े थे। अुनमें से छहको कोर्ट मार्शलकी सजा होनेके समाचार मिले थे। अुन्हें बचानेके लिअे।

डाक तो सवेरे निकलती है। अिसके साथ नकल नहीं जा सकती। अैसी बातें तो होंगी ही। पर आप घबरानेवाले नहीं हैं।

अधिक लिखनेका समय नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२२७

सेवाग्राम-वर्धा,
२९-७-'४५

भाअी वल्लभभाअी,

आपको ऑपरेशन कराना ही न हो तो दिनशाके यहां जाना तय रखें। मैं साथ चलूंगा। मैंने अुनसे पुछवा लिया है। अुन्हें आशा है और मुझे भी है कि आपकी तबीयत सुधर जायगी। अुनके यहां जानेसे हानि तो हो ही नहीं सकती। अहमदाबाद जाना जरूरी ही हो, तो सोचे हुअे और थोड़े ही दिन रहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२२८

सेवाग्राम,
३-८-'४५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। मेरी अिच्छा तो ८ तारीखको चलकर १० को आपको पूना ले जानेकी थी। अब देखता हूं कि १९ तारीख तक बैठकोंमें बंध गया हूं। अिसलिअे जल्दीसे जल्दी १९ तारीखको निकल सकता हूं। मुझे यह पसन्द नहीं। आपको अवकाश मिलते ही मुझे रवाना हो जाना था। अब दस दिन किसी तरह चला लीजिये। अहमदाबादमें कुछ अधिक रहना हो तो भले रहिये। अच्छा तो यह होगा कि बचा हुआ समय आश्रममें आकर बितायें और यहींसे

साथ-साथ पूना चलें। पूनाका मकान रोक लीजिये। हमें तो क्लिनिकमें ही रहना है। दूसरोंको बंगलेमें रखेंगे — जरूरत होगी तो।

अब महादेवकी बात। महादेवके बारेमें मेरा सार्वजनिक रूपमें कुछ भी प्रकाशित करना ठीक नहीं। दो-चार मनुष्योंको लिख सकता हूं। बम्बअी[1] का निर्धारित चन्दा न हो, तो कोअी बात नहीं। अपनी कल्पना मैंने बताअी है। अुसे आप देख लें। अधिक बादमें या जब मिलेंगे तब।

बापूके आशीर्वाद

मणि बेखबर रहे, यह ठीक नहीं। . . . के पिताको तार दिया है।

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
डॉ० कानूगाके बंगले पर,
अेलिसब्रिज, अहमदाबाद

२२१

सेवाग्राम,
९-८-'४५

भाअी वल्लभभाअी,

आपको सफरमें नींद नहीं आती, यह दुःखकी बात है। पूना समय पर पहुंच जायंगे। देखें वहां क्या हाल रहता है। मैं १९ तारीखको रवाना होकर वहां २० तारीखको पहुंचूंगा। अुस दिन ठहरकर २१ तारीखको पूना पहली गाड़ीसे चलेंगे। यह मानकर कि पहलेकी तरह तीसरे दर्जेकी सहूलियत देंगे। अिस बीच कुछ आराम ले सकें तो ले लें। आप आराम लेंगे तो मणि भी ले लेगी। मैं देखता हूं कि वह लंबे समय तक नहीं टिक सकेगी। अब भी अुसकी अगाध भक्ति ही अुसे टिकाये हुअे है। परंतु कुदरतके सामने भक्ति भी लाचार हो जाती है। अहमदाबादका अखबारोंमें हूबहू वर्णन था।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. बम्बअीके महादेव स्मारक कोषके बारेमें यह बात है।

२३०

सेवाग्राम,
१२-८-'४५

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। भगवान मिलायेगा तो पूनामें और बात करेंगे।

मौलाना साहबको तो मैंने लिखा भी है, परंतु आपके ढंगसे नहीं। काम कठिन है। अिस बारेमें दो मत नहीं हो सकते कि कोअी खास कदम अुठानेसे पहले अुन्हें आप सबसे पूछना चाहिये।

जिन्ना साहबको मैंने जो कुछ लिखा था वह स्थायी ही था। अतः मैं और कुछ कर ही नहीं सकता। परंतु आप सबको अुससे अिनकार करनेका अधिकार है। और वह हृदयसे स्वीकार न हो तो अैसा स्पष्ट कहना चाहिये। मैंने किसीकी तरफसे नहीं कहा। अपनी ही राय बताअी है। अिसमें मुझे भूल मालूम हो जाय, तो तुरंत स्वीकार कर लूंगा। आप तो जानते ही हैं कि अुन्हें मेरी चीज पसन्द ही नहीं आती। पर अिसकी चिन्ता न कीजिये।

नया चुनाव तो होना ही चाहिये। मगर यह कहां तय है कि होगा ही? होगा तो विचार कर लेंगे। ज्यादा पूनामें।

यह अच्छी तरह समझता हूं कि आप यहां नहीं आ सकते। आपके लिअे रेलवेका सफर ठीक नहीं होगा। बंबअीसे पूना विमानसे जानेमें क्या कम दुःख होगा?

आपका आखिरी भाषण[१] सबको अच्छा लगा है। पर मुझे वह जरूरतसे ज्यादा लगता है। परंतु अुसकी कोअी बात नहीं। जो आपके मनमें भरा है, अुसे आप मनमें रख ही नहीं सकते।

मणि बूतेसे अधिक काम करके बीमार न पड़ जाय तो अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. अहमदनगरके किलेसे छूटकर आनेके बाद बम्बअीकी सार्वजनिक सभामें ता० ९-८-'४५ को दिया हुआ भाषण।

२३१

(पुर्जा) १९४५

आप साफ कह दें कि गुप्त सहायता तो दी ही नहीं जा सकती। यह बिलकुल गलत है। वह छिपी रह ही नहीं सकती। खुले तौर पर न कोअी मदद लेगा और न ली जा सकती है। यह सारा प्रश्न विचार करने लायक है। जल्दी या लालचमें अैसे बड़े काम हरगिज नहीं होते। हारें तो हार जायं। अंग्रेज भले ही पाकिस्तान दे दें।

२३२

मुख्य केन्द्र — सोदपुर,
कोन्टाअिन, १–१–'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपका तार मिला और पत्र भी मिल गया। जहां सतीशबाबू और हेमप्रभादेवी[1] का बन्दोबस्त हो वहां नियमका तो पार ही नहीं। अिसलिअे मैं जहां भी रहूं वहीं सोदपुरसे नियमित डाक मिल जाती है। आपकी तरह "चौकीदारके रूपमें" सतीशबाबू हर जगह होते ही हैं। वैसे ही यहां भी हैं। "यहां" अर्थात् कोन्टाअिनमें (मिदनापुरके)। नअी जगह होने पर भी सब अिन्तजाम अिस तरह किया है कि मुझे अधिकसे अधिक फुरसत मिलती है। अिसलिअे तबीयत क्यों बिगड़ने लगी? प्रार्थनाका चमत्कार देख रहा हूं। हजारों बल्कि लाख तककी संख्या होती होगी, फिर भी शांतिसे प्रार्थना होती है। शोरगुल नहीं, धक्कामुक्की नहीं। यह नया ही अनुभव कहा जायगा।

राजाजीके सम्बन्धमें लिखी गअी बातें[2] भी पढ़ लीं। मैं कहता

---

१. सतीशबाबूकी पत्नी।

२. वे अिस प्रकार हैं:

(१) तामिलनाड प्रान्तीय समितिके अध्यक्ष श्री कामराज नादर द्वारा प्रान्तीय अिलेक्शन बोर्ड बनानेके लिअे की गअी प्रार्थनाको सरदार वल्लभभाअी पटेलने कांग्रेस सेंट्रल पार्लियामेण्टरी बोर्डकी तरफसे स्वीकार कर लिया है। श्री कामराज नादरने अपनी समितिकी

हूं कि शान्तिसे झगड़ा निपट जाय तो बहुत अच्छा माना जायगा। क्योंकि मुझे सन्देह रहा करता है। मेरे नाम अैसे पत्र आते हैं। मजबूरीसे ही कुछ अुत्तर देता हूं।

तरफसे अिस अिलेक्शन बोर्डकी रचना श्री राजगोपालाचार्यसे सलाह-मशविरा करके की है।

सरदार वल्लभभाअी पटेलने श्री कामराज नादरको आज रातको जो तार दिया था, वह प्रकाशित हुआ है। तार अिस प्रकार है:

"आपका आजका तार मिला। राजाजीसे सलाह-मशविरा करके आप स्वयं, मुथुरंगा मुदालियर, रामस्वामी रेड्डी, अविनाशलिंगम् चेट्टी, श्रीमती लक्ष्मी बख्शी, श्री मुबैय्या, श्री मुनूस्वामी पिलाअी तथा श्री अन्नमलाअी पिलाअीके बने हुअे अिलेक्शन बोर्डकी रचनाके लिअे आपका प्रार्थनापत्र और सदस्य चुननेके काममें हर अवसर पर राजाजीकी सलाह लेनेकी आपकी स्वीकृति मंजूर की जाती है। अिस अशोभनीय झगड़ेका संतोषजनक अंत लाने पर मैं सभी सम्बन्धित लोगोंको बधाअी देता हूं। यह झगड़ा प्रान्तके शान्त वातावरणको क्षुब्ध बना रहा था। मुझे विश्वास है कि तामिलनाड प्रान्तीय समितिमें फिरसे स्थायी शान्ति और अेकता स्थापित हो जायगी। अिससे आजकी नाजुक घड़ीमें तामिलनाड देशकी स्वराज्यकी ओर की जानेवाली कूचमें अपना योग्य स्थान बनाये रख सकेगा।"

(२) तामिलनाडमें चुनाव-समिति बनानेके मामलेमें खुद अपनी सिफारिशें पेश करेंगे, अैसे श्री आसफअली द्वारा दिये गये वक्तव्यके सम्बन्धमें आंध्र प्रान्तीय समितिके अध्यक्ष श्री टी० प्रकाशम्ने अेसो-सियेटेड प्रेसके प्रतिनिधि द्वारा पूछे गये सवालके जवाबमें कहा, "श्री आसफअली सही रास्ते पर हैं और अुससे वे विचलित नहीं होंगे।"

श्री प्रकाशम्ने कहा:

"यह मानना चाहिये कि अिस विषयसे सम्बन्धित सभी बातें और विधानके नियम श्री आसफअलीने समझ लिये होंगे। मैं नहीं मानता कि अिस मामलेमें वे कोअी भूल करेंगे। तामिलनाडके लिअे चुनाव-समिति बनाना केवल तामिलनाड कांग्रेस कमेटीके कार्यक्षेत्रकी

आपके स्वास्थ्यके बारेमें क्या लिखूं? मुझे तो दिनशाका बताया हुआ रास्ता पसन्द है। परन्तु अगर आप रोज रोज (शक्ति) खर्च

बात है। तामिलनाड कांग्रेस कमेटी अेक लोकतांत्रिक संस्था है। केन्द्रीय पार्लियामेण्टरी बोर्ड प्रान्तीय समितिका अधिकार नहीं ले सकता। श्री आसफअली दूसरी रायके हों तो अुनके हैदराबाद जानेके लिअे आज सवेरे हवाअी जहाजमें बैठनेसे पहले मेरी हिदायत पर हमारी प्रान्तीय समितिके मंत्री श्री काला वेंकटराव द्वारा हवाअी अड्डे पर अुन्हें दिये हुअे वक्तव्य तथा अुसके साथके साहित्यसे अुनकी शंकाअें दूर हो जायंगी।

"वक्तव्यके साथ अुन्हें सरदारका पत्र बताया गया था। यह पत्र अुन्होंने १६ नवम्बर, १९४५ को पूनासे नेल्लोरके श्री पी० सी० सुब्रह्मण्यम्को लिखा था। सरदार वल्लभभाअी पटेलने अुक्त मामलेके सम्बन्धमें केन्द्रीय संस्थाके अधिकार और कार्यक्षेत्रके बारेमें नीचे लिखा नियम बताया था:

"'प्रिय मित्र,

'७ नवम्बर, १९४५ का आपका पत्र मिला। लोकतंत्रात्मक संस्थामें केन्द्रीय संस्था प्रान्तोंका अपनी सूझके अनुसार आगे बढ़कर काम करनेका हक छीन नहीं सकती। केन्द्रीय संस्थाकी तरफसे कमेटियां बनाना या समितियां चुनना ठीक नहीं। निर्णय प्रान्तीय समितिको करना है, न कि कार्यकारिणी समितिको।'

"कांग्रेसके विधानके अनुसार यह सही स्थिति है। और आज तक अुस पर अमल होता रहा है। तामिलनाडके प्रश्नों पर यह अक्षरशः लागू होता है। मेरा विश्वास है कि श्री आसफअली अिस सिद्धान्त और अिस नियमसे विचलित नहीं होंगे। कल रातको सार्वजनिक सभामें दिये गये अपने भाषणमें अुन्होंने यही मत प्रगट किया था। शान्तिके अपने मिशनके बारेमें अुन्होंने यों कहा था: 'मैं अपने मिशनके परिणामके बारेमें कुछ नहीं कहूंगा। अिसका कारण यह है कि यह आपका मामला है। अिसे आपको हल करना है। मेरा अिससे कुछ सम्बन्ध नहीं। मैं तो अेक मित्रके रूपमें सलाह दे

करते ही रहें और यह समझें कि सेवा हो रही है तो क्या किया जा सकता है?

समाधिके बारेमें आगाखां[1] ने तार दिया था कि 'मिलेंगे'। और कोअी जवाब नहीं आया। आपसे बात की सो समझा। जिन्नाभाअी (कायदे आजम) के बारेमें आपने अच्छा ही जवाब दिया। आगाखांके सुझावके प्रति मुझे कोअी मोह नहीं है। मैं तो अैसे विभाजनके विरुद्ध ही हूं। शेष मिलने पर।

३ तारीखको मैं सोदपुर पहुंचूंगा। ९ को आसाम। बहुत करके १८ को वापस सोदपुर आअूंगा। फिर २३ को मद्रास। मद्रासको अधिकसे अधिक दो सप्ताह दिये हैं। थोड़ा समय सेवाग्राममें बिताकर आप मुक्ति दें तो पूना। न दें तो बारडोली। और फिर पूना।

भाअी वैकुंठका पत्र आया है कि बालासाहब, आप और देव भी अुन्हें घसीट रहे हैं। अुन्हें सदस्य[2] बनाअिये। शेष तो मेरे आने पर।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
नअी दिल्ली

सकता हूं।' अिससे यह स्पष्ट है कि वे सही रास्ते पर थे और अिससे वे विचलित नहीं होंगे। जब वक्तव्य दिया गया तब भी श्री आसफअलीने श्री वेंकटरावके सामने अैसे ही विचार प्रगट किये थे।"

तिरुचेनगोडके चुनावके बारेमें श्री आसफअलीके निर्णयके विषयमें पूछने पर श्री प्रकाशम्‌ने कहा कि, "प्रान्तीय पार्लियामेण्टरी बोर्डका चुनाव अथवा अुसकी नियुक्ति केवल प्रान्तीय समितिके कार्यक्षेत्रका मामला हो, तो तिरुचेनगोडके चुनावका झगड़ा भी निःसन्देह प्रान्तीय समितिके कार्यक्षेत्रका मामला है।"

अे० पी० आअी०

मद्रास, २४ दिसम्बर

१. आगाखां महलके पास स्व० महादेवभाअी तथा स्व० बाकी समाधि है। यह स्थान प्राप्त करनेके लिअे माननीय आगाखांके साथ पत्रव्यवहार हो रहा था। अुसका जवाब।

२. बम्बअी धारासभाके।

२३३

सोदपुर जाते हुअे जहाज पर
३–१–'४६

भाअी वल्लभभाअी,[1]

आपकी चिट्ठी मिली। निम्नलिखित तार दिया है :

२० को बंगाल छोड़ रहे हैं। ८ फरवरीके आसपास मद्रास छोड़ेंगे। बारडोलीसे पहले पूना जानेको खूब अुत्सुक हूं। बारडोली मार्चके मध्यमें अनुकूल रहेगा?

—बापू

बंगालका कार्यक्रम मैंने सोचा था अुससे बाहर तो नहीं जा रहा है। मेरी दृष्टिमें बहुत काम हुआ है। परिणाम तो अीश्वरके

---

१. अिस पत्रके अुत्तरमें पू० बापूने बापूजीको अिस प्रकार लिखा था :

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी,
८–१–'४६

पू० बापू,

आपका ३ तारीखका पत्र मिला। तार भी मिला। बारडोलीके लिअे ३ तारीख रखी है।

विलायतवाले आ रहे हैं। यह सही है कि अुनके साथ सम्बन्ध नहीं बिगाड़ना चाहिये। यह भी सही है कि अुनसे अच्छी तरह मिलना चाहिये। परन्तु जवाहरलालने गलत नेतृत्व किया और आजकी हवा तो आप जानते ही हैं। फिर भी कुछ समयमें हम सब दिल्लीमें मिलनेवाले हैं। तब अच्छी तरह छानबीन कर लेंगे।

आगाखांसे कहां और कब मिलना होता है, मुझे लिखिये।

मैं यहांसे १२ तारीखको अहमदाबाद जा रहा हूं। फिर १७ को दिल्ली जानेवाला हूं। कल मौलानाका तार आया था। विन्ध्याचल जाकर बैठे हैं और अब तार देते हैं कि दिल्लीमें जो कांग्रेस अप्रैलमें रखी है वह मअीमें रखी जाय और बम्बअीमें की जाय। यह जवाहरलाल और कृपालानीका मत है। मेरी राय मांगते हैं। अिस तरह अिस साल शायद कांग्रेस बन्द ही रख दें, अैसे लोग हैं।

हाथमें है। यह मैं नावमें लिखवा रहा हूं। आज शामको सोदपुर पहुंचूंगा। यह पत्र कल वहांसे डाकमें पड़ेगा। सोदपुरमें चार दिन रहकर ८ तारीखको आसाम जाना है। अिस दौरेमें सफरके मिलाकर ८ दिन लगेंगे। वापस सोदपुर और वहांसे मद्रास। मद्रास पहुंचनेकी आखिरी तारीख २३ रखी है। अिसलिअे सोदपुरसे २१ तारीखको हर हालतमें रवाना हो जाना पड़ेगा। मैंने तारमें २० तारीख दी है।

जो लोग[1] विलायतसे आये हैं, अुनसे मिलना तो मेरे खयालसे बम्बअी, पूना अथवा वर्धामें होगा। अुनके बारेमें ओछेपनसे बोलना हमारे लिअे शोभाकी बात नहीं। मीठी वाणी बोलनेसे हमें कोअी नुकसान नहीं हो सकता। अुसमें अच्छे आदमी भी हैं। पहलेसे ही निन्दा करनेमें मुझे कोअी सार नहीं दिखाअी देता।

मेरा पिछला पत्र तो आपको मिला ही होगा। पूना[2] का कारबार हाथमें लेनेके बाद थोड़ा समय तो मुझे वहां जरूर देना चाहिये। अिसलिअे मार्चके मध्यमें मुझे बारडोली ले जानेकी मांग मैंने की है। परन्तु अिसमें मैं आपके आग्रहके अधीन रहूंगा। मैं मान लेता हूं कि बारडोलीमें आप मुझे १५ दिनसे ज्यादा तो हरगिज नहीं रखेंगे। मुझे छोड़ना हो तो छोड़ दीजिये। यह भी संभव है कि आप खुद कांग्रेसके झमेलेमें पड़े हों। मैं मान लेता हूं कि मेरा अुपयोग होगा तो ही आप मुझे बारडोली बुलायेंगे। अिस तरह मैंने अपना मानस आपके

किसी कामका ठिकाना नहीं। प्रस्ताव पर कायम नहीं रहते। वैसे मिलने पर बातें तो बहुत करनी हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक रहा, यह अीश्वरकी कृपा है।

मेरी गाड़ी किसी तरह चल रही है।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

१. ब्रिटिश पार्लियामेण्टके सदस्योंका जो मण्डल आया था अुसका अुल्लेख है।

२. डॉ० दिनशा मेहताके प्राकृतिक चिकित्सालयकी व्यवस्था थोड़े समय तक बापूजीने अपने ही हाथोंमें रखी थी।

सामने रखा। कर्ताधर्ता आप हैं। सरदार जो ठहरे! और वह भी बारडोलीके। साथ ही बन गये हिन्दुस्तानके!

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२३४

सोदपुर,
८-१-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपको कल अिस प्रकार तार किया है:

अीश्वरेच्छा हुअी तो ३ मार्चको बारडोली पहुंचूंगा।

—बापू

मैं तो पहलीको ही आना चाहता था। परन्तु यह संभव नहीं दीखता, क्योंकि फरवरीके २८ दिन हैं और बारडोली आनेसे पहले मुझे थोड़े दिन तो पूना पर दृष्टिपात कर ही लेना चाहिये। अिसलिअे दो दिन बढ़ा दिये, ताकि ३० दिनका महीना मानकर चल सकूं। काम शुरू किया गया है तो अुसे पूरा तो करना ही होगा। धनका दुरुपयोग मुझसे हरगिज सहन नहीं हो सकता। और मैं कुछ न करूं तो अिस चीजमें दिनशाका दखल नहीं हो सकता। अिसलिअे वर्धाका काम जल्दी निपटाकर और पूनाके काम पर नजर डालकर बारडोली आअूंगा और फिर वापस पूना जाअूंगा। अभी तो यही सोचता हूं।

पार्लियामेंटरी प्रतिनिधि-मण्डलके बारेमें कुछ तो लिख चुका हूं। अुन्हें हमें धिक्कारना तो हरगिज न चाहिये। अुनका स्वागत करना चाहिये। जैसे पहले अैसे किसी मंडलके आने पर लोग पागल हो जाते थे, वैसा तो करनेकी कोअी जरूरत नहीं। परन्तु हमारे द्वार पर आये हुअे लोगोंका हम किसी प्रकार अपमान न करें। अुनके सम्मानमें कोअी भोज दें और कांग्रेसके व्यक्तियोंको आमंत्रण मिले, तो अुसे अस्वीकार करनेकी जरूरत नहीं। मैं खुद तो कहीं न कहीं मिलूंगा ही। मिदनापुरसे आनेके बाद गवर्नरसे भी मिलना ही था। कल रातको अुनसे मिला और अुन्होंने पूछा कि कहां मिल सकेंगे? मैंने अपनी

तारीखें दीं। बहुत करके मद्रासमें ही मिलेंगे। दूसरी कोअी तारीख मेल खाती नहीं दीखती।

डॉ० (सैयद) महमूद मुझसे मिलने आये हैं। परसों मिले। मैं तुरन्त आसाम जा रहा हूं, अिसलिअे मुझे बिदा करके पटना जाना चाहते हैं। अिस कारण आज जायंगे। अिस बीच गवर्नरने सुना कि वे आये हैं, तो अुनसे मिलनेकी अिच्छा बताअी। कोअी घंटा भर बैठे होंगे। कोअी खास बात हुअी नहीं लगती। मिलकर खुश हुअे। मैं तो डॉ० महमूदके साथ अभी पाव घंटे भी नहीं बैठ सका। वे आये और मेरा मौन शुरू हो गया। कल दिन भर तो मौन रहा ही। शामको आये और मैं गवर्नरके पास चला गया। वहांसे लौटा तो पौने दस बज गये थे, अिसलिअे जरा भी बैठा न जा सका।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। कंचन[1] का बिगड़ गया है। आशा रखें कि वह जी जायगी। बहुत सख्त अेनीमिया (रक्ताभाव) है। वह जारी तो था ही, पर अुसने परवाह नहीं की। आज आसाम जा रहा हूं। अुसे छोड़कर जानेका जी नहीं करता। परन्तु मुझे तो अैसा अनेक बार करना पड़ा है। बहुत करके सुशीला (डॉ० सुशीला नय्यर) अुसके लिअे ठहर जायगी। यह सवेरेके समय प्रार्थनाके बाद लिखवा रहा हूं। आजकी स्थिति कैसी रहेगी, यह तो बादमें मालूम होगा। अभी सो रही है। सुशीला भी सोअी हुअी है। रातको अधिकांश समय अुसके पास थी।

यहांके अनुभवका वर्णन किया जाय तो बहुत लम्बा पत्र लिखाया जा सकता है। अितना समय नहीं है, और आप भी यह सब पढ़कर क्या करेंगे?

राजकुमारी तो यहां है ही। बीचमें हैदराबाद (सिन्ध) जाना पड़ा था। आसाम आयेगी। फिर लौटकर अुसे मैसूर जाना होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. आश्रमकी अेक बहन।

२३५

ग्रामसेवा आश्रम,
सेवाग्राम–वर्धा,
८–२–'४६

भाअी वल्लभभाअी,

. . . को आप नहीं जानते होंगे, परन्तु वे कट्टर कांग्रेसी हैं। कष्ट भी काफी अुठाये है। मेरे पास जो पत्र छोड़ गये हैं, वह आपको भेजता हूं। अिस परसे आप देखेंगे कि . . . ने कांग्रेसको बदनाम ही किया है। अब अगर अुनका नाम अुम्मीदवारोंमें दे दिया जाय तो वह भूलसे पास न हो जाय, अिस कारणसे डॉक्टर यह पत्र मुझे दे गये। अब जो ठीक लगे सो कीजिये।

स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा।

सफर कठिन तो था, परन्तु अीश्वरने मुझे निभा लिया। और सब निर्विघ्न पूरा हो गया। अपने अिरादेके मुताबिक मैं तीन तारीखको बारडोली पहुंचनेकी आशा रखता हूं। यहांसे १७ को चलकर १९ को पूना पहुंचूंगा। यही मेरा कार्यक्रम है।

अखबारोंसे खयाल होता है कि सिन्धमें आपको अच्छी सफलता मिली है।[१]

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२३६

सेवाग्राम,
१०–२–'४६

भाअी वल्लभभाअी,

राजेन्द्रबाबू मेरे पास हैं। आपका तार मिला। ३ तारीखसे पहले बारडोली पहुंचना संभव ही नहीं।

१. धारासभाके चुनावमें।

वाअिसरॉय बुला रहे हैं। लेकिन अभी तो मेरा जाना नहीं हो सकता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२३७

सेवाग्राम,
१३–२–'४६

भाअी वल्लभभाअी,

मेरा बयान अखबारोंमें देखा होगा। जवाहरलालने जो कहा बताते हैं, वह मुझे पसन्द नहीं आया। अिस बारेमें अुन्हें पत्र भी लिखा है। लोगोंको हम अिस तरह भड़का नहीं सकते। करोड़ों गरीबोंके पेट पर हम पट्टी नहीं बांध सकते। अगर किसी विशेष मात्रामें ही खुराक हो, तो अुसे हमें अिस मौसम तक पहुंचा ही देना चाहिये। मेरी यह राय है कि अुसे पहुंचानेके प्रयत्नमें हमें भाग लेना चाहिये। परन्तु अब तो सोमवारको वहां पहुंच रहा हूं। अुस दिन मौन होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२३८

सेवाग्राम,
१४–२–'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। चेक भी मिल गया।

. . . को लिख रहा हूं। अुसकी बात विचित्र है। मेरे सामने तो सयानेपनकी बात करता है। आपका काम बहुत बढ़ गया है।

खुराकके बारेमें मेरे खयालसे आप भूल कर रहे हैं। बाहरसे भले मंगाअी जाय, मगर मैं पराअी आशाको सदा निराशा समझता हूं। लोग साहस करें तो जरूर पका सकते हैं। संभव है मिलोंके लिअे रूअी

न हो। वह भले बाहरसे आये। पर चरखेके लिअे तो हमारे यहां काफी होती है।

शेष मिलने पर।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२३९

सेवाग्राम,
१६–२–४६

भाअी वल्लभभाअी,

आप मुझे ३ अप्रैल तक नहीं रोक सकते। मैंने तो आपको लिखा है कि मुझे ज्यादासे ज्यादा १५ दिन ठहरायें। दिया हुआ वचन पूरा तो करना ही होगा। मैंने १९ तारीखके बादके बारडोलीसे बाहरके वादे भी स्वीकार कर लिये हैं। पन्द्रह दिनमें मुझसे बारडोलीमें जो काम लिया जा सके खुशीसे लीजिये। भाअी खेरके साथ सब बातें हो गअी हैं। अनके बारेमें तो मिलेंगे तब चर्चा करेंगे। अभी तो काममें फंसा हुआ हूं।

भूलाभाअीकी बीमारीका सुनकर दुःख हुआ। मैं तो चाहूंगा कि घर पहुंचूं अुससे पहले ही मुझे भूलाभाअीके पास ले जायं।[1] मौन हुआ तो क्या? मथुरादासके बारेमें तो मैं मानता हूं कि वह बिड़ला भवन आयेगा।[2]

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. स्व० भूलाभाअी बीमार थे, अिसलिअे अुनसे मिलने।

२. स्व० मथुरादास भी बीमार थे। वे बिड़ला भवन आ सकते, तो अुनसे मिलने अुनके घर न जाना पड़ता।

२४०

सेवाग्राम,
२३–२–'४६

भाअी वल्लभभाअी,[1]

आपके तपको समझता हूं। क्या होने जा रहा है? अैसी स्थितिमें मुझे बारडोली ले जाना है? १५ दिनसे ज्यादा तो हरगिज नहीं

---

१. अिस पत्रके अुत्तरमें पू० बापूने पू० बापूजीको निम्न पत्र लिखा था :—

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी,
२४–२–'४६

पूज्य बापू,

आपका पत्र सुशीलाने दिया। अरुणा[2]ने यहां आग भड़काअी और अभी तक जलती आगमें फूंक मारती रहती है। लगभग २५० आदमी गोलियोंसे मारे गये। अेक हजारसे अधिक घायल हुअे। पुलिसका बस नहीं चला। अिसलिअे बड़ी संख्यामें फौज आ पहुंची। कलके आपके छोटेसे बयानका भी अुसने बड़ा खराब जवाब दिया। अुसमें से प्रेस अेजेंसियोंने थोड़ा ही भाग छापा। 'फ्री प्रेस' पूरा अिस टोलीके हाथमें है। अच्युत और अुसकी टोली अिसे आगे रखकर सब कुछ करा रही है। जवाहरलालको अुसने तार दिया। अखबारोंमें छपवाया कि अिस स्थितिमें अेक जवाहरलाल ही अैसे नेता हैं, जो स्थितिको संभाल सकते हैं; क्योंकि अुसे मेरा साथ नहीं मिला। जवाहरलालका तार आया। मुझसे पुछवाया कि अुनके आनेकी जरूरत हो तो जरूरी काम छोड़कर आयें। मैंने जवाब दिया कि न आअिये। फिर भी वे कल आ रहे हैं। अुनका तार है कि मुझे चैन नहीं पड़ रहा है; अिसलिअे आपका तार मिलने पर भी आ रहा हूं। कल तीन बजे आयेंगे। भले ही आयें। वैसे अरुणाके तारसे अुनका आना हुआ, यह बहुत बुरा

---

२. श्री अरुणा आसफअली। १९४२ की लड़ाअीमें भूगर्भमें थीं।

रह सकता। स्पेशल ट्रेनमें किसलिअे ले जायंगे? रात अुसीमें बितानेकी बात तो सिर्फ अिसीलिअे न कि भीड़से बच सकूं? यह पत्र

हुआ। अिस प्रकार अिन लोगोंको प्रोत्साहन मिलता है। अिस टोलीका सामना नहीं किया गया तो हम खतम हो जायंगे। परन्तु अैसा करनेमें सबको अेक स्वरसे बोलना चाहिये। मुझे भय है कि नरेन्द्रदेव, सम्पूर्णानन्द और अुनकी टोली अिन लोगोंका पक्ष लेगी। अिसलिअे जवाहरलाल नरम पड़ जायंगे। शहरमें दुकानें लूटी गअीं, जाने-आनेवाले लोग लूटे गये, कुछ सार्वजनिक अिमारतें जला दी गअीं; स्टेशनके मकानोंमें और रेलगाड़ियोंमें भी आग लगा दी गअी। अैसी हालतमें अगर सेना लाअी गअी तो सरकारकी निन्दा करना भी व्यर्थ था। अब आज मामला नरम पड़ा है। कल सब शांत हो जानेकी संभावना है। परन्तु संभव है सरकार तुरन्त सेना हटा लेनेकी हिम्मत न करे। वायुमंडलमें जहर खूब फैल गया है। और अंग्रेजों पर और अंग्रेजी पोशाक पर लोगोंमें काफी रोष है। अिसमें अिन लोगोंने कितने ही विद्यार्थियोंका काफी अुपयोग किया है।

और अेक ही समयमें जलसेनाके आदमियों और हवाअी फौजके आदमियोंकी अिकट्ठी हड़तालसे तथा अिस बातसे कि अिन लोगोंको अंग्रेज साथियोंसे घटिया स्तर पर रखा जाता है और साथ ही अिस भावनाके कारण कि अंग्रेज अफसर अपमान करें तो अब सहन नहीं किया जा सकता, रंगभेदका जहर बढ़ गया है। अेशियाकी साधारण जागृति भी अिस रंगभेदके जहरको बढ़ानेका कारण है।

हमारा काम बड़ा कठिन है। ये लोग आपको बिलकुल नहीं मानते। संतके रूपमें आपका आदर है। परन्तु अब हम सब घटिया नेता हो गये हैं। अिसमें भी आपकी बात तो केवल सुननेके लिअे है। वैसे अुसे अव्यावहारिक सिद्ध हुअी ही मानते हैं और अैसा प्रचार करते हैं। अब विचार करना है कि अिस मामलेमें क्या किया जाय।

साथमें अेक पत्र अे० पी० वालोंके नाम आया है, सो देखनेके लिअे भेज रहा हूं। अखबारोंमें छापकर अिसका विज्ञापन न कीजियेगा। अे० पी० वाले भी नहीं छापेंगे। मगर अैसे बहुतसे नये-नये लोग पैदा

आपको जल्दी मिल जाय, अिसलिअे सुशीलाके साथ भेज रहा हूं। वह ज्यादा कहेगी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

हो गये हैं। कोअी प्रसिद्ध आदमी तो हैं नहीं। पर अैसे दंगोंमें आगे ही रहते हैं।

अभी काम तो जरूर बहुत है, परन्तु बारडोली जानेका निश्चय कर चुके हैं और सबको सूचना दी जा चुकी है, अिसलिअे मेरे खयालसे जाना ही चाहिये।

मेरी अब मौलानाके साथ बन नहीं रही है। वे मनमानी कर रहे हैं। अिसे अब मैं ज्यादा नहीं सह सकता। यह सब तो मिलने पर ही। मैंने अुनसे अलग होनेकी मांग की है। छोड़ेंगे तो नहीं, मगर मुझे अब स्थिति स्पष्ट करनी ही पड़ेगी।

स्पेशल तो रास्तेमें लोगोंसे होनेवाली परेशानीसे बचनेके लिअे ही है। हरअेक स्टेशन पर खड़ी रहनेवाली लोकलमें जाना बड़ा कठिन है। आसानीसे हो गया, अिसलिअे अिंतजाम कर दिया है। खास कोशिश नहीं की गअी।

क्लिनिक तो अब बिलकुल क्लीन (साफ) कर दिया होगा। अर्थात् सब आदमी चले गये होंगे और आप व मुन्नालाल दो ही रह गये होंगे। बेचारा दिनशा भी यदि कोअी हंसानेवाला नहीं हो तो दुःखी होगा।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

२४१

पूना,
२४-२-'४६

भाअी वल्लभभाअी,[1]

अवारी[2] को लिखिये कि अपवास छोड़ दें और जो मामला पेश

१. अिस पत्रके अुत्तरमें पू० बापूने पू० बापूजीको यह पत्र लिखा था :

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी,
२५-२-'४६

पूज्य बापू,

आपका पत्र मिला।

बारडोली जानेकी आपकी अिच्छा बहुत शिथिल होनेसे सिर्फ वचनमें बंधे होनेके कारण ही आपका आना मुझे पसन्द नहीं। अिसलिअे यह कार्यक्रम छोड़ दिया है। और आज बारडोली तार कर दिया है। अुन लोगोंको निराशा तो बहुत होगी। वहां तैयारी कर ली गअी थी। गायें भी दस-बीस लाकर बांध दी गअी थीं। अीश्वरेच्छा बलीयसी।

'हरिजन' में लिखिये ताकि सब निराश न हों। आअिन्दा कभी जाना हो सका तो जायंगे।

आपके यहां आनेकी जरूरत नहीं। आज सब शांति हो गअी है। जवाहरलाल आज आ रहे हैं। अिसलिअे वे क्या कर जाते हैं, यह देखनेके बाद आना हो सका तो आ जाअूंगा।

कार्यसमिति बुलाते ही नहीं। कांग्रेसके अधिवेशनका भी कुछ तय नहीं कर रहे हैं और जो जीमें आता है करते जा रहे हैं। मैं अब घबरा गया हूं। साफ बात करनेका समय आ पहुंचा है।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

२. श्री मंचेरशा अवारी। नागपुरके कार्यकर्ता। धारासभाके अुम्मीदवारके रूपमें कांग्रेसकी तरफसे न चुने जानेके कारण अुन्होंने अुपवास किया था।

करना हो वह कार्यसमिति या महासमितिको भेज दें। जनता तो है ही। मेरा सुबहका पत्र मिला होगा। सुशीलाके साथ भेजा था। मेरा तो खयाल है कि अिस वक्त मुझे बारडोली ले जानेकी बात छोड़ दें। आप कहेंगे वैसा करूंगा। मगर आप बम्बअी नहीं छोड़ सकते। मुझसे मिलने जैसी बात हो तो आ जाअिये। मेरी जरूरत हो तो मैं आनेको तैयार हूं। यहांका काम थोड़े दिनमें पूरा हो जायगा।

कार्यसमितिमें अलग-अलग रायें होना अिस समय बहुत हानिकर है। विचार कीजिये। साफ बात करनेकी अत्यन्त आवश्यकता है। बूतेसे ज्यादा मेहनत न करें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२४२

पूना,
२६–२–'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। राजाजीका क्या करेंगे? वे हट जाना चाहते हैं तो अुन्हें हट जाने दीजिये।[1]

---

१. राजाजीने ता० २१–२–'४६ को पू० बापूजीको पत्र लिखा था और अुसकी नकल पू० बापूको भी भेजी थी कि, "अब यह सब सहन करनेकी शक्ति मुझमें नहीं रही। अितने दिन बहुत सहा। निन्दकोंकी परवाह किये बिना मैंने काम करते रहनेकी खूब कोशिश की। परन्तु अब हद हो गअी है। मैंने अपने मनसे कअी बार पूछा कि यह सब किसलिअे? मेरा खयाल है कि अिस तरह खींचते रहनेमें कोअी सार नहीं। अपने बारेमें हो रही गलतफहमियां रोकनी हों तो मुझे अन्तःकरणकी आवाजका आदर करना ही चाहिये। मुझे सत्ताकी लेशमात्र लालसा नहीं, फिर भी लोग क्यों मानते हैं कि मं सत्ताके लिअे प्रयत्न कर रहा हूं?

बारडोली जाना ही हो तो मैं जानेको तैयार हूं। मैंने तो सुझाव दिया है कि अैसे कठिन समयमें आपका स्थान बम्बअीमें है। परन्तु यह सब तो आप ज्यादा जानते हैं। मेरे सुझावमें मैंने

"मेरी जगह (युनिवर्सिटीकी अेक बैठकके लिअे) साम्बमूर्ति लिये जा सकते है। . . . युनिवर्सिटीकी तरफसे मेरी जगह वे आसानीसे आ सकते हैं।"

अुपरोक्त पत्र राजाजीने अखबारोंमें भी भेजा था। अिस बातको सुनकर पू० बापूने ता० २२-२-'४६ को राजाजीको लिखा था:

"यह पत्र लिखवाते समय आपके धड़ाकेके समाचार सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। आपने बापूके नाम लिखा पत्र अखबारोंमें दे दिया है। अुसमें आपने अपने सिरका भार अुतार देनेके लिअे बापूकी अिजाजत मांगी है। मुझे अैसा डर था ही। आप साथियोंके प्रति कितना अन्याय कर रहे हैं, अिसका आपको खयाल नहीं। अितनी मुसीबतोंके बीच आप अुन्हें मंझधारमें छोड़ रहे हैं। आपके जब ये ढंग हैं, तो फिर कोअी आपका पक्ष कैसे ले? आप हमें पूछते भी नहीं। परन्तु सदासे आपका यही ढंग रहा है। मैं आपको समझ नहीं सकता।"

राजाजीका पत्र मिलनेके बाद ता० २४-२-'४६ को पू० बापूने अुत्तरमें लिखा:

"आप साम्बमूर्तिका सुझाव दे रहे हैं, अिससे आश्चर्य होता है। अगर आप हट ही जाते हैं तो फिर आपके बजाय किसे लिया जाय, यह आपको नहीं सुझाना चाहिये। यह सुझाव प्रान्तकी ओरसे आना चाहिये। हमें या बापूको आप यह सुझाव दें, यह शायद ही न्यायपूर्ण कहा जायगा। अिस मामलेमें बापू तो कुछ भी नहीं कर सकते। हम भी बिना पूछेताछे चुनाव नहीं कर सकते और प्रान्तकी तरफसे सुझाव आये, तो भी केन्द्रीय बोर्डको अुसे स्वीकार करनेमें कठिनाअी होगी। अुन्होंने स्वयं घोषणा की है कि वे खड़े नहीं होना चाहते। अिसलिअे मैं समझ नहीं सकता कि आप यह सुझाव क्यों दे रहे हैं।"

अपनी सुविधाका विचार नहीं किया। देशकी हालतका क्या तकाजा है, यही सोचा था।

अरुणाके बारेमें मैंने फिर कहा है सो देख लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२४३

पूना,
१९-३-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपका फौजका सन्देश मिल गया था। यही बात मुझे अे० पी० वालोंसे भी मालूम हुअी थी। मैंने अुस पर कोअी ध्यान नहीं दिया। ध्यान देने लायक कुछ मालूम भी नहीं हुआ। मेरे खयालसे हमें विश्वासके साथ नाव चलाते रहना चाहिये। जो होता है, अुसे देखते रहें। जो हथियारबन्द हैं, अुन्हें क्या चिन्ता? और हथियारोंमें भी रामबाण, जो सब भयोंको मिटानेवाला है।

"मांहे पड्या ते महासुख माणे,
देखनारा दाझे जोने,"* — प्रीतमकी यह पंक्ति कानमें गूंजती रहती है।

भंगी-निवासमें मेरे रहनेका प्रबन्ध आप कर रहे होंगे। न किया हो तो कीजिये। प्राकृतिक चिकित्साके लिअे मुझे कोअी गांव चुनना चाहिये। यहां भी देखता रहता हूं। मनमें निश्चय यह किया है कि फरवरीसे जुलाअी तकका समय ज्यादा ठंडे प्रदेशमें बिताया जाय। अिसमें भी अप्रैल और मअीके दो मास पहाड़ पर। यह व्यवस्था गुजरातमें नहीं हो सकती। वहां पहाड़ोंमें आबू माना जाता है। लेकिन आबूमें पंचगनी और महाबलेश्वर जैसा जलवायु नहीं है। न गुजरातमें पूना जैसी शीतलता। मैंने तो देखा नहीं। फिर भी बादमें

* जो अन्दर पहुंच गये वे तो महासुख मानते हैं, लेकिन बाहरसे देखनेवाले अीर्ष्याकी आगसे जलते हैं।

आप कुछ कह न सकें, असलिअे अितनी बात आपके कान पर डाल देता हूं। क्या प्राकृतिक चिकित्साके लिअे और अुपरोक्त शर्तका पालन किया जा सके अैसा कुछ गुजरातमें हो सकता है? और क्या आप सचमुच अैसा पसन्द करेंगे? प्राकृतिक चिकित्सा अब मेरे लिअे हॉबी (फुरसतके समयका शौक) नहीं है। अिसे आजमाना ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२४४

पूना,
२१-३-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

मैं कल अुरुळी जा रहा हूं। वहां टेलीफोनका प्रबन्ध करूंगा। तार तो आता ही है। सफलता असफलता अीश्वरके हाथ है।

खानसाहब वगैराकी बात प्रोफेसर (कृपालानी)) से अुलटी ही समझा। अिन लोगोंको जवाब यह देना है कि 'हम वही करेंगे जो कांग्रेस कहेगी।' परन्तु यह आप कहेंगे या मौलानासे कहलवायेंगे?

गुजरातकी बात समझा। मुझे कहां मौज करने जाना है?

भंगी-निवासकी कठिनाअी समझता हूं। परन्तु दूर कीजिये।

दरबार गोपालदासकी (जागीर वापस लेनेके लिअे) जल्दी न की जाय।

दिनशाके क्लिनिकका विचार हो रहा है। दक्षिण अफ्रीकाकी मीटिंगका तय नहीं है।

मणिको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२४५

अुरुळीकांचन,[1]
२२-३-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आज दोपहरको वाअिसरॉयका ३ तारीखका निमंत्रण आया। मैंने अभी जवाब नहीं दिया है। परन्तु जाना पड़ेगा।

३१ तारीखकी शामको दक्षिण अफ्रीकाकी सभा है। औस्टने सिटीज़नशिप अेसोसिअेशन बुलायेगा। मुझे अुसमें अध्यक्ष होना है। ज्यादा तो आपको वहां मालूम होगा।

यहां आरम्भ तो ठीक मालूम होता है। अन्तमें पता चल जायगा। मेरे खयालसे आपकी निराशाके लिअे स्थान नहीं।

और बातें मणिलाल (गांधी) से।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२४६

अुरुळीकांचन,
२५-३-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। (मुस्लिम) लीगका काम विचित्र है। दो सभाअें हरगिज नहीं की जा सकतीं। लीग चाहे तो भले करे। अुन लोगोंने की अैसा माना जाय, तो कोअी हर्ज नहीं। पुरुषोत्तमदासको पत्र लिखा है, वे बतायेंगे। अगर लीगकी सभा रविवारको हो और मेरा वहां अुसी दिन आना ठीक न समझा जाय तो तार दे दें।

यहां तार दिया जाता है। चाहें तो टेलीफोन भी ले सकते हैं। परन्तु छह दिनके लिअे क्यों तकलीफ की जाय?

प्राकृतिक चिकित्साका मेरा धन्धा तेजीसे चल रहा है। अुसमें

---

१. पूनाके पासका अेक गांव। वहां प्राकृतिक चिकित्साका केन्द्र खोला गया है।

कोआी घाटा नही। मुझे तो दूसरे कामोंमें अुससे मदद ही मिलेगी। अपने पास पूंजी देख लूं और अुसे काममें न लूं, तो कैसा मूर्ख बनूं? मेहनत करते हुअे १२५ वर्ष जीनेकी आशा रखनी चाहिये। वैसे जीवन-मरणका स्वामी तो आीश्वर ही है।

भंगी-निवासमें रहना ही मुझे अपना धर्म प्रतीत होता है। कठिनाअियोंको दूर किया जाय।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाआी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बआी

२४७

(पुर्जा)

अिसमें आपको नहीं लगायेंगे। आडम्बर तो करना ही नही है, परन्तु आनेका मन हो जाय तो आअिये।[1]

२४८

पूना,
१–७–'४६

भाआी वल्लभभाआी,

मैं तो काममें फंस गया हूं। कल नौ बजे मौन लिया। मंत्रियोंसे मिल लिया।

जवाहरलाल यहां ४ तारीखको आयेंगे, फिर भी आग्रह कर

---

१. यह पुर्जा निम्नलिखित पत्रके बारेमें लिखा गया है:

वाय० डब्ल्यू० सी० अे०
अशोक रोड,
५–४–'४६

प्रिय सरदारजी,

अगले रविवारको सुबह ११ बजे मौनमें हमने थोड़ी देरका सम्मेलन रखा है। अुसमें आप और मणिबहन आयेंगे? आयें तो हमें बड़ी खुशी होगी।

स्नेहाधीन,
अगाथा हैरिसन

रहे हैं कि मुझे मीटिंग[1] में आना ही चाहिये। अरुणा तो कह ही गअी है। मैंने अुसे मौलानाके पास भेज दिया। अगर मेरा आना जरूरी हो तो मुझे भंगी-निवासमें ही रखना चाहिये। जिस स्थानमें ले गये थे अुसीमें अच्छा रहेगा। मकान वहीं रखनेमें जरूर संकोच रहेगा। मकानवालोंको हटाकर तकलीफमें नहीं डालना चाहिये। सब कुछ सोचकर जो ठीक जंचे सो कीजिये। अगर मेरा आना जरूरी हो तो ही आप भी सोचें और लिखें।

आप जो बात कर गये वह पसन्द नहीं आअी। प्यारेलालसे पूछा। अुसने जो कहा सो आपको लिखनेको कह दिया है। मेरे किसी वचन परसे आप जो समझे, वह अर्थ अुसने नहीं निकाला। प्यारेलालने जो कहा वह प्रत्यक्ष देखकर ही कहा। परंतु मेरी बात तो अधिक गंभीर थी और है। अुसमें किसीका दोष नहीं। परिस्थितिका दोष है। अिसमें मैं या आप क्या कर सकते हैं? आप अपने अनुभव पर चलते हैं, मैं अपने अनुभव पर। आप जानते हैं कि आपकी की हुअी कुछ बातें मैं नहीं समझ पाया हूं। जैसे, चुनावका खर्च। मैं मानता हूं कि यह पुरानी बात अिस समय बहुत आगे बढ़ गअी है। आअी० अेन० अे० का मामला भी मुझे तो अच्छा नहीं लगा। आप कमेटीमें बहुत गरम होकर बोलते हैं यह भी मुझे पसन्द नहीं है। अुसमें यह स्वराज्यकी असेंबलीका किस्सा आ गया। अिसमें कहीं शिकायत नहीं, परन्तु मैं देखता हूं कि हम अलग दिशाओंमें जा रहे हैं। अिसका दुःख भी क्यों हो? शिकायत तो है ही नहीं। स्थितिको समझें।[2]

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. ता० ५–७–'४६ से कांग्रेसकी कार्यसमिति और महासमितिकी जो बैठक होनेवाली थी अुसमें।

२. अिस पत्रके जवाबमें पू० बापूने २–७–'४६ को लिखे अपने पत्रमें अिस प्रकार सफाअी दी थी:—

पंचगनी,
१७-७-'४६

भाअी वल्लभभाअी[1],

आपका पत्र मिल गया। काश्मीरका भाषण पढ़ लिया। अच्छा नहीं लगा। अितने पर भी मुझे यकीन है कि जवाहरलालको जल्दी नहीं करनी चाहिये। महाराजा (काश्मीर) पसन्द करें अुस समय

बम्बअी आनेके बारेमें तो आप ही निर्णय कर सकते हैं। अैसा लगता है कि जवाहरलाल बुला रहे हैं अिसलिअे आना चाहिये। आपकी अनुपस्थितिके बारेमें अभीसे अखबारोंमें चर्चा हो रही है। परन्तु अिसका तो क्या अिलाज?

प्यारेलालने जो पत्र लिखा वह देखा। आपने भी लिखा, अिसलिअे अब मैं क्या कहूं? मेरा ही दोष होगा। लेकिन मेरी समझमें अभी तक नहीं आया, यह दुःखकी बात है।

अलग रास्ते मैं जाना नहीं चाहता। चुनावमें आपका मत विरुद्ध था। मौलाना और कमेटीका आग्रह था। यह काम न किया होता तो शायद कांग्रेसके सिर दोष रह जाता, यह समझकर किया। अब अुन्हें कुछ कहनेको नहीं रह जाता।

आअी० अेन० अे० कमेटीमें जवाहरलालके आग्रहसे केवल कष्ट-निवारणके काममें पड़ा। अुसमें कोअी राजनीतिक भाग नहीं था।

कमेटीमें मैं गरम होकर बोला, यह तो अेक प्रकारका प्रकृति-दोष ही है। जवाहरलालके साथ कभी-कभी अैसा जरूर हो जाता है। वैसे अिस बोलनेकी तहमें दूसरी कोअी बात नहीं है।

मेरा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है, परन्तु अब अिसका अुपाय नहीं दीखता। अिस बार दिल्लीका वातावरण अविश्वास और सन्देहसे भरा हुआ प्रतीत हुआ। गरमी भी खूब थी और हमारा तंत्र भी बेसुरा था। अब तो अीश्वर करे सो सही। आपके ठहरनेका अिन्तजाम कर रहा हूं।

१. यह पत्र पू० बापूके निम्न लिखित पत्रके अुत्तरमें है :

नहीं जाना है। हमें सोचना चाहिये। कार्यसमितिको तो बैठकर विचार करना ही चाहिये। कार्यसमिति पसन्द करे तभी अुन्हें जाना चाहिये। यह भी हो सकता है कि काश्मीरके मामलेको सारे किये-कराये पर पानी फेर देनेके लिअे अिस्तेमाल करें। मैं मानता हूं कि अैसी नौबत न आनी चाहिये। मेरी अपेक्षा होगी कि जो कुछ किया जाय वह कॉन्स्टीटचुअेण्ट असेम्बली (संविधान-सभा) के मिलनेके बाद किया जाय। मैं तो यहां तक जाता हूं कि मौलाना अथवा आप पहले वहां जाकर देखें कि क्या हो सकता है। काश्मीरके लोगोंके लिअे मौलानाका अेक बयान जारी करना भी जरूरी हो सकता है। हमारी तरफसे सारे कदम अुठाने

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी,
१७–७'–४६

पू० बापू,

साथमें काश्मीरके महाराजाका भाषण भेज रहा हूं। अिस परसे सन्देह होता है कि अब अुस काममें कुछ करेंगे या नहीं। वाअिसरॉयका पत्र भी सन्देह अुत्पन्न करनेवाला ही था। जवाहरलालकी तरफसे कोअी समाचार नहीं आया। अुन्हें पत्र मिल गया होता, तो मैं मानता हूं कि वे खबर देते। मेरे खयालसे वाअिसरॉय, पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट, भोपाल और काश्मीर सबने मिलकर यह निर्णय किया होगा। अिसमें यह तय किया होगा कि अभी तुरन्त न आने दिया जाय।[1] परन्तु थोड़े समय बाद यह घोषणा कर दी जाय कि पूरी शान्ति हो गअी है और अब कोअी खतरा नहीं है, अिसलिअे प्रतिबन्ध हटा दिया गया है। अब क्या किया जाय, यह निर्णय करना है।

मुन्शी २० तारीखको दिल्ली जानेवाले हैं। जवाहरलाल भी अुस समय वहीं होंगे। अपनी सलाह भेजिये।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

---

१. पं० जवाहरलालको।

पर भी सब कुछ भंग होता हो तो भले हो जाय। मामला धीरजसे सोचनेका है। शेष भाअी मुन्शी कहेंगे।

जवाहरलालको मैंने जो पत्र लिखा है, वह भी देख लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२५०

पंचगनी,
२१-७-'४६

भाअी वल्लभभाअी,[1]

अभी चार बजे हैं। लालटेनके अुजालेमें लिख रहा हूं। सब सो रहे हैं। पांच बजे बिजली आयेगी तब अुठेंगे। अिसलिअे यह पुर्जा ही मेरे पास है।

---

१. पू० बापूजीने यह पत्र पू० बापूके नीचे लिखे दो पत्रोंके अुत्तरमें लिखा था:

(१)

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी-१
१६-७-'४६

पू० बापू,

अिसके साथ भीमरावके भाषणकी दो कतरनें भेजी हैं। अिनसे पता लगेगा कि अुन्हें क्या चाहिये। जब तक वे अलग मताधिकार मांगते हैं, तब तक अुनसे मिलनेसे क्या फायदा? आपने अुन्हें बम्बअीमें मिलनेका वचन दिया है, अैसा अखबारोंमें पढ़ा। अिसलिअे ये कतरनें भेजी हैं।

काश्मीरके बारेमें कुछ पता नहीं लगा। वेवलका जवाब तो अितना ही आया कि महाराजाने जवाहरलालको सीधा पत्र लिखा है। क्या लिखा है, यह पता नहीं चला। डाकमें पत्र डाला होगा तो वह पड़ा रहेगा। डाकवालोंकी हड़ताल जारी है।

आपके सब पत्र मिल गये। भीमराव (आम्बेडकर) मे मिले यह अच्छा हुआ। वे नहीं मानेंगे। २० फीसदी

———————

पंचगनीसे पूना अच्छा हो तो वहांसे लौट क्यों नहीं आते?

अहमदाबादमें अभी तक छुटपुट पागलपनकी घटनाअें होती रहती हैं। अिनकी जड़में क्या है, यह समझमें नहीं आता।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

(२)

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी–१
१९–७–'४६

पू० बापू,

आपका पत्र मिला। अिस समय काश्मीर जानेका विचार छोड़ देना चाहिये। परन्तु वे मानेंगे या नहीं, अिसमें शक है। महाराजाका पत्र अुन्हें मिला होगा, परन्तु मुझे पता नहीं चला।

आज अेन० अेम० जोशी भीमरावको लेकर आये थे। आनेसे पहले जोशी कल मिल गये थे। मैंने तो कह दिया था कि अुन्हें बुलाने या मिलनेसे कोअी फायदा नहीं। अुन्हें अलग मताधिकार चाहिये। जोशी बोले कि कोअी बीचका रास्ता निकल सकता है। मैंने कहा, अिसमें बीचका रास्ता क्या हो सकता है? जोशीने सप्रू-कमेटी द्वारा की गअी सिफारिशको मध्यम मार्गके रूपमें पेश किया। मुझे वह पसन्द न आयी। फिर भी मिलनेसे अिनकार करना तो अुचित प्रतीत नहीं हुआ। दोनों आज आये। आम्बेडकरने तो दूसरी ही बात की। वे बोले कि अभी जितनी जगहें मिल रही हैं, वे सब तो अलग मताधिकारसे भर ली जायें और बाकी सबमें हरिजनोंको खड़े रहने और मत देनेका अधिकार रहे। यानी वे तो दोनों हाथोंमें लड्डू रखने जैसी बात करने लगे। आज मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, अिसलिअे दुबारा आनेको कह गये हैं। परन्तु अुनकी बात अभी तक सीधी नहीं

क्यों?[1] अिसमें कुछ पेंच है। सोचिये। रकम तो रखनी ही चाहिये। यह समझमें आ सकता है कि अमुक संख्या हरिजनोंकी सब चुनावोंमें होनी चाहिये।

काश्मीरके बारेमें महाराजाका पत्र ठीक मालूम होता है। मैंने जो सलाह दी है वह सब आपको बता चुका हूं और नकलें अिस पत्रके साथ भेज दूंगा।

मैंने यह कहा है कि भीमराव पूना या सेवाग्राम आ जायं तो मिल लूंगा। अखबारोंमें गलत छपा है।

अैसा लगता है कि कांग्रेसके हाथोंमें से बहुत कुछ निकल जायगा। डाकिये[2] न मानें, अहमदाबाद[3] भी न मानें, हरिजन न मानें, मुसलमान न मानें! यह कैसी स्थिति है?

लगती। सारे निर्वाचक-मंडल संयुक्त ही रहें और पैनल न रहे; फिर जो हरिजन अुम्मीदवार कमसे कम २० फी सदी हरिजनोंके मत पा सकें वे ही चुने जायं। अैसा सुझाव दिया जाय तो आपकी क्या राय है, यह सोचकर लिखिये। मेरे खयालसे अितना मान लें तो बहुत ठीक हो जाय। अुनकी दूसरी बात है हरिजनोंके लिअे बड़ी रकमें अलग रखनेकी। अिसमें कोअी बड़ी आपत्ति न होगी।

अहमदाबादवाले अभी तक पागलपन कर रहे हैं।

सेवक

वल्लभभाअीके प्रणाम

१. १९३२ में हुअे यरवडा-समझौतेके अनुसार दस वर्षके लिअे हरिजन अुम्मीदवारोंके लिअे दो चुनावोंकी प्रथा रखी गअी थी। पहले चुनावमें केवल हरिजन मतदाता ही अेक जगहके लिअे चार अुम्मीदवारोंको (पैनल) चुनें और दूसरे संयुक्त निर्वाचनमें वे चार ही खड़े हो सकें, जिनमें से अेक चुना जाय। यह दस वर्षकी मियाद पूरी हो जानेके कारण सवाल यह अुठा कि नये चुनावोंमें क्या व्यवस्था रखी जाय।

२. बम्बअीमें हो रही डाकियोंकी हड़ताल।

३. अहमदाबादके हिन्दू-मुस्लिम दंगे।

कल देव,[1] औंधके राजासाहब, अप्पा[2] वगैरा आये थे। बहुत बातें कीं। पूर्वी अफ्रीकाके राजदूतोंको लेकर . . . भाअी आये थे। वे आपसे मिलेंगे। अैसा मालूम होता है कि अिस विषयमें कुछ किया जा सकता है।

आप अहमदाबाद नहीं जा सकते? खुद अपना स्वास्थ्य बिगाड़ रहे हैं। यहां आ जाते तो कितना अच्छा होता?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२५१

पंचगनी,
२३–७–'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। . . . भी मिले। गोआके बारेमें आप अेक बयान दें तो ठीक रहेगा। अुसमें लिख सकते हैं कि कअी दलोंके लोग सलाह लेने आते हैं। वे अितने ज्यादा दल रखते हैं, यह खतरनाक बात है। सबको मिलकर अेक ही आवाजसे बोलना चाहिये और गोआके बाहरके लोगों पर आधार नहीं रखना चाहिये। बहुतसे वक्तव्योंसे भी परेशानी पैदा होती है। अिसलिअे अगर सब सामग्री बम्बअी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीको भेज दी जाय और अुसकी तरफसे अेक अधिकारपूर्ण वक्तव्य प्रकाशित हो तो अच्छा है। आपकी समझसे गोआकी लड़ाअी केवल नागरिक स्वतंत्रताकी है। अुसमें सफलता मिलनी ही चाहिये। सारा हिन्दुस्तान अुनकी लड़ाअीसे सहानुभूति

---

१. श्री शंकरराव देव। महाराष्ट्रके नेता। अुस समय कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य।

२ श्री अप्पा पंत। औंधके राजाके भतीजे। अिस समय पूर्वी अफ्रीकामें भारत सरकारके राजदूत।

रखता है, परन्तु कष्ट तो गोआके भारतीयोंको ही अुठाने पड़ेंगे। हिन्दुस्तानके आजाद होने पर गोआकी आजादी अनिवार्य हो जायगी। अिसमें गोआवालोंको आज शायद बहुत कुछ करना जरूरी भी न हो।

भीमरावकी बात समझा। अुनसे जरूर मिलें। अुनके भाषण खराब हैं। अुन्होंने जो बातें लिखी हैं, अुनका जवाब दें तो ठीक रहे। चुनावके बारेमें और सवर्ण हिन्दुओंके बारेमें मेरे पास आंकड़े नहीं हैं। जुटा रहा हूं।

आपके स्वास्थ्यके बारेमें मैं आपसे जरा भी सहमत नहीं हूं। अुसके लिअे कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये। आपको दिनशा पर जरा भी भरोसा नहीं है, यह दुःखकी बात है। परन्तु दूसरे भी बहुत लोग हैं। स्वास्थ्यको गिरने न दीजिये।

अहमदाबादके बारेमें समझा। लोग ही न चाहें तब तो जाना हो ही नहीं सकता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२५२

पंचगनी,
२४-७-'४६

भाओी वल्लभभाओी,[१]

आपका पत्र मिला। तुरन्त आबिदअली[२] को लिखने बैठ गया। जबरदस्ती कोओी कांग्रेस-भवनमें नहीं बैठ सकता; और अुपवास भी कैसे कर सकता है?

---

१. यह पत्र पू० बापूके नीचेके पत्रके अुत्तरमें है:

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बओी,
२२-७-'४६

पू० बापू,

आपका पत्र मिला। ब्रजकृष्ण आ गये।

जवाहरलालकी यहांकी अखबारी मुलाकात अैसी थी, जो हमें शोभा नहीं दे सकती। अब भी अुन्हें रोज-रोज कुछ न कुछ समाचार-पत्रोंमें देना पड़ता है। अैसा लगता है कि सोशलिस्टोंको खुश करनेके लिअे शायद अुन्हें यह करना पड़ता है।

वे २४ तारीखको काश्मीर जायं तो अब कोओी हर्ज नहीं। परन्तु शेखको छुड़वाये बिना कोओी रास्ता नहीं निकलेगा और अुन्हें भी चैन नहीं पड़ेगा।

डाकियोंकी हड़तालके लिअे थोड़ी-बहुत जिम्मेदारी सरकारकी है। यह प्रश्न सहज ही हल हो जाता। अुसे लम्बानेसे सर्वत्र छूत लगी है। आज तार भी बन्द हैं। मिलें बन्द हैं। स्कूल-कालेजोंमें कोओी लड़के गये नहीं हैं। आबिदअली भी खूब हड़तालें करवा रहा है। साम्यवादी तो हैं ही। यह सब होने पर भी कांग्रेस अगर अेक स्वरसे बोल सके, तो अब भी सब कुछ ठिकाने आ जाय। परन्तु आज तो अुसकी बेसुरी आवाज है। ९ अगस्तके लिअे जयप्रकाशका अेक कार्यक्रम प्रकाशित

---

२. श्री आबिदअली जाफरभाओी। बम्बओीके अेक कांग्रेसी मुसलमान।

जवाहरलालकी बात समझा। अिस समय तो सब कुछ निर्विघ्न पार हो जायगा। बादकी बादमें देखेंगे।

प्यारेलाल कहता है कि वर्धामें ८ तारीखको कार्यसमितिकी बैठक होनेकी बात अखबारोंमें आअी है।

मुन्शीकी दिल्लीकी मुलाकातका हाल सुना होगा। काम सब नाजुक होता जा रहा है।

डाकियोंकी हड़ताल हुअी और अब साथमें दूसरी हुअी है। यह सारा मुझे तो बहुत सूचक प्रतीत होता है। अिस बारेमें आपको और सबको बहुत विचार करनेकी जरूरत है। कांग्रेसकी अूपरसे भले ही शोभा हो, परन्तु लोगों परसे अुसका काबू अुठ गया दीखता है।

हुआ है और कांग्रेसकी ओरसे जवाहरलालका दूसरा। पहलेमें अुस दिन हड़ताल, जुलूस वगैरा रखे गये हैं। दूसरेमें सब निकाल दिये गये हैं। अैसा चल रहा है।

मोरारजी कल अहमदाबाद गये हैं। वहां अब मुसलमान भी थक गये हैं। सुलह चाहते हैं। चुंद्रीगर मोरारजीके पास गया था। मैं तो अहमदाबाद नहीं गया। वहांके जिम्मेदार आदमियोंने ही कहा कि मैं न आअूं। अिसलिअे नहीं गया। तबीयत बिगड़ी तो जरूर है। परन्तु वहां आनेसे सुधर जायगी अैसी बात नहीं है।

भीमरावके लिअे जोशी आज फिर आये थे। अुनका बड़ा आग्रह है कि अिन्हें समझा लेनेका प्रयत्न किया जाय। मगर मुझे कोअी आशा नहीं दीखती। फिर भी कोशिश कर देखनेमें नुकसान नहीं मालूम होता।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

मैं मानता हूं कि डाकियोंका मामला अेक-दो दिनमें तय हो जायगा।

वल्लभभाअीके प्रणाम

महात्मा गांधीजी,
पंचगनी

अथवा कांग्रेस ही दूरसे अिसमें शामिल हो। यह सफाअी होनी चाहिये। नहीं तो हाथमें आअी हुअी बाजी चली जायगी।

तबीयत अच्छी होगी।

यहां तो आजकल चौवीसों घंटे बरसात हो रही है।

बापूके आशीर्वाद[1]

---

१. अिस पत्रके अुत्तरमें पू० बापूने अुसी दिन अिस प्रकार पत्र लिखा था :

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी,
२४–७–'४६

पू० बापू,

आज रातको नौ बजे दिल्लीसे सुधीरका टेलीफोन आया। अुसकी आवाज सुनकर मैं तो चकित हो गया। मैं मानता था कि वह वहां गया है, और अुसका कोअी जवाब ही नहीं आया।

अुसने कहा कि यहांसे जाकर अुसने पैसेज और प्रायोरिटी मांगी, तो वाअिसरॉयने नहीं देने दी और अेबलने अुसे खबर दी कि कांग्रेसका होनेसे अुसे जाने दें तो जिन्नाके आदमीको भी जाने देना पड़े। अुसने कहा कि मैं कांग्रेसकी तरफसे नहीं जा रहा हूं। फिर भी अिनकार कर दिया। अन्तमें अुसने भारतमंत्रीको तार दिया और वाअिसरॉय और लॉरेन्सके बीच कअी तार आने-जानेके बाद आज अुसे प्रायोरिटी मिली। वहांसे जब यह कहा गया कि ये हमारी तरफसे आ रहे हैं, तब मजबूर होकर दी गअी। फिर भी सुधीरसे कहा गया कि अुन्हें प्रायोरिटी दी तो जरूर गअी है, मगर मि० जिन्नाको भी खबर दे दी गअी है कि सुधीर वहां जा रहे हैं। अिसलिअे आपको किसीको भेजना हो तो आपके आदमीको भी सुविधा दी जायगी।

डाक-विभागकी हड़तालमें भी अैसा ही हुआ है। वाअिसरॉयने जवाहरलालसे कहा कि कांग्रेसको अपना असर अिस्तेमाल करके हड़तालका अंत करना चाहिये। क्योंकि थोड़े ही दिनोंमें अुसे जिम्मेदारी संभालनी है। परंतु तुरन्त ही अेक पत्र जिन्नाको भी अिसी आशयका कल ही लिखा। अिस प्रकार हर मामलेमें पेरीटी

२५३

पंचगनी,
२७–७–'४६

भाअी वल्लभभाअी,[1]

आपका पत्र मिल गया। सुधीर[2] अब अिनकार तो कर ही नहीं सकना। और जिन्ना साहबका आदमी भी जाय तो भले जाय।

(बराबरी) का खयाल रखकर काम कर रहे हैं। अिसलिअे यह कहना कठिन है कि क्या होगा।

सुधीरने आपको जो लम्बा पत्र लिखा था, वह संभव है आपको न मिला हो। अुसने मुझे भी सारे हालचालका लम्बा पत्र लिखनेकी बात कही। पर मुझे वह पत्र नहीं मिला। डाककी हड़तालमें ये सब दब गये होंगे।

आबिदअली कांग्रेस-भवनमें पड़ा है। वहांसे हटता नहीं। किसीकी मानता नहीं। कांग्रेसवाले सब परेशान हो रहे हैं।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

१. यह पत्र पू० बापूके नीचेके पत्रके अुत्तरमें लिखा गया है:

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी–१
२६–७–'४६

पू० बापू,

आपके पत्र मिले। गोआके बारेमें कल बयान निकाल दूंगा। डाकवालोंकी हड़ताल अभी तक जारी है। अिसमें दोष दोनों ही पार्टियोंका है। सरकारी तंत्र टूट गया है। प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारोंके बीच सहयोग नहीं है।

जवाहरलालका काश्मीर जानेसे पहले आदमीके साथ भेजा हुआ पत्र कल शामको मिला। अुसके साथ वाअिसरॉयका पत्र और अुसका अिनकी ओरसे दिया गया जवाब दो महत्त्वपूर्ण पत्र हैं। अिसलिअे अिन सभीकी नकल भेज रहा हूं।

२. श्री सुधीर घोष। फरीदाबादके निर्वासित केन्द्रमें सरकारी अफसर थे।

मेरा खयाल है कि मैंने जो पत्र लिखा होगा, अुसमें यही कहा होगा कि आपका कोअी आदमी जाय तो मंत्रिमंडलको अच्छा लगेगा। कुछ भी हो, अगर समय रहे तो सुधीरका आपसे और मुझसे मिलकर जाना अच्छा होगा। जो कुछ हो रहा है अुस पर विचार जरूर करना चाहिये। परन्तु अिसकी चिन्ता करना मैं व्यर्थ मानता हूं। सुधीरका पत्र मुझे तो नहीं मिला। मिलता तो तुरन्त आपको भेज देता।

आबिदअलीको मैंने पत्र लिखा है। वह परसों रातको या कल सवेरे पहुंच सका होगा। मेरे खयालसे आबिदअली हटें ही नहीं, तो कांग्रेसके अधिकारियोंको अुनके विरुद्ध सत्याग्रह करना चाहिये। अर्थात् अुन्हें सूचना देकर जब तक वह चले न जायं, तब तक सब कमरे बन्द करके कांग्रेस-भवन खाली कर देना चाहिये। अगर अैसा सत्याग्रह न कर सकें, तो अुन्हें मदाखलत बेजाका नोटिस देकर खाली करनेको कहना चाहिये।

मैं ५ या ६ तारीखको पूना छोडूंगा। वर्धा जानेका अिरादा है। जान-बूझकर कल्याणसे ही गाड़ी पकड़नेका विचार है। फिर बम्बअी तक आनेकी जरूरत नहीं। पुलिसके पहरेमें रहना और मकान-मालिक और दूसरे लोगोंको असुविधामें डालना मुझे पसन्द नहीं। मैंने यह सारी बात ओवरसियरसे कही थी। लीलावतीसे भी कही थी और बहुत करके पाटीलसे भी।

फिर, अन्यत्र कहीं ठहरना भी मुझे अच्छा नहीं लगेगा। यह सब आप भी ठीक मानते हैं न?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणि, तुमने तो कुछ लिखा ही नहीं।

बापू

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

[1] सुधीर आज कराचीसे चल देगा। जानेसे पहले आज अुसका भेजा हुआ छोटा-सा पत्र आया है। वह भी आपके देखने लायक है। अुसकी नकल भेज रहा हूं। अब तो मैं समझता हूं आप पूना आयेंगे।

सेवक
वल्लभभाअीके दंडवत् प्रणाम

२५४

पूना,
२९-७-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिल गया। देवने बात भी की। और भी करेंगे। राजाओं[1] से मिला। अुसका पूरा सार लिखा जा रहा है। पूरा हो जाने पर नकल भेजूंगा।

आबिदअलीका लम्बा पत्र आया है। आज जवाब भेज रहा हूं। अुपवास छोड़ें, कांग्रेसका मकान खाली करें और मर्जी हो तो झगड़ा[2] पंचको सौंपें। अब देखें क्या होता है? डाकियोंका मामला बिगड़ गया दीखता है। आपको यह बयान निकालना चाहिये कि वे कांग्रेसकी बात नहीं मानते।

स्वास्थ्यके बारेमें कुछ तो कीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

२५५

पूना,
३१-७-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आप अपने स्वास्थ्यकी रक्षा नहीं करते, यह ठीक नहीं।

भाअी आबिदअली लिखते हैं कि अुन्होंने अुपवास छोड़ दिया है और कांग्रेस-भवन खाली कर दिया है। मेरे नाम मीठा पत्र भेजा है।

आज गवर्नरसे मिलने जाना है। मैं समझता हूं यह तो केवल परिचयके लिअे है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. महाराष्ट्रके देशी राज्योंके राजा।
२. मिल-मालिकोंके साथ हुआ अुनका झगड़ा।

२५६

पूना,
१-८-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपके पत्रका जवाब पूरी तरह नहीं दे सका। मुख्य वस्तु आम्बेडकरके बारेमें है। मैं अुनके साथ कोअी भी समझौता करनेमें खतरा देखता हूं, क्योंकि अुन्होंने मुझे साफ साफ कह दिया है कि सच-झूठ या हिंसा-अहिंसामें अुनका विश्वास नहीं है। अुनके लिअे अेक ही न्याय है, यानी जिस तरीकेसे अुनका काम बन सके वह तरीका अपनाया जाय। जो आदमी स्वेच्छासे मुसलमान हो सकता है, अीसाअी बन सकता है, सिक्ख हो सकता है और स्वेच्छासे पुनः बदल सकता है, अुस आदमीके साथ समझौता करें तो अुसकी दस बार छानबीन करनी चाहिये। और भी अैसी बहुतसी बातें लिखने लायक हैं। मेरे खयालसे यह सब जाल है। यह catch है। और अिस समय अुन्हें २० फीसदी मांगनेकी कोअी जरूरत नहीं है। अगर हिन्दुस्तानके हाथमें सचमुच सत्ता आ जायगी — प्रान्तोंकी तो अधिकतर है ही — और सवर्ण कहे जानेवाले लोग सच्चे होंगे, तो सब कुछ ठीक ही होगा। न्याय करनेवाले लोगोंकी संख्या कम होगी और सत्ता धर्मान्ध लोगोंके हाथमें आ जायगी, तो आज कोअी भी समझौता कर लिया जाय तो भी अन्याय ही होगा। आज कुछ भी समझौता कीजिये, लेकिन हरिजनोंको मारनेवाले, मार डालनेवाले, पानी भरनेसे रोकनेवाले, पाठशालाओंसे निकाल देनेवाले और घरोंमें न आने देनेवाले आखिर कौन हैं! कांग्रेसमैन ही हैं न? यह चीज जैसी है वैसी ही स्वीकार करना बड़ा जरूरी है। अिसलिअे मैं कहूंगा कि आप जिस समझौतेका सुझाव दे रहे हैं, अिस समय अुसके लिअे प्रयत्न करना जरूरी नहीं है। परन्तु यह जाननेका प्रयत्न करना चाहिये कि कांग्रेसकी न्याय करनेकी शक्ति कितनी है। मेरा यह कथन अरण्य-रोदन हो सकता है। अैसा हो तो भी वह मुझे प्रिय है। अिसलिअे लीगके डरसे आम्बेडकरके साथ समझौता

करनेसे 'माया मिली न राम' वाली गति होगी। अितना लिखना तो बहुत हो गया।

५ तारीखको पूनासे निकलना तय किया है। ६ तारीखको वर्धा पहुंचूंगा। बम्बअी जान-बूझकर न आनेके बारेमें लिख चुका हूं। अुस पर कायम हूं। फिर भी आप फेरबदल कराना चाहें, तो मुझे कह सकते हैं। अिसलिअे मुझे कुछ घंटे डब्बेमें कहीं पड़ा रहना होगा। वहा मिलनेकी जरूरत हो तो आ जाअिये। पर स्वास्थ्यको हानि पहुंचाकर तो हरगिज न आअिये। अैसी कोअी बात नहीं जो हम चिट्ठी-पत्रीसे न कर सकें। ८ तारीखको वर्धा तो आप आयेंगे ही। अेक दिन पहले आना हो तो भी आ जाअिये।

डाकिये जबरदस्ती कर रहे हों, तो अुनके विरुद्ध बोलनेमें मैं पूर्ण औचित्य मानता हूं।

बापूके आशीर्वाद[1]

---

१. पू० बापूने अिस पत्रका निम्नलिखित अुत्तर दिया था:

६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी,
२-८-'४६

पू० बापू,

आपका पत्र मिला।

आप बम्बअी न आकर सीधे ही वहांसे वर्धा चले जायं, यही ठीक है। मैं ता० ६-८-'४६ को शामके मेलमें यहांसे चलकर ७ को सवेरे वहां पहुंच जाअूंगा।

पंजाबसे यहां सिक्ख आनेवाले हैं, अिसलिअे ५ तारीखको तो यहां रहना ही पड़ेगा। अिसलिअे जल्दी नहीं आ सकता।

भीमरावके बारेमें आपके समझनेमें फर्क है। मुसलमानोंके डरसे अिनके साथ समझौतेकी बात नहीं करता। जो यह मांगते हैं, वही अन्तमें हमारे साथ रहनेवाले दूसरे लोग भी मांगनेवाले हों, तो अिन्हें देकर अपनानेमें मैं बुद्धिमानी मानता हूं। जगजीवनराम भी अैसी ही कोअी मांग करनेवाले हैं। हार गये हैं। अिन्हें अपनाया जा

चि० मणि,

तुम्हें लिखा जा सके, अितना समय नहीं है। चमनभाअी[1] की अच्छी याद दिलाअी। साथका पत्र अुन्हें पहुंचा देना।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
बिड़ला हाअुस,
५, अलबुकर्क रोड,
नअी दिल्ली

सके तो अपना लेनेमें मुझे लम्बी दृष्टिसे फायदा दीखता है। अिनका भरोसा करनेका बड़ा प्रश्न नहीं। वचन देकर पालन न करें तो भी अिन्हींका नुकसान होगा। २० फीसदी हरिजनोंके मत प्राप्त कर सकने-वालोंको ही लेनेमें अिन्हें खास लाभ होता हो सो बात नहीं। धर्म-परिवर्तनकी जो बात अखबारोंमें आअी है, वह अिनकी दी हुअी नहीं है। अिनकी अैसी बात बेकार है। यह जोर देने लायक बात नहीं है। आखिर संविधान-सभामें भी अैसे सुझाव तो आयेंगे ही। सप्रू-कमेटीने भी अैसी सिफारिशें की ही हैं। मुझे अिसमें कोअी खतरा नजर नहीं आता। मैं आपकी बात समझा नहीं।

सवर्णोंका दोष तो है ही। अुसका जो अुपाय करना हो अुसे करनेमें अिससे कोअी रुकावट नहीं होगी। बम्बअी प्रान्तमें महारोंकी बड़ी आबादी तो है ही। अुनके ये प्रतिनिधि हैं और दूसरी जगह हम अिन्हें कुछ दें, तो भी अुसका लाभ अिन्हें नहीं मिलता। विचार कीजिये। मुझे कोअी खतरा नहीं मालूम होता।

डाक-विभागका निपटारा कर डाला।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

कनूके साथ अुरुली भेजा।

१. अहमदाबादके सेठ मंगलदास गिरधरदासके भाअी स्व० सेठ चिमनभाअी गिरधरदास अुस समय सख्त बीमार थे।

२५७

अुरुळीकांचन,
जिला पूना,
२-८-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

राधाकृष्ण[1] ने हड़तालके बारेमें पत्र लिखा है। अुसमें हड़तालियों द्वारा अेक आदमीके घायल किये जानेकी शिकायत है। और दूसरोंके साथ भी मारपीट की गअी है। जिस परसे मैंने आबिदअलीको पत्र लिखा है। अुसकी नकल भेज रहा हूं। अगर मारपीट जारी ही रहे, तो मिल-मालिकको मिल बन्द कर देनी चाहिये। और अैसा बन्दोबस्त करना चाहिये, जिससे कोअी आग न लगा सके अथवा मालको नुकसान न पहुंचा सके।

लीगके मामलेमें लिखनेका विचार हुआ करता है। कभी यह खयाल होता है कि कार्यसमिति ८ तारीखको मिल रही है, अिसलिअे तब तक प्रतीक्षा करूं। कभी जीमें आता है कि लिख डालूं। देखता हूं कि अिसमें से क्या होता है।

६ तारीखको सेवाग्राम पहुंचनेकी आशा रखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

[साथका पत्र]

अुरुळीकांचन,
जिला पूना,
ता० २-८-'४६

भाअी आबिदअली,

तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। मुझे भाअी खेतान ता० ३१ को मिल गये। मैंने अुनसे सलाह की कि अगर अुनको कुछ कहना है तो

---

१. श्री आबिदअलीने जिस मिलमें हड़ताल कराअी थी अुस मिलके मालिक।

वह भी किसी पंचसे तहकीकात करवानी चाहिये और भाओी भीमजी या हड़तालिओंको या भाओी आबिदअलीको शिकायत है वह भी पंचके पास जानी चाहिये। यही सभ्य न्यायका तरीका है।

सत्याग्रही हड़ताल या ओर किसी प्रकारका सत्याग्रह तब ही हो सकता है, जब अिन्साफ पानेके सब मामूली दरवाजे बन्द हो जाते हैं और अिन्साफके बदले आपखुदी चलती है।

आज खेतानजीका खत मिला है। अुसमें वे लिखते हैं कल यानी ३१-७-'४६ की रात्रिको हड़तालियोंने अेक हेडक्लार्कको मारा और कल सवेरे अुन्होंने कओी आदमियोंको चोट पहुंचाओी। हड़ताली अभी तक काम पर वापिस नहीं आये हैं।

अगर अैसा हुआ तो अच्छी बात नहीं बनी है और क्योंकि हड़ताली लोग तुम्हारी कैदमें हैं अिसलिअे अैसी कोओी ज्यादतियां न करें यह देखनेका तुम्हारा फर्ज है। अगर कुछ भी कहने जैसा हो तो सरदार वल्लभभाओी पटेलसे कहनेकी मेरी सलाह है।[1]

२५८

अुरुळी,
३-८-'४६

भाओी वल्लभभाओी,

आपका पत्र मिला। जहां आपको खतरा न दिखाओी दे, वहां मुझे कहना ही क्या हो सकता है? अवश्य भीमरावसे संधि कर लीजिये। मुझे अधिक कुछ नहीं कहना है।

आपके आनेके बारेमें समझ गया। ७ तारीखको प्रतीक्षा करूंगा। रामेश्वरदास (बिड़ला) का पत्र पहुंचा दें।

चिमनलाल (गिरधरदास) आखिर चल बसे। सुनता हूं कि डाकवालोंका मामला फिर बिगड़ा है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बओी

---

१. यह मूल हिन्दीमें है।

२५९

सेवाग्राम,
१६–८–'४६

भाओी वल्लभभाओी,

आपका पत्र और . . . के साथ हुओे पत्रव्यवहारकी नकलें देखीं। अब अधिक समाचार आयेंगे तब जानूंगा। अपने स्वास्थ्यकी रक्षा कर सकें, तो मैं अुसे सेवाका अेक भाग ही मानूंगा। परन्तु आप सरदार ठहरे! सरदारको कौन कह सकता है?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बओी

२६०

(पुर्जा)

वाल्मीकि मंदिर,
नओी दिल्ली,
सोमवार,
२–९–'४६

प्रार्थनाके बाद आप ही लोगोंका खयाल कर रहा हूं। नमक-कर निकाल दो, दांडी-कूचको याद करो, हिन्दू-मुस्लिमको अिकट्ठा करो, अस्पृश्यता दूर करो, खादी अपनाओो।[१]

---

१. जिस दिन अंतरिम सरकारमें मंत्रीपद स्वीकार करनेवाले थे, अुस दिन शपथ-ग्रहणकी विधिके लिअे सरकारी भवनमें जानेसे पहले पू० बापू, राजेन्द्रबाबू और जगजीवनराम पू० बापूजीको प्रणाम करने और अुनके आशीर्वाद लेने गये। अुस दिन पू० बापूजीका मौनवार था, अिसलिअे हिन्दीमें यह पुर्जा लिखकर दिया।

२६१

(पुर्जा)

नअी दिल्ली,
१०–१०–'४६

यह बात गलत है। असली गरीब अिस तरह रेडियोके द्वारा सुन ही नहीं पाते। अिसलिअे मुझे अिस बारेमें जरा भी अुत्साह नहीं है।[1]

२६२

सोदपुर,
५–११–'४६

भाअी वल्लभभाअी,

जवाहरलालको लिखे पत्रकी नकल भेजता हूं। अुसे देख लें। अिससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना है। आपको कुछ समझाना हो तो समझाअिये। मैं सुननेको तैयार हूं। आप जिन अुपवासोंके साक्षी थे, अुनके जैसा यह नहीं है। लेकिन बहुत भेद भी नहीं है। मैं कुछ कम यातनामें से नहीं गुजरा हूं।

यह पत्र राजाजी तथा देवदास वगैरा पढ़ें।

मेरे पास कोअी न दौड़े। मदद देनेवाले तो बहुत हैं। मेरे जीनेका आधार केवल हिन्दुस्तानकी परम शांति है। अुसे प्राप्त करनेको आप लोग सब कुछ करेंगे ही। मेरी मृत्युकी आगाही पर जोर न देकर कहिये कि मेरी भूल हो तो मुझे मरने देनेमें कोअी हानि नहीं। मैं आनन्दमें हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

१. पू० बापूजी दिल्ली गये हुअे थे। अुस समय अुनके शब्द सारे देशको सुननेको मिलें, अिसके लिअे अेक भाअीने पू० बापूको सुझाया कि आप अुनका रेडियो प्रवचन कराअियें। वह पत्र पू० बापूजीको बताने पर अुसके जवाबमें अुन्होंने अुपरोक्त शब्द लिखे थे।

बापूजी कहते हैं कि सब पत्र मौलाना साहबको पढ़ावें।

सुशीलाके प्रणाम

सरदार वल्लभभाओी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

[साथका पत्र]

कलकत्ता,
५-११-'४६

चि० जवाहरलाल,

बिहारकी बातें सुनकर मैं बेचैन बना हूं। मेरा धर्म मुझे स्पष्ट मालूम होता है। बिहारके साथ मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध है। मैं भूल नहीं सकता। जो कुछ सुनता हूं अुसका आधा भी सत्य हो, तो वह बताता है कि बिहारने मनुष्यत्व खो दिया है। अैसा कहना कि जो कुछ हुआ सो गुण्डोंने किया है, सर्वथा असत्य होगा। अगरचे मैंने अनशनको रोकनेका बड़ा प्रयत्न किया, तो भी मैं अुसे रोक नही सकता हूं। आज सातवां दिन है कि मैंने दूध और धान्य छोड़ रखा है। शुरू हुआ खांसी और फुन्सियोंके कारण, लेकिन साथ-साथ शरीरसे अुकता गया था। अिसमें बिहारने मामला गंभीर कर दिया। और भीतरसे आवाज निकली, तू अिस हत्याकांडका साक्षी क्यों बने? अगर तेरी बात, जो दियाबत्ती जैसी साफ है, न देखी जाय तो तेरा काम खतम हुआ। क्यों नहीं मरता? अैसी दलीलोंने मुझे मजबूर किया है कि मैं अनशनकी ओर जाअूं। मैं निवेदन जाहिर करना चाहता हूं कि अगर बिहारमें और अन्य सूबोंमें हत्याकांड खतम नहीं होगा, तो मुझे अनशन करके देह छोड़ना होगा।

महमद यूनस साहबने जो खत समसुद्दीन साहब पर लिखा है सो सरदार बलदेवसिंगजीके पास है; अुसे देखो। अुसमें जो है वह सही है क्या? जो बना है अुसका पूरा बयान देना हमारा फर्ज है।

मेरा अल्पाहार चलता रहेगा। अनशनमें देर होना संभव है। दिल्लीमें तुमने मुझे अुपवासके बारेमें पूछा था। मैंने कहा था आज तो कुछ खयाल नहीं है। अब हालत वह नहीं रही है। फिर भी

तुम्हें जो कहना है सो कह सकते हो। अुसका असर होगा तो अनशनका विचार छोड़ूंगा। मेरा अभिप्राय तो यह है कि मेरे स्वभावको देखते हुअे मेरी बात तुम पसन्द करोगे। कुछ भी हो, मेरी सलाह रहेगी कि आप लोग अपना काम करते रहें। मेरी मृत्युके खयालमें समय न दें। मुझे अीश्वरकी गोदमें छोड़ें और निश्चिन्त बनें।

यह खत बिहारके प्रधान-मंडलको बता सकते हैं। यह है ब्रजकिशोरप्रसादका बिहार![1]

बापू

२६३

दत्तपाड़ा,
(नोआखाली)
१४-११-'४६

चि० वल्लभभाअी,

चि०[2] से शुरू किया अिसलिअे मिटाकर भाअी नहीं कर रहा हूं। जो हैं सो हैं। आचार्य (कृपालानी) ने सब कुछ सुनाया है। मैंने अपना विचार जवाहरलालको बता दिया है। अुसे देख लें। जितना विचार करता हूं, अुतना मेरठमें कांग्रेस अधिवेशनके विरुद्ध होता जा रहा हूं। न करना पहली बुद्धिमानी होगी और करना ही हो तो नअी दिल्लीमें कीजिये। कृपालानीकी माया[3] है, तो अुन्हें अंतिम निर्णय करने देना आपका धर्म होगा। सब राय दें। अुनका भाषण छापा जाय और पढ़ा जाय,— अगर कांग्रेस न भरी जाय तो। आपके सामने अनेक प्रश्न हैं। अुनका निपटारा करनेके लिअे शांति चाहिये, समय चाहिये। अगर अभी भूल हो जायगी, तो हमें बहुत भुगतना पड़ेगा।

मैं यहांसे निकल ही नहीं सकता। मुझसे कुछ पूछना ही पड़े तो यहां आकर पूछा जाय। यही रास्ता रह गया है। सच कहा जाय तो पूछनेकी बात ही क्या हो सकती है। बहुत कहा है, बहुत किया

---

१. यह पत्र हिन्दीमें है।

२. चिरंजीव।

३. आचार्य कृपालानी कांग्रेसके मनोनीत अध्यक्ष थे।

है। यहांका काम शायद मेरा आखिरी काम होगा। अिसमें से भला-चंगा और जीता निकल आया तो नअी जिन्दगी होगी। यहां मेरी अहिंसाकी अैसी परीक्षा हो रही है, जैसी आज तक कहीं नहीं हुअी।

आपका शरीर ठीक काम देता होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदारजी,
नअी दिल्ली

२६४

श्रीरामपुर,
४-१२-'४६

चि० वल्लभभाअी,

संविधान-सभाके बारेमें मेरी राय साथमें है। अिसे देखकर जो करना हो कीजिये। जवाहरलाल न हों यह आपत्तिजनक है। मेरा विचार तो दृढ है। रद्द करनेमें हमारी कमजोरी हरगिज नहीं है। हकीकतका तकाजा हो वह करनेमें कमजोरी कैसे? परन्तु संभव है मैं बिलकुल भूल कर रहा होअूं।

बापूके आशीर्वाद

[साथके कागज]

१

१. मेरे लिअे तो यह दीपककी तरह स्पष्ट है कि अगर मुस्लिम लीग संविधान-सभाका बहिष्कार करे, तो केबिनेट-मिशनके १६ मअीके बयानके अनुसार अुसकी बैठक नहीं होनी चाहिये। दोनों मुख्य दलों अर्थात् कांग्रेस और लीगका सहयोग अुस बयानमें साफ तौर पर जरूरी माना गया है। अिसलिअे दोनोंमें से अेक दल अगर अुसका बहिष्कार करे, तो अुस बयानके अनुसार संविधान-सभाको बुलाना अनुचित है। बहिष्कारके होते हुअे भी सरकारको संविधान-सभा बुलानी ही हो, तो अुसके लिअे अेक ही अुचित मार्ग खुला है। वह यह कि अुसे कांग्रेसके साथ मशविरा करके दूसरा बयान निकालना चाहिये। यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि कांग्रेस कितनी ही बलवान क्यों न हो, तो भी आज जिस संविधान-सभाकी कल्पना है वह तो ब्रिटिश सरकारके अुपक्रमसे ही बुलाअी जा सकती है।

२. बहिष्कारके होते हुअे भी ब्रिटिश सरकारके स्वेच्छासे दिये गये सहयोगमें संविधान-सभा मिलनेवाली हो, तो वह ब्रिटिश सेना — फिर वह हिन्दुस्तानी हो या गोरी — के दृश्य अथवा अदृश्य रक्षणमें ही मिल सकती है। मेरी राय यह है कि अैसी परिस्थितिमें हमें संतोषजनक संविधान कभी प्राप्त नहीं हो सकता। हम अिस चीजको मानें या न मानें, परन्तु हमारी कमजोरी सारी दुनियाके सामने प्रगट हुअे बिना नहीं रह सकती।

३. यह कहा जा सकता है कि अिन परिस्थितियोंमें संविधान-सभाके रूपमें न मिलना कायदे आजम या मुस्लिम लीगकी शरणमें जानेके बराबर है। अैसा आक्षेप हो तो मैं अुसकी परवाह नहीं करूंगा, क्योंकि संविधान-सभाको छोड़ देनेमें कांग्रेसकी दुर्बलता नहीं, परन्तु कांग्रेसका बल होगा। हम हकीकतोंको ध्यानमें रखकर अैसा करेंगे। अगर हमने अितनी प्रतिष्ठा और शक्ति प्राप्त कर ली हो कि ब्रिटिश सरकारको अलग रखकर भी हम संविधान-सभा बुला सकें, तो यह चीज अुचित होगी। फिर हमें मुस्लिम लीगका और राजाओं सहित दूसरे दलोंका सहयोग लेना चाहिये और यदि अुनमें से कोअी शरीक न हो तो भी अनुकूल स्थान पर संविधान-सभा बुलानी चाहिये। यह भी हो सकता है कि अुसमें कांग्रेसी प्रान्त और राजा, अितने ही दल शम्मिलित हों। मेरे खयालसे अैसी स्थिति गौरवपूर्ण और वस्तुस्थितिके साथ सब प्रकारसे सुसंगत होगी।

(ह०) मो० क० गांधी

श्रीरामपुर,
नोआखाली,
४–१२–'४६

२

सम्राट् महोदयकी सरकारके बयान[1] के परिणामस्वरूप मेरा रवैया कुछ अैसी दिशा स्वीकार करनेके पक्षमें है :

---

१. वह बयान नीचे दिया जाता है :—

सम्राट् महोदयकी सरकारने लंदनमें कल रातको निम्नलिखित वक्तव्य प्रकाशित किया है :

सम्राट् महोदयकी सरकारकी स्थिति यह है कि अुसकी हमेशा यह राय रही है कि विभागों[1] के निर्णय, अुससे भिन्न कुछ करनेका समझौता न हुआ हो वहां, सादे बहुमतसे होंगे।

सम्राट् महोदयकी सरकारको पं० नेहरू, मि० जिन्ना, मि० लियाकतअली खां और सरदार बलदेवसिंहके साथ जो बातचीत चल रही थी, वह कल शामको पूरी हो गअी है। पंडित नेहरू और सरदार बलदेवसिंह कल सुबह हिन्दुस्तान लौट रहे हैं।

[–निवेदन अगले पृष्ठ पर चालू

१. केबिनेट-मिशनके १६ मअीके वक्तव्यमें यूनियनके और साथ ही प्रान्तोंके संविधान तैयार करनेके बारेमें निम्नलिखित योजना सुझाअी गअी थी :

संविधान तैयार करनेवाली सभाकी कार्रवाअी अैसी होगी कि समस्त सभाकी अेक प्रारंभिक बैठक हो जानेके बाद प्रान्तीय प्रतिनिधि विभागों (सेक्शन्स) में बंट जायंगे। विभाग 'अ' में मद्रास, बम्बअी, संयुक्त प्रान्त, बिहार और अुड़ीसा होंगे। विभाग 'ब' में पंजाब, सरहद प्रान्त और सिन्ध आयेंगे। और विभाग 'क' में बंगाल और आसाम होंगे। अिन विभागोंकी बैठकोंमें अपने-अपने विभागके प्रान्तोंके संविधान तैयार किये जायंगे। अिन विभागीय बैठकोंमें यह भी फैसला किया जायगा कि अमुक प्रान्तोंके मंडल (ग्रूप्स) बनाये जायं या नहीं। अगर मंडल बनाये जायं तो मंडलोंको क्या क्या विषय सौंपे जायं, यह भी विभागीय बैठकोंमें तय किया जायगा। बादमें संविधान बनानेवाली सभाके सब सदस्योंकी संयुक्त बैठकमें सारे भारतीय संघका (यूनियनका) संविधान तय किया जायगा। अिस व्यवस्थाके अनुसार अेक पर अेक, अिस प्रकार तीन तरहके तंत्र अस्तित्वमें आते थे। हरअेक राज्य और प्रान्त अपना संविधान बनाये और अुसकी अपनी कार्यकारिणी और धारासभा हो। अुस पर अमुक अमुक प्रान्तोंका मंडल हो। अुस मंडलकी भी कार्यकारिणी और धारासभा हो और ठेठ अूपर भारतीय संघ हो। अुसकी भी कार्य-कारिणी और धारासभा हो।

अुसका यह सुझाव है कि कांग्रेस अिस अर्थसे सहमत न हो, तो वह निर्णयके लिअे फेडरल कोर्टके पास जाय। पंडित नेहरूकी

अिस बातचीतका अुद्देश्य यह था कि संविधान-सभामें सभी दल शरीक हों और सहयोग दें। यह नहीं सोचा गया था कि कोअी भी अंतिम समझौता हो सकेगा। क्योंकि भारतीय प्रतिनिधियोंको किसी भी आखिरी फैसले पर पहुंचनेसे पहले अपने-अपने साथियोंसे सलाह-मशविरा करना होता था।

अिस बातचीतमें मुख्य कठिनाअी १६ तारीखके केबिनेट-मिशनके बयानके पैरा १९ (५) तथा (८) के अर्थके बारेमें पैदा हुअी है। यह पैरा संविधान-सभाके विभागोंमें मिलनेके बारेमें है।

पैरा १९ (५) अिस प्रकार है:

ये विभाग हर विभागमें आये हुअे प्रान्तोंके प्रान्तीय संविधान तैयार करनेका काम करेंगे और अुक्त प्रान्तोंके लिअे यह तय करेंगे कि किसी मंडलका संविधान (ग्रूप कांस्टिटयूशन) बनाया जाय या नहीं। अगर अैसा संविधान निश्चित करना होगा तो अुपरोक्त मण्डल यह तय करेगा कि कौनसे प्रान्तीय विषय लिये जायं। किसी भी प्रान्तको नीचे दी हुअी अुपधारा (८) की शर्तोंके अनुसार मंडलमें से बाहर निकल जानेका अधिकार रहेगा।

पैरा १९ (८) अिस प्रकार है:

नअी वैधानिक व्यवस्थाके अमलमें आते ही किसी भी प्रान्तको जिस मंडलमें रखा गया होगा अुसमें से बाहर निकल जानेकी आजादी होगी। अिस बातका निर्णय नये संविधानके अनुसार पहले साधारण चुनाव हो जानेके बाद अुन अुन प्रान्तोंकी नअी विधान-सभाअें कर सकेंगी।

केबिनेट-मिशनकी हमेशा यह राय रही है कि जहां अिसके विरुद्ध समझौता न हुआ हो वहां विभागोंके निर्णय सम्बन्धित विभागके प्रतिनिधियोंके सादे बहुमतसे किये जायंगे। यह मत मुस्लिम लीगने स्वीकार कर लिया है। परन्तु कांग्रेसने दूसरी राय प्रगट की है। वह यह कहती है कि बयानको समग्र रूपमें पढ़नेसे अुसका सही

मौजूदगीमें ब्रिटिश सरकारने जिन्ना साहबको यह वचन दिया है कि अुनके अपने अर्थसे फेडरल कोर्टका निर्णय भिन्न होगा, तो वह सारी परिस्थिति पर फिरसे विचार करेगी।

अर्थ यह होता है कि प्रान्तोंको किसी खास मंडलमें रहनेके बारेमें और अपने संविधानके बारेमें निर्णय करनेका हक है।

सम्राट् महोदयकी सरकारने कानूनके पंडितोंकी सलाह ली है। वे कहते हैं कि १६ तारीखके बयानका अर्थ केबिनेट-मिशनके अुस अिरादेके अनुसार ही होता है, जो अुसने सदा जाहिर किया है। अिसलिअे बयानके अिस भागका अिस प्रकारका अर्थ १६ मअीकी योजनाके आवश्यक अंगके रूपमें समझा जाना चाहिये। अिसीके अनुसार हिन्दुस्तानके लोगोंको नया संविधान तैयार करना है और सम्राट् महोदयकी सरकारको अुसे पार्लियामेण्टके सामने पेश करना है। संविधान-सभामें सभी दलोंको अुसे मंजूर करना चाहिये।

अितने पर भी यह स्पष्ट है कि १६ मअीके बयानके अर्थके बारेमें दूसरे प्रश्न अुपस्थित हो सकते हैं। अिसलिअे सम्राट् महोदयकी सरकार आशा रखती है कि मुस्लिम लीगकी कौंसिल संविधान-सभामें भाग लेना मंजूर कर ले, तो कांग्रेसकी तरह वह भी स्वीकार करेगी कि दोनोंमें से कोअी भी पक्ष अर्थके बारेमें निर्णय करनेका काम फेडरल कोर्टको सौंप सकेगा और अुसका निर्णय वह मान लेगा, ताकि यूनियन संविधान-सभाकी और साथ ही विभागीय संविधान-सभाओंकी कार्रवाअी केबिनेट-मिशनकी योजनानुसार होती रहे। फिलहाल जो विवादास्पद मामले हैं अुनके बारेमें सम्राट् महोदयकी सरकार कांग्रेससे आग्रह करती है कि वह केबिनेट-मिशनकी राय मान ले, जिससे मुस्लिम लीगके लिअे अपने रुख पर पुनर्विचार करनेका रास्ता खुल जाय। केबिनेट-मिशनका अिरादा अिस प्रकार दुबारा स्पष्ट कर देने पर भी संविधान-सभाकी अिच्छा यह हो कि अिस मूलभूत प्रश्नका निर्णय फेडरल कोर्टको सौंपा जाय, तो यह सौंपनेका काम बहुत जल्दी करना चाहिये। तो फिर यह अुचित होगा कि संविधान-सभाकी विभागीय सभाअें फेडरल कोर्टका फैसला आने तक मुलतबी रखी जायें।

सम्राट् महोदयकी सरकारने दूसरा सुझाव यह दिया है कि कांग्रेस या तो अुसका अर्थ अिस समय स्वीकार कर ले या संविधान-सभा विभागोंमें बैठना शुरू करे अुससे पहले फेडरल कोर्टके पास जाय। अिसमें जाहिरा तौर पर अिरादा यह है कि अिस प्रश्न पर कोर्टका फैसला मालूम हो जानेके बाद ही मुस्लिम लीग यह तय करे कि वह संविधान-सभाके कामकाजमें भाग लेगी या नहीं। मैं यह सुझाव नहीं मान सकता। कांग्रेसकी स्थिति यह है कि संविधान-सभाको कुश्तीका अखाड़ा न बनाया जाय। अुसे तो यथासंभव विवादास्पद मामलोंमें सर्वसंमत निर्णयों पर पहुंचनेका प्रयत्न करना है। यह बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है। किसी भी दलको अपनी बात फेडरल कोर्टके पास ले जानेका निश्चय करनेसे पहले विभागीय बैठकोंमें चर्चा करके समझौते पर आनेके तमाम रास्ते आजमा लेने चाहियें। अिसके विपरीत अिस समय तो मुस्लिम लीगकी स्थिति यह है कि अुसने १६ मअीके सरकारी वक्तव्यके प्रस्ताव नामंजूर कर दिये हैं। जब तक मुस्लिम लीग संविधान तैयार करनेके काममें सहयोग देनेका निर्णय न कर ले, तब तक यह ढूंढ़ निकालना संभव नहीं कि संविधान-सभाकी कार्रवाअी संबंधी अिस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर विभागोंमें चर्चा करके समझौता हो सकता है या नहीं। अिसलिअे मुस्लिम लीगकी कौंसिलको पहला काम यह करना है कि वह अपना निश्चय बदले और संविधान-सभामें भाग लेनेका निर्णय करे। संविधान-सभामें अैसा मालूम हो कि समझौतेकी

किस तरह काम किया जाय, अिस बारेमें सर्वसम्मति हुअे बिना संविधान-सभाकी सफलताकी कोअी आशा नहीं रखी जा सकती। अगर अैसी संविधान-सभा, जिसमें हिन्दुस्तानकी आबादीके बड़े भागका प्रतिनिधित्व न हो, संविधान बनाने बैठे — कांग्रेसने खुद कहा है कि अुसकी अैसी धारणा नहीं है, सम्राट्की सरकारकी भी अैसी धारणा नहीं है — तो देशके जो भाग नाराज हों अुन पर यह संविधान जबरन् लादने जैसी बात होगी।

नअी दिल्ली,
७–१२–'४६

संभावना नहीं है, तो यह फैसला करनेके लिअे काफी समय रहेगा कि यह चीज फेडरल कोर्टके सामने ले जाओ जाय या नहीं। मेरा विश्लेषण यह है: सम्राट् महोदयकी सरकारने अेक विवादास्पद मामलेके बारेमें अपना अिरादा अिस तरह घोषित कर दिया है कि अंतिम निर्णय पर असका विपरीत प्रभाव पड़े, जब कि खुद असीने दूसरे विवादास्पद प्रश्नोंको कांग्रेसके सुझावके अनुसार निर्णयके लिअे फेडरल कोर्टके सामने ले जानेकी बात रखी है। अिसलिअे हमें कोअी बयान प्रकाशित करना हो, तो अिस बातके खिलाफ साधारण रूपमें विरोध प्रगट करना चाहिये। अेक और बातके विरुद्ध भी कांग्रेस अपनी आवाज अुठा सकती है। कांग्रेस और सिक्खोंके बारेमें अन्तरिम सरकारमें शरीक होनेके लिअे १६ मअीका बयान स्वीकार करना ब्रिटिश सरकारने आवश्यक समझा था, जब कि मुस्लिम लीगको वह अभी तक मनानेका प्रयत्न कर ही रही है।

परंतु मुख्य प्रश्न तो यह है कि सम्राट् महोदयकी सरकारके १६ मअीके बयानमें जो योजना रेखांकित की गअी है, अुसे मुस्लिम लीगने अभी तक मंजूर नहीं किया और अब कर लेनेकी कोअी निश्चित संभावना दिखाअी नहीं देती। अिसलिअे कामकाजके ढंगके बारेमें कांग्रेस कोअी निश्चित तरीका स्वीकार करे, अिससे पहले मुस्लिम लीग कौंसिलको सरकारी प्रस्तावोंको अस्वीकार करनेवाला अपना प्रस्ताव बदलना चाहिये और संविधान-सभाकी चर्चाओंमें भाग लेना मंजूर करना चाहिये।

ब्रिटिश सरकारके बयानके आखिरी पैरेके सम्बन्धमें यह साफ कहना चाहिये कि मि० अेटलीने स्पष्ट रूपमें यह घोषणा की थी कि देशकी समग्र प्रगति पर अल्पमतोंको नामंजूरीकी मुहर नहीं लगाने दी जायगी। अिस वचनको ब्रिटिश सरकार बदल डालनेकी कोशिश कर रही है। कांग्रेसने भारतकी अेकता बनाये रखनेके खातिर अपने बहुतसे मूलभूत सिद्धान्तोंमें रियायतें कर दी हैं। अब अगर कांग्रेसकी तरफसे तमाम अुचित आश्वासन दिये जाने पर भी ब्रिटिश सरकार भावी संविधानको समग्र भारत पर लागू करनेकी बात मंजूर

करनेको तैयार नहीं होती, तो अिसका अर्थ यही होता है कि वह अलग राज्य स्थापित करनेका मुस्लिम लीगका दावा मंजूर करती है। क्योंकि मुस्लिम बहुमतवाले प्रान्त भावी संविधानके बारेमें अपना असन्तोष प्रगट करके अुससे बाहर निकल सकते हैं। १६ मअी और २५ मअीके सम्राट् महोदयकी सरकारके वक्तव्योंमें जो आश्वासन दिये गये थे, वे सब अिससे अुड़ जाते हैं। और अुलटे मुस्लिम लीगको स्पष्ट आश्वासन दिया जा रहा है कि अगर वह अलग हो जायगी, तो अुसे पाकिस्तान मिल जायगा। यह सिद्धान्त जाहिरा तौर पर अुन प्रान्तों पर लागू नहीं होता, जिन्हें विभागीय बैठकोंके बहुमतसे जबरदस्ती किसी खास मंडल (ग्रूप) में शामिल कर दिया गया हो।

२६५

श्रीरामपुर,
२५-१२-'४६

चि० वल्लभभाअी,

आपका प्यारेलालके नामका पत्र सीधा मेरे पास आ गया। प्यारेलाल वगैरा सब अपने-अपने काममें लगे हुअे हैं। मौतके साथ खेल रहे हैं। अिसलिअे जब हम सब अेक स्थान पर थे, तब अैसा कर सकते और भेज सकते थे। अब अैसा नहीं कर सकते। आपका पत्र काजीरखिल[१] पहुंचा, अिसलिअे सतीशबाबूने यहां मेरे पास भेज दिया। अिस पत्रका प्यारेलालको पता नहीं है। वे मेरे पास आते-जाते रहते हैं। आयेंगे तब पढ़ लेंगे।

यह पत्र मैं सुबह ३ बजे लिखवा रहा हूं। दातुन-पानी तो ४ बजे होगा। फिर प्रार्थना। अिस तरह चलता है। औीश्वर टिकायेगा तो टिके रहेंगे। अितने पर भी मेरे स्वास्थ्यके बारेमें जरा भी फिक्र करनेकी जरूरत नहीं। शरीर काम दे रहा है। फिर भी मेरी परीक्षा तो है ही। मोती तौलनेका जैसा तराजू होता है, अुससे भी कहीं नाजुक तराजूमें मेरा सत्य और अहिंसा दोनों रखे गये हैं।

१. श्री घनश्यामदास बिड़लाने अपने आदमीके साथ नोआखाली डाक पहुंचानेकी व्यवस्था की थी। वह दे आया था।

यह तराजू अैसा है जिसमें बालके सौवें हिस्सेको भी तोला जा सकता है। सत्य और अहिंसा तो अपूर्ण हो ही नहीं सकते। हां, अुनके प्रतिनिधिके रूपमें मेरी अपूर्णता साबित होनी होगी तो हो जायगी। तो भी अितनी आशा तो रखता ही हूं कि अैसा हुआ तो अीश्वर मुझे अुठा लेगा और किसी दूसरे शरीरके द्वारा काम लेगा। मुझे खेद है कि जो काम प्यारेलाल करते थे, वह मैं खुद नहीं कर सकता और मेरे पास जो दो आदमी हैं अुनसे करा नहीं सकता। परन्तु दोनों होशियार है, अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि मैं करा लूंगा। अिसमें आपका यह पत्र प्रोत्साहन देगा। ३-४ दिन हुअे जयसुखलाल चि० मनुको अुसकी अिच्छासे यहां छोड़ गये हैं। मेरे साथ रहकर मरने तककी अुसकी तैयारी और अिच्छा थी, अिसलिअे अिन शर्तों पर अुसे आने दिया। और अब पड़ा-पड़ा आंखें बन्द किये अुससे लिखवा रहा हूं, ताकि मुझे कोअी तकलीफ न हो। अिसी कोठरीमें सुचेता[1] पड़ी है। वह तो अभी सो रही है और मैं अपने तख्ते पर मनुसे धीमी आवाजमें लिखवा रहा हूं। यहांका तख्ता अैसा होता है, जिस पर तीन आदमी आरामसे सो सकते हैं। मैं अपना सारा काम तख्ते पर ही करता हूं। आपने जो तार भिजवाया, अुसे बेकार समझिये। यहां अतिशयोक्तिका पार नहीं। यह बात भी नहीं कि लोग जान-बूझकर अतिशयोक्ति करते हैं। वे यही नहीं जानते कि अतिशयोक्ति किसे कहते हैं। यहां जैसे हरियाली, घास अुगती है, वैसे ही मनुष्यकी कल्पना अूंची अुड़ती है। चारों तरफ नारियल और सुपारीके हरे-भरे अूंचे-अूंचे पेड़ खड़े हैं। अिन्हीं पेड़ोंकी छायामें अनेक हरी भाजियां अुगती हैं। नदियां सब समुद्र जैसी — गंगा, जमुना और ब्रह्मपुत्रा। ये अपना पानी बंगालकी खाड़ीमें अुंडेलती हैं। मेरी सलाह है कि आपने अभी तक जवाब न दिया हो, तो तार भेजनेवालेको यह जवाब दें : 'आप सब बातोंका सबूत भेजें तो शायद केन्द्रीय सरकार कुछ कर सके, यद्यपि अुसे अधिकार तो नहीं है। आपके पास गांधी मौजूद है; वह आपकी न सुने, अैसा नहीं हो

1. श्रीमती सुचेता कृपालानी। आचार्य कृपालानीकी पत्नी।

सकता। परन्तु वह सत्य और अहिंसाका पुजारी कहलाता है। अिसलिअे संभव है अुससे आपको निराशा हो। परन्तु वह यदि आपको निराश कर देगा तो हम, जो अुसकी देखरेखमें तैयार हुअे हैं, कैसे आपको सन्तोष देंगे? फिर भी हमसे जो हो सकेगा करेंगे।' किसीसे यह न कहिये कि गांधी वहां है अिसलिअे हमें लिखनेकी जरूरत नहीं, बल्कि कहिये कि गांधीके होते हुअे भी हमसे पूछ सकते हो। हमारा धर्म है कि अुनके विरुद्ध जाकर भी हो सके तो लोगोंको न्याय दें। यह शिक्षा भी तो अुन्हीकी है न?

यहां भी मामला कठिन है। खोजने पर भी सत्यका पता नहीं चलता। अहिंसाके नाम पर हिंसा होती है। धर्मके नाम पर अधर्म होता है। लेकिन सत्य और अहिंसाकी परीक्षा भी तो अिन्हीके बीच हो सकती है न? यह समझता हूं, जानता हूं, अिसीलिअे यहां पड़ा हूं। यहांसे मुझे न बुलाअिये। कायर बनकर भाग जाअूं तो मेरी तकदीर। लेकिन अभी तक मैं हिन्दुस्तानके अैसे लक्षण नहीं देखता। मुझे तो यहां करना है या मरना है। कल रेडियोकी खबर आअी कि जवाहरलाल, कृपालानी और देव मेरे साथ सलाह-मशविरा करने आ रहे हैं। यह अच्छा है। सभीसे मिल कर क्या करना है? आप लोगोंमें से जिन्हें कुछ पूछना हो, पूछ सकते हैं। आसामके बारेमें मैंने जो लिखा है, वह अभी ही प्रकाशित हो जाय, यह मैं नहीं चाहता था। परंतु जो हुआ वह कैसे हुआ, यह जानते हों तो लिखिये। अुसमें दी गअी राय ही सही है। अिस विषयमें जरा भी शंका न कीजिये। मैं तो भट्ठीमें पड़ा हुआ हूं, अिसलिअे अिस बातका ठीक सबूत दे सकता हूं कि अुसमें क्या हो रहा है और क्या सत्य है। . . . मेरे पास आया करते हैं, हिदायतें लेते रहते हैं और मुझसे कहते हैं कि अुनका अक्षरशः पालन करूंगा। और मुझे अुनके कहने पर विश्वास होता है। . . . का मुझे तार मिला है कि वे आपको समझा नहीं सके। परंतु क्या नहीं समझा सके, यह मैं नहीं समझा। वे वहां हों और आपसे मिलें, तो अितना अुनसे कह दीजिये। और वे क्या पूछना चाहते हैं, यह समझ सके हों तो बताअिये।

बिहार लीगकी रिपोर्ट आपने देखी होगी। अुसके बारेमें मैंने राजेन्द्रबाबूको लिखा है और आप सबको मेरी राय बता देनेके लिअे कहा है। प्रधानमंत्री (बिहार) को भी लिखा है। अुसमें अगर आधा भी सच हो तो भयंकर है। मुझे जरा भी शंका नहीं कि जिसके खिलाफ कोअी अंगुली तक न अुठा सके, अैसी निष्पक्ष जांच बहुत जल्दी होनी चाहिये। अेक दिनकी भी देर न होनी चाहिये। अुसमें जो सत्य हो अुसे मंजूर करना चाहिये और शेष जो मंजूर न किया जा सके वह जांच करनेवाले न्यायाधीशके पास जाय। मुस्लिम लीगके जो मंत्री आपके साथ हैं, अुनसे भी यह बात कीजिये। सुहरावर्दी[1] से पत्रव्यवहार चल रहा है। अभी पूरा नहीं हुआ। पूरा होने पर भेजूंगा। जो हुआ है वह जवाहर वगैरा देखेंगे। प्रार्थनाके बाद मैं जो भाषण देता हूं, अुसका संक्षिप्त विवरण अखबारोंमें जाता है। अुसे न देखते हों तो देखिये या मांग आपको जो कतरन दें अुन्हें देखते रहिये। आपके कामके बोझको मैं यहां बैठे-बैठे जानता हूं, समझता हूं; लेकिन अधिक बोझ होते हुअे भी कुछ काम तो करने ही पड़ते हैं। अुनमें जो मैं कहता हूं अुसे जान लेनेकी बात भी आ जाती है।

आपकी तबीयत ठीक होगी, यह तो कैसे कहूं? यह मान लेता हूं कि काम चलाने लायक है। यह भी मानता हूं कि अच्छी हो सकती है। मैं तो अब भी कहता हूं कि दिनशाको बुलवाकर अिलाज कीजिये। वह शुद्ध आदमी है, भला है और पारमार्थिक दृष्टिवाला है। अिस विषयमें मुझे शंका नहीं है। कुशलता कम हो तो अिससे क्या? सुशीलाके बारेमें आपने सवाल किया है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि अुसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। वह भी कठिनाअियोंसे भरे हुअे गांवमें पड़ी है। वहां अच्छा काम कर रही है। जब वहां नीम-हकीमकी अच्छी गिनती हो सकती है, तो फिर सुशीला जैसीका तो पूछना ही क्या? अिसलिअे यहांके किसी भी व्यक्तिके बारेमें चिन्ता न करें। और जहां सभी कोअी मरनेके लिअे आये हैं, वहां मैं बीमार

---

१. अुस समयके बंगालके प्रधानमंत्री।

हो जायं तो क्या चिन्ता! मरने पर तो बधाअी है ही; और मरें तो शुद्ध रीतिसे मरें और बधाअी प्राप्त करें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२६६

श्रीरामपुर,
२६–१२–'४६

चि० वल्लभभाअी,

यह तो मैं अितनी सूचना देनेके लिअे ही लिखवा रहा हूं कि दिनशाने डॉ० फिल्डनर नामक अेक व्यक्तिके बारेमें लिखा है। काम निपट ही नहीं पाता। कुछ न कुछ बाकी रह ही जाता है। अिसलिअे मैं नहीं जानता कि क्या हाल होंगे। जो भी होनेवाला होगा वह यहीं होगा। मैं अत्यन्त आनन्दमें हूं। यद्यपि सामने घोर अंधकार है, फिर भी आनंदित रह सकता हूं। और स्वास्थ्य बढ़िया मानता हूं। मेरी जरा भी चिन्ता न करें। मेरी राय है कि दिनशा जिस आदमीके लिअे सिफारिश करते हैं, अुसे रहने दिया जा सके तो रहने दें। परन्तु धर्मके ढांचेमें खप सके तो ही। अधिक तो हाल जाने बिना क्या कह सकता हूं?

स्वास्थ्यका ध्यान रखिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२६७

श्रीरामपुर,
३०–१२–'४६
५-१५ सुबह

चि० वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। यहां जो कुछ हुआ, वह तो जवाहर वगैरा बतायेंगे।

. . . . के बारेमें मेरा दृढ़ मत है। कांग्रेसके पैसेसे या आप जुटा दें अुस पैसेसे यहांका काम हरगिज नहीं किया जा सकता। अुन्हें जाहिरा तौर पर हिन्दू-मुसलमान दोनोंसे पैसा अिकट्ठा करना चाहिये। पैसेके बल पर जो नाच होता है, वह बादमें गिरनेके लिअे ही होता है। मेरा यह विचार अनुभवसे भी दृढ़ होता जा रहा है। आप अुस पर नाचना छोड़ दें। मेरे साथ जो बात हो अुससे वह तिलभर भी न डिगें, यह जरूरी है। मुझे जरा भी गंदगी दिखाअी देगी, तो मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि मैं तुरन्त अुसमें से निकल जाअुंगा। यह काम बड़ा नाजुक है, मेरा सबसे बड़ा काम है। अीश्वरने अभी तक तो निभाया है। स्टैण्डर्ड टाअिमके १॥ बजेसे अुठकर काम करता हूं। अभी तक कोअी बाधा नहीं आअी। कलकी अीश्वर जाने।

आपके बारेमें बहुत असन्तोष सुना। 'बहुत' में अतिशयोक्ति हो तो वह अनजानमें है। आपके भाषण लोगोंको खुश करनेवाले और अुकसानेवाले[1] होते हैं। आपने हिंसा अहिंसाका भेद नहीं रखा।

---

१. अिसकी सफाअीमें पू० बापूने ता० ७–१–'४७ को बापूजीको अिस प्रकार पत्र लिखा था:

. . . आपका पत्र मिला। पढ़कर दुःख तो हुआ। परन्तु आपने तो जो समाचार मिले और शिकायतें सुनीं, अुन पर भरोसा करके लिखा।

अिसमें लिखी हुअी शिकायतें झूठी तो हैं ही। परन्तु कुछ तो अैसी हैं जो समझमें ही नहीं आ सकतीं।

मैं पदसे चिपका रहना चाहता हूं, यह आरोप बिल्कुल बनावटी है। जवाहरलाल पद छोड़नेकी बार-बार धमकी देते हैं, अिसका मैंने विरोध किया। कारण अिससे कांग्रेसकी प्रतिष्ठा कम होती है और अधिकारियों पर बुरा असर पड़ता है। पहले छोड़नेका निश्चय करना चाहिये। बार-बार खाली धमकी देनेसे वाअिसरॉयकी नजरमें अिज्जत खो दी और अब वह मानता नहीं है। केवल 'ब्लफ' के सिवा अिन धमकियोंमें कुछ सचाअी होगी, तभी तो अुसने मुझसे अपना पोर्टफोलियो छोड़नेका आग्रह किया। तब मैंने तुरन्त हट जानेकी बात की और अुसका

तलवारका जवाब तलवारसे देनेका न्याय आप लोगोंको सिखाते हैं। जब मौका मिलता है मुस्लिम लीगका अपमान करनेसे नहीं चूकते। यह सब सच हो तो बहुत हानिकारक है। पदोंसे चिपटे रहनेकी बात यदि आप कहते हों तो वह चुभनेवाली है। जो सुना वह विचार करनेके लिअे आपके सामने रखा है। यह समय बहुत नाजुक है। हम

परिणाम ठीक हुआ। मुझे यहां चिपके रहनेसे क्या लाभ? मैं रोग-शय्या[1] पर पड़ा हूं। मुक्त हो सकूं तो खुशीसे हो जाअूं। अिसलिअे आपने यह शिकायत कैसे सुनी, यह समझमें नहीं आया।

यह तो किसी लीगवालेने भी नहीं कहा कि मैं लीगका बार-बार अपमान करता हूं।

मेरा भाषण लोगोंको खुश करनेके लिअे होता है, यह मेरे लिअे नअी बात है। लोगोंको अत्यन्त कड़वी बातें सुनानेकी मेरी आदत है। बम्बअीमें जब जलसेनाका विद्रोह हुआ था, अुस समय बहुतोंको बुरी लगने पर भी मैंने खूब कड़वी बातें सुनाअीं और मेरे मना करने पर भी जवाहरलाल समाजवादियोंको खुश करनेके लिअे वहां आये।

तलवारका जवाब तलवारसे देनेके विषयमें लम्बे वाक्योंमें से अेक ही टुकड़ा अुठाकर शिकायत की गअी है।

कमेटीमें दलबन्दीका होना कोअी आजकी बात नहीं, बहुत पुरानी है। आजकल तो ज्यादातर सभी मिलजुलकर काम कर रहे हैं।

मेरे साथियोंमें से किसीने शिकायत की हो, तो मैं जरूर समझना चाहूंगा। अुनमें से किसीने मुझसे कुछ भी शिकायत नहीं की।

आप वहां रहते हैं, अिस बारेमें बंगाल सरकार और गवर्नरके यहां खानगी पत्र आते हैं। वे बहुत खराब होते हैं। वे आपको वहांसे हटाना चाहते हैं। मगर अिसमें तो मेरे लिअे कुछ कहनेकी बात ही नहीं हो सकती।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

---

१. पू० बापूकी छाती कफ और सरदीसे भर गअी थी। सख्त खांसी और बुखारसे वे बिस्तर पर पड़े थे।

जरा भी पटरीसे अुतरे कि नाश ही समझिये। कार्यकारिणीमें जो अेक-रूपता होनी चाहिये वह नहीं है। गंदगी निकालना आपको आता है; अुसे निकालिये। मुझे और मेरा काम समझनेके लिअे किसी विश्वसनीय समझदार आदमीको भेजना चाहें तो भेज दें। आपको दौड़कर आनेकी बिलकुल जरूरत नहीं। आपका शरीर भागदौड़के लायक नहीं रहा। आप शरीरके प्रति लापरवाह रहते हैं, यह बिलकुल ठीक नहीं।

अब अधिक नहीं लिखूंगा। अिस समय ५-३५ (कलकत्तेके) हो गये हैं और काम ढेरों सामने पड़ा है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२६८

चंडीपुर,
६-१-'४७

चि० वल्लभभाअी,

आपके स्वास्थ्यकी चिंता होती है। आपको अच्छा हो ही जाना चाहिये। बहुत काम करना है।

मामला नाजुक है। यहां क्या होता है, अुसे देखते रहिये। मैं तो घोर अन्धकारमें भटक रहा हूं। परन्तु जरा भी निराशा नहीं मालूम होती।

. . . को पत्र लिखा है। साथमें है। अुन्हें दे दें। पैसेमें परमेश्वरको देखना परमेश्वरको भूलने जैसा है।

आखिरी वक्त पर लिखने बैठनेसे बहुतसी बातें भूल जाता हूं; और अिससे जल्दी तैयार नहीं हो पाता।

अिसलिअे शेष सुधीर कहेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

[साथका हिन्दी पत्र]

भाअी . . .

अब तक नहीं आये। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यहांका काम पैसोंका नहीं है। कांग्रेसकी तो अेक कौड़ी नहीं चाहिये। जोहर[1] से जो पैसा मिले अुससे काम करना है। न दे तो भी करना है। सच्ची खिदमत यहां दूसरी तरह नहीं होनेवाली है।

बापूके आशीर्वाद

२६९

शाहपुर,
१४–१–'४७

चि० वल्लभभाअी,

*　　　　*　　　　*

अब बिहारके कमीशनके बारेमें। मुझसे कहनेवाले तो बिहारके ही कोअी सज्जन थे। अुनका नाम मैंने लिखकर नहीं रखा।

यदि आप खुद कमीशनके विरुद्ध हैं, गवर्नर हैं, वाअिसरॉय भी हैं, तो क्या यह मुख्य (मंत्री) को रोकनेके लिअे काफी नहीं? यह सब होते हुअे भी मेरा तो दृढ़ मत है कि कमीशन मुकर्रर न किया गया तो वह लीगकी रिपोर्ट स्वीकार करने जैसा ही माना जायगा। मुझ पर जो दबाव पड़ रहा है, अुसे तो मैं ही जानता हूं।

सुधीरके बारेमें मेरी यह राय है। सुधीरको नियुक्त करनेमें लीगके मंत्री और वाअिसरॉय भी शामिल हों, तो मुझे बहुत आपत्ति नहीं होगी। अिन्हें यदि हाअीकमिश्नरके मातहत काम करना हो, तो वह भी आप तीनोंकी पसन्दसे होना चाहिये। फिर, सुधीरकी मांग मंत्रि-मंडलवाले कर रहे हैं। अिसलिअे अुन लोगोंको अिन्हें सार्वजनिक रूपमें बुलाना चाहिये। यह बात बिलकुल साफ नहीं हो जाय, तो सुधीरकी अिस समय जो कीमत है वह खतम हो जायगी। अब

१. पूर्वी बंगालके अेक गांवका नाम।

आप सबको जो ठीक लगे वही कीजिये। सुधीरका नाम वक्तव्यमें तो आ गया है, यह मैंने अभी देखा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२७०

डोल्टा,
२४–१–'४७

चि० वल्लभभाअी,

आपके दो पत्र मिले। यह कातते-कातते लिखवा रहा हूं। आदमी आया हुआ है। अुसीके साथ भेजना चाहिये। बाहरका मुझे कुछ पता नही चलता। हजारा[1] का हाल सुना, अिसलिअे तार

---

१. पूज्य बापूने हजाराके बारेमें पू० बापूजीको अिस प्रकारका पत्र लिखा था:

१७–१–'४७

कल आपका तार हजारा जिलेके बारेमें मिला था। परन्तु यह काम तो जवाहरलालजीके महकमेका है। अुन्होंने आपको तारसे जवाब दिया है।

वहांका मामला अभी शान्त हुआ तो नहीं कहा जा सकता।

हजारा जिलेमें ९ लाख मुसलमान और ३१ हजार हिन्दू और सिक्ख हैं। २० हजार भाग गये हैं। ४०-५० मार डाले गये होंगे। काफी लूट-खसोट की गअी और मकान जला दिये गये। बिहारका बदला लिया जा रहा है। पहले २-३ जगह तो सरहदकी टोलियां आअीं। लूटकर चली गअीं। मकान जलाये गये और आदमी मार डाले गये। परन्तु बादमें स्थानीय मुसलमान ही दंगा कर रहे हैं। लीगकी तरफसे बिहारका बदला लेनेका प्रचार किया गया। अुसीका यह परिणाम है। बादशाह खान वहां अैसी

दिया। यहांका काम मेरा सारा वक्त ले लेता है। रोज घर बदलना कोअी आसान बात नहीं है। ज्यों-त्यों करके अब तक तो ओीश्वरने निभाया है। देखना है कि आगे वह क्या करता है? द्वेष तो प्रसिद्ध ही है। अुसमें से अहिंसाको मार्ग निकालना है। तभी अुसकी परीक्षा होगी। भोपालके (नवाबके) पत्रमें कोअी नअी बात नहीं है। मेरे सवालका अुसमें जवाब नहीं है। मैं दिल्लीमें था तब मेरे साथ जो बातें हुअी थीं अुनका वर्णन था। अुसकी नकल मैंने नहीं रखी, अिसलिअे यह नकल भेजता हूं। मैंने पढ़ी नहीं है, परन्तु ठीक ही होगी। मैंने जो सवाल पूछा था वह अवश्य सामने आयेगा।

यह जानकर प्रसन्न हुआ कि आपकी तबीयत कुछ अच्छी है। दिनशाको आपने न बुलाया, न सही। परन्तु प्राकृतिक चिकित्सावालेको बुलाया, यह मुझे तो अच्छा ही लगा। मेरी दृष्टिसे आपकी तबीयतका अिलाज कुदरती अुपचारमें ही है।

परसराम (टाअिपिस्ट) चला गया। फिर भी काम चल रहा है। अुसका मन अस्थिर हो गया है। अुसके बदले दूसरे किसीकी जरूरत नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

हालत होते हुअे भी विहार चले गये, जहां कुछ भी नहीं हे। परन्तु अुन्हें तो जो सूझता है वही करते हैं।

अंग्रेज अफसर आग बुझानेके लिअे कुछ भी नहीं करते। जैसा होता है चलने देते हैं। कोअी कोअी तो पूर्ति भी करते हैं। डॉ० खानसाहब भले हैं। अुनकी स्थिति विषम है। लीगका जहरीला प्रचार जारी है। वहां कड़ा कदम अुठानेमें डरते हैं। फिलहाल तो यह स्थिति है।

२७१

१–२–'४७

चि० वल्लभभाओी,

अिन दोनों भाअियोंने अपने दुःखोंकी कहानी मुझे सुनाअी है। मैं क्या कह सकता हूं? क्या कर सकता हूं? ये कहते हैं सो सही हो, तो बड़े दुःखकी बात है। ये भाअी आपके नाम पत्र चाहते हैं। अिसलिअे दे रहा हूं।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२७२

आमिशापाड़ा,
४–२–'४७

चि० वल्लभभाअी,

यह पत्र देख लें।

फ्रिडमैन अर्थात् भारतानन्द। हो सके तो अिन्हें भारतवासी[1] बना लीजिये।

*　　　　*　　　　*

मैं चाहता हूं आप दुःखी न हों। मुझे भगवानकी गोदमें छोड़ दीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

---

१. अिन्होंने भारतके नागरिक बननेके लिअे अर्जी दी थी।

२७३

श्रीनगर : बंगाल,
५–२–'४७

चि० वल्लभभाओी,

आपका पत्र मिला। लीगके बारेमें मैंने लम्बा भाषण दिया है। वह अखबारोंको भेज दिया गया है। आपने पढ़ा होगा। अपने सारे विचार मैंने अुसमें संक्षेपमें दिये हैं।

राजा लोग भी न आयें, तो मुझे कोअी डर नहीं लगता। केबिनेट-मिशनके वक्तव्यका मैं अिस तरह अर्थ करता हूं। अैसा अर्थ वे न करें तो भी हमें कुछ नुकसान नहीं, और करें तो अुनकी शोभा होगी। हम सीधा काम कर सकेंगे। मेरे सामने यह दियेकी तरह साफ है कि अनाज और कपड़ेकी तंगी भुगतनेकी कोअी जरूरत नहीं। अिसे मैं समझा न सकूं तो दूसरी बात है। अैसी स्थितिमें मैं वहां रहूं तो भी क्या? और न रहूं तो भी क्या? यहीं अच्छा हूं। मुझे संतोष है। मैं मानता हूं कि यहांके लोगोंको थोड़ा संतोष तो मैं अवश्य दे रहा हूं और टिका रहा तो और अधिक दूंगा। परन्तु यह तो भगवानके हाथमें है।

मैं सुन रहा हूं कि बिहारके मंत्री कमीशन मुकर्रर नहीं कर रहे हैं और अिसका कारण आप बताये जाते हैं।[1] मैंने यह बात

---

१. अिसकी सफाअीमें पू० बापूने ता० १०–२–'४७ को दिल्लीसे पू० बापूजीको अिस प्रकार पत्र लिखा था :

१०–२–'४७

* * *

बिहारका कमीशन नियुक्त न करनेमें मेरा हाथ है, यह कौन कहता है? मेरी राय है कि अैसा कमीशन नियुक्त करनेसे लाभ तो है ही नहीं, हानि जरूर है। फिर भी वह नियुक्त किया जाय तो मेरी तरफसे रुकावट कैसे हो सकती है? आश्चर्य है कि ये सब झूठी बातें आपके पास आती हैं। आपसे बात करनेवाले मुझे क्यों नहीं कहते? अैसे पीठ पीछे बातें करनेवालोंका पर्दाफाश करना चाहिये।

नहीं मानी, परन्तु आपके कान पर अुसे डाल देता हूं। अगर कमीशन मुकर्रर नहीं हुआ तो बहुत बुरा होगा। मंत्री अपराधी सिद्ध होंगे। अगर अुनका काम सीधा और सच्चा हो, तो कमीशनसे अुन्हें क्या हानि होगी? यहां मुझ पर बहुत ज्यादा दबाव पड़ रहा है। परन्तु मंत्रियों पर विश्वास रखा है, अिसलिअे वहां नहीं जा रहा हूं। लेकिन अैसा मालूम होता है कि कमीशन नियुक्त नहीं हुआ तो मुझे बिहार जाना ही पड़ेगा।

अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
होम मिनिस्टर,
नअी दिल्ली

२७४

चांदपुरसे
जाते हुअे स्टीमरमें,
३–३–'४७

चि० वल्लभभाअी,

आपका पत्र कल चांदपुरमें मिला। आपकी बढ़ती हुअी बीमारी अच्छी नहीं लगती। वह काबूमें आने जैसी थी और शायद अब भी है। भले दिनशा न सही। मेरी नजरमें और भी कुदरती अुपचार करनेवाले हैं। परन्तु आपको कौन समझा सकता है? जैसा जंचे वैसा कीजिये। आप पर कितने अधिक लोगोंका आधार है!

सुधीरका मामला समझा। अुनका तार आया था।

*　　*　　*

यह कमीशन नियुक्त न करनेमें वहांके गवर्नरका हाथ है। वाअिसरॉय भी नहीं चाहता। नहीं तो कौन रोक सकता है? कलकत्तेमें वाअिसरॉयकी मरजीसे कमीशन नियुक्त हुआ और जांच हो रही है। बारह मासमें रिपोर्ट आयेगी। अिस रिपोर्टका अितनी लम्बी मियादके बाद क्या अुपयोग होगा? व्यर्थ खर्च होगा सो अलग। परन्तु मुझ पर भार डालनेका कारण मैं नहीं समझ सकता।

यहांके अपने कामकी आवश्यकता मैं भले ही साबित न कर सकूं, परन्तु मुझे विश्वास है कि वह बहुत आवश्यक है।

आज बिहारकी ओर प्रयाण कर रहा हूं; . . . का पत्र आया था और अब डॉक्टर महमूदका आया है। दोनों चौंकानेवाले हैं, अिसलिअे जा रहा हूं। वहां तो आप सब महारथी मौजूद हैं। काम चला रहे हैं। यहां मैं 'अेरण्डोऽपि द्रुमायते' जैसा हूं। अिसलिअे मुझे पड़ा रहने दीजिये। कुछ हो आयगा तो देशको लाभ ही होगा। नहीं होगा तो कोअी नुकसान भी न होगा।

डॉ० कानूगाका प्रकरण[1] दु:खद है। अीश्वर जैसे रखे वैसे रहें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२७५

पटना,
१७–३–'४७

चि० वल्लभभाअी,

साथके धांधली-सम्बन्धी कागजात पढ़ लें और योग्य कार्रवाअी करें। अितना पढ़नेका भार लादते हुअे दु:ख होता है। परन्तु और कोअी अुपाय नहीं दीखता। फिर भी ये न पढ़े जा सकें तो भूल जायं। कागजात वापस कर दें। अिस बारेमें कुछ करें तो मुझे भेजनेकी जरूरत नहीं।

नाथजी और स्वामी आ गये। जी भरकर बातें कीं। वे ही लिखेंगे।

सुशीला लिखती है कि आपकी तबीयत अच्छी नहीं रहती। सावधान रहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वी० पटेल,
होम मिनिस्टर,
नअी दिल्ली

---

१. अुन्हें दिमाग पर लकवा मार गया था।

२७६

पटना,
२२–३–'४७

चि० वल्लभभाअी,

पंजाबका आपका प्रस्ताव[1] समझा सकें तो समझाअिये। मुझे समझमें नहीं आता।

आपकी तबीयत अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

---

१. यह प्रस्ताव नीचे दिया जाता है:

पिछले सात महीनोंमें भारतने बड़ी क्रूर, भीषण और करुण घटनाअें देखी हैं। पाशविक हिंसा, रक्तपात और दबाव द्वारा राजनीतिक अुद्देश्य पूरे करनेके लिअे यह सब किया गया है। ये सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुअे हैं, क्योंकि अैसे तमाम प्रयत्न खास तौर पर असफल होते ही हैं। परन्तु अिनके परिणामस्वरूप अधिक हिंसा और खून-खराबी हुअी है।

पंजाब अब तक अिस छूतसे बचा हुआ था। छह सप्ताहसे वहांके लोकप्रिय मंत्रि-मंडलको जबरदस्ती तोड़ डालनेके लिअे अेक आन्दोलन हो रहा है और सत्ताके अुच्च स्थानों पर बैठे हुअे कुछ लोगोंका अुसे समर्थन है। वैधानिक तौर पर अिस मंत्रि-मंडलको हटानेका प्रयत्न नहीं हो सकता था। अिस आन्दोलनको अेक हद तक सफलता मिली। और अिस आन्दोलनमें प्रमुख भाग लेनेवाले समूहके वर्चस्ववाला मंत्रि-मंडल बनानेका प्रयत्न किया गया। अिसके विरुद्ध सख्त विरोध प्रगट किया गया। परिणामस्वरूप हिंसा बढ़ी और व्यापक बनी। हत्या और आगजनीकी अनेक घटनायें हुअीं। और अमृतसर तथा मुल्तानमें भीषण हत्याकांड हुअे।

अिन करुण घटनाओंने दिखा दिया है कि पंजाबके सवालका निपटारा हिंसा और जबरदस्तीसे नहीं हो सकता। जबरदस्तीसे की

रेलगाड़ीमें,
१३–४–'४७

चि० वल्लभभाओी,

अेक बात आपसे जाननी रह गअी। वक्त ही न मिला। मैं देखता हूं कि अब मुझे 'हरिजन' में कुछ न कुछ लिखना चाहिये। . . . मैं यह भी देखता हूं कि हमारे बीच विचार करनेमें भेद होता ही रहता है। अैसी स्थितिमें क्या मेरा व्यक्तिगत रूपमें भी वाअिसरॉयसे मिलना ठीक होगा?

देशहितको ही ध्यानमें रखकर तटस्थ भावसे अिस पर विचार करें। और किसीसे चर्चा करनी हो तो कीजिये। अिसमें कहीं भी मेरी शिकायतकी गंध तक न होनी चाहिये। मैं तो देशहितको ध्यानमें रखकर अपना धर्म सोच रहा हूं। यह बिलकुल संभव है कि करोड़ों पर हुकूमत करते हुअे आप जो देख सकते हों वह मैं देख ही न सकूं।

हुअी कोअी व्यवस्था टिक नहीं सकती। अिसलिअे कोअी अैसा रास्ता ढूंढ़नेकी जरूरत है, जिसमें कमसे कम बलप्रयोग करनेकी गुंजाअिश हो। अिसके लिअे पंजाबको दो प्रान्तोंमें बांट देनेकी जरूरत है। ये भाग अिस तरह किये जायं कि मुसलमानोंकी ज्यादा आबादीवाले भागको हिन्दुओंकी ज्यादा आबादीवाले भागसे अलग कर दिया जाय।

कांग्रेसकी कार्यसमिति प्रश्नके अिस हलकी सिफारिश करती है। अिससे सभी संबंधित जातियोंको लाभ होगा, आपसका संघर्ष घटेगा और अेक-दूसरेकी तरफका डर तथा शंका कम हो सकेगी। कार्यसमिति पंजाबके लोगोंसे वर्तमान रक्तपात और हैवानियतको बन्द करने और अैसा हल ढूंढ़नेके लिअे, जिसमें किसी भी बड़े समूह पर जबरदस्ती करनेकी गुंजाअिश न रहे और जो संघर्षके कारणोंको कारगर तरीकेसे दूर कर दें, कृतनिश्चयी बनकर अिस करुण परिस्थितिका सामना करनेकी अपील करती है।

(२६ मार्च, १९४७ के 'कांग्रेस बुलेटिन' से)

आप सबकी जगह मैं होअूं, तो शायद मैं भी वही करूं और कहूं जो आप करते और कहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२७८

पटना,
२४-४-'४७

चि० वल्लभभाअी,

जवाहरलालका तार है कि मुझे मअीके आरम्भमें वहां आ जाना चाहिये। अिसलिअे यहांसे २७ तारीखको चलकर ३ तारीखको सुबह वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। आदमी तो यही होंगे। रहना भी भंगी-निवासमें ही होगा। घनश्यामदास, मौलाना वगैराको खबर दे दें।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

'हरिजन' के बारेमें आपका तार मिला था। अब लिखनेकी तैयारी कर रहा हूं। जीवणजी और किशोरलालको लिखा है। अभी तो चरखा-संघ तथा तालीमी संघकी बैठकें हो रही हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
होम मिनिस्टर,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२७९

पटना,
१७-५-४७

चि० वल्लभभाअी पटेल,

आपका और जवाहरलालके पत्र मिले। मुझे मसूरी जानेका जरा भी अुत्साह नहीं। आप जब तक रहा जाय मसूरीमें रहिये। मुझे जितने दिन यहां रहनेको मिल जायं अुतने कामके ही हैं। अिसलिअे आप छुट्टी दें तो मैं वहां ३१ तारीखको आअूंगा। अथवा जब कहें

तब। मुझे यह अच्छा लगेगा कि मसूरीमें आप पूरा-पूरा आराम लें। बातें तो हम दिल्लीमें करेंगे।

दरबार[1] की बात अखबारोंमें पढ़ी। मुझे तो विश्वास ही था। आज अुनका तार आया है, अिसलिअे मैंने लिखा है।

स्वास्थ्य अच्छा रखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली[2]

२८०

वाल्मीकि मंदिर,
न० दि०
२३-६-'४७

चि० वल्लभभाअी,

आजके अखबारोंने तो हद कर दी। रूटरका तार तो देखिये। बिलमें दो राष्ट्र होंगे!!! तो यहां जो बड़ी-बड़ी बातें हो रही हैं अुनकी क्या कीमत है? अगर अिसमें हमारी स्वीकृति न हो, तो आप लोग अिस अपराधको रोक सकते हैं।

बिल बन जाने पर आपकी बात कोअी नहीं सुनेगा।

मेरी दृष्टिसे तो . . . का भाषण खराब ही था। अुनके मजाक करनेसे बातकी गंभीरता मिट नहीं जाती। मेरा तो खयाल है कि अुनका दूसरा दोष हो तो अुन्हें हटाया जा सकता है। सिर्फ अिसी बात पर बरखास्त करना कठिन होगा।

जवाहरलालको भी अिस बारेमें लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

---

१. स्व० दरबार गोपालदासभाअीको अुनकी ढसा तथा सांकलीकी तहसील वापस सौंप देनेकी बात।

२. पू० बापू अिस समय मसूरीमें थे, अिसलिअे यह पत्र दिल्लीसे वहां भेजा गया था।

२८१

वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली,
१८-७-'४७

चि० वल्लभभाअी,

अकबर[1] का पत्र साथ है। मुझे तो यह बिलकुल ठीक मालूम होता है। आपके नाम अलग पत्र होगा। क्या सोचते हैं बताअिये। समय ही न हो तो भूल जाअिये। मैं निपट लूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२८२

वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली,
२४-७-'४७

चि० वल्लभभाअी,

मैं ज्यों-ज्यों विचार करता हूं, त्यों-त्यों मुझे लगता है कि काश्मीरका मामला तय हो जाने पर मुझे यहांसे चल देना चाहिये। जो हो रहा है वह ज्यादातर मुझे पसन्द नहीं आता। अिससे मैं यह नहीं कहता कि अुसे बदल दिया जाय, परन्तु यह कहता हूं कि मेरे यहां रहनेके कारण लोगोंको यह कहनेका मौका न मिले कि मैं भी अुसमें शामिल हूं। फिर मुझे १५ तारीखसे पहले बिहार और वहांसे नोआखाली पहुंचना चाहिये। यह भी महत्त्वका काम है। अिसलिअे मैं अितना ही चाहता हूं कि आप मुझे न रोकें। ५-७ दिन तो वैसे भी हैं ही।

---

१. सणोलीमें रहनेवाले सेवाग्राम आश्रमवासी भाअी। आजकल लोकसभाके सदस्य। पत्र वहांकी जागीरदारी प्रथाके बारेमें लिखा था।

मेरा यह भी खयाल है कि 'हरिजन' अब बन्द कर दिया जाय। मुझे देशको अुलटे रास्ते ले जाना ठीक नहीं मालूम होता। यह सब फुरसतसे सोच लीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२८३

वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली,
२६–७–'४७

चि० वल्लभभाअी,

मेरे पास कल दो खाकसार[१] आये थे। अेक तो बहुत रोया। दूसरा बोला कि अधिकारीने कहा चूंकि वे जाने ही वाले हैं अिसलिअे अब कुछ नहीं होगा। फिर भी अुसी दिन रातको मस्जिदमें लोगों पर गोली चलाअी गअी[२]। बहुतोंकी हत्या हुअी। अेक ७० वर्षके बूढ़ेको ७ गोलियां लगीं। कौन मरे और कौन जिये, अिसका कोअी पता नहीं चला। मस्जिदके चारों तरफ घेरा डाल दिया गया। ३ दिन तक खाकसार भूखे-प्यासे पड़े रहे। पाखाना-पेशाब करने भी न जा सके।

यह सब सुनकर मैं तो हक्का-बक्का रह गया। मैंने अुन्हें डांटा और कहा, "अैसा हो ही नहीं सकता। सरदारने आज ही मुझे कहा है कि किसी भी तरह वे जा ही नहीं रहे थे। तब कर्मचारी मस्जिदमें गये। अिमामसे अिजाजत ले ली गअी थी। मुसलमान अधिकारीके चाहने पर ही यह कदम अुठाया गया। जबरदस्ती की ही नहीं गअी। टीयर गैसके सिवा कुछ भी अिस्तेमाल नहीं किया गया। अेक भी हत्या नहीं हुअी। अिसलिअे आपकी बात मेरे गले नहीं

---

१. मुसलमानोंके अेक दलका नाम।

२. अिसकी सफाअी पू० बापूने रूबरू दे दी थी। अधिक स्पष्टीकरणके लिअे देखिये ६–८–'४७ के पत्रके नीचेकी पादटिप्पणी।

अुतरती।" जवाब मिला — "आपके ही सरदार कहें तब हमारी क्या चले? खाकसार तो चले गये। अब अिन्साफ क्या मांगा जाय? किसी दिन आपको पता चल जायगा। सत्य छिपा नहीं रह सकता।" मैंने कहा, मुझे बुराअीका पता चल जायगा तो अपने प्यारेकी भी बात नही छिपाअूंगा। मुझे अधिक नहीं कहना। मैं अपना धर्म पालूंगा।

अब अिसमें कुछ हो तो बताअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२८४

वाल्मीकि मंदिर,
न० दि०
२८-७-'४७

चि० वल्लभभाअी,

जवाहरलालने रातको मुझे खबर दी कि आप अुनका काश्मीर जाना पसन्द कर सकेंगे, मेरा हरगिज नहीं; अिसलिअे अुन्होंने मुझे मुक्त कर दिया है। अब मेरा विचार कल मंगलवारकी रातको लाहोर जानेका हो रहा है। ३० तारीखको लाहोर, अमृतसर; ३१ तारीखको रावलपिंडी और वहां अेक दिन बिताकर पटनाकी गाड़ी पकड़ना है। यह ठीक हो तो पास कीजिये, ताकि मैं अिन्तजाम कर लूं। कुछ प्रबन्ध तो आपको भी करना पड़ेगा न?

वाअिसरॉयके पास मेरी चिट्ठी अिसी वक्त जा रही है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२८५

(पुर्जा)

वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली,
२८-७-'४७

मैंने तो लिखा ही है कि मुझे काश्मीर नहीं जाना है। जवाहरलाल जायंगे। अभी वािअसरॉयका पत्र आया है। मैं जाअूं परन्तु जवाहरलाल नहीं। अिसलिअे मुझे तो कुछ पता ही नहीं चलता। क्या किया जाय?[१]

२८६

लाहोर,
६-८-'४७

सरदार साहब,

यह चिट्ठी जो खाकसार भाअी मुझे वहां मिले थे अुन्हें दे रहा हूं। ये अधिक अन्यायकी बातें कर रहे हैं। अपना सामान होटलमें रखकर मुझसे मिलने आये। अितनेमें अिनका सामान होटलमें से पुलिस अुठा ले गअी। मैंने कहा, मैं तो सिर्फ लिखकर पूछ ही सकता हूं। अिससे अधिक कुछ नहीं कर सकता। वे कहते हैं हमारी कोअी नहीं सुनता। हमें पत्र दीजिये, ताकि हमारी बात कोअी शांतिसे सुने। फिर जो होना होगा हो जायगा। वे कहते हैं, 'हम

---

१. यह पुर्जा लेकर मैं जहां पू० बापू कमेटीकी मीटिंगमें बैठे थे वहां गअी। और अुन्होंने पढ़कर जो जवाब दिया, वह लाकर पू० बापूजीको दिया। वह जवाब नीचे दिया जाता है:

२८-७-'४७

पू० बापू,

अभी तो कमेटीमें बैठा हूं। मुझे सोचनेको समय चाहिये। अिसलिअे कल तो जाना हो ही नहीं सकता। कल विचार करके निर्णय कर लेंगे।

वल्लभभाअीके प्रणाम

तो सेवा ही करना चाहते हैं।' मैं नहीं चाहता कि आप खुद ही अुनकी बात सुनें। किसी अधिकारीसे सुननेको कह दें तो काफी है।

मैंने अिस विषयमें जो पत्र आपको लिखा था, अुसका जवाब[1] भेजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

---

१. अिसकी सफाअीमें पू० बापूने ता० ११–८–'४७ को जो पत्र लिखा था, अुसमें से नीचेका भाग दिया जाता है:

खाकसार व्यर्थ आपके पीछे पड़े हैं। ता० २६–७–'४७ को अेक पत्र दिल्लीमें आपने लिखा था, जिसमें वे बातें लिखी थीं जो खाकसारोंने आपसे दिल्लीकी मस्जिदमें गोली चलाये जाने और हत्यायें होनेके बारेमें कही थी। अिसका जवाब मैंने आपको दिल्लीमें ही दे दिया था। गोली चलानेकी बात ही झूठ है। और दिल्लीमें कोअी खाकसार नहीं मरा। मस्जिदमें छिपकर खाकसार १५–८–'४७ का अुत्सव बिगाड़नेका षड्यन्त्र रच रहे थे। कांग्रेसका झंडा न फहराने देने और मारकाट मचानेका अिंतजाम कर रहे थे। अिसलिअे मुस्लिम कमिश्नरने मस्जिदमें जाकर टीयर गैस छोड़कर सबको पकड़ लिया था। अिसके सिवा कुछ भी नहीं हुआ था। आज खाकसार लाहोरसे लिखा हुआ आपका पत्र लेकर आये। अुनकी बात भी बिलकुल झूठ है। अुन्हें कमिश्नरके पास भेजा है। खाकसारोंको पाकिस्तानमें दिल्ली और आगरा चाहिये, अजमेर भी चाहिये। अिसके लिअे वे दिल्लीमें केन्द्र बनाकर दंगा करना चाहते हैं। कमिश्नर अिन लोगोंको दिल्लीमें नहीं रहने देना चाहता। अतः ये मस्जिदोंमें छिप जाते हैं। यहां कोअी मुसलमान अिनका साथ नहीं देता।

पंजाब और सरहद प्रान्तकी छावनियोंमें जो लोग पड़े हैं अुनका बन्दोबस्त कर रहा हूं। हमारी पार्टिशन कौंसिलके प्रस्तावकी नकल भेज रहा हूं। अिससे आपको यकीन हो जायगा कि अिस सम्बन्धमें जो कुछ करना चाहिये अुसे पाकिस्तान सरकारने स्वीकार किया

२८७

लाहौर,
६-८-'४७

चि० वल्लभभाओी,

जवाहरलालको नोट भेज रहा हूं। वह आपको पढ़नेके लिओ देंगे।

काकने अेक पत्र महाराजाको लिखा है। अुसकी नकल आपको भेजेंगे। मुझे पढ़नेको दी थी। अुनके बोलनेमें तो बड़ी मिठास है।

है। अिसके सिवा मैं स्वतंत्र अिंतजाम भी कर रहा हूं। लोग भयभीत होकर भाग जायं तो अिसका अुपाय नहीं। पश्चिमी पंजाब और सरहद प्रान्तसे हिन्दू-सिक्ख भाग रहे हैं। अिससे बहुत घबराहट फैल रही है।

कृपालानी सिन्धमें जो भाषण कर रहे हैं, अुनका असर अच्छा नहीं हो रहा है। अिस बारेमें लियाकतअली[1] का बयान निकला है। अुसकी कतरन भेजता हूं।

शरदबाबूने राजाजीके विरुद्ध अेक बयान अखबारोंमें दिया है। अुस बारेमें मैंने अुन्हें अेक पत्र लिखा था। अुसकी नकल भेजता हूं। अिसके सिवा नेताजीका विवाह होने और अुनकी विधवा तथा बच्चेके बारेमें जो खबर मिली है, वह भी आपकी जानकारीके लिओ भेजता हूं।

अब तो हम कब मिलेंगे, यह कहा नहीं जा सकता।

काश्मीरके बारेमें जो टिप्पणी भेजी वह देखी।

यहां राजाओंसे काम पड़ने पर पिछले पन्द्रह दिनसे बड़ी परेशानी अुठा रहा हूं। भोपालकी चालोंका पार नहीं। रात-दिन मेहनत करके राजाओंको फोड़ने और हिन्दुस्तानके यूनियनसे बाहर खींच ले जानेका प्रयत्न कर रहे हैं। राजाओंकी कमजोरीकी हद नहीं। सब स्वार्थ, झूठ और दंभसे भरे हैं।

सेवक
वल्लभभाओीके प्रणाम

महात्मा गांधीजी,
कलकत्ता

---

१. स्व० लियाकतअलीखां। अुस समय पाकिस्तानके प्रधानमंत्री।

महाराजा और महारानीके साथ अेक घंटे तक बातें हुअी। अुन्होंने स्वीकार किया कि प्रजा कहे सो ही करना चाहिये। मूल बात नहीं की। अिसलिअे अपने निजी मंत्रीको मेरे पास अपना अफसोस जाहिर करनेके लिअे भेजा। वह यह कि वे काकको हटाना चाहते हैं। यही सोच रहे हैं कि किस तरह हटाया जाय। सर जयलाल[1] का लगभग तय हो गया था। आपको अिस मामलेमें कुछ करना चाहिये। मेरी दृष्टिसे काश्मीरका मामला सुधर सकता है।

वाहकी छावनीमें ठीक काम हुआ। लोगोंको वहांसे नहीं हटाया जा सकता। अिस बारेमें आपको पाकिस्तानकी सरकारके साथ विचार करना चाहिये। रावलपिंडीमें हिन्दू-सिक्ख फिरसे आबाद होने चाहिये। पंजा साहब और वाहमें मैंने जो भाषण दिये अुन्हें पढ़िये। अुनमें मैंने सुझाव दिये हैं।

यहां रामेश्वरी नेहरू[2] के घर ठहरा हूं। शामको कलकत्ता मेलसे जा रहा हूं। अेक दिन पटना ठहरूंगा। फिर कलकत्ता और नोआखाली जाअूंगा।

जरूरी मालूम होनेके कारण सुशीला (नय्यर) को छावनीमें रख दिया है। अिससे लोग खुश हुअे। वे बहुत भयभीत हैं। मुझे तो भयका कोअी कारण नहीं दीखता।

अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

---

१. पंजाबके अेक न्यायाधीश।

२. पंजाबकी अेक रचनात्मक कार्यकर्त्री। हरिजन-सेवक-संघकी अुपाध्यक्षा। कस्तूरबा निधिकी पंजाबकी अेजेण्ट।

२८८

कलकत्ता,
१३-८-'४७

चि० वल्लभभाओी[1],

मैं तो यहां फंस गया हूं। और अब भारी खतरेका काम सिर पर ले रहा हूं। सुहरावर्दी और मैं आज साथ साथ दंगेवाले मुहल्लेमें रहने जा रहे हैं। अब जो हो सो सही। देखते रहिये। लिखता रहूंगा।

१. पू० बापूजीके पत्रका पू० बापूने अिस प्रकार अुत्तर दिया था:

१, औरंगजेब रोड,
नओी दिल्ली,
१३-८-'४७

पू० बापू,

आपका पत्र मिला।

आप कलकत्तेमें ठहर गये और वह भी कसाओीखाने जैसी जगहमें, जहां गुंडोंकी गुफा है, जा घुसे। और सोहबत भी कैसी? भारी खतरा तो है ही। परन्तु आपका स्वास्थ्य यह बोझ सह लेगा? वहां गंदगी तो बेहद होगी।

बरसात खिंच गओी और चारों तरफ पानीकी पुकार मच रही है। क्या होगा, यह तो ओीश्वर जाने। बहुत कठिन समय आनेवाला दीखता है।

जयप्रकाश पूरी तरह अुलटे रास्ते लग गया है। नमूनेके तौर पर अुसका अहमदाबादका भाषण भेजता हूं। अैसे भाषण रोज देता है। आनेवाले चुनावोंमें दल खड़ा करके लड़नेकी तैयारी कर रहा है।

राजाजी आ रहे हैं। ये तो नये वातावरणमें जा रहे हैं। कलकत्ता शान्त हो जाय तो अब पंजाबके सिवा और सब जगह शान्ति हो गओी है।

लाहोर-अमृतसरमें अभी तक शांति नहीं हुओी। बाअुण्ड्री कमीशनके फैसलेसे स्थितिमें और भी बिगाड़ होनेकी संभावना है।

सुभाषके विवाहकी बात सच है। यह भी सच है कि अुनका चार सालका बच्चा है।

अपने समाचार लिखते रहिये।

मालूम होता है कि काकाने (काश्मीर) छोड़ दिया।

सुभाष बोसका हाल मुझे तो आपके पत्रसे मालूम हुआ। मुझे अिन सब बातों पर भरोसा नहीं हो रहा है।

आपने राजाजीके बारेमें शरदबाबूको जैसा लिखा वैसा ही मैं भी लिख चुका था[१]। अुसका कोअी अुत्तर नहीं मिला। अिस बार तो वे खुद मेरे पास आये भी नहीं थे।

हिन्दू राजा सब शामिल हो गये हैं। मुसलमान राजाओंमें रामपुर, पालनपुर और दूसरे छोटे राजा आ गये हैं। अब भोपाल, निजाम तथा काश्मीर बाकी रहे हैं।

भोपालको आना ही पड़ेगा। हैदराबादको थोड़ा समय लगेगा। परन्तु काश्मीरका अब क्या होना है, यह देखना है।

काठियावाड़में अभी जूनागढ़ रह गया है। और सब आ गये।

अब कल आखिरी दिन है। नये कानूनोंका अमल होगा। अीश्वरकी दया होगी तो अन्तमें सब ठीक हो जायगा।

सेवक

राजाजीके साथ कलकत्ता भेजा। वल्लभभाअीके प्रणाम

१. पू० बापूजीने शरद बाबूको जो पत्र लिखा था, वह नीचे दिया जाता है :

सोदपुर,
११-८-'४७

प्रिय भाअी शरद,

राजाजीके विरुद्ध काले झंडे दिखाना वगैरा सब क्या है? मुझे जरूर यह लगता है कि अैसा करनेमें भूल हो रही है। अुनका दोष होने पर भी (और हममें से कौन दोषमुक्त होनेका दावा कर सकता है?) वे अुतने ही देशको चाहनेवाले हैं जितना कि मैं और आप हैं। मुझ पर पड़ा हुआ असर आपको बता रहा हूं। वैसे बंगालकी स्थिति आप जरूर मुझसे ज्यादा समझते हैं।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका
बापू

मैं नहीं मानता कि कृपालानीके बारेमें अखबारोंमें जैसा आया है वैसा अुन्होंने कहा होगा। लियाकतअलीका बयान मुझे पसन्द नहीं आया। वातावरण जहरसे भरा है। कौन किसका है, यह जल्दी पता नहीं चलता।

खाकसारोंका मामला समझा। मैं यह धर्म समझकर चला हूं कि अुन्हें अैसी स्थितिमें रख दिया जाय कि वे कुछ भी न कह सकें। दूसरोंके बारेमें भी यही समझ कर चलता हूं।

काम सारा कठिन है और कठिनाअी बढ़ती दिखाअी देती है। अिस पर अब यह दैवकोप आ पड़ा दीखता है। वर्षा[1] न आअी तो क्या करेंगे? बहुतोंको मरना ही पड़ेगा न?

राजाओंका काम अितना विकट है कि अुनसे आप ही निपट सकेंगे। परन्तु आपके स्वास्थ्यसे कौन निपटेगा?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२८९

कलकत्ता,
१७-८-'४७

चि० वल्लभभाअी,

आवाजोंसे कान बहरे हो गये हैं। दर्शन देते थकना ही न चाहिये। कुछ सूझ नहीं पड़ता कि अिससे कैसे छुटकारा मिलेगा? और सब तो जो अखबारोंसे मिल जाय सो सही।

खिलाफत-युग[2] याद आ रहा है। परन्तु कहीं क्षणिक अुभार सिद्ध हुआ तो?

---

१. गुजरातमें अुस साल भयंकर अकाल था।

२. बापूजी कलकत्तेमें मुसलमानोंके मुहल्लेमें रहने गये, तबसे वहांके हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेसे गले मिलने लगे और वैसी ही अेकता दिखाअी देने लगी, जैसी खिलाफत-आन्दोलनके समय हिन्दू-मुसलमानोंमें दिखाअी देती थी। अुसी खिलाफत-युगका स्मरण है। यह भी चार दिनकी चांदनी ही साबित हुअी थी।

साथमें लाहोरके बारेमें तार[1] है। मैंने जवाब नहीं दिया। यह सच हो तो बहुत भयंकर बात है। सच क्या है, बताअिये। अभी तो यहां फंसा हुआ हूं। दूसरा पत्र हॉरेस अेलेक्जेण्डर[2] का है। अिनका कहना मुझे अच्छा लगा। सब कुछ जांचकर सिफारिश करें, तो कहीं भी हो रहा अन्याय रुक सकता है।

चन्द्रनगरमें कुछ दंगाअियोंने अेडमिनिस्ट्रेटरके घर पर घेरा डाल रखा है, अिसलिअे प्रफुल्लबाबू वहां गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
नअी दिल्ली

---

१. वह तार नीचे दिया जाता है:

नअी दिल्ली,
ता० १५-८-'४७

महात्मा गांधी,
सोदपुर आश्रम,
कलकत्ता

सोमवारसे लाहोर शहरमें भयंकर हत्याकाण्ड हो रहा है। रावलपिंडीमें भी ज्यादा। रास्तों पर सैकड़ों लाशें पड़ी हैं। अनारकली और दूसरे व्यापारी मुहल्लोंको जला दिया गया है। अधिकांश शहर बुरी तरह जल रहा है। हिन्दू मुहल्लोंके पानीके नलोंको काट दिया गया है। फंसे हुअे हिन्दू भाग निकलनेका प्रयत्न करने लगे, तो पुलिस और फौजवालोंने गोलियोंसे अुन्हें छेद डाला। तीन सौसे अधिक हिन्दुओंको जिन्दा जला दिया गया। हिन्दुओंको खाने-पीनेको नहीं मिल रहा है। वे संपूर्ण विनाशके खतरेमें हैं। तुरन्त कुछ कीजिये। लाहोरमें आपकी अुपस्थितिकी आवश्यकता है।

(हस्ताक्षर)
शाहीलाल और लाहोरके अन्य निर्वासित

तार पहुंचा ता० १७-८-'४७ को

२. अेक शांतिप्रेमी अंग्रेज।

२९०

कलकत्ता,
२६–८–'४७

{0} वल्लभभाओी,

आपका पत्र[1] मिला। दु:खद है। आप सब कुछ कर चुके। शीलाको मृत्युके पंजेमें तो जरूर रख दिया था। बाहके श्रित निश्चित हो जायं तो वह भले छूट जाय या भले अुन्हींके

---

१. ता० २४–८–'४७ को पू० बापूका लिखा हुआ यह पत्र नीचे या जाता है:

औरंगजेब रोड,
नओी दिल्ली,
२४–८–'४७

सुशीलाको वहां छोड़ आये, यह चिन्ताका कारण बन गया। ाज अुसका पत्र अेक विशेष सैनिक लेकर आया। वह पत्र आपको ज रहा हूं।

अिस परसे मैंने दो तार किये। अुनकी नकलें भेज रहा हूं। जाबका मामला बहुत बिगड़ गया है। वहां लोग बिलकुल पागल हो ये हैं। वे शहरों और गांवोंको जला देते हैं और मनुष्योंको ककड़ीकी रह काट डालते हैं। अिसमें सैनिकों और पुलिसवालोंके शामिल हो ानेके समाचार आ रहे हैं। लोग हजारोंकी संख्यामें भाग रहे हैं ौर जहां जाते हैं वहां भयभीत वातावरण पैदा कर देते हैं।

८५ फी सदी पुलिस मुसलमान है। अब पुलिस तूफानमें शरीक ो गओी है। पाकिस्तानी पंजाबमें क्या हो रहा है, अिसके समाचार ाप्त करना कठिन हो गया है। लाखों मनुष्य वतन छोड़कर भाग हे हैं।

आज जवाहरलाल अमृतसर और जालंधर गये हैं। लीगी मंत्री ो वहां आनेवाले हैं। मगर मामला अिन नेताओंके काबूसे बाहर ो गया है।

साथ खतम हो जाय। आपका पत्र आनेके बाद ही जाना कि वह कहां है। वाहसे अुसने तुरन्त अेक पत्र लिखा था। बादमें कोअी खबर ही नहीं मिली, अिसलिअे सोचमें पड़ गया था।

सुशीलाका पत्र आनेके बाद मैंने आज यहांसे दो तार किये हैं। अेक कराची लियाकतअलीको और दूसरा त्रिवेदी[1] को। कराचीवाला तो मिल जायगा, परन्तु पंजाबमें तार नहीं मिलते। रेलगाड़ियोंकी व्यवस्था भी टूट गयी है। कल जवाहरलालके आने पर क्या खबर आती है, सो आपको भेजूंगा। पंजाबका मामला विकट है। पंजाबका असर दूसरी जगह न हो, अिसके लिअे बहुत मेहनत करनी पड़ रही है। दिल्लीमें पंजाबसे भागकर आनेवाले दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। वे रात-दिन चैन नहीं लेने देते। दुःख और डरके मारे वे आते हैं। अुन्हें समझाना बहुत मुश्किल होता है।

अनाजका काम भी अैसा ही कठिन है। जिनके पास अधिक है वे निकालते नहीं। आंध्रमें फालतू अनाज बहुत है, पर लोग देते नहीं। प्रकाशम्[2] और रंगा[3] लोगोंको न देनेके लिअे अुकसा रहे हैं। कांग्रेसके कार्यकर्ता स्वार्थी और पद हथियानेकी खींचातानीमें पड़े हुअे हैं और काममें कोअी न कोअी विघ्न डालते रहते हैं।

समाजवादियोंका आपको पता ही है।

देशी राज्योंका तो अब हैदराबादके सिवा सब मामला हल हो गया समझिये। वही अेक बाकी रहा है। अुसके लिअे मेहनत करनी होगी।

काश्मीरका मामला ज्योंका त्यों है। पंजाबकी अैसी हालतमें अिसे छेड़ना बुद्धिमत्ता नहीं होगी। और सरहद प्रान्तमें खानसाहबके मंत्रि-मंडलको पदच्युत करके अब्दुलकयूमको सत्ता सौंपनेकी चाल चली गअी है। आप कलकत्ता कब तक रहेंगे?

---

१. सर चन्दूलाल त्रिवेदी। पंजाबके गवर्नर।
२. श्री टी० प्रकाशम्। आंध्रके नेता।
३. प्रो० रंगा। आंध्रके नेता।

पंजाबका क्या होगा? साथका पत्र आज ही आया। क्या यह सच होगा? पंजाब जानेके बारेमें मुझ पर खूब दबाव[1] पड़ रहा है। पता

---

१. अिसके जवाबमें ता० २७–८–'४७ को पू० बापूने नीचेका पत्र लिखा:

२७–८–'४७

आपका पत्र मिला। आप अिस समय पंजाब जाकर क्या करेंगे? वहांकी आग आप बुझा नहीं सकते। हिन्दू-सिक्ख-मुसलमान वहां साथ नहीं रह सकते। हिन्दू भविष्यमें कभी शायद रह भी सकें, लेकिन अभी तो नहीं। अिसके लिअे बहुत समय लगेगा। परन्तु सिक्ख तो भविष्यमें भी कभी मुसलमानोंके साथ रह सकेंगे, यह कल्पना नहीं की जा सकती। सेनामें पूरी तरह द्वेष भर गया है। दोनों तरफसे लाखोंकी संख्यामें लोग भाग रहे हैं और छावनियां भयभीत दशामें पड़ी हुअी हैं। भागनेवालोंकी भी हत्यायें होती हैं। सही-सलामत हटाया जा सके, अैसा बन्दोबस्त नहीं है।

कल जिन्ना, जवाहरलाल, लियाकत, बलदेव[1] और दोनों गवर्नर (पूर्व और पश्चिम पंजाबके) तथा गवर्नर जनरल (माअुण्टबेटन) लाहोरमें मिलेंगे। वहां ये सब मिलकर तय करेंगे कि क्या किया जाय।

राजकुमारी लेडी माअुण्टबेटनके साथ पंजाबमें तीन दिनका दौरा करके आज ही अभी आठ बजे आअी हैं। भयंकर वर्णन दे रही हैं। सुशीलासे मिल आअीं। अुसे ले आनेको कहा था। वह तैयार भी हो गअी। परन्तु कैम्पमें लोग रोने लगे अिसलिअे रह गअी। अिस छावनीमें खतरा नहीं है। अब तो कुछ भोजनकी सुविधा भी कर दी गअी है। अुसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। अिसलिअे कोअी चिन्ताकी बात नहीं। वैसे तो अीश्वरकी जो मरजी होगी सो होगा।

आपकी तबीयत अच्छी होगी।

अुधरके समाचार लिखिये।

---

१. पंजाबके सरदार बलदेवसिंह। अुस समय भारत सरकारके रक्षामंत्री।

नहीं चलता क्या करना चाहिये। जवाहर भी लिखते है कि मुझे जाना चाहिये, लेकिन तुरन्त नही। यहांका कार्यक्रम अितवार तकका है। बादमें नोआखाली जाना है। वहांसे बिहार। अिसमें पन्द्रह दिन तो लग ही जायंगे। दिल्ली आकर मैं क्या कर सकता हूं, यह समझमें नही आता। अैसा लगता है कि आप सब जो काम कर रहे हैं अुसमें बाधक ही होअूंगा।

कृपालानी पूछते है कि अब त्यागपत्र दे दूं? मैं तो आप सबसे बात करने पर समझा था कि १५ तारीखके बाद भले ही दे दें। अुनके बारेमें आप सबकी राय बहुत अच्छी तो नहीं है। अगर अुन्हें अूपरवालोंका विश्वास प्राप्त न हो, तो अुन्हें जाने देनेमें ही भला दीखता है। अुनकी जगह दूसरा कौन हो, यह विचारनेकी बात है। मुझे तो आजकी स्थिति भयानक लगती है। यहां बैठे हुअे मुझे जो खतरा दीखता है, वह आप लोगोंको, जो अुसमें पड़े हुअे है, दिखाअी न दे यह मैं समझ सकता हूं। मेरी स्थिति यह है। अिन भागोंमें तो मुझे अपना स्थान दिखाअी देता है। पंजाबका हाल भी मैं जरूर समझ लूंगा। वहा कोअी मेरी अुपस्थिति चाहेगा, अिस बारेमे मुझे शंका जरूर है।

आपका स्वास्थ्य कैसा रहता है?

हैदराबादकी समस्या कठिन तो है, परन्तु अुससे आप निपट लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२९१

बेलियाघाट,
३०-८-'४७

चि० वल्लभभाजी,[1]

आपका पत्र मिला। आपने जैसा तार भेजा, वैसा ही बादमें जवाहरका तार भी मिला। जवाब मेरे पहले पत्रमें आ जाता है, अिसलिअे यहां विस्तारसे नहीं दे रहा हूं।

---

१. पू० बापूजीका यह पत्र पू० बापूके निम्न पत्रके अुत्तरमें है:

१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली,
३०-८-'४७

पू० बापू,

डॉ० श्यामाप्रसाद[2] के साथ भेजा हुआ पत्र मिल गया होगा।

सुशीलाका तो बन्दोबस्त हो गया है। अिसलिअे अुसकी और अुसकी छावनीकी चिन्ता नहीं है। परन्तु पंजाबका मामला अभी तक काबूमें नहीं आ रहा है।

कल लाहोरमें मीटिंग हुअी। अच्छी हुअी। जिन्ना और लीगके दूसरे सब लोग थे। और सारे प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास हुअे। परन्तु अितनी अधिक फैली हुअी आगके बुझनेमें देर लगेगी।

आजसे जवाहरलाल और लियाकतअली पंजाबमें साथ-साथ दौरा करने गये हैं। अेक सप्ताह घूमेंगे। और लोग भी दौरे पर निकले हैं। मेहनत तो खूब हो रही है। अीश्वर करे सो सही।

भोपालका खानगी पत्र आया। अुसकी नकल साथमें भेज रहा हूं।

अब हैदराबादका सवाल रहा। अुसके लिअे कोशिश हो रही है। अुसमें देर लगेगी।

---

२. डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी। हिन्दू महासभावादी। १९४६ से १९५० तक केन्द्रीय सरकारमें अेक मंत्री।

आप सबको अीश्वर आवश्यक शक्ति और समझ दे। क्या यह सोचा था कि असे कठिन काममें आप तुरंत ही पड़ जायंगे? अीश्वरेच्छा बलीयसी।

हॉरिस (अलेक्जेन्डर) मेरे पास ही हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

जूनागढ़ भी रहा है। पर अुससे निपटनेमें देर नहीं लगेगी।

अिन्दौरको निपटा दिया। वहांसे अंग्रेजोंको निकाल कर अपना आदमी रख दिया है। अभी तो अेन० सी० मेहताको मुकर्रर किया है। आदमी बहुत थोड़े हैं। अच्छे आदमी मिलने मुश्किल हैं।

काश्मीरमें कोअी अच्छा आदमी चाहिये। तलाश कर रहा हूं।

आपके कार्यक्रमका पता नहीं चलता।

तबीयत अच्छी होगी।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

यह पत्र लिख चुकनेके बाद हॉरिस आये। अुनके साथ दो आदमी हैं। अुन्हें सारी परिस्थिति समझा दी है। कल अमृतसर भेज दूंगा।

अभी-अभी आपका पत्र मिला। जवाहरलालके नामका पत्र अुन्हें पंजाब भेज दूंगा। कल मैं जालंधर जानेवाला हूं। वहां कष्ट-निवारण कामका बड़े पैमाने पर अिन्तजाम करना है। शामको लौटूंगा।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

महात्मा गांधीजी,
भागीरथी द्वारा

२९२

कलकत्ता,
१–९–'४७

चि० वल्लभभाओी,

आपका पत्र मिला। भोपाल (नवाब) का खत अजीब है। मुझे पसन्द नहीं आया। आपका काम बहुत कठिन है। ओीश्वर आपको बल दें। भोपाल अगर सच्चा खेल खेलेगा, तो हैदराबादका काम आसान हो जायगा। यही बात पाकिस्तानकी समझिये।

अपना कार्यक्रम मैंने आपको दिया तो है। परन्तु वह भी अभी तो रद्द जैसा ही है। कल सवेरे नोआखाली जाना था। अिसलिअे शहीदसाहब अपने घर गये। अिस मकानमें बड़ोंमें मैं अकेला ही हूं। दिनशा मेहता जरूर अभी यहीं हैं। परन्तु वे क्या करें? अुन्हें भाषा नहीं आती। भारी भरकम शरीर काम नहीं देता।

किसी आदमीको मछुआ बाजारमें छुरेके घाव लगे। किसने मारे, अिसका कोओी पता नहीं चलता। लोग अुसका प्रदर्शन करनेके लिअे यहां लाये। शायद अुन्हें शहीद सुहरावर्दी पर हमला करना होगा। वे नहीं मिले अिसलिअे अुनका गुस्सा मुझ पर अुतरा। आंगनमें शोर मचा। दोनों लड़कियां[1] भीड़में चली गओीं। मैं लेटा हुआ था। नीद नहीं आओी थी। तैयारी थी। घरकी मुसलमान मालकिन आयी, यह समझकर कि कहीं मैं मुसीबतमें न फंस जाअूं। मैं भी चेता। अुठा। मौन तोड़ा। अैसे मौके पर तोड़ना जरूरी ही था। और मैं भीड़की तरफ बढ़ा। परन्तु दोनों लड़कियां मुझे छोड़ती ही नहीं थीं। दूसरे आदमियोंने भी घेर लिया। कांच तड़ातड़ टूटने लगे। दरवाजे भी। छतमें लगे पंखेके बिजलीके तार तोड़नेकी कोशिश की गओी, परन्तु ज्यादा टूटने न पाये। मैं भीड़को शान्त करनेके लिअे चिल्लाने लगा। लेकिन कौन सुनता? फिर मेरी भाषा हिन्दुस्तानी, वे रहे बंगाली। कुछ मुसलमान भी मेरे पास थे। मैंने हमला करनेकी सबको मनाही कर दी। अिसलिअे सब आसपास खड़े ही रहे। दो दल थे। अेक गुस्सेको ठंडा करनेवाला, दूसरा भड़कानेवाला। दो आदमी पुलिसके थे। अुन्होंने भी

---

१. आभा और मनु।

हाथ नहीं अुठाया। हाथ जोड़कर आवाज लगाअी। मुझे रोका। कल्याणम (टाअिपिस्ट) बोला कि मैं अब अन्दर बैठूं। बिसेन[1] बीचमें था। अुसने केवल पायजामा पहन रखा था। अिसलिअे वह मुसलमान लगता था। अींटें फेंकी गअीं। अेक मुसलमानको लगी। कोअी घायल न हुआ। वे अींटें मुझ पर पड़ती। अितनेमें पुलिसका अुच्च अधिकारी आ गया। मकानको अच्छी तरह नुकसान पहुंचानेके बाद युवक लोग बिखर गये। प्रफुल्लबाबू और अन्नदा[2] आये। प्रफुल्लबाबूने जरूरतसे ज्यादा बन्दोबस्त रखनेका विचार किया। मैंने अिनकार कर दिया। सबका शक हिन्दू महासभा पर है। मैंने कहा है कि दंगाअियोंको पकड़नेसे पहले श्यामाप्रसाद और चटर्जी[3] से मिलें। जल्दीमें कुछ न करें। यहां अैसी हालत है। रातके १२॥ बजे सो पाया। अुठना तो समय पर ही होता है।

जवाहरसे मिलें तो यह कह दें।

अब साथका तार पढ़िये। कुछ समझमें नहीं आता। आप दोनोंसे लिपटा हुआ हूं। मेरे जवाबकी नकल अिसके पीछे है।

अुपरोक्त स्थितिमें यह समझिये कि मैं यहीं हूं। कलकी कौन जाने?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२९३

कलकत्ता,
१–९–'४७

चि० वल्लभभाअी,

आज तो यहां लड़ाअीकी तैयारी हो रही है। घायल होकर मरे हुअे दो मुसलमानोंकी लाशें अभी देखकर आया हूं। सुनता हूं कि

1. बापूजीकी मंडलीके अेक भाअी।
2. बंगालके अेक रचनात्मक कार्यकर्ता।
3. अेक हिन्दू महासभावादी।

जगह-जगह दंगा फूट पड़ा है। जो चमत्कार माना जाता था, वह चार दिनकी चांदनी माना जायगा। अब अपना धर्म मैं सोच रहा हूं। यह पत्र लगभग छह बजे लिख रहा हूं। डाक तो कल जायगी, अिसलिअे और जोड़ सकूंगा। जवाहरका तार आया है कि मुझे पंजाब जाना चाहिये। अब कैसे जा सकता हूं? अन्तरमें विचार कर रहा हूं। मौन अुसमें मदद दे रहा है। साथमें मीरपुर खासका तार देखिये। यह क्या मामला है? मैंने जवाब नहीं दिया।

२–९–'४७
प्रात:काल ४–४५ बजे

अितना कल शामको लिखा था। बादमें तो बहुत सुना। बहुतेरे लोग आये। अपने धर्मका विचार तो कर ही रहा था। अुसमें बहुतसी खबरोंने पूर्ति की। अिसलिअे अुपवास करनेका विचार किया। वह कल रातको ८–१५ से शुरू हुआ। रातको राजाजी[1] आये। अुपवास न करनेके बारेमें बहुत कुछ कहा, समझाया। परन्तु अेक भी दलील मेरे गले न अुतरी। मुझे अपना धर्म स्पष्ट दिखाअी दिया। आप घबरायें नहीं। दूसरे भी कोअी न घबरायें। घबरानेसे कुछ नहीं होगा। अगर नेता लोग सच्चे होंगे, तो दंगा बन्द हो जायगा और अुपवास छूट जायगा। अगर दंगा होता ही रहा तो जीकर क्या करना है? मुझमें लोगोंको शान्त रखनेकी शक्ति भी न हो तो जीना बेकार है। अीश्वरको अिस शरीरसे काम लेना होगा, तो लोगोंके मनमें बसकर वह अुन्हें शान्त करेगा और मेरे शरीरको कायम रखेगा। केवल अुसीके नाम पर अुपवास शुरू किया है।

आप सबको अीश्वर कायम रखे। अिस अुल्कापातमें दूसरे कुछ नहीं कर सकते।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

१. राजाजी अुस समय पश्चिम बंगालके गवर्नर थे।

२९४

बिड़ला भवन,
नअी दिल्ली,
६-१०-'४७

चि० वल्लभभाअी,

कल शामको मौलाना साहब आये थे। थोड़ी देर बैठकर चले गये। वे कहते हैं हम तीनोंको साथ बैठना है। समय आप तय कीजिये। कल मंगलवारको वे कोअी भी समय चाहते है। समयकी सूचना मुझे भी भेज दीजिये और अुन्हें भी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२९५

बिड़ला भवन,
नअी दिल्ली,
१-११-'४७

चि० वल्लभभाअी,

कल आप आये थे, परन्तु अुस समय मुझे याद नहीं रहा कि आपकी जन्मतिथि है। अिसलिअे मुंहसे आशीर्वाद न दे सका। आजकल मेरी यह हालत है।

यह पत्र खास कारणसे लिख रहा हूं।

१. बिड़ला-मंदिरके पास निराधार लोग अुमड़ रहे हैं। वे सब वहां रह तो नहीं सकते। ज्यों त्यों पड़े रहते हैं। अुन्हें किसी छावनीमें रखना चाहिये, और वह भी जल्दी।

२. मस्जिदोंके सम्बन्धमें पत्र अिसके साथ है। यह तो अेक ही है। अैसे और पत्र भी हैं। सरकारकी तरफसे अैसा बयान निकलना चाहिये कि अिन सबका दुरुपयोग हरगिज नहीं होगा, वे सुरक्षित रहेंगी और कोअी नुकसान होगा तो हुकूमत अुसकी मरम्मत करायेगी।

३. यह घोषणा होनी चाहिये कि जिन्हें हिन्दू या सिक्ख बना लिया गया है, अनके बारेमें हुकमत यह मानकर चलेगी कि अनका धर्म बदला ही नहीं गया, और अैसे सब लोगोंकी रक्षा करेगी।

४. किसी मुसलमानको यूनियन छोड़नेके लिअे मजबूर न किया जायगा।

५ अगर किन्हीं मुसलमानोंके मकान खाली करा लिये गये हों अथवा अनके मकानों पर नाजायज कब्जा कर लिया गया हो, तो वह रद्द समझा जायगा। और अैसे मकान अनके मालिकोंके लिअे सुरक्षित रखे जायंगे।

अैसा बयान निकालनेकी जरूरत मैं तो समझता हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

२९६

बिड़ला भवन,
२९-१२-'४७

चि० वल्लभभाअी,

कल ही मिले थे। अुन्होंने कहा कि आप जम्मू जानेवाले हैं, यह अुन्हें मालूम नहीं था। अिसका पता भी नहीं था कि जामसाहब[1] साथमें गये! यह कहा कि अुन्हें पता होता तो शायद कोअी सुझाव देते, कोअी पत्र भेजते। क्या यह सही है?

रणधावा[2] से मिलनेके बाद मुझे खयाल हुआ कि मैं अुन्हें सीधा लिखूं तो आपका समय बच सकता है। क्या मैं अिस तरह लिख सकता हूं?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
१, औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

---

१. सौराष्ट्रके राजप्रमुख।

२. दिल्लीके डिप्टी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट।